

भारतीय रिज़र्व बैंक
बुलेटिन



जून 2017
खंड 71 अंक 6

संपादन समिति
जनक राज
ब्रजमोहन मिश्रा
गौतम चैटर्जी
अमिताभ सरदार

संपादक
सुनील कुमार

भारतीय रिज़र्व बैंक बुलेटिन संपादन समिति के निर्देशन में आर्थिक और नीति अनुसंधान विभाग द्वारा मासिक आधार पर प्रकाशित किया जाता है। इसमें व्यक्त व्याख्याओं और विचारों के लिए बैंक का केंद्रीय निदेशक मंडल उत्तरदायी नहीं है। हस्ताक्षरित लेख में व्यक्त विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

© भारतीय रिज़र्व बैंक 2017

सर्वाधिकार सुरक्षित।
सामग्री के पुनः प्रयोग की अनुमति है,
बशर्ते कि स्रोत का उल्लेख किया जाए।

बुलेटिन के सदस्यता शुल्क के लिए कृपया “भारतीय रिज़र्व बैंक के हाल के महत्त्वपूर्ण प्रकाशन” खंड देखें।

भारतीय रिज़र्व बैंक बुलेटिन को इंटरनेट के माध्यम से <http://www.bulletin.rbi.org.in> पर भी देखा जा सकता है।

विषयवस्तु

मौद्रिक नीति वक्तव्य, 2017-18

दूसरा द्विमासिक मौद्रिक नीति वक्तव्य, 2017-18	1
विकासात्मक और विनियामकीय नीतियों पर वक्तव्य	7

भाषण

बैंकों में ग्राहक सेवा : मानक ऊंचे करने का समय एस.एस.मूंदड़ा	9
---	---

लेख

गैर-सरकारी गैर-वित्तीय निजी लिमिटेड कंपनियों के वित्त, 2015-16	15
औद्योगिक संभावना सर्वेक्षण, 2016-17	25
परिवारों का मुद्रास्फीति प्रत्याशा सर्वेक्षण: 2016-17	41
सरकारी आस्तियों के लिए पूंजी आवश्यकता : कुछ मुद्दे और चिंताएं	49
वैश्विक बैंकिंग - हाल की गतिविधियां और भावी परिदृश्य	61
वर्तमान सांख्यिकी	81
हाल के प्रकाशन	120

मौद्रिक नीति वक्तव्य, 2017-18

दूसरा द्विमासिक मौद्रिक नीति वक्तव्य, 2017-18

दूसरा द्विमासिक मौद्रिक नीति वक्तव्य, 2017-18 मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी), भारतीय रिज़र्व बैंक का संकल्प*

मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) ने आज आयोजित अपनी बैठक में वर्तमान और उभरती समष्टि आर्थिक स्थिति के आकलन के आधार पर निर्णय लिया है कि:

- चलनिधि समायोजन सुविधा (एलएएफ) की नीति रेपो दर 6.25 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रखी जाए।

इसके परिणामस्वरूप चलनिधि समायोजन सुविधा (एलएएफ) के अंतर्गत प्रतिवर्ती रेपो दर 6.0 प्रतिशत और सीमांत स्थायी सुविधा (एमएसएफ) दर और बैंक दर 6.50 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रहेंगी।

एमपीसी का निर्णय मौद्रिक नीति के तटस्थ रुख के अनुरूप है जो वृद्धि को सहारा देते हुए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) मुद्रास्फीति का 4% का उद्देश्य +/- 2 प्रतिशत के बैंड के भीतर हासिल करने के मध्यावधि लक्ष्य के अनुरूप है। इस निर्णय को रेखांकित करने वाले मुख्य विचारों को नीचे वक्तव्य में दिया गया है।

आकलन

2. एमपीसी की अप्रैल 2017 की बैठक के समय से, वैश्विक आर्थिक गतिविधि में मामूली वृद्धि हुई है जिसमें प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (ईई) और कुछ उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) में वृद्धि होने से सहायता मिली है। अमेरिका में सख्त श्रम बाजार से मजदूरी संबंधी अभिलाभ उत्पन्न हो रहे हैं। इसके साथ ही, हाल के महीनों में औद्योगिक उत्पादन में भी स्थिरता से सुधार हुआ है और खुदरा बिक्री अच्छी रही है, हालांकि घरों की बिक्री में अप्रैल में कमी आई। तथापि, राजनीतिक जोखिम उच्च बने हुए हैं। यूरो क्षेत्र में, लगातार गिरती बेरोजगारी, बढ़ती खुदरा बिक्री और परचेजिंग मैनेजर्स और कारोबारी सर्वेक्षणों में प्रतिबिंबित विनिर्माण की उज्ज्वल संभावना से सुधार में सहायता मिली है। जापान में, मूल्यहास हुए येन की सहायता से निर्यात और औद्योगिक गतिविधि से

* 07 जून 2017 को जारी।

वृद्धि में तेजी आ रही है। तथापि, मजदूरी और मुद्रास्फीति निराशाजनक हैं और घरेलू मांग को पीछे धकेल रहे हैं। उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में चीनी अर्थव्यवस्था में विशेषकर विनिर्माण में स्थिरता आ रही है किंतु क्रेडिट प्रेरित ऋण विस्तार के रूप में वित्तीय जोखिम इस संभावना पर प्रभाव डाल सकते हैं। ब्राजील मंदी से उभरता हुआ दिखाई दे रहा है, हालांकि बदतर होती श्रम बाजार स्थिति और राजनीतिक उथल-पुथल के कारण वृद्धि गतिशीलता नाजुक बनी हुई है। रूस में मजबूत होते वैश्विक माहौल से उन्नत हो रहे समष्टि मूल तत्वों सहित सुधार में सहायता मिल रही है। दक्षिण अफ्रीका संरचनागत प्रतिबंधों से जूझ रहा है जो आर्थिक गतिविधि को कम कर रहे हैं।

3. वर्ष की शुरुआत से ही वैश्विक व्यापारिक वस्तुओं की व्यापार मात्रा में बढ़ोतरी वर्ष 2017 की दूसरी तिमाही में बनी रही जिसमें मजबूत होती वैश्विक मांग से सहारा मिला जैसाकि बढ़ते अंतरराष्ट्रीय हवाई मालभाड़े और कंटेनर उत्पादन में दिखाई दिया है। कनाडा और यूएस से उच्चतर उत्पादन से मई में शुरुआत में कच्चे तेल की कीमतें पांच महीने के न्यूनतम स्तर पर पहुंच गईं और नरम बनी रही जिन्होंने आपूर्ति में कटौती करके बाजार को कड़ा करने के ओपेक के हाल के प्रयासों को क्षीण कर दिया। गैर-ईंधन पण्य-वस्तु कीमतों के बीच धातुओं की कीमतें चीन से कमजोर मांग की प्रत्याशाओं के कारण कम हो रही हैं। बुलियन कीमतें एक दायरे में बनी हुई हैं जबकि खाद्य कीमतें अप्रैल में सहज हुईं किंतु मई में बढ़ गईं। ये गतिविधियां सुझाती हैं कि मुद्रास्फीति की संभावना अभी भी तुलनात्मक रूप से उन्नत और उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में समान रूप से उदार बनी हुई है।

4. वैश्विक वृद्धि संभावनाओं, व्यापक रूप से प्रणालीगत केंद्रीय बैंकों के उदार मौद्रिक नीति रुख और सामान्य रूप से सकारात्मक आवक आंकड़ों से अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजारों में तेजी आई है। धीरे-धीरे वित्तीय बाजारों ने भौगोलिक-राजनीतिक घटनाओं के प्रति आघात सहनीयता दिखाई है और तेजी से उनको दर्शाया है। यह प्रतिफलों की पहुंच के नवशक्ति संचार में दिखाई दिया है। देश-विशिष्ट कारकों ने निवेशक भावनाओं को ठीक कर दिया है। अधिकांश उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में इक्विटी बाजारों ने दूसरी तिमाही में अमेरिका में पिछले उच्च स्तरों से ऊपर लाभ प्राप्त किया है, जिन्हें जापान में कॉर्पोरेट लाभ से प्रोत्साहन मिला और सहज होते राजनीतिक तनाव तथा यूरो क्षेत्र के मामले में आशावादी आंकड़ों से सहायता

मिली। उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में एशिया में उच्च मूल्यनिर्धारण किंतु नरम पण्य-वस्तु कीमतों के कारण लेटिन अमेरिका में कमजोर मूल्यनिर्धारण के साथ इक्विटी बाजारों ने मिश्रित कार्यनिष्पादन किया है। प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बॉन्ड प्रतिफल मुख्य रूप से एक दायरे में रहे हैं। उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में, कुछ देशों में मुद्रास्फीति दबावों और राजनीतिक अनिश्चितताओं के चलते प्रतिफल कठोर हो गए हैं, किंतु पण्य-वस्तुओं के निर्यातकों के लिए हाल ही में कुछ गिरावट हुई है। मुद्रा बाजारों में फेडरल रिज़र्व के नरम रुख बरतने और अप्रत्याशित राजनीतिक घटनाओं के बाद अमेरिकी डॉलर मई में कमजोर हो गया। मई के मध्य से येन ने अपना मूल्यहास झुकाव छोड़ दिया है और यह सुरक्षित आश्रय अपील प्राप्त करता हुआ नजर आया है। उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं की मुद्राएं जिनका अमेरिकी डॉलर की मजबूती के कारण मूल्यहास हुआ था, उनमें पूंजीगत प्रवाहों के नवीकरण और रिस्क-ऑन निवेशकों की जोखिम उठाने की चाहत से हाल में अधिक स्थिरता आई है।

5. 31 मई 2017 से भारत के केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (सीएसओ) ने वर्ष 2016-17 की चौथी तिमाही के लिए राष्ट्रीय आय लेखा के तिमाही अनुमान, वर्ष 2016-17 के अनंतिम अनुमान और पिछले पांच वर्षों के पुनरीक्षण जारी किए। वर्ष 2016-17 के लिए वास्तविक सकल योजित मूल्य (जीवीए) 6.6 प्रतिशत रखा गया है, जो फरवरी 2017 में जारी दूसरे अग्रिम अनुमानों की तुलना में 0.1 प्रतिशत कम है। यह पुनरीक्षण निर्माण, वित्तीय और व्यावसायिक सेवाओं तथा स्थावर संपदा के संघटकों के लिए चौथी तिमाही में सेवा क्षेत्र में नीचे की ओर समायोजन करना है। कृषि और संबद्ध कार्यकलापों के अनुमानों को अपग्रेड किया गया है जिससे कि इस वर्ष में खाद्यान्न और बागवानी के हर समय के उच्च उत्पादन को सम्मिलित किया जा सके। उद्योग में जीवीए को भी पूर्ववर्ती अनुमानों की तुलना में अनंतिम अनुमानों में उच्चतर स्तर पर रखा गया है जिससे कि वर्ष 2011-12 पर पुनः आधारित नए औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) और थोक मूल्य सूचकांक के प्रभाव को दर्शाया जा सके। नए आंकड़े दर्शाते हैं कि वर्ष 2016-17 की पहली तिमाही की शुरुआत में उद्योग और सेवा दोनों क्षेत्रों में गतिविधियों में हुई मंदी चौथी तिमाही में स्पष्ट हो गई। इसके अलावा, वर्षभर की गतिविधियों में कमी के अंतर्निहित कारक हैं जो दूसरी तिमाही से परिचालनरत रहे हैं। समग्र मांग के संघटक चौथी तिमाही

में सकल स्थायी निवेश में कमी दर्शाते हैं, जो अग्रिम अनुमानों में दूसरी छमाही में देखे गए परिवर्तनों को अधोमुख (विपरीत) कर रहे हैं। यह नए आईआईपी में पूंजीगत वस्तुओं के उत्पादन की कमी में भी प्रतिलक्षित हुआ है। तथापि, निजी अंतिम उपभोग व्यय ने मजबूत वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि दर्ज की।

6. 9 मई को कृषि मंत्रालय (एमओए) ने खाद्यान्न उत्पादन के अपने तीसरे अग्रिम अनुमान जारी किए जिन्होंने वर्ष 2016-17 में हासिल उत्पादन के रिकार्ड स्तर की पुष्टि की और वास्तव में इन्हें ऊपरी ओर 273 मिलियन टन तक संशोधित किया। कृषि मंत्रालय ने 30 मई को फलों और सब्जियों के अपने दूसरे अग्रिम अनुमान भी प्रस्तुत किए और यह भी एक ऐतिहासिक रिकार्ड था। बंपर फसल से लाभ उठाते हुए वर्ष 2017-18 की पहली तिमाही में रबी उत्पादन अब तक पिछले वर्ष की तुलना में काफी उच्चतर रहा है, जो खाद्य भंडार की भरपाई करता है और इन्हें मई 2017 में 61.9 मिलियन टन तक पहुंचाता है, यह बफर मानदंड से तीन गुणा है। 6 जून को भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) ने सामान्य और सुवितरित दक्षिण-पश्चिम (जून-सितंबर) मानसून के अपने पूर्वानुमान की पुनः पुष्टि की जो कृषि संभावना के लिए अच्छी भविष्यवाणी है।

7. 12 मई को सीएसओ द्वारा जारी आईआईपी पर नई श्रृंखला क्षेत्र की अंतर्निहित संरचनात्मक गतिशीलता को बेहतर ढंग से अभिग्रहण करने के लिए, औद्योगिक गतिविधियों के कवरेज में सुधार, भारों का पुनर्निर्माण और उप-क्षेत्रों को पुनः वर्गीकृत करता है और सूचकांक पर ढेलेदार वस्तुओं के प्रभाव को कम करता है। नतीजतन, नई श्रृंखला के आधार पर 2016-17 के दौरान औद्योगिक उत्पादन में 5.0 प्रतिशत (पुरानी श्रृंखला में 0.7 प्रतिशत के मुकाबले) की वृद्धि हुई। चालू वित्त वर्ष की शुरुआत में, कोयला, कच्चे तेल और सीमेंट में संरचनात्मक बाधाओं और कम मांग के कारण संकुचन से अप्रैल में आठ प्रमुख उद्योगों का उत्पादन तेजी से घट गया। इसके अलावा, अपेक्षाकृत महंगे थर्मल उत्पादन मूल्य से घटी हुई मांग के कारण बिजली उत्पादन में कमी आई। इसके विपरीत, इस्पात के उत्पादन में निर्यात के कारण और उर्वरक में सामान्य तौर पर मानसून की अपेक्षाओं से वृद्धि हुई।

8. रिज़र्व बैंक के औद्योगिक आउटलुक सर्वेक्षण के अप्रैल दौर से उत्पन्न कारोबारी प्रत्याशा सूचकांक 2017-18 की दूसरी तिमाही में विनिर्माण क्षेत्र में आशावाद को दर्शाती है जो

ग्रामीण मांग, निर्यात और मुनाफा मार्जिन की बढ़ती उम्मीदों से प्रेरित है। दूसरी ओर, विनिर्माण क्रय प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) ने मई में क्रमिक रूप से सुधार हुआ क्योंकि अनुबंधित रोजगार और नए ऑर्डर घरेलू और निर्यात दोनों में गिरावट आई थी। हालांकि, सूचकांक विस्तार क्षेत्र में रहा और क्रमिक रूप से तीसरे महीने के लिए भविष्य के आउटपुट सूचकांक में तेजी आई।

9. अप्रैल में सेवा क्षेत्र में गतिविधि की उच्च आवृत्ति वास्तविक संकेतक मिश्रित कार्यनिष्पादन का संकेत देते हैं। परिवहन उप-क्षेत्र में, वायु और रेल द्वारा गाड़ी भाड़े में वृद्धि से गति बढ़ी, और शहरी मांग की निरंतरता की ताकत से यात्री कारों की बिक्री की गति बढ़ी। वाणिज्यिक वाहनों और तीन पहिया वाहनों की बिक्री में संकुचन हुआ, हालांकि, नए उत्सर्जन मानदंडों और प्रौद्योगिकी परिवर्तनों के प्रभाव एक हिस्से में प्रतिबिंबित हुए। दोपहिया वाहन बिक्री उदासीन रही, जो अभी भी मंद ग्रामीण मांग का संकेत देती है। संचार उप-क्षेत्र में, वॉयस और डेटा सेवाओं के ग्राहक आधार में एक मजबूत वृद्धि हुई। होटल, रेस्तरां और आतिथ्य उप-क्षेत्र में विदेशी पर्यटक आगमन और हवाई यात्री यातायात में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों यात्रियों की सहायता से निरंतर वृद्धि हुई। स्टील की खपत और सीमेंट के उत्पादन दोनों की गति हालांकि धीमी रही जो निर्माण गतिविधि में लगातार कमजोरी की ओर इशारा करती हैं। मई के लिए सेवा पीएमआई रोजगार पर आशावाद के साथ, अंतर्निहित मांग की स्थिति में सुधार को दर्शाते हुए, नए व्यवसाय में विस्तार के साथ नवम्बर 2016 से अपने उच्चतम स्तर तक पहुंचा।

10. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) में वर्ष-दर-वर्ष में होने वाले परिवर्तनों से परिकल्पित रिटेल मुद्रास्फीति अप्रैल में एक ऐतिहासिक निम्न स्तर पर पहुंची, एक बड़े आधारभूत प्रभाव से नीचे खींची गई जिसने उस गति को अभिभूत किया जो कि महीने के ऐतिहासिक रिकॉर्ड के मुकाबले कमजोर था। इस आश्चर्यजनक नरमी में दाल और सब्जियों की कीमतों में गिरावट के कारण खाद्य मुद्रास्फीति में तेज गिरावट अंतर्निहित थी। इसके अलावा, अनाज, अंडे, तेल और वसा और मसालों की कीमतों में सुधार से गति कम करने में योगदान दिया। दालों के मामले में, रकबा, खरीद, बफर स्टॉकिंग और आयात में विस्तार के कारण आपूर्ति में बड़े पैमाने पर वृद्धि से अगस्त 2016 से कीमतों में भारी गिरावट की शुरुआत हुई। मौसमी पैटर्न के मुताबिक मंडियों में काफी अधिक आवक की वजह

से, सब्जियों की कीमतों में जुलाई से स्पष्ट रूप से गिरावट आई जो विमुद्रीकरण के दौरान फायर सेल्स के साथ गिरावट को सुस्पष्ट करते हुए जनवरी 2017 में सबसे निचले स्तर पर पहुंची। आम तौर पर पूर्व मानसून के महीनों में मौसमी उपचैतन्य अब तक मौन साधे हुए है। इसके विपरीत, ईंधन समूह में मुद्रास्फीति बोर्ड को पार कर गई है। तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (एलपीजी) और केरोसीन की कीमतें अंतरराष्ट्रीय कीमतों के समर्थन में बढ़ गईं, जबकि सब्सिडी को कैलिब्रेटेड कमी के रास्ते पर सेट किया गया। ग्रामीण घरों द्वारा उपयोग किए जाने वाले ईंधन में लगातार तीसरे महीने में वृद्धि हो गई, जिससे ग्रामीण और शहरी परिवारों के बीच ईंधन महंगाई के मुकाबले के बीच का अंतर कम हो गया। इन घटनाओं के जवाब में, रिज़र्व बैंक द्वारा किए गए परिवारों की मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं के सर्वेक्षणों में आगामी तीन महीनों और एक वर्ष आगे की प्रत्याशाओं के मुताबिक, महंगाई की उम्मीदें में मामूली कमी दर्ज की गई है।

11. खाद्य और ईंधन को छोड़कर, मुद्रास्फीति एक महीने पहले से 60 आधार अंकों से घटकर 4.4 प्रतिशत हो गई। पिछले महीने में अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों में नरमी को कम करने के लिए अप्रैल में घरेलू पेट्रोल और डीजल की कीमतों में देरी से और संचयी निम्न स्तरीय समायोजन अन्य कारकों में से एक था। परिवहन और संचार, शिक्षा, मनोरंजन और स्वास्थ्य में अंतर्निहित सेवाओं के संबंध में मुद्रास्फीति में सुधार हुआ। औद्योगिक आउटलुक सर्वेक्षण और विनिर्माण और सेवाओं के लिए पीएमआई से संकेत मिलता है कि मूल्य निर्धारण शक्ति कमजोर बनी हुई है।

12. विमुद्रीकरण के बाद बैंकिंग प्रणाली में अतिरिक्त चलनिधि को अप्रैल और मई में रु. 1.5 ट्रिलियन की नई परिचालनगत मुद्रा की मात्रा में कमी किए जाने के बावजूद सरकार द्वारा अत्यधिक व्यय के कारण प्रणाली में चलनिधि का पुनःअंतर्वेशन हुआ। इसके कारण बैंकिंग प्रणाली में समग्र अतिरिक्त चलनिधि का दैनिक औसत बढ़कर अप्रैल में रु. 4.2 ट्रिलियन और मई में रु. 3.5 ट्रिलियन हो गया। बैंकों ने मार्च-अंत से संबंधित तुलन-पत्रों में संशोधन के लिए जिस अतिरिक्त आरक्षित निधि का प्रयोग किया था उसे वापस करने के कारण भी रु. 0.8 ट्रिलियन की अतिरिक्त चलनिधि जमा हुई। इन गतिविधियों के संदर्भ में रिज़र्व बैंक की चलनिधि कम करने संबंधी परिचालनों और इनके फलस्वरूप मुद्रा बाजार दरों पर पड़ने वाले अधोगामी दबाव के अंतर्गत निम्नलिखित शामिल हैं -

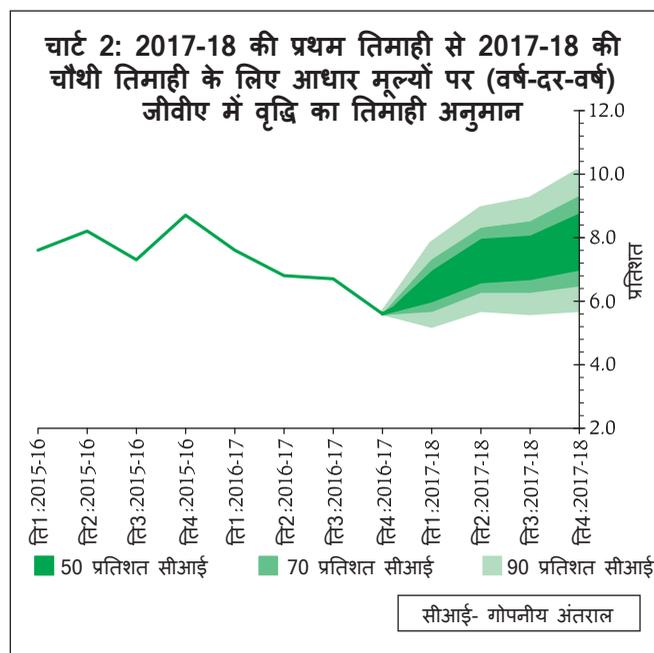
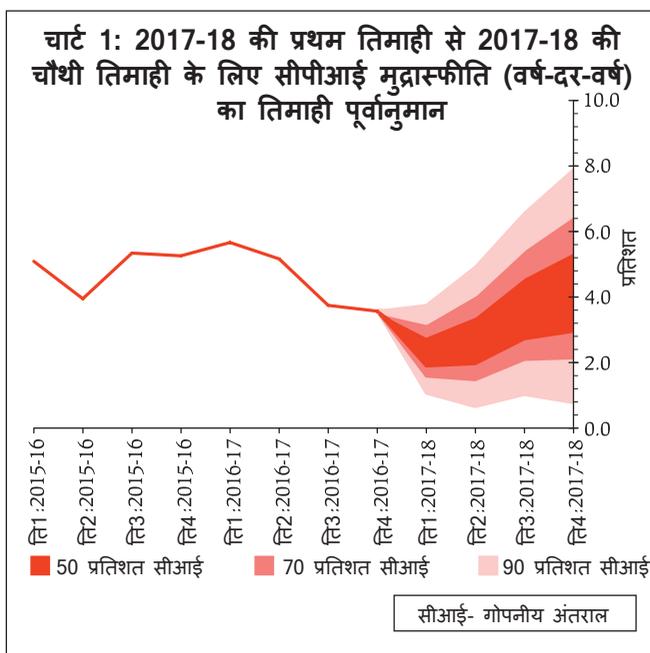
बाजार स्थिरता योजना (एमएसएस) के तहत 312 दिवसीय से 329 दिवसीय अवधि के खजाना बिलों (टीबी) के निर्गमन के माध्यम से अधिग्रहीत रु.1 ट्रिलियन की राशि, रु. 0.7 ट्रिलियन के नगदी प्रबंध बिलों (सीएमबी) की नीलामी, जिसकी शुरुआत सरकार के नकद शेष में कमी के कारण हुई, तथा अलग-अलग अवधि के परिवर्तनशील दर वाले रिवर्स रेपो नीलामी हुई जिसके कारण शेष अतिरिक्त चलनिधि का औसत अप्रैल में 3.8 ट्रिलियन और मई में रु. 3.4 ट्रिलियन हो गया। अप्रैल 2017 में चलनिधि समायोजन सुविधा (एलएएफ) के दायरे के +/- 50 आधारभूत अंकों से घटकर +/-25 आधारभूत अंक रह जाने से इन परिचालनों से यह सुनिश्चित हुआ कि भारत औसत हाजिर मुद्रा दर (डब्लूएसीआर), जो मौद्रिक नीति का परिचालनगत लक्ष्य होता है, का कारोबार निर्धारित सीमा के भीतर हो। डब्लूएसीआर और नीतिगत रेपो दर के बीच का जो अंतर मार्च-अप्रैल में 29-32 आधारभूत अंक का था वह मई में घटकर 21 आधारभूत अंक रह गया।

13. वैश्विक व्यापार के माहौल में हो रहे धीमे सुधार के साथ मार्च और अप्रैल 2017 में व्यापारिक माल के निर्यात में द्वि-अंकीय वृद्धि हुई। इस वृद्धि में 80 प्रतिशत योगदान अभियांत्रिकीय वस्तुओं, पेट्रोलियम उत्पादों, रत्नों एवं आभूषणों, सिले-सिलाए कपड़ों और रसायनों का रहा। घरेलू मांग के चलते व्यापारिक माल के आयात में भी तेजी से वृद्धि हुई। अमेरिकी डॉलर में व्यक्त करें तो यह वृद्धि 2011 के स्तर से उछाल के साथ 47.2 प्रतिशत हो गई। पेट्रोलियम और उसके उत्पादों के आयात में मूल्य प्रभाव के कारण तेजी से वृद्धि हुई, क्योंकि ओपेक देशों द्वारा उत्पादन में कमी के कारण कच्चे तेल के मूल्यों में सुधार हुआ। मात्रा की दृष्टि से स्वर्ण आयात में भी वृद्धि हुई। इसका प्रारंभिक कारण तो मौसमी और त्योहारी मांग रही किंतु बाद में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) लागू किए जाने के पूर्वाभास के साथ स्वर्ण संचयन इसका कारण रहा। मार्च एवं अप्रैल में हुई कुल आयात वृद्धि में गैर-तेल गैर-स्वर्ण आयात का योगदान कुल आयात वृद्धि का लगभग आधा रहा। इससे इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं, मोतियों और कीमती पत्थरों, कोयला, मशीनरी तथा मशीनी उपकरणों के लिए विदेशी बाजारों पर अपेक्षाकृत अधिक निर्भरता का पता चलता है। आयात वृद्धि के निर्यात वृद्धि की तुलना में काफी अधिक रहने के कारण व्यापार घाटा काफी बढ़ा। वर्ष 2016-17 के लिए चालू खाता घाटे (सीएडी) का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 01 प्रतिशत से कम रहने की संभावना है। ठीक पिछली

तिमाही से भिन्न, अप्रैल-मई 2017 में पूंजी प्रवाह में विदेशी संविभाग निवेश (एफपीआई) का प्रभुत्व रहा। इसका कारण वृद्धि की वैश्विक संभावनाओं में सुधार होने से निवेशक की जोखिम संबंधी भावनाओं में परिवर्तन रहा। संघ के बजट में कराधान के मामलों में स्पष्टता भी आई और राज्य के निर्णायक चुनाव परिणामों से भी संरचनागत सुधारों में तेजी आने की संभावना बलवती हुई। 2 जून 2017 की स्थिति के अनुसार विदेशी मुद्रा आरक्षित निधि 381.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर रही।

संभावना

14. फरवरी और मार्च में मजबूती से निर्मित हो रहे पथ से मुद्रास्फीति के अचानक काफी विपथन होने से बहुत से मुद्दे उत्पन्न हो गए हैं जिनका ध्यान मुद्रास्फीति की संभावना व्यक्त करते वक्त रखा जाना होगा। प्रथम, इस बात का आकलन करने की आवश्यकता है कि अप्रैल में असामान्य रूप से निम्न स्तर पर रही मुद्रास्फीति बनी रहती या नहीं। द्वितीय, दालों के मूल्य में कमी स्पष्ट रूप से रिकॉर्ड उत्पादन एवं आयात के कारण आपूर्ति की प्रचुरता के प्रभाव से हुई है। मूल्यों में वृद्धि को नियंत्रित रखने के लिए खुले व्यापार की उपलब्धता सहित नीतिगत हस्तक्षेपों की परिकल्पना की जा सकती है। तृतीय, अप्रैल में प्रभावशील रहे पेट्रोल और डीजल के मूल्यों में संचयी अधोगामी समायोजन को 01 जून को व्यापक रूप से वापस ले लिया गया है। चतुर्थ, बढ़ती ग्रामीण मजदूरी एवं खपत की मजबूत मांग के मद्देनजर खाद्य एवं ईंधन को छोड़कर मुद्रास्फीति में कमी क्षणिक हो सकती है। इस प्रकार से, मुद्रास्फीति के अप्रैल के स्तर ने उभरते मुद्रास्फीति पथ की अनिश्चितता को, विशेषरूप से निकट महीनों में, काफी बढ़ा दिया है। यदि अप्रैल में स्पष्ट रूप से देखी गई स्थिति बनी रहती है तो मुख्य मुद्रास्फीति के, नीतिगत हस्तक्षेपों के बिना, वर्ष के पूर्वार्द्ध में 2.0-3.5 प्रतिशत के दायरे में रहने और उत्तरार्द्ध में 3.5-4.5 प्रतिशत के दायरे में रहने का अनुमान है। जोखिम संतुलन बना हुआ है, हालांकि जोखिम की उत्पत्ति पर मानसून के स्थानिक और सामयिक वितरण तथा सरकार के प्रभावी खाद्य नियंत्रण की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। बड़े कृषि ऋणों की माफी की घोषणा के साथ ही राजकोषीय कमी के जोखिम में वृद्धि हुई है, जो मुद्रास्फीति के फैलने वाले प्रभावों को सामान्यरूप से अपरिहार्य बना देती है। वर्तमान स्थिति में, आयातित मुद्रास्फीति के रूप में परिणत



होने वाले वैश्विक राजनैतिक और वित्तीय जोखिम तथा 7वें वेतन आयोग की अनुसंशाएं लागू होने से भत्तों का आहरण किया जाना ऊर्ध्वगामी जोखिम हैं। 7वें वेतन आयोग की अनुसंशाएं लागू किए जाने की तारीख की अभी तक घोषणा नहीं की गई है और इसलिए आधारभूत अनुमानों की गणना में इसे शामिल नहीं किया गया है। जीएसटी लागू किए जाने का समग्र मुद्रास्फीति पर कोई खास असर पड़ने की संभावना नहीं है।

15. 2016-17 से संबंधित केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ) के अनंतिम अनुमानों के साथ, जोखिम को बराबर संतुलित करते हुए 2017-18 से संबंधित वास्तविक सकल योजित मूल्य (जीवीए) की वृद्धि को संशोधित करते हुए उसमें तदनुसार 10 आधारभूत अंकों की कमी कर दी गई है, जिसके अप्रैल 2017 में 7.3 प्रतिशत रहने का अनुमान व्यक्त किया गया था। जारी पुनर्मुद्रास्फीति से विवेकपूर्ण उपभोक्ता व्यय, विशेषरूप से अर्थव्यवस्था के नगद राशि की प्रधानता वाले क्षेत्र में, की बहाली होनी चाहिए। इसके अलावा, विमुद्रीकरण के बाद बैंकों की ऋण दरों में कमी किए जाने से हाउसहोल्ड तथा सहज कॉर्पोरेटों की खपत एवं निवेश -दोनों मांग में सहायता मिलनी चाहिए। साथ ही, सरकारी व्यय मजबूत स्तर पर बना हुआ है, जिससे अर्थव्यवस्था के अन्य घटकों में हुई कमी के प्रभाव को कम करने में मदद मिली है। संघ के बजट में किए गए प्रस्तावों को लागू किए जाने के परिणामस्वरूप निजी स्थान

के संग्रह में वृद्धि होना चाहिए क्योंकि जीएसटी, शोधअक्षमता और दिवालियापन कोड सहित संरचनागत सुधारों को लागू किए जाने और विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड को समाप्त किए जाने से कारोबारी माहौल में सुधार होगा। घरेलू अर्थव्यवस्था को सहायता प्रदान करने में बाहरी मांग को मजबूत बनाए जाने की अधिक निर्णायक भूमिका रहने की संभावना है। इसके साथ ही, नए आईआईपी से औद्योगिक गतिविधि को मान्यता मिलने की संभावना बढ़ गई है। कमी की ओर नजर डालें तो, वैश्विक राजनैतिक जोखिम उच्च स्तर पर बना हुआ है और यह फलीभूत हो सकता है। द्वितीय, निक्षेप लागत बढ़ने और मजदूरी में वृद्धि होने से फर्मों की लाभप्रदता पर असर पड़ सकता है, जिससे सकल योजित मूल्य की समग्र वृद्धि में कमी हो सकती है। तृतीय, लीवरेज्ड कॉर्पोरेट क्षेत्र और दबावग्रस्त बैंकिंग क्षेत्र के ऊपर दोहरे तुलन-पत्र की समस्या के कारण निजी निवेश की मांग की बहाली में विलंब हो सकता है।

16. मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) ने नोट किया कि प्राप्त हो रहे आंकड़ों से विशिष्ट खाद्य वस्तुओं से संबंधित मूल्य निर्धारण से संबंधित, जो फलों एवं सब्जियों, दालों और अनाजों से संबंधित अतिरेक आपूर्ति की परिस्थितियों के बीच उलझी हुई है; विमुद्रीकरण के अस्थायी प्रभाव बने रहने का पता चलता है। हालांकि, इसके साथ ही, राष्ट्रीय आय लेखा तथा औद्योगिक उत्पादन से संबंधित सीएसओ के नवीनतम आंकड़ों से विमुद्रीकरण के प्रभावों का अपेक्षाकृत व्यापक अर्थव्यवस्था

के क्षेत्र विशेष पर और अस्थायी असर होने के साथ ही साथ निजी उपभोग की नोट करने योग्य लचीलेपन की पुष्टि होती है। इस स्थिति में, इन कारकों को अलग छोड़ने या उनके बने रहने की शक्ति का आकलन करना मुश्किल काम है। वर्ष के गुजरने के साथ, अंतर्निहित मुद्रास्फीति के दबाव, विशेषरूप से निविष्टि लागत, मजदूरी और आयातित मुद्रास्फीति, की बारीकी से और निरंतर निगरानी की जानी होगी।

17. इस बात को नोट करते हुए कि नवंबर 2016 के बाद से मुद्रास्फीति 4 प्रतिशत से निम्न स्तर पर सिर्फ अभी आई है, एमपीसी ने उत्पादन अंतराल को ध्यान में रखते हुए स्थायी आधार पर मुख्य मुद्रास्फीति को 4 प्रतिशत के करीब बनाए रखने की अपनी प्रतिबद्धता पर ध्यान केंद्रित किया है। अर्थव्यवस्था की वर्तमान अवस्था ने निजी निवेश को पुनरुज्जीवित करने, बैंकिंग क्षेत्र की सेहत को बहाल करने और आधारभूत संरचनागत अड़चनों को दूर करने को रेखांकित किया है। मौद्रिक नीति अधिक प्रभावी भूमिका तभी अदा कर सकती है जब ये कारक यथास्थान हों। इस अवस्था में कोई अपरिपक्व कार्रवाई किए जाने से बाद में बाधाकारी नीतिगत

बहाली और विश्वसनीयता पर जोखिम उत्पन्न हो सकता है। तदनुसार, एमपीसी ने तटस्थ रवैया अपनाते हुए नीतिगत दर अपरिवर्तित रखने और आने वाले आंकड़ों पर नजर रखने का निर्णय लिया है।

18. बैंकों के तुलन-पत्रों पर पड़ने वाले दबाव के मुद्दे को सुलझाने के लिए रिज़र्व बैंक, सरकार के साथ कार्य जारी रखेगा। लघु बचतों पर ब्याज, प्रशासित ब्याज दरों और बाजार की दरों के बीच बेहतर समायोजन किए जाने तथा उत्पाद क्षेत्रों को पर्याप्त ऋण प्रदान करने की सुविधा प्रदान करने के लिए बैंकों की पुनर्पूजीकरण को मजबूत बनाया जाना पूर्ण करने से संबंधित महत्वपूर्ण कदम हैं।

19. पांच सदस्य मौद्रिक नीति के निर्णय के पक्ष में थे, जबकि डॉ. रवींद्र एच. ढोलकिया निर्णय के पक्ष में नहीं थे। एमपीसी की बैठक के कार्यवृत्त 21 जून 2017 तक प्रकाशित किए जाएंगे।

20. एमपीसी की अगली बैठक 1 एवं 2 अगस्त 2017 को होगी।

मौद्रिक नीति वक्तव्य, 2017-18

विकासात्मक और विनियामकीय नीतियों पर वक्तव्य

विकासात्मक और विनियामकीय नीतियों पर वक्तव्य

यह वक्तव्य बैंकिंग विनियामकीय ढांचे को मजबूत बनाने के लिए समष्टि-विवेकपूर्ण उपाय तथा विदेशों में बॉन्ड निर्गमों के संबंध में दिशानिर्देश प्रस्तुत करता है।

I. सांविधिक चलनिधि अनुपात में कमी (एसएलआर)

मौजूदा रूपरेखा के अनुसार, वाणिज्यिक बैंकों को 1 जनवरी 2019 तक 100 प्रतिशत का न्यूनतम चलनिधि कवरेज अनुपात (एलसीआर) पर पहुंचना है। बैंकों द्वारा न्यूनतम एसएलआर अपेक्षा से अधिक धारित सरकारी प्रतिभूतियां, चलनिधि कवरेज अनुपात के लिए चलनिधि का लाभ उठाने की सुविधा (एफएलएलसीआर) और सीमांत स्थायी सुविधा (एमएसएफ) को उच्च गुणवत्ता चलनिधि आस्तियों (एचक्यूएलए) के स्टॉक में शामिल किया गया है। एक सक्षम तरीके में एलसीआर अपेक्षा का अनुपालन करने के लिए बैंकों को अधिक लचीलापन उपलब्ध कराने हेतु यह निर्णय लिया गया है कि एसएलआर को 24 जून 2017 से शुरू होने वाले पखवाड़े से एनडीटीएल के 20.5 प्रतिशत से घटाकर 20.0 प्रतिशत कर दिया जाए। एलसीआर प्रयोजन के लिए

एसएलआर से प्राप्त एफएलएलसीआर और एमएसएफ के संबंध में अन्य निर्धारण अपरिवर्तित रहेंगे।

चूंकि वर्तमान में एसएलआर अपेक्षा सभी बैंकों में एक समान है, प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंक, राज्य और मध्यवर्ती सहकारी बैंक भी 24 जून 2017 से शुरू होने वाले पखवाड़े से एसएलआर एनडीटीएल का 20.0 प्रतिशत बनाए रखेंगे।

II. आवास ऋणों के लिए जोखिम भार में कमी

आवास क्षेत्र के महत्व पर विचार करते हुए और अर्थव्यवस्था से इसके अग्र और पश्चवर्ती लिंकेजों को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है कि प्रतिचक्रीय उपाय के रूप में आज और बाद में स्वीकृत किए जाने वाले आवास ऋणों की कतिपय श्रेणियों पर जोखिम भार कम किया जाए। यह भी निर्णय लिया गया है कि ऐसे ऋणों पर मानक आस्ति प्रावधानीकरण दर भी कम किया जाए।

III. विदेशों में रुपया मूल्यवर्गांकित बॉन्डों का निर्गम

विदेशों में रुपया मूल्यवर्गांकित बॉन्डों का ढांचा कुछ समय से परिचालन में है। मौजूदा ढांचे के विभिन्न पैरामीटरों को ईसीबी दिशानिर्देशों के अनुरूप बनाने की दृष्टि से यह निर्णय लिया गया है कि परिपक्वता अवधि, समग्र लागत सीमा तथा रुपया मूल्यवर्गांकित बॉन्डों के निर्गम के लिए मान्यताप्राप्त निवेशकों से संबंधित प्रावधान संशोधित किए जाएं।

भाषण

बैंकों में ग्राहक सेवा : मानक उंचे करने का समय
एस.एस.मूंदड़ा

बैंकों में ग्राहक सेवा : मानक ऊंचे करने का समय* एस.एस.मूंदड़ा

भारतीय बैंकिंग कोड और मानक बोर्ड के अध्यक्ष श्री ए.सी.महाजन; इसी के सीईओ श्री आनंद अरस; बैंकिंग जगत के सहकर्मियों; मीडिया के प्रतिनिधियों; देवियों और सज्जनों! सबसे पहले तो मैं बीसीएसबीआई को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने बैंकों में कार्यरत प्रधान संहिता-अनुपालन अधिकारियों के इस वार्षिक सम्मेलन में मुझे आमंत्रित किया।

2. विगत 12 वर्ष के दौरान बीसीएसबीआई ने बैंकों में ग्राहक सेवा के बारे में जागरूकता को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई है। ग्राहकों के प्रति बैंकों की वचनबद्धता-संहिता और सूक्ष्म तथा लघु उद्यमों के प्रति बैंकों की वचनबद्धता संहिता - इन दोनों संहिताओं में बीसीएसबीआई द्वारा बैंकों में ग्राहक सेवा के न्यूनतम सामान्य मानक निर्धारित किए गए।

3. सदस्य बैंकों द्वारा इन संहिताओं के अनुपालन की निगरानी करना बीसीएसबीआई के अनिवार्य कार्यों में से एक है, और इसे पूरा करने के लिए बीसीएसबीआई के प्राधिकृत प्रतिनिधियों द्वारा कुछ प्रतिनिधि शाखाओं का दौरा किया जाता है। इस प्रकार बीसीएसबीआई इन बैंकों की मदद उन परिपाटियों के अनुपालन पर स्वतंत्र समीक्षा और फीडबैक देकर करता है, जो परिपाटियाँ बैंकों ने स्वयं के लिए निर्धारित की हैं। सन 2013 से ही बीसीएसबीआई द्वारा शाखाओं के दौरों और ग्राहकों के फीडबैक से मिले इनपुट के आधार पर संहिता अनुपालन के संबंध में बैंकों की रेटिंग की जाती रही है। इस रेटिंग में इन संहिताओं के खास प्रावधानों को लागू करने के स्तर को बताया जाता है, जो बैंक में ग्राहक के साथ प्रथम सम्पर्क स्थल पर होता है। अब इन रेटिंग को जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का मंतव्य है ताकि पारदर्शिता को बढ़ाया जा सके, जनता को जागरूक किया जा सके और सदस्य बैंकों के बीच ग्राहक सेवा के उच्चतर स्तर को प्राप्त करने हेतु स्पर्धा की भावना पैदा की जा सके। हालांकि रेटिंग का अवलोकन करने से यह प्रकट नहीं होता है कि बैंकों की ग्राहक सेवा रेटिंग

* भारतीय बैंकिंग कोड और मानक बोर्ड द्वारा 30 मई 2017 को मुंबई में कार्यरत प्रधान संहिता अनुपालन अधिकारियों के वार्षिक सम्मेलन में श्री एस. ए. मूंदड़ा, उप गवर्नर द्वारा दिया गया भाषण।

में कोई खास सुधार हुआ है। बीसीएसबीआई द्वारा रेटिंग किए गए 46 बैंकों में से केवल 12 बैंकों को कार्यनिष्पादन की दृष्टि से 'उच्च' रेटिंग मिली, जबकि 24 को औसत से ऊपर मिली और 10 बैंकों ने 'औसत' कार्यनिष्पादन किया। वस्तुतः सन 2015 के सर्वे के बाद से स्थिति में मामूली सी गिरावट ही रही है।

4. ग्राहकों के प्रति बैंकों की वचनबद्धता को संहिताबद्ध करके ग्राहक सेवा के लिए न्यूनतम मानकों की रूपरेखा तय कर देने के बावजूद हमने पाया है कि बैंकिंग लोकपाल कार्यालयों (बीओ) में प्राप्त हो रही शिकायतों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। सन 1995 में बैंकिंग लोकपाल की स्थापना के बाद से देखें तो विगत साल पहली बार ऐसा हुआ है कि बैंकिंग लोकपाल कार्यालयों में प्राप्त होने वाली शिकायतों की संख्या एक लाख को पार कर गई। इस साल (जुलाई 2016 से मई 2017) तो एक लाख की यह संख्या पहले ही पूरी हो चुकी है। हमारे विश्लेषण से प्रकट होता है कि सन 2010-11 से 2015-16 के दौरान छह साल की अवधि में बीसीएसबीआई संहिता- बैंकिंग लोकपाल योजना के परिच्छेद 8(1) (एस) और 8(2)(डी) का अनुपालन नहीं करने से सम्बन्धित शिकायतों का प्रतिशत 24 से बढ़कर 34 हो गया है। बीसीएसबीआई द्वारा किए गए एक सर्वे में ऐसा पता चला है कि यह बढ़ोतरी सदस्य बैंकों के अग्रिम पंक्ति के स्टाफ में इन संहिताओं की समझ और अनुप्रयोग में असम्बद्धता के कारण है। शायद, इन संहिताओं को अपने-अपने बैंकों में लागू करने में शीर्षस्थ प्रबंधन वर्ग की सक्रियता में भी कमी आई है। मैं पीसीसीओ से जोर देकर कहूँगा कि शीर्षस्थ प्रबंधनवर्ग भी पर्याप्त रुचि लेते हुए अग्रिम पंक्ति के स्टाफ में अधिकाधिक जागरूकता और समझ पैदा करने के लिए प्रभावी कदम उठाएँ।

5. आपने आज के अभिभाषण में मेरा प्रयास कुछ उन प्रमुख उपायों पर फोकस करने का है, जिन्हे (बीसीएसबीआई, पीसीसीओ और बैंकों द्वारा आरंभ किया जा सकता है, ताकि इस क्षेत्र में ग्राहक सेवा के निम्नलिखित सिद्धान्तों को आगे बढ़ाया जा सके।

क. संहिताओं को नवीनतम बनाना - मुझे ज्ञात है कि बीसीएसबीआई द्वारा समय-समय पर बैंकिंग क्षेत्र के संगत दिशानिर्देशों, गतिविधियों को शामिल करते हुए और ग्राहकों की अपेक्षाओं को समाहित करते हुए बैंकों की वचनबद्धता संहिता की नवीकृत किया जाता है। मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि

ग्राहकों के प्रति बैंकों की वचनबद्धता संहिता की इस समय समीक्षा चल रही है। आपको ज्ञात ही होगा कि सन 2014 में रिज़र्व बैंक ने 'ग्राहक-अधिकारों का चार्टर' जारी किया था, जिसमें बैंकों के ग्राहकों के संरक्षण हेतु व्यापक, परिव्यापी सिद्धान्तों के रूप में बैंक-ग्राहकों के पाँच मूलभूत अधिकारों की घोषणा की गई थी। तब से आईबीओ और बीसीएसबीआई द्वारा संयुक्त रूप से निरूपित इस चार्टर के आधार पर सभी बैंकों ने "आदर्श ग्राहक अधिकार-नीति" को स्वीकार/समाहित कर लिया है। मुझे विश्वास है कि ग्राहकों के प्रति बैंकों की वचनबद्धता-संहिता की समीक्षा करने वाली समिति 'ग्राहक अधिकार चार्टर' में बताए गए सिद्धान्तों के मूल तत्व से प्रेरणा प्राप्त करेगी। रिज़र्व बैंक भी अपनी तरफ से पर्यवेक्षी प्रक्रिया के दौरान इस चार्टर के उल्लंघन करने/अनुपालन नहीं करने की निगरानी करेगा। मैं समिति से यह खासतौर पर जोर देकर कहूँगा कि इस क्षेत्र में हाल ही की निम्नलिखित गतिविधियों पर ध्यान देते हुए समीक्षा के दौरान इन्हें संहिताओं में शामिल किया जाए :

(i) शाखा प्राधिकृतिकरण की नई नीति : बैंकिंग प्रतिनिधि का प्रयोग

वित्तीय समावेशन, खासकर बैंक रहित/अल्प बैंकवाले क्षेत्रों के लिए कारोबारी प्रतिनिधि (बीसी) मॉडल एक प्रमुख सुविधा प्रदाता रहा है। 'शाखा प्राधिकृतिकरण नीति को औचित्यपूर्ण बनाने' के बारे में रिज़र्व बैंक के हाल ही के परिपत्र में देश के कम-बैंक वाले क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करने में बीसी की भूमिका को स्वीकार किया गया है। बैंकिंग प्राणाली ने बीसी पर जो भरोसा किया उस भरोसे को कुछ बीसी ने तोड़ा और अपने ग्राहकों से धोखाधड़ी की। चूँकि बीसी सामान्यतया 'वित्तीय साक्षरता' की कमी वाले लोगों को साथ व्यवहार करते हैं, इसलिए बैंकों को चाहिए कि बीसी के क्रियाकलापों पर बारीक नजर रखें। बैंकों का उन कारोबारी प्रतिनिधियों का स्वामित्व लेना होगा जिन्हें वे नियोजित करते हैं और जिन मामलों में ये लोग शामिल हैं उनसे जुड़ी शिकायतों का निपटारा करने उचित व्यवस्था करनी होगी।

(ii) एमएसएमई : भारत सरकार के अध्यादेश का अनुसरण करते हुए भारतीय रिज़र्व बैंक ने हाल ही में "सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के पुनरुत्थान और पुनर्वासन हेतु व्यवस्था" विषय पर दिशानिर्देश निर्धारित किए हैं ताकि एमएसएमई के खातों पर पड़ रहे दबाव का जल्दी से समाधान किया जा सके। इस व्यवस्था के तहत 25 करोड़ रुपए तक की ऋण-सीमा वाली एमएसएमई का पुनरुत्थान और पुनर्वासन करने की कल्पना की गई है। इसके अलावा अपने जीवन-चक्र के दौरान वित्तीय कठिनाइयों का सामना कर रही एमएसएमई को समय रहते वित्तीय सहायता प्रदान करने की दृष्टि से रिज़र्व बैंक ने बैंकों को सूचित किया है कि वे अपनी ऋण देने की अपनी विद्यमान नीतियों की समीक्षा करें और उनमें अन्य तथ्यों के साथ-साथ सावधि-ऋणों के मामले में समर्थक क्रेडिट सुविधा, अतिरिक्त कार्यशील पूँजी सीमा की मंजूरी के लिए प्रावधानों और नियमित कार्यशील पूँजी सीमाओं की मध्यावधि समीक्षा और क्रेडिट-निर्णयों की समयबद्धता को प्रावधान करें।

ख. बैंकों में पीसीसीओ और आंतरिक बैंकिंग लोकपालों (आईबीओ) में तालमेल करना - जैसा कि मैं समझता हूँ, बैंकिंग क्षेत्र में ग्राहक-शिकायत निवारण व्यवस्था कई प्रकार की संरचनागत असंगतियों से ग्रस्त है। मैं यह बात कहने को बाध्य हूँ, बैंकों में पीसीसीओ और आईबीओ जिस तरह से परिचालन करते हैं, उसमें भूमिका को स्पष्ट करने और तालमेल बनाने की काफी गुंजाइश है। मेरा विश्वास है कि सदस्य बैंकों में पीसीसीओ का कार्य बीसीएसबीआई के लिए नोडल सम्पर्क स्थल की तरह है और बैंकों में सभी स्तरों पर इस संहिता के कार्यान्वयन की निगरानी करने हेतु बीसीएसबीआई की विस्तारित भुजा के तौर पर कार्य कर रहे पीसीसीओ को अधिक संरक्षक भूमिका निभानी चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि **पदानुक्रम में पीसीसीओ पर्याप्त रूप से वरिष्ठ हो और सीधे ही सीईओ / बोर्ड की ग्राहक सेवा समिति को रिपोर्ट करें।** हालांकि मैं समझता हूँ कि वर्तमान में यह व्यवस्था एकसमान नहीं है।

इसी प्रकार बैंकों में लगभग दो साल से जो आंतरिक बैंकिंग लोकपाल के कार्यालय स्थापित हुए वे भी कोई प्रभावी मंच नहीं बन पाये हैं। आईबीओ कार्यालय को संस्थागत रूप देने का हमारा प्रयास यह सुनिश्चित करने के लिए था कि अधिकांश शिकायतों को बैंक के स्तर पर ही निपटा दिया जाए। आईबीओ कार्यालय के लिए यही सोचा गया था कि यह सर्वोच्च प्राधिकारी होगा जिसके पास सभी अनसुलझी /आंशिक रूप से सुलझाई गई शिकायतों को लाया जाएगा और फिर शिकायतकर्ता को अंतिम फैसला दिया जाएगा। ग्राहक को केवल उन्ही मामलों में बैंकिंग लोकपाल के पास जाने की जरूरत पड़े, जिन मामलों के समाधान से वह असंतुष्ट हो। बीओ के पास पहुँचने वाली शिकायतों में लगातार बढ़ती शायद इस बात का संकेत है कि **आईबीओ बहुत प्रभावी नहीं हैं या फिर प्रबंधन वर्ग ने इन्हे पर्याप्त शक्ति नहीं दी है।**

बैंकों के लिए यह उचित होगा कि एक ऐसी दक्ष तकनीकी व्यवस्था के लिए कुछ निवेश करें जो न केवल शिकायतों का समेकन और शिकायतों की निगहबानी करे बल्कि प्राप्त हुई विभिन्न शिकायतों के मूल कारणों का विश्लेषण भी करे, इससे एक सक्रिय संरक्षक कार्यवाही संभव हो सकेगी। पीसीसीओ और आईबीओ मिलकर ऐसे क्षेत्रों की शिनाख्त करें, जहाँ अग्रिमपंक्ति के स्टाफ को परिचालन संबंधी स्पष्ट अनुदेश चाहिए, तथा उन्हें प्रशिक्षण/सतत सहायता प्रदान की जाए। ऐसे परिदृश्य में यह निहायत ही महत्वपूर्ण है, जहां स्टाफ अलगाव/स्टाफ रोटेशन उल्लेखनीय रूप से बढ़ चुका है। प्रौद्योगिकी-समर्थित प्रायः पूछे गए सवालियों के लिए प्लेटफॉर्म हेतु भी निवेश किया जा सकता है ताकि ग्राहकों के सवालियों के लिए अग्रिम पंक्ति का स्टाफ वहां परामर्श करे और ग्राहकों को गलत जानकारी देने से बचा जाए।

मुझे लगता है कि शायद **पीसीसीओ के लिए भी कुछ अनिवार्य अर्हताएँ** निर्धारित करने का समय आ चुका है, वैसे ही जैसे मुख्य वित्तीय अधिकारियों /मुख्य

तकनीकी अधिकारियों के लिए की जाती है। इसे देखते हुए रिज़र्व बैंक द्वारा पर्यवेक्षी दौर के समय आईबीओ की दक्षता का आकलन किया जाएगा और बैंक प्रबंधन से यह अपेक्षा रहेगी कि पीसीसीओ और आईबीओ के कार्यचालन में कुछ अधिक तालमेल लाया जाए ताकि शिकायतों का निवारण तेजी से और कुशलता-पूर्वक किया जा सके।

ग. इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग - सुरक्षा-समस्याएं

हाल ही के वर्षों में बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करने में प्रौद्योगिकी का प्रयोग बढ़ता गया है। हालांकि इसके साथ सुरक्षा संबंधी कुछ जोखिम भी आ गए हैं, जो इस बात से स्पष्ट है कि विगत समय में कुछ काफी बड़े सायबर-अपराध हुए हैं। व्यक्तिगत जानकारी की चोरी, एटीएम के जरिए धोखाधड़ी, नेट-बैंकिंग धोखाधड़ी, एटीएम/डेबिट कार्ड जालसाजियां या बैंक के सर्वर तक अप्राधिकृत पहुँच जैसी कई घटनाएँ हुई हैं। इसलिए तत्काल जरूरत इस बात की है कि तकनीक-सक्षम सेवा प्रदान करने में सभी खामियों और कमजोरियों को दूर किया जाए।

डिजिटल बैंकिंग पर अधिकाधिक जोर, खासकर निर्दिष्ट बैंक नोटों की विधिमान्य हैसियत समाप्त करने के कारण पैदा हुई स्थिति और अप्राधिकृत/कपटपूर्ण लेनदेन से संबंधित शिकायतों में बढ़ती को देखते हुए यह जरूरी हो जाता है कि ग्राहकों की देयता को सीमित करने हेतु समेकित नीति बनाने की जरूरत को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। भारतीय रिज़र्व बैंक ने 'ग्राहक संरक्षण-अप्राधिकृत इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग लेनदेन में ग्राहकों की देयता को सीमित करना' - विषय पर प्रारूप परिपत्र पहले ही जारी किया है और सम्बद्ध स्टैक होल्डरों से प्राप्त फीडबैक के आधार पर शीघ्र ही अंतिम दिशानिर्देश जारी किए जाने की संभावना है। दिशानिर्देशों की बाध्यता को देखते हुए बैंकों के लिए यही विवेकपूर्ण होगा कि वे अपनी आईटी सुरक्षा प्रणाली और संचालन पद्धति को आंतरिक रूप से मजबूत बनाएँ ताकि शिकायतों को कम किया जा सके।

घ. उदीयमान नियंत्रण/पर्यवेक्षी परिवेश में ग्राहक सेवा

(i) जैसा कि आप जानते हैं, अभी हाल ही में बहुत से नए लघु वित्त बैंकों और भुगतान बैंकों ने अपना परिचालन आरंभ किया है। इन बैंकों के ग्राहक-आधार का काफी बड़ा हिस्सा ऐसे लोगों का होगा जो पहली बार बैंक-ग्राहक बनेंगे, ये ग्राहक ग्रामीण और अर्ध-शहरी लोग होंगे। यह जरूरी है कि इन लोगों को पर्याप्त रूप से जागरूक बनाया जाए कि लेनदेन करते समय समझदारी से काम लें नहीं तो जालसाजों के चंगुल से फस जाएंगे।

रिज़र्व बैंक ने लघु वित्त बैंकों और भुगतान बैंकों को पहले ही सूचित कर दिया है, और इस बात को लाइसेन्स की शर्त में भी रख दिया है कि ग्राहकों की शिकायतों के निपटान के लिए उच्च शक्ति प्राप्त ग्राहक-शिकायत कक्ष स्थापित करें। लाइसेन्स की शर्तों के अनुसार इन बैंकों को भारतीय रिज़र्व बैंक की बैंकिंग लोकपाल योजना के दायरे में भी रखा जाएगा। अपनी तरफ से बीसीएसबीआई को जरूरत होगी कि इन नई संस्थाओं को सदस्य बैंकों के रूप में नामांकित करे ताकि संहिता और मानकों का अनुपालन सुनिश्चित किया जा सके।

(ii) बैंकों के लिए जरूरी होगा कि वे निम्नलिखित बाध्यकारी विनियामक परिवर्तनों के लिए तैयार रहें और साथ ही रिज़र्व बैंक के ध्यान में आ चुकी ग्राहक-शिकायतों से संबंधित पर्यवेक्षी चिंताओं में से कुछ पर फोकस करें। देखने में ये नितान्त जरूरी लग सकती हैं लेकिन ग्राहकों की दृष्टि से ये अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं :

- पासबुकों/बैंक विवरण में दिए गए वर्तमान वर्णन काफी जटिल और आमतौर पर

समझ में नहीं आने वाले हैं। रिज़र्व बैंक के दिशानिर्देशों में यह अनिवार्य किया गया है कि इन विवरणों में आसानी से समझ में आने वाले ब्यौरे दर्ज किए जाएं, तथापि ऐसा हो नहीं रहा।

- चेक ड्राप बाक्स में डाले गए चेकों की सुरक्षा तथा चेक छापने में प्रयुक्त कागज की गुणवत्ता रिज़र्व बैंक के लिए चिन्ता का विषय है, क्योंकि खराब गुणवत्ता वाले कागज से फर्जी चेक छापना सरल हो जाता है।
- वरिष्ठ नागरिकों को ग्राहक सेवा देना भी रिज़र्व बैंक के लिए चिन्ता के प्रमुख क्षेत्रों में है। अद्यतन पेन्शन प्राप्त करने, जीवन-प्रमाणपत्र जारी करना, हस्ताक्षरों का सत्यापन, आवधिक तौर पर केवाईसी करना आदि जैसी कठिनाइयाँ पेन्शन भोगियों के सामने आती हैं - मृत-ग्राहकों के नामितियों से भी कई शिकायतें मिल चुकी हैं, जो मृत्यु-उपरांत दावों के निपटान के बारे में हैं।
- केवाईसी अनुपालना के लिए पते के प्रमाण का काम करने वाले कागजात एक बड़ी अड़चन बने हुए हैं, हालांकि ग्राहकों को अनुमति है कि वे अपने वर्तमान पते के बारे में सामान्य घोषणा कर सकते हैं, जो कि बैंक में मूलरूप से प्रस्तुत पते के प्रमाण से अलग भी हो सकता है। इसी प्रकार ग्राहकों को यह भी अनुमति है कि वे 'पहचान और पते के प्रमाण' के बिना भी बैंकों में छोटे खाते खोल सकते हैं, केवल हाल ही का फोटोग्राफ और हस्ताक्षर प्रस्तुत करना काफी रहेगा।

- यद्यपि न्यूनतम औसत शेषराशि का अथवा प्रीमियम सेवाओं के लिए शुल्क का निर्धारण करने के लिए बैंकों को स्वायत्तता दी गई है, लेकिन इस बहाने से आम आदमी को सेवा देने से मना करना या उसे दूर नहीं रखा जाए।

6. मूल कारण विश्लेषण में ग्राहकों की ऐसी ही कुछ समस्याएं सामने आई होंगी, जिसके बारे में पहले ही बताया गया है कि यह बैंकों के लिए सुधारात्मक कार्रवाई का मार्ग प्रशस्त करेगा। इस मंच का उपयोग करते हुए मैं बताना चाहूंगा कि किसी तीसरे पक्ष के उत्पादों के अपविक्रय, केवाईसी दिशानिर्देशों के उल्लंघन की घटनाओं, सेवाओं के लिए अनापशनाप शुल्क लगाने की घटनाओं पर वर्तमान वर्ष के पर्यवेक्षी चक्र के दौरान रिजर्व बैंक का स्पष्ट फोकस रहेगा। इसके अलावा आप जानते ही हैं रिजर्व बैंक ने विनियामक उल्लंघनों की घटनाओं की जांच के लिए एक विभाग स्थापित किया है ताकि गलती करने वाले बैंकों पर प्रवर्तनात्मक कार्रवाई जा सके।

आगामी मार्ग

7. बैंकिंग के क्षेत्र में नई गतिविधियों को देखते हुए बीसीएसबीआई को ऐसे क्षेत्रों का निरूपण सक्रियतापूर्वक करना होगा, जिनमें इन संहिताओं के संशोधन और इनको समवर्ती बनाने की जरूरत है। अपनी बात को समाप्त करने से पहले मैं यह कहना चाहूंगा कि बैंकों के लिए आगामी वर्ष में ग्राहक सेवा कार्यसूची निर्धारित की जाए और पीसीसीओ के लिए विशेष तौर पर कुछ कार्य रखे जाएँ, मैं निम्नलिखित के बारे में फिर से जोर देना चाहूंगा-

- सवाल-जबाब के लिए एक पोर्टल संचालित करने का कार्य अग्रिम पंक्ति के अनुभवहीन स्टाफ के लिए उपयोगी होगा खासकर अधिकाधिक अलगाव /रोटेशन को देखते हुए। यह उन्हें सक्षम करेगा कि जानकारी देने से बचने या गलत जानकारी देने के स्थान पर सही जानकारी प्रदान करें।
- सूक्ष्म और लघु उद्यमों के प्रति बैंक की वचनबद्धता संहिता को नवीनतम बनाते समय इसमें

एमएसएमई के पुनरुत्थान और पुनर्वासन व्यवस्था तथा जीवनचक्र के दौरान वित्त व्यवस्था के प्रति वचनबद्धता को शामिल किया जाए।

- यद्यपि बीओ द्वारा क्रेडिट-संबंधी निर्णयों में हस्तक्षेप नहीं किया जाता है, तथापि एमएसएमई को, शिक्षा और आवास ऋणों के मामले में ऋण प्रदान करने में देरी के बारे में कई शिकायतें प्राप्त होती हैं। ऐसे ऋणों पर निर्णय लेने हेतु समय सीमा निर्धारित करने के बारे में इस संहिता में उचित प्रावधान किया जाए।
- भुगतान प्रणाली काफी हद तक गैर-बैंक प्लेयर्स के ग्राहकों के साथ समायोजित हो गई है, जो अपने ई-वालेट आदि में रकम डालने के लिए बैंकिंग चैनल का प्रयोग करते हैं। यदि अड़चन पैदा होने की स्थिति आती है तो सीनियर और काफी लम्बे समय से विद्यमान प्लेयर्स अर्थात बैंकों से यह अपेक्षित रहेगा कि शीघ्र समाधान का प्रयास करें ताकि ग्राहक को परेशानी नहीं हो।
- कॉल सेन्टरों या स्वचालित प्रतिउत्तर प्रणाली के कारण ग्राहकों के सामने आने वाली तकलीफ को कम किया जाए। इस बारे में कुछ बैंकों द्वारा ग्राहक सेवा को बढ़ाने के लिए कृत्रिम-बुद्धिमत्ता-चलित चैटबोट के प्रयोग का प्रयास स्वागत योग्य है, इसमें यह भी सुनिश्चित करने की जरूरत है कि ग्राहकों को केवल रोबोटिक प्रतिक्रिया देकर ही काम को पूरा हुआ नहीं मान लिया जाए।

8. अब इस सेक्शन की बात को मैं खतम करते हुए 'खाता संख्या की सर्वत्र प्रयोजनीयता' के विचार पर फिर से जोर देना चाहूंगा, जिसकी कुछ साल पहले मैंने वकालत की थी। उस समय यह अवधारणा कुछ अमूर्त लगी थी लेकिन भुगतान प्रणाली के क्षेत्र में तकनीकी प्रगति जैसे कि यूपीआई आदि तथा आधार के तहत बड़ी मात्रा में नामांकन और बैंक खातों से आधार को जोड़ने से अब यह विचार संभव होने के दायरे में आ गया है। इस तरह देखें तो परेशान ग्राहक द्वारा अब भविष्य में चुपचाप अपने खाते को किसी दूसरे बैंक में ले जाना वास्तविकता बन जाएगा।

निष्कर्ष

9. ग्राहक संरक्षण और ग्राहकों की शिकायतों के निवारण हेतु नीति-निरूपण के क्षेत्र में बीसीएसबीआई की भूमिका को साधुवाद देते हुए मैं अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा। मैंने बीसीएसबीआई संहिता की भूमिका और इसे गतिमान बनाए रखने के बारे में संक्षेप में कुछ कहा है। वर्तमान परिदृश्य में इस संहिता से बैंकिंग क्षेत्र में तीन अहम गतिविधियों आगाज हुआ है - क) प्रौद्योगिकी को अपनाने से बढ़ती हुई चुनौतियाँ और वास्तविकताएँ; ख) वित्तीय समावेशन प्रयासों के कारण औपचारिक बैंकिंग संरचना में नए ग्राहकों

का आगमन और ग) भुगतान बैंकों का और लघु वित्त बैंक जैसी नवीन संस्थाओं का प्रादुर्भाव। इन परिस्थितियों में ऐसी संरचना तैयार करना अपरिहार्य है जिसमें बीसीएसबीआई, बीओ, आईबीओ और पीसीसीओ अपने प्रयासों को एक-दूसरे का अनुपूरक बनाएँ जिसमें कोई संघर्ष/ओवरलैप नहीं हो। मुझे यकीन है कि सम्मेलन के दौरान यह मंच विस्तार से इन समस्याओं पर चर्चा करेगा।

मुझे बुलाने के लिए बीसीएसबीआई का पुनः धन्यवाद और सम्मेलन की सफलता हेतु शुभकामनाएँ।

लेख

गैर-सरकारी गैर-वित्तीय निजी लिमिटेड कंपनियों के वित्त, 2015-16

औद्योगिक संभावना सर्वेक्षण, 2016-17

परिवारों का मुद्रास्फीति प्रत्याशा सर्वेक्षण: 2016-17

सरकारी आस्तियों के लिए पूंजी आवश्यकता :

कुछ मुद्दे और चिंताएं

वैश्विक बैंकिंग - हाल की गतिविधियां और भावी परिदृश्य

गैर-सरकारी गैर-वित्तीय निजी लिमिटेड कंपनियों के वित्त, 2015-16*

वर्ष 2015-16 में चुनिंदा 2,92,308 गैर-सरकारी गैर-वित्तीय (एनजीएनएफ) निजी लिमिटेड कंपनियों की बिक्री और उत्पादन वृद्धि में पिछले वर्ष की तुलना में कमी पाई गई। कच्ची सामग्री की लागत कम होने से परिचालन व्यय कम करने में मदद मिली और लाभ मार्जिन में वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप, कंपनियों की ऋण चुकाने की क्षमता में सुधार हुआ। कंपनियों द्वारा सृजित निधियों में अधिक से अधिक निधियों का उपयोग अचल आस्तियां बनाने में किया गया जो कि कारोबार प्रत्याशा में सुधार का संकेत है।

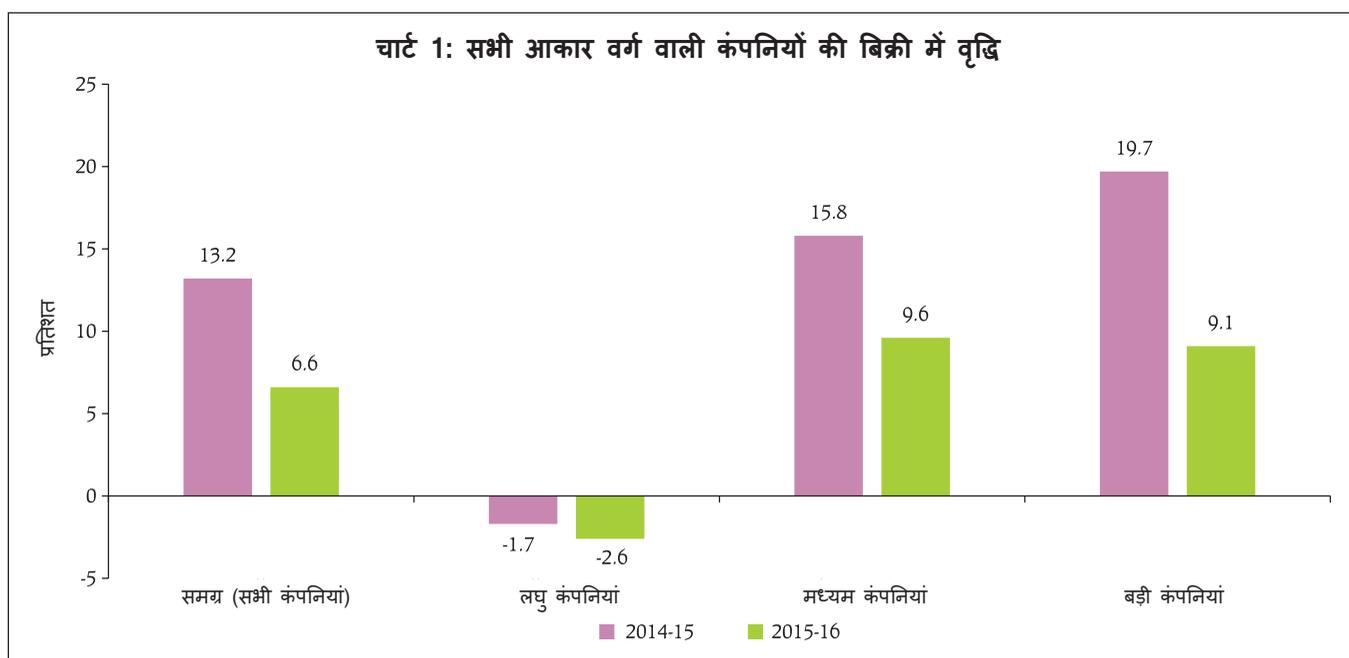
इस आलेख में 2013-14 से 2015-16 तक की अवधि के लिए लेखा-परीक्षित वार्षिक लेखों के आधार पर चुनिंदा 2,92,308 गैर-सरकारी गैर-वित्तीय निजी लिमिटेड कंपनियों के वित्तीय निष्पादन प्रस्तुत किए गए हैं। आंकड़े भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट https://dbie.rbi.org.in/DBIE/dbie.rbi?site=statistics#!12_45 पर उपलब्ध हैं। ये कंपनियां 31

मार्च 2016 तक कार्पोरेट मामले मंत्रालय (एमसीए) में पंजीकृत सभी एनजीएनएफ निजी लिमिटेड कंपनियों की चुकता पूंजी के 32.9 प्रतिशत हिस्से को कवर करती हैं। एनजीएनएफ निजी लिमिटेड कंपनियों के वितरण असमान है जिसमें से 95 प्रतिशत 'लघु'¹ कंपनियां (₹250 मिलियन से कम निवल बिक्री वाली कंपनियां) हैं और कुल बिक्री में उनका हिस्सा मात्र 20 प्रतिशत है।

1. आय और व्यय

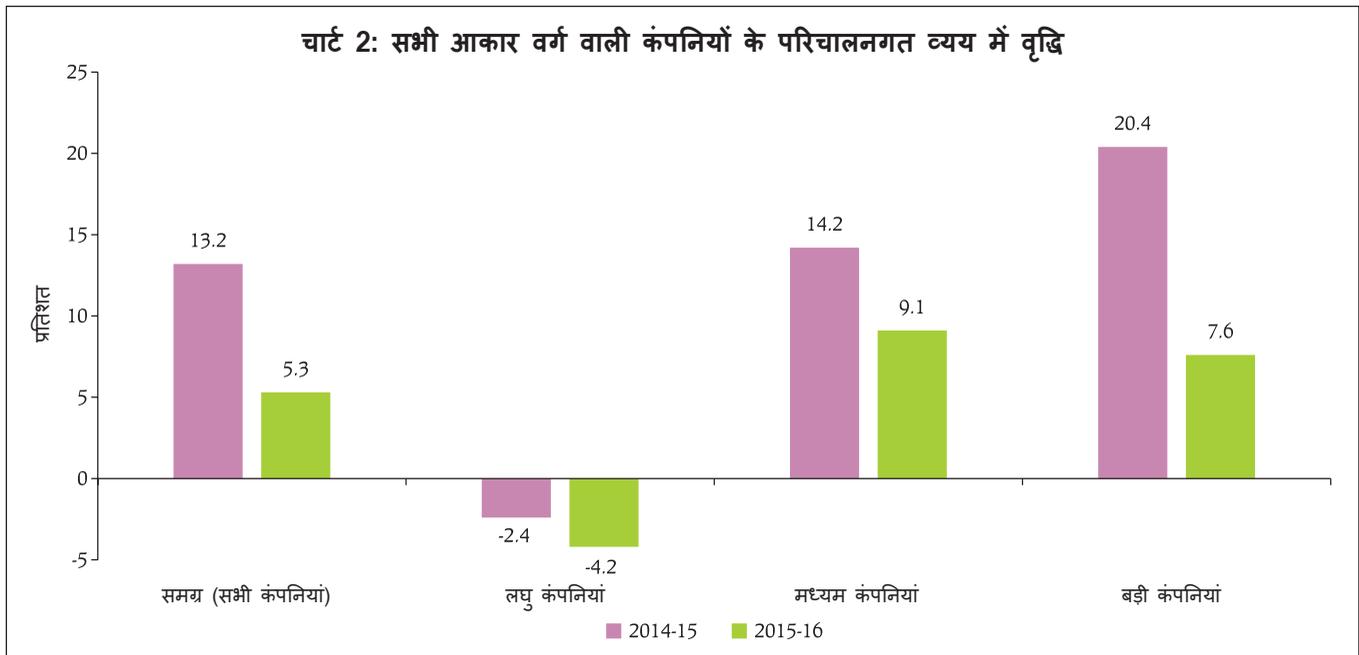
1.1 वर्ष 2015-16 में निजी लिमिटेड कंपनियों की बिक्री वृद्धि पिछले वर्ष की तुलना में आधी रह गई। यद्यपि, कच्ची सामग्री की कीमतों में कमी होने से परिचालन व्यय में वृद्धि नहीं हुई, फिर भी, परिचालनगत लाभ वृद्धि कम रही। इस संदर्भ में, योजित सकल मूल्य की वृद्धि में काफी कमी देखी गई थी (विवरण 1, चार्ट 1, चार्ट 2 और चार्ट 3)।

1.2 कच्ची सामग्री की कीमते कम होने का लाभ सर्वाधिक बड़ी कंपनियों (₹1 बिलियन और उससे अधिक निवल बिक्री वाली कंपनियों) को मिला और परिणामस्वरूप, 2015-16 में बिक्री में काफी कमी होने के बावजूद उनके परिचालनगत लाभ में वृद्धि हुई। जहां छोटी कंपनियों की बिक्री में कमी आई, वहीं परिचालनगत व्ययों में तीव्र कमी होने से लाभ में वृद्धि हुई।



* यह आलेख कंपनी वित्त प्रभाग, सांख्यिकी और सूचना प्रबंध विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक में तैयार किया गया है। रिज़र्व बैंक बुलेटिन जून 2016 अंक में प्रकाशित पिछले आलेख में पीयूसी कवरेज 23.3 प्रतिशत था।

¹ वर्ष 2015-16 में कंपनियों को उनकी निवल बिक्री के अनुसार बड़ी, मध्यम और लघु वर्गों में वर्गीकृत किया गया है।

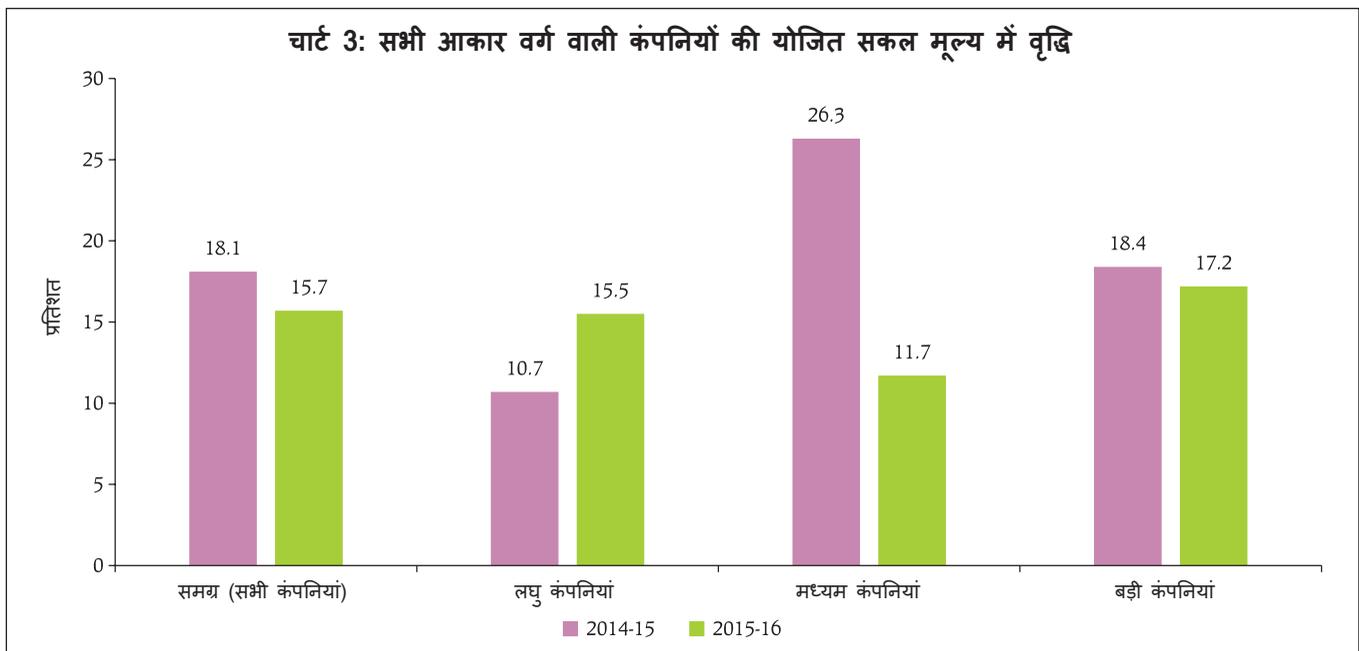


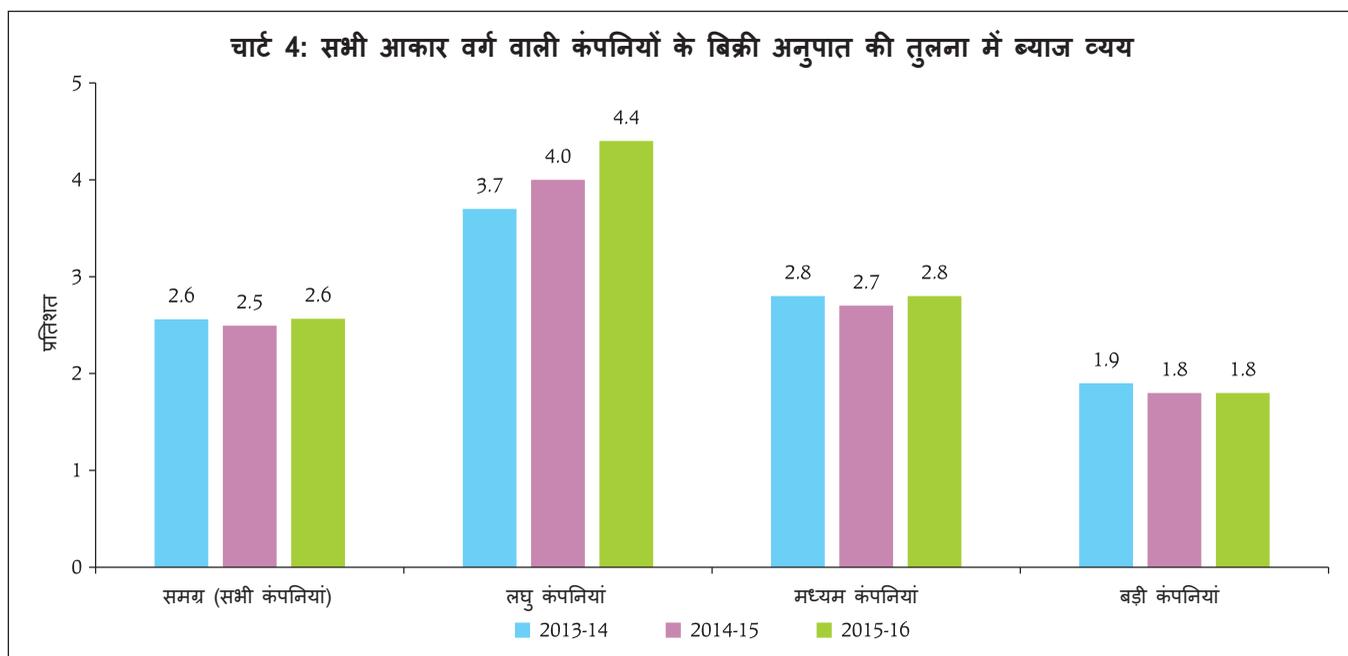
मध्यम आकार वाली कंपनियों (₹250 से मिलियन से ₹1 बिलियन के बीच निवल बिक्री वाली कंपनियां), जिनमें से अधिकांशतः सेवा क्षेत्र से संबंधित हैं, को कच्ची सामग्री की लागत में कमी का लाभ अधिक नहीं मिला (विवरण 1)।

1.3 वस्त्र, रसायन और रासायनिक उत्पादों; और स्टील उद्योगों के खराब कार्यनिष्पादन चलते समग्र रूप से विनिर्माण क्षेत्र की बिक्री वृद्धि काफी कम हो गई। बिक्री वृद्धि और सेवा

क्षेत्र की कंपनियों का परिचालनगत लाभ कम मांग के कारण कम हो गया। खनन और उत्खनन क्षेत्र की कंपनियों का परिचालनगत लाभ बिक्री में कमी और परिचालनगत व्यय में वृद्धि के चलते कम हो गया (विवरण 1)।

1.4 परिचालनगत व्यय में कमी के चलते समग्र रूप से कंपनियों की लाभप्रदता में सुधार हुआ। छोटी और बड़ी आकार वाली कंपनियों के लिए परिचालनगत लाभ मार्जिन और





इक्विटी पर प्रतिलाभ पिछले वर्ष की तुलना में 2015-16 में अधिक रहा था (विवरण 1 और विवरण 2)।

1.5 सभी वर्गों में बिक्री आकार, छोटी कंपनियों का ब्याज व्यय (बिक्री की तुलना में हिस्से के रूप में) लगातार बढ़ा है जिसका मुख्य कारण कुल उधारी में अधिक वृद्धि का होना था (चार्ट 4 और विवरण 1)।

2. लीवरेज और अतिसंवेदनशीलता

2.1 कंपनियों की बढ़ती ऋणग्रस्तता चिंता का विषय है क्योंकि इक्विटी की तुलना में उनका ऋण (दीर्घावधि उधारी) अनुपात 2013-14 से 2015-16 के दौरान लगातार बढ़ा है। तथापि, सकारात्मक पक्ष यह है कि लाभप्रदता में बढ़ोतरी होने के चलते कंपनियों की ऋण चुकौती क्षमता (ब्याज कवरेज अनुपात के संदर्भ में अर्थात् आईसीआर को ब्याज व्यय की तुलना में ईबीआईटी² के रूप में परिभाषित किया गया है) में सुधार हुआ (विवरण 2)।

2.2 बैंकों में जोखिम न लेने की बढ़ती प्रवृत्ति और ऋण देने की दरों को कम न करने की इच्छा के चलते कंपनियों द्वारा बैंकों से कम ऋण लिया गया। कुल उधारी में बैंकों का हिस्सा पिछले वर्ष की तुलना में और सभी आकार वर्गों में 2015-16 में कम रहा है (चार्ट 5)।

2.3 कुल बैंक उधारी का 50 प्रतिशत से अधिक हिस्सा अधिक लीवरेज वाली कंपनियों (इक्विटी की तुलना में ऋण अनुपात 200 प्रतिशत से अधिक अथवा ऋणात्मक निवल मालियत वाली कंपनी) के पास था और ऋण चुकाने की स्थिति खराब थी। इन कंपनियों की लाभप्रदता अन्य कंपनियों की तुलना में कम थी और वर्ष 2015-16 में इनमें से आधी कंपनियों नुकासान में थी।

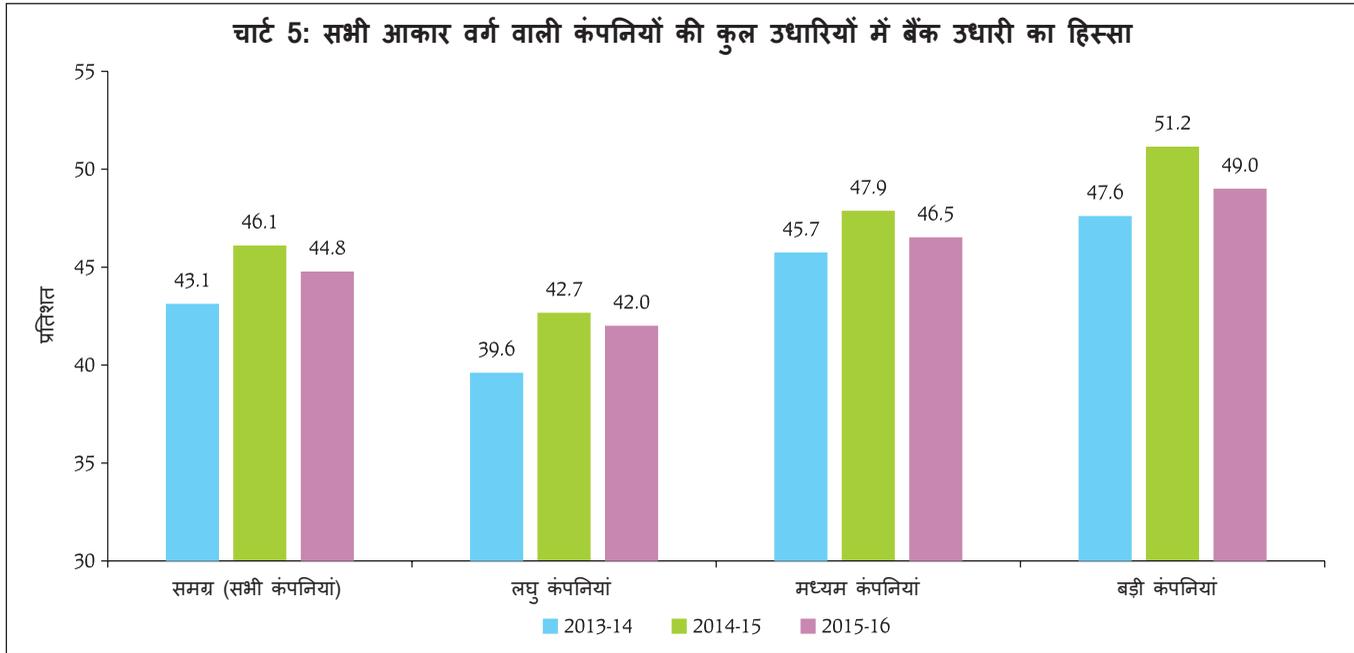
2.4 वर्ष 2015-16 में अतिसंवेदनशील कंपनियां अर्थात् 200 प्रतिशत से अधिक इक्विटी-ऋण अनुपात और 1 से कम आईसीआर रखने वाली कंपनियों का हिस्सा 2014-15 की तुलना में बैंक उधारियों का हिस्सा अधिक था (सारणी 1)।

सारणी 1: अतिसंवेदनशील कंपनियों द्वारा धारित बैंक उधारियों का हिस्सा

वर्ष	अतिसंवेदनशील कंपनियों की संख्या*	2,92,308 कंपनियों के कुल कर्ज में अतिसंवेदनशील कंपनियों के कर्ज का हिस्सा (प्रतिशत)	2,92,308 कंपनियों की बैंक उधारियों में अतिसंवेदनशील कंपनियों की बैंक उधारियों का हिस्सा (प्रतिशत)
2013-14	30050	43.1	30.4
2014-15	28274	41.2	28.5
2015-16	29733	40.6	29.0

* ऋणात्मक निवल मालियत वाली कंपनियां शामिल हैं।

² ब्याज और कर पूर्व आय



2.5 औद्योगिक स्तर पर, विनिर्माण क्षेत्र और सेवा क्षेत्र में स्थावर संपदा उद्योग में ऋण-इक्विटी अनुपात उच्च और वृद्धिशील रहा। वर्ष 2015-16 में लोहा और स्टील उद्योग में कंपनियों की ऋण चुकौती क्षमता कम हुई है (विवरण 2)।

3. स्रोत और निधियों का उपयोग

3.1 कंपनियों द्वारा जुटाई गई निधियों में कुल उधारियों का हिस्सा समान बना रहा। तथापि, वर्ष 2015-16 में बैंक उधारियों का हिस्सा तेजी से घटकर 7.5 प्रतिशत रहा गया जबकि 2014-15 में यह 18.3 प्रतिशत रहा था। दूसरी ओर, देनदारी लेखों के हिस्से में कमी दर्ज की गई जिससे वर्ष के दौरान कंपनियों द्वारा की गई नई खरीद में गिरावट देखी गई (विवरण 4)।

3.2 वर्ष 2015-16 के दौरान सृजित आधे से अधिक निधियों का उपयोग कंपनियों द्वारा चल आस्तियों को बनाने में किया

गया। परिणामस्वरूप, मूल्यहास प्रावधानों में भी वृद्धि हुई। दूसरी ओर, उपयोग के चलते इन्वेंट्रीज में कमी आई और कंपनियों ने अपने पास कम नगदी रखी (विवरण 4)।

4. समापन

इस लेख में शामिल की गई चुनिंदा एनजीएनएफ निजी लिमिटेड कंपनियों की बिक्री और सांकेतिक जीवीए में गिरावट महसूस की गई, जो अर्थव्यवस्था के विनिर्माण और सेवा क्षेत्र में समग्र तौर पर मंदी की ओर संकेत करती है। कच्ची सामग्री की कीमतों पर बचत के चलते उनकी, विशेष रूप से विनिर्माण क्षेत्र की लाभप्रदता में वृद्धि हुई। कंपनियों में बढ़ता लिवरेज एक प्रमुख चिंता का विषय बन गया है। ऐसा विशेष रूप से उन कंपनियों के साथ है जो लिवरेज्ड हैं और ऋण चुकौती क्षमता से जूझ रही हैं। निधियों के उपयोग में उच्च चल पूंजी निर्माण से कारोबार दृष्टिकोण के संबंध में कुछ आशावादी दृष्टिकोण पता चलता है।

विवरण 1: 292,308 एनजीएनएफ निजी लिमिटेड कंपनियों के चुनिंदा मापदंडों की वृद्धि दरें (जारी)								
(प्रतिशत)								
	वृद्धि दर							
	बिक्री		परिचालन व्यय		परिचालन लाभ		निवल लाभ	
	2014-15	2015-16	2014-15	2015-16	2014-15	2015-16	2014-15	2015-16
समग्र (सभी कंपनियां)	13.2	6.6	13.2	5.3	21.9	12.9	19.0	13.9
बिक्री-वार								
₹250 मिलियन से कम	-1.7	-2.6	-2.4	-4.2	16.9	9.7	11.4	16.4
₹250 मिलियन से ₹1 बिलियन	15.8	9.6	14.2	9.1	33.4	7.1	36.5	4.3
₹1 बिलियन और उससे अधिक	19.7	9.1	20.4	7.6	18.2	19.4	13.5	21.0
उद्योग-वार								
खनन और उत्खनन	7.9	5.2	6.7	7.4	7.8	-13.9	1.1	-38.3
विनिर्माण	10.6	5.0	10.8	3.5	9.4	21.1	2.4	28.7
खाद्य उत्पाद और पेय पदार्थ	10.2	10.1	10.0	9.6	14.6	17.0	4.6	25.0
कपड़ा	7.1	2.7	6.0	2.9	15.0	-0.8	14.8	-2.5
रसायन और रासायनिक उत्पाद	10.4	5.2	8.9	4.4	22.7	17.1	25.2	25.4
लोहा और इस्पात	10.4	0.7	10.0	-0.4	42.5	-3.5	#	#
मशीनरी और उपकरण	12.0	12.8	10.8	12.3	22.2	8.9	45.0	-3.5
इलेक्ट्रिकल मशीनरी और उपस्कर	11.1	18.3	8.7	19.8	25.1	11.6	62.8	21.6
मोटर वाहन और अन्य परिवहन उपकरण	7.2	10.3	5.5	11.3	42.4	3.4	#	-23.7
निर्माण	8.8	8.9	8.3	5.0	58.1	10.2	118.5	17.1
सेवाएं	16.7	8.2	16.7	7.5	27.2	9.4	23.4	8.5
थोक और खुदरा व्यापार	24.2	4.7	26.5	4.1	25.3	-3.4	13.0	-2.3
परिवहन, भंडारण और संचार	14.0	5.2	14.3	5.4	10.2	7.2	13.6	-2.1
स्थावर संपदा	17.7	4.8	12.0	2.2	#	-2.9	#	-9.5
कंप्यूटर और उससे संबंधित कार्यकलाप	17.0	15.2	15.3	16.1	24.6	11.0	23.5	15.1

विभाजक ऋणात्मक, शून्य या नगण्य

विवरण 1: 292,308 एनजीएनएफ निजी लिमिटेड कंपनियों के चुनिंदा मापदंडों की वृद्धि दरें (समाप्त)						
	वृद्धि दर					
	निवल मालियत		कुल उधार		कुल निवल आस्तियां	
	2014-15	2015-16	2014-15	2015-16	2014-15	2015-16
समग्र (सभी कंपनियां)	10.5	7.8	10.1	9.9	12.3	8.4
बिक्री-वार						
₹250 मिलियन से कम	5.6	4.0	11.6	13.3	8.2	7.7
₹250 मिलियन से ₹1 बिलियन	13.2	9.0	11.5	7.2	13.4	9.0
₹1 बिलियन और उससे अधिक	18.0	13.3	6.7	5.6	18.0	9.0
उद्योग-वार						
खनन और उत्खनन	23.2	9.3	1.2	24.3	8.1	13.2
विनिर्माण	11.8	10.5	6.4	3.3	9.8	8.1
खाद्य उत्पाद और पेय पदार्थ	12.0	8.8	9.3	10.1	11.3	12.8
कपड़ा	12.0	9.1	6.0	6.8	8.7	7.8
रसायन और रासायनिक उत्पाद	16.9	11.2	8.0	4.6	12.2	10.2
लोहा और इस्पात	-1.9	-3.5	9.5	3.2	9.6	1.2
मशीनरी और उपकरण	12.8	11.7	13.0	5.5	9.6	9.2
इलेक्ट्रिकल मशीनरी और उपस्कर	12.8	15.4	0.1	-0.7	7.9	12.8
मोटर वाहन और अन्य परिवहन उपकरण	14.2	13.8	2.2	-1.3	8.2	7.1
निर्माण	5.2	4.9	13.1	10.5	12.8	7.2
सेवाएं	10.6	7.0	10.8	13.3	13.7	8.5
थोक और खुदरा व्यापार	8.9	2.1	7.5	14.1	14.6	4.2
परिवहन, भंडारण और संचार	13.5	9.1	4.9	15.1	8.4	10.7
स्थावर संपदा	6.1	3.8	15.3	16.1	14.6	9.8
कंप्यूटर और उससे संबंधित कार्यकलाप	18.9	17.3	36.3	10.0	20.5	13.7

विवरण 2: 292,308 एनजीएनएफ निजी लिमिटेड कंपनियों के चुनिंदा मापदंडों का अनुपात (जारी)									
(प्रतिशत)									
	अनुपात								
	बिक्री की तुलना में परिचालनगत लाभ			निवल मालियत की तुलना में पीएटी			इक्विटी की तुलना में कुल उधार		
	2013-14	2014-15	2015-16	2013-14	2014-15	2015-16	2013-14	2014-15	2015-16
समग्र (सभी कंपनियां)	8.8	9.5	10.1	11.9	12.8	13.6	86.3	86.0	87.6
बिक्री-वार									
₹250 मिलियन से कम	10.7	12.7	14.3	9.0	9.5	10.7	81.4	86.0	93.7
₹250 मिलियन से ₹1 बिलियन	10.4	12.0	11.7	24.3	29.3	28.0	112.6	110.9	109.1
₹1 बिलियन और उससे अधिक	7.2	7.1	7.8	11.6	11.2	11.9	83.4	75.4	70.3
उद्योग-वार									
खनन और उत्खनन	9.7	9.7	8.0	12.0	9.8	5.5	114.1	93.7	106.7
विनिर्माण	6.9	6.8	7.9	13.4	12.3	14.3	95.6	91.0	85.1
खाद्य उत्पाद और पेय पदार्थ	5.1	5.3	5.6	10.2	9.6	11.0	100.3	97.8	99.0
कपड़ा	7.1	7.6	7.4	18.3	18.8	16.8	145.4	137.6	134.7
रसायन और रासायनिक उत्पाद	8.8	9.7	10.8	13.5	14.4	16.3	69.6	64.3	60.5
लोहा और इस्पात	2.8	3.6	3.4	-0.1	-1.2	-6.1	135.2	150.9	161.2
मशीनरी और उपकरण	11.6	12.6	12.2	18.5	23.8	20.5	55.7	55.8	52.7
इलेक्ट्रिकल मशीनरी और उपस्कर	7.8	8.8	8.3	13.4	19.4	20.4	91.2	80.9	69.6
मोटर वाहन और अन्य परिवहन उपकरण	3.7	4.9	4.6	3.7	10.4	7.0	125.8	112.6	97.6
निर्माण	11.4	16.6	16.8	3.1	6.5	7.3	179.0	192.4	200.7
सेवाएं	10.4	11.3	11.5	13.1	14.6	14.8	64.7	64.8	68.6
थोक और खुदरा व्यापार	2.3	2.3	2.1	2.5	2.6	2.5	45.8	45.3	50.6
परिवहन, भंडारण और संचार	12.1	11.7	11.9	22.8	22.9	20.5	119.9	110.9	117.0
स्थावर संपदा	4.1	16.1	14.9	-1.3	4.0	3.5	135.8	147.6	165.0
कंप्यूटर और उससे संबंधित कार्यकलाप	18.7	19.9	19.2	37.1	38.5	37.8	29.3	33.6	31.5

विवरण 2: 292,308 एनजीएनएफ निजी लिमिटेड कंपनियों के चुनिंदा मापदंडों का अनुपात (समाप्त)						
	अनुपात					
	इक्विटी की तुलना में ऋण			ब्याज कवरेज अनुपात *		
	2013-14	2014-15	2015-16	2013-14	2014-15	2015-16
समग्र (सभी कंपनियां)	51.2	52.2	53.8	3.4	3.5	3.7
बिक्री-वार						
₹250 मिलियन से कम	52.7	57.0	63.0	3.5	3.7	3.9
₹250 मिलियन से ₹1 बिलियन	68.5	67.5	66.1	3.6	4.0	3.9
₹1 बिलियन और उससे अधिक	41.0	38.1	35.4	3.0	3.1	3.4
उद्योग-वार						
खनन और उत्खनन	65.9	58.1	64.2	2.8	2.7	2.0
विनिर्माण	47.9	46.9	44.7	2.8	2.7	3.2
खाद्य उत्पाद और पेय पदार्थ	45.6	43.6	44.2	2.6	2.5	2.8
कपड़ा	76.6	74.5	73.1	2.5	2.5	2.4
रसायन और रासायनिक उत्पाद	35.6	36.3	36.5	3.5	4.1	5.0
लोहा और इस्पात	70.4	80.1	82.4	1.0	0.9	0.7
मशीनरी और उपकरण	26.9	25.4	24.2	5.2	6.4	6.3
इलेक्ट्रिकल मशीनरी और उपस्कर	43.7	41.1	35.6	2.8	3.7	4.1
मोटर वाहन और अन्य परिवहन उपकरण	58.2	57.0	53.6	1.4	1.8	1.8
निर्माण	123.4	130.1	137.2	1.6	1.9	1.9
सेवाएं	39.1	39.8	42.5	4.8	5.2	5.1
थोक और खुदरा व्यापार	23.4	24.0	27.9	2.0	1.9	1.9
परिवहन, भंडारण और संचार	71.4	66.8	72.1	3.7	3.9	3.6
स्थावर संपदा	87.3	94.5	101.1	1.0	1.9	1.6
कंप्यूटर और उससे संबंधित कार्यकलाप	19.7	20.3	19.2	21.8	24.7	24.9

* वास्तविक अनुपात

विवरण 3: 292,308 एनजीएनएफ निजी लिमिटेड कंपनियों की देयताओं और आस्तियों की संरचना (प्रतिशत)							
ए. देयताओं की संरचना				बी. आस्तियों की संरचना			
वर्ष	2013-14	2014-15	2015-16	वर्ष	2013-14	2014-15	2015-16
1. शेयरधारकों की निधि	39.2	37.5	37.0	1. सकल अचल आस्तियां	34.7	32.2	36.1
(i) शेयर पूंजी	9.2	9.3	9.4	ए) मूर्त आस्तियां	27.1	24.8	28.2
(ii) आरक्षित निधि और अधिशेष	29.9	28.1	27.6	बी) कार्यकारी पूंजी	3.4	2.8	3.2
(ए) आरक्षित पूंजी	17.7	17.6	17.0	ग) अमूर्त आस्तियां	3.9	4.4	4.5
2. दीर्घावधि उधार (ऋण)	17.3	17.9	18.4	2. मूल्यहास (i) मूर्त	8.2	5.3	9.3
(ए) बांड/डिबेंचर	1.8	1.7	2.0	(ii) अमूर्त	0.6	0.7	0.8
(बी) बैंक से मीयादी ऋण	8.8	8.8	8.9	3. निवल अचल आस्तियां	25.9	26.3	25.9
3. अल्पावधि उधार	10.9	11.6	11.4	4. गैर चालू निवेश	12.1	11.2	11.2
जिसमें से, बैंकों से	4.7	3.3	3.6	5. चालू निवेश	2.8	2.8	2.8
4. देय व्यापार	10.8	10.5	10.9	6. ऋण और अग्रिम	16.0	15.4	15.6
5. प्रावधान	2.7	2.7	2.7	7. इनवेंट्री	17.9	18.2	18.2
6. अन्य देयताएँ	19.2	19.8	19.6	8. व्यापार प्राप्य राशियां	14.9	15.3	15.2
(i) गैर चालू	2.4	3.0	2.8	9. नकदी और नकदी समतुल्य	5.4	6.8	6.9
(ii) चालू	9.8	8.9	9.5	10. अन्य आस्तियां	5.0	4.0	4.1
कुल	100.0	100.0	100.0	(i) गैर चालू	1.2	1.4	1.3
				(ii) चालू	3.8	2.6	2.8
				कुल	100.0	100.0	100.0

विवरण 4:292,308 एनजीएनएफ निजी लिमिटेड कंपनियों के निधियों के स्रोत और उपयोग की संरचना (प्रतशित)					
निधियों का स्रोत			निधियों का उपयोग		
अवधि	2014-15	2015-16	अवधि	2014-15	2015-16
इक्विटी और देयता में बढ़ोतरी के जरिए			आस्तियों में बढ़ोतरी के जरिए		
1. प्रदत्त पूंजी	11.2	7.0	1. सकल अचल आस्तियां	15.3	50.9
2. आरक्षित निधि और अधिशेष	4.3	4.5	(i) मूर्त आस्तियां	7.6	42.7
3. प्रावधान	1.9	39.4	जिसमें से, संयंत्र तथा मशीनरी	-	20.4
ए) मूल्यहास प्रावधान	-	37.5	(ii) कार्यकारी पूंजी	-	4.7
बी) अन्य प्रावधान	1.9	1.9	(iii) अमूर्त आस्तियां	7.7	3.6
4. शेयर पूंजी तथा प्रीमियम	13.8	10.3	2. गैर-वर्तमान निवेश	3.9	6.7
5. दीर्घावधि उधार	18.0	16.1	3. चालू निवेश	2.5	1.5
जिसमें से ए) बांड, डिबेंचर	5.6	3.9	4. ऋण और अग्रिम	9.6	11.1
बी) बैंकों से	7.7	5.1	5. इनवेंट्री	18.7	11.6
6. अल्पावधि उधार	6.2	7.7	6. व्यापार प्राप्त राशि	16.6	9.3
जिसमें से, बैंकों से	10.6	2.4	7. नकदी और नकदी समतुल्य	16.2	5.5
7. व्यापार देय राशि	16.8	5.0	8. अन्य आस्तियां	2.0	3.4
8. अन्य देयताएं	17.9	9.9	(i) गैर- चालू	2.0	-
(i) गैर- चालू	5.2	0.9	(ii) चालू	-	3.4
(ii) चालू	12.7	9.0	कुल	84.7	100.0
कुल	90.2	99.8	इक्विटी और देयताओं में कमी करके		
आस्तियों में कमी करके			9. मूल्यहास प्रावधान	15.3	-
9. संयंत्र तथा मशीनरी	2.4	-	कुल	15.3	-
10. कार्यकारी पूंजी	1.9	-	कुल जोड़	100.0	100.0
11. अन्य आस्तियां	5.5	0.2			
(i) गैर- चालू	-	0.2			
(ii) चालू	5.5	-			
कुल	9.8	0.2			
कुल जोड़	100.0	100.0			

- : शून्य अथवा नगण्य

औद्योगिक संभावना सर्वेक्षण, 2016-17*

यह आलेख इस शृंखला का पांचवां आलेख है, जिसमें वर्ष 2016-17 में रिज़र्व बैंक के औद्योगिक संभावना सर्वे (आईओएस) के त्रैमासिक दौर में पाए गए परिणामों की मुख्य विशेषताओं को प्रस्तुत किया गया है। यह विनिर्माण क्षेत्र के निष्पादन के साथ-साथ औद्योगिक कच्चे माल एवं विनिर्मित उत्पादों के मूल्य से जुड़ी गतिविधियों की उपयोगी जानकारी प्रदान करता है।

1. भूमिका

भारतीय विनिर्माण क्षेत्र का औद्योगिक संभावना सर्वे (आईओएस) रिज़र्व बैंक द्वारा 1998 से तिमाही आधार पर आयोजित किया जाता है¹। सर्वे में मांग की स्थितियों, वित्तीय स्थिति, रोजगार स्थितियों और मूल्य स्थिति से जुड़े कतिपय संकेतकों के बारे में गुणात्मक प्रक्रियाओं के आधार पर वर्तमान तिमाही में कारोबारी रुझानों और आगामी तिमाही की प्रत्याशाओं का आकलन किया गया है।

सर्वे के परिणामों के डिजाइन के अनुसार यह उम्मीद की जाती है कि भारत में विनिर्माण कार्यों पर नज़र रखी जाए और उसके बाद प्रमुख संकेतकों की भूमिका का निर्वाह किया जाए। हालांकि, सर्वे का ध्यान विनिर्माण क्षेत्र पर केंद्रित है लेकिन यह समग्र अर्थव्यवस्था की स्थिति की कुछ जानकारी भी प्रदान करता है।

इस पृष्ठभूमि में, आलेख के निम्नलिखित प्रयोजन हैं (ए) सर्वे के परिणामों में अंतर्निहित प्रमुख लक्ष्यों को प्रस्तुत करना; और (बी) संगत सरकारी सांख्यिकी के संबंध में नज़र रखने (ट्रैकिंग) की उनकी क्षमता का अनुभवजन्य विश्लेषण करना। इसके अतिरिक्त आलेख को इस प्रकार व्यवस्थित

* यह आलेख उद्यम सर्वेक्षण प्रभाग, सांख्यिकी और सूचना प्रबंध विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा तैयार किया गया है। सर्वेक्षण के हाल के दौर में प्राप्त डेटा को भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट में 06 अप्रैल 2017 को प्रकाशित किया गया था और यह <https://rbidocs.rbi.org.in/rdocs/Publications/PDFs/IOSED05042017141845951743420C8BD77C5FDAB831D4.PDF> पर उपलब्ध है। सर्वे परिणाम में दर्शाए गए कारोबार रुझान (आकलन एवं प्रत्याशा) उत्तरदाताओं के हैं और जरूरी नहीं है कि उसे भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा शेयर किया गया है।

¹ सर्वेक्षण के 74वें से 77वें दौर में 2016-17 की चारों तिमाहियों को शामिल किया गया है। सर्वेक्षण के त्रैमासिक परिणामों को आरबीआई की वेबसाइट पर नियमित रूप से दी जाती है।

किया गया है: खंड दो में सर्वे की मुख्य विशेषताओं का वर्णन किया गया है जिसमें अलग-अलग सर्वे की प्रतिक्रियाओं का सार प्रस्तुत करने की प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जबकि खंड तीन सर्वे के परिणामों के अनुसार प्रमुख लक्ष्यों को प्रस्तुत करता है और खंड चार कतिपय सरकारी सांख्यिकी के संबंध में सर्वे की ट्रैकिंग क्षमता के विषय में अनुभवजन्य परिणाम प्रस्तुत करता है। खंड पांच में अवलोकन दिया गया है।

2. सर्वे में मिली प्रतिक्रियाएं और उसका समेकन

सर्वे प्रश्नावली लगभग 2,500 विनिर्माण कंपनियों के पैनल, मुख्य रूप से 5 मिलियन से अधिक चुकता पूंजी वाली कंपनियों के बीच बांटे गए जो मुख्य रूप से भिन्न-भिन्न आकार और उद्योग समूहों को दर्शाते हैं। इस सूची का अद्यतन आवधिक तौर पर किया जाता है जिसमें नई कंपनियों को सम्मिलित करना तथा बंद/ विलय की गई कंपनियों को हटाया जाना शामिल है। सर्वे में सहभागिता स्वैच्छिक है। वर्ष 2016-17 में प्रतिक्रिया दर लगभग 45 प्रतिशत रही।

प्रश्नावली में मांग स्थितियों, मूल्य परिस्थिति, रोजगार और वित्तीय स्थितियों से जुड़े प्रश्न/ मानदंड शामिल हैं। उत्तरदाताओं से कहा गया कि वे प्रत्येक प्रश्न के लिए इन तीन बिंदुओं यथा, 'सुधार', 'कोई परिवर्तन नहीं/ यथापूर्व स्थिति' और 'खराब' पर विचार करते हुए गुणात्मक उत्तर दें। ये दो विपरीत स्थिति, *नामतः*, 'सुधार' और 'खराब' पाजिटिव (सकारात्मक) और नेगेटिव (नकारात्मक) प्रतिक्रियाओं को दर्शाते हैं।

प्रत्येक प्रश्न या मानदंड के लिए सर्वे में मिली प्रतिक्रियाओं का निवल प्रतिक्रिया (एनआर) मापक के जरिए समेकन/ सार प्रस्तुत किया गया जो 'सकारात्मक (पाजिटिव)' और 'नकारात्मक (नेगेटिव)' अनुपात के बीच का अंतर होता है। इस प्रकार, रचना के आधार पर, एनआर का मूल्यांकन (-)100 और 100 के बीच हो सकता है, जिसमें शून्य का अभिप्राय 'कोई परिवर्तन नहीं/यथापूर्व स्थिति' लगाया जा सकता है। एनआर का उच्चतर मूल्य सकारात्मकता में बढ़ोतरी दर्शाता है (या नकारात्मकता में कमी)।

सर्वे के परिणामों को संयुक्त 'कारोबारी प्रत्याशा सूचकांक (बीईआई)' के रूप में संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है, जो नौ

चुनिंदा निष्पादन सूचकांकों² से संबंधित एनआर पर आधारित है। 0 से 200 माप तक का बीईआई औद्योगिक निष्पादन और प्रत्येक तिमाही की संभावना की झांकी प्रस्तुत करता है। 100 का माप कोई परिवर्तन न होने (यथापूर्व स्थिति) की आरंभिक सीमा को दर्शाती है और 100 से अधिक(कम) का माप समग्र कारोबारी गतिविधि में विस्तार (संकुचन) दर्शाता है। सर्वे के प्रत्येक दौर के लिए दो प्रकार के बीईआई को हिसाब में लिया जाता है, जिनमें से एक चालू तिमाही (बीईआई-आकलन) के मूल्यांकन पर आधारित है और दूसरा आगामी तिमाही (बीईआई-प्रत्याशा) की प्रत्याशाओं पर आधारित है।

3. हाल के सर्वे के परिणामों की मुख्य बातें

वर्ष 2016-17 के आईओएस दौरों के परिणामों को, 2013-14 की पहली तिमाही से सर्वे के दौरों से निकले निष्कर्ष के संदर्भ में, तीन मुख्य शीर्षों के माध्यम से समझाया गया है, जो इस प्रकार हैं, समग्र कारोबारी रुझान, मांग स्थितियों और मूल्य परिस्थिति। वर्ष 2013-14 से पाए गए रुझान मध्यावधि में औद्योगिक क्षेत्र की स्थिति के बारे में रोचक जानकारी प्रदान करते हैं।

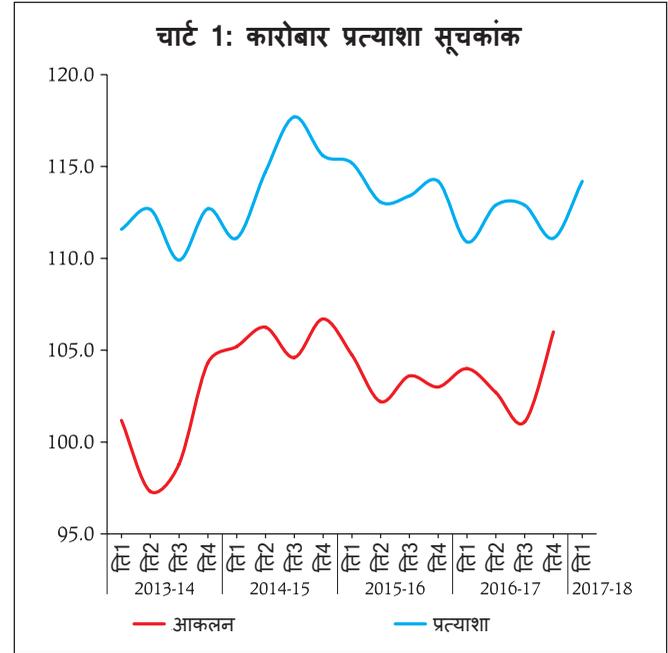
3.1 समग्र कारोबारी रुझान

बीईआई-आकलन 2016-17 की चौथी तिमाही में एक ऐसे मोड़ पर पहुंचा जो पिछली दो तिमाहियों में पाई गई सतत गिरावट के विपरीत था। वर्ष के अंत तक उसका स्तर 106.2 पर पहुंच गया, जो 2014-15 की चौथी तिमाही में पाई गई ऊंचाई के अधिक करीब था (चार्ट 1)। उत्तरदाताओं की प्रत्याशाओं को आम तौर पर अनुकूल बनाया जाता है और बीईआई-प्रत्याशा द्वारा एक तिमाही अंतराल के साथ बीईआई-आकलन की ट्रैकिंग की जाती है³।

तिमाहियों के औसत के आधार पर, वर्ष 2016-17 लगभग गत वर्ष के समान था (चार्ट 2)। उत्पादन, आदेश बही और समग्र कारोबारी परिस्थिति की बदौलत दोनों वर्षों में

² सर्वेक्षण के आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रयोग की गई कार्यप्रणाली अक्टूबर 2009 के आरबीआई मासिक बुलेटिन में 'त्रैमासिक औद्योगिक संभावना सर्वेक्षण: 2000-01 से रुझान' आलेख में प्रकाशित की गई थी। तुरंत हवाले के लिए बीईआई की गणना के लिए जिन नौ मापदंडों/संकेतकों पर विचार किया गया है, वे इस प्रकार हैं - (1) समग्र कारोबारी स्थिति; (2) उत्पादन; (3) आदेश बही; (4) कच्चा माल सूची; (5) तैयार वस्तुओं की माल सूची; (6) लाभ मार्जिन; (7) रोजगार; (8) निर्यात; और (9) क्षमता उपयोगिता।

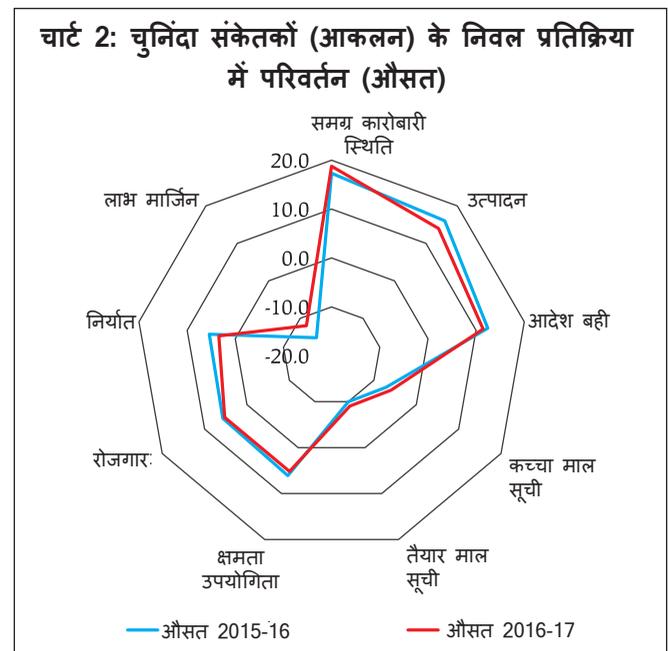
³ सामान्य तौर पर, बीईआई-प्रत्याशा के आंकड़े बीईआई-आकलन की अपेक्षा अधिक होती हैं यह आरबीआई के आईओआई के लिए अद्वितीय नहीं हैं; इस जैसी कार्यप्रणाली फेडरल रिज़र्व बैंक ऑफ फिलाडेल्फिया द्वारा आयोजित विनिर्माण कारोबारी संभावना सर्वेक्षण में और फेडरल रिज़र्व बैंक ऑफ न्यूयार्क द्वारा आयोजित एम्पाइअर स्टेट विनिर्माण सर्वेक्षण में पाई गई थी।

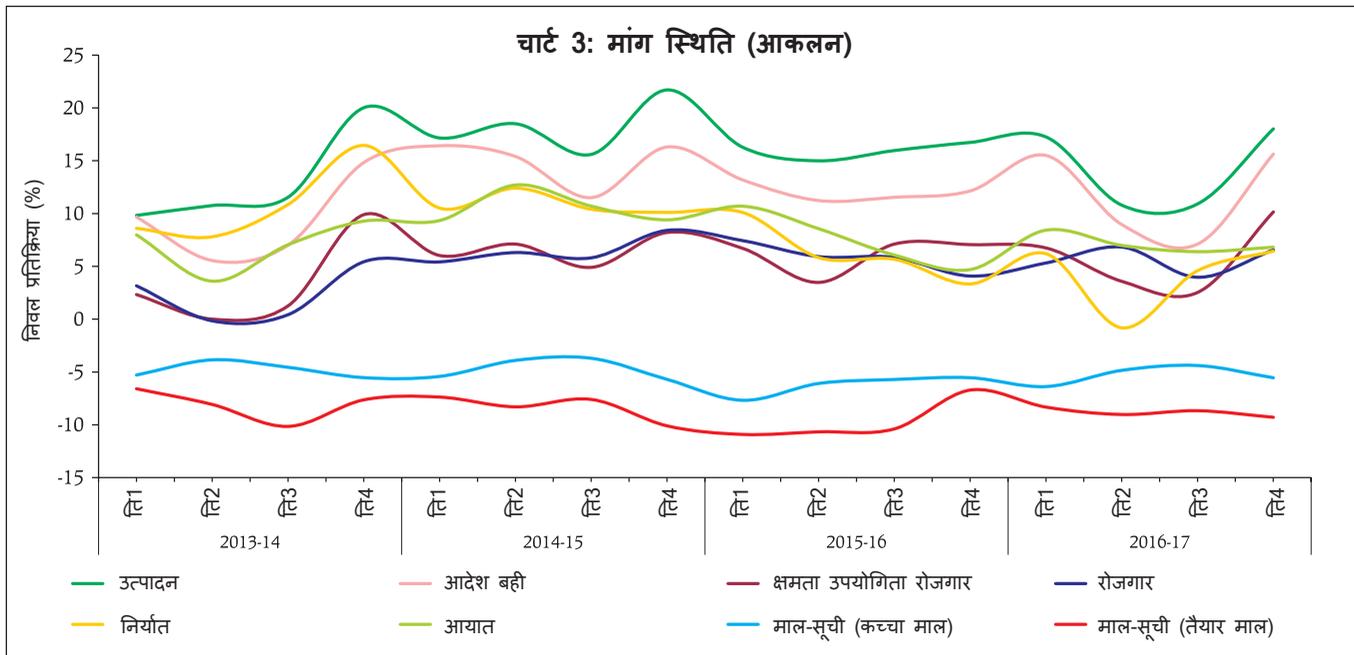


बीईआई माप बढ़ा, जबकि कम लाभ मार्जिन और माल-सूची के ढेर लगने से बाधा उत्पन्न हुई।

3.2 मांग स्थितियां

मांग स्थितियों को दर्शाने वाले अधिकांश पैरामीटरों के संबंध में पाया गया कि 2016-17 में बीच की दो तिमाहियों में आशावादी दृष्टिकोण में कमी आई थी, लेकिन चौथी तिमाही में स्थिति बदली। हालांकि, माल-सूची की स्थितियों



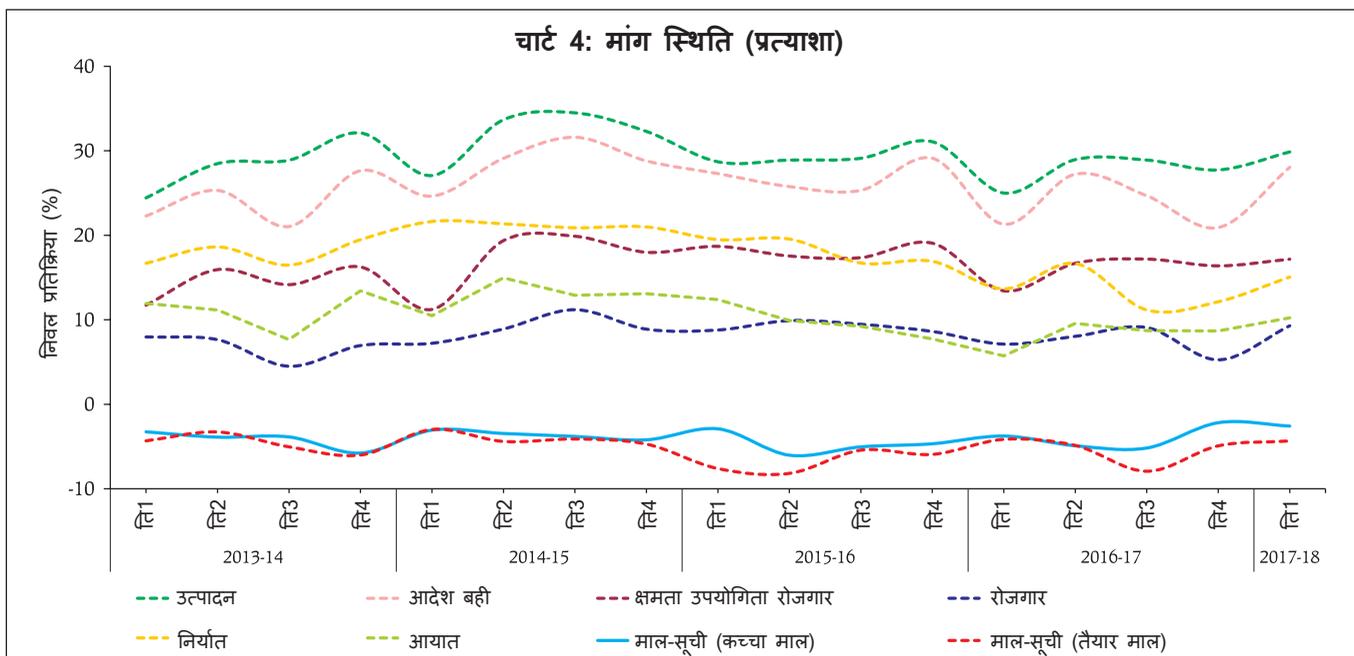


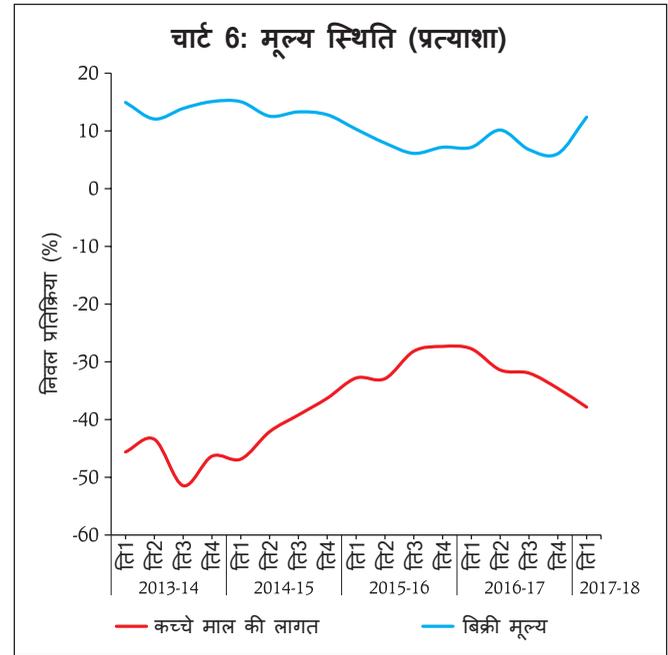
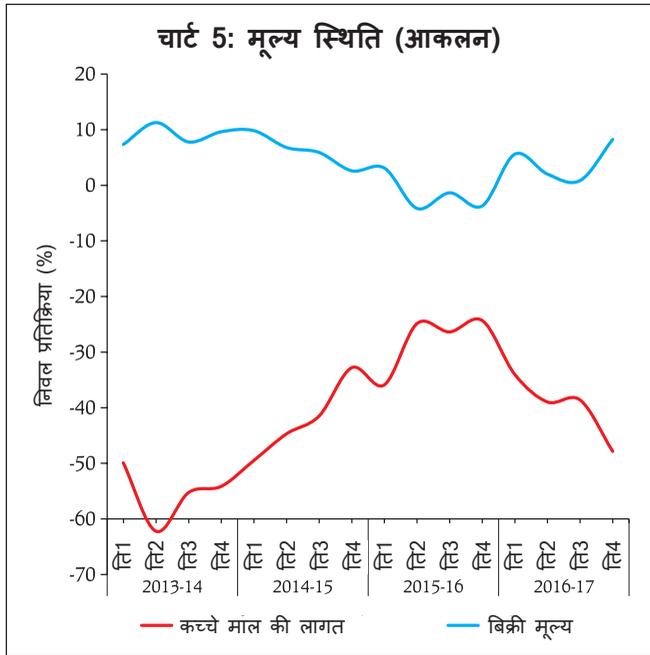
को लेकर विनिर्माणकर्ताओं के रुझान निरंतर नकारात्मक बने रहे (चार्ट 3)।

2017-18 की पहली तिमाही की संभावना और सुधार दर्शाती है, जो उत्पादन, आदेश बही, क्षमता उपयोगिता, निर्यात तथा रोजगार जैसे पैरामीटरों की बढ़ोतरी हुआ। फिर भी, माल-सूची की स्थितियों को लेकर नकारात्मक रुझान में कोई परिवर्तन नहीं हुआ (चार्ट 4)।

3.3 मूल्य परिस्थिति

सर्वे में मूल्य परिस्थिति का आकलन कच्चे माल की लागत और बिक्री मूल्य के पैरामीटरों के आधार पर किया जाता है। कच्चे माल की लागत को लेकर विनिर्माणकर्ताओं की निराशावादी सोच हाल की अवधि में धीरे-धीरे बढ़ी है, जबकि बिक्री मूल्य के रुझान में सुधार हो रहा है (चार्ट 5-6 और अनुबंध 2)।





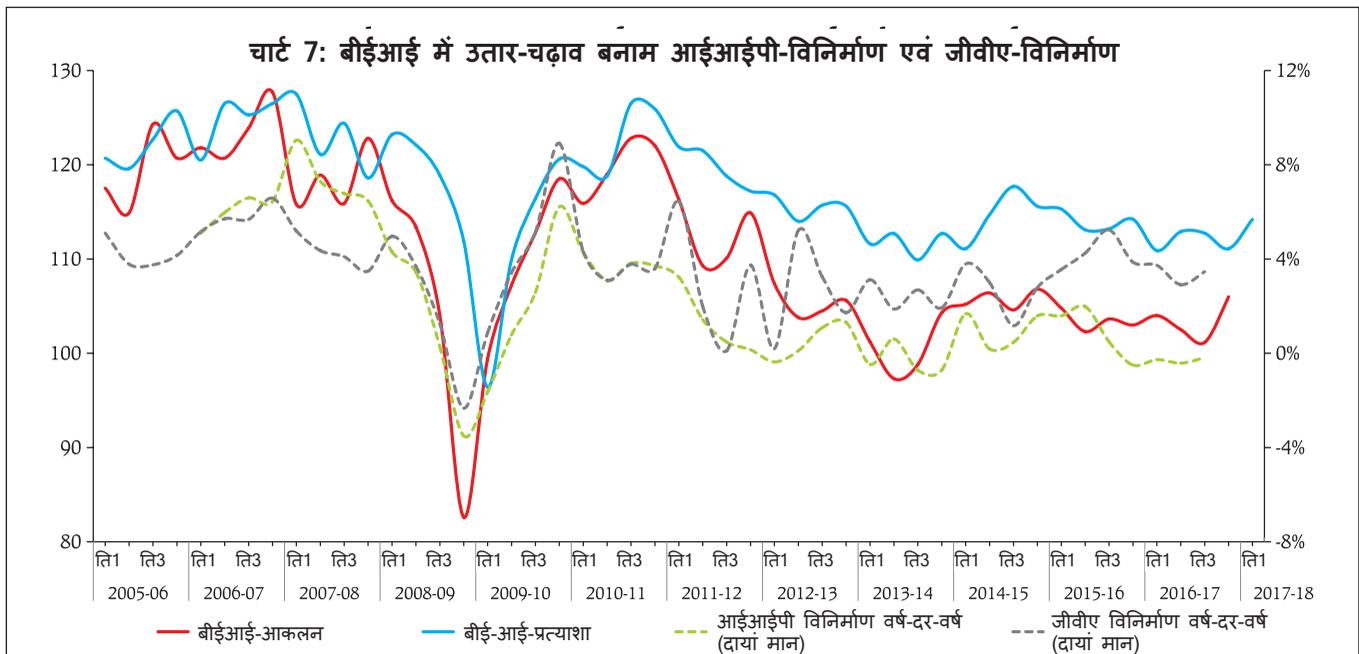
4. सर्वे के परफॉर्मन्स की ट्रैकिंग

क्या सर्वे के परिणाम उत्पादन और मूल्यों के संबंध में चुनिंदा आधिकारिक सांख्यिकी को ट्रैक कर पा रहे हैं? विशेष रूप से, उत्पादन को लेकर आधिकारिक सांख्यिकी को ट्रैक करने की बीईआई (अर्थात, बीईआई-आकलन और बीईआई-प्रत्याशा) की क्षमता, एवं कच्चे माल की लागत (सीआरएम) के संबंध में एनआर के को-मूवमेन्ट तथा क्रमशः औद्योगिक

और विनिर्मित उत्पादों के बिक्री मूल्य (एसपी) के साथ थोकमूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) महत्व रखते हैं।

4.1 उत्पादन

चार्ट 7 में दर्शाया गया है कि बीईआई-आकलन और बीईआई-प्रत्याशा दोनों ही उत्पादन के संबंध में वैकल्पिक आकलनों को बहुत ही अच्छी तरह से ट्रैक करते हैं, जो इस प्रकार हैं - विनिर्माण क्षेत्र के लिए औद्योगिक उत्पादन सूचकांक



सारणी 1: उत्पादन के संबंध में सर्वे सूचकांकों एवं सरकारी आंकड़ों के बीच सह-संबंध गुणांक

उत्पादन आकलन में वार्षिक वृद्धि	सर्वे सूचकांक	
	बीईआई-आकलन	बीईआई-प्रत्याशा
आईआईपी-विनिर्माण	0.8505*	0.7745*
जीवीए-विनिर्माण	0.6311*	0.4518*

*'1 प्रतिशत स्तर अत्यधिक है

(आईआईपी-विनिर्माण), और विनिर्माण क्षेत्र में योजित सकल मूल्य (जीवीए-विनिर्माण)⁴। सर्वे आधारित सूचकांकों एवं उत्पादन के वैकल्पिक आकलनों में वार्षिक वृद्धि के बीच जोड़ी के लिहाज से जो सह-संबंध गुणांक हैं, वे आंकड़ों की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। साथ ही, बीईआई-आकलन के मामले में यह संबंध अपेक्षाकृत रूप से मजबूत प्रतीत होता है (सारणी 1)।

इन परिणामों को पुष्ट करने के लिए उत्पादन आकलन में जो वार्षिक वृद्धि हुई है उसका सांख्यिकीय तौर पर आकलन करते हुए स्थिरांक, उसके पूर्व के अंकों (4 तिमाही तक के अंतराल) एवं बीईआई-आकलन/बीईआई-प्रत्याशा पर लाया गया। सांख्यिकीय आकलन (रिग्रेशन) (समायोजित-आर² सांख्यिकी के अनुसार मापा गया) की व्याख्यात्मक शक्ति से स्पष्ट हो जाता है कि वह यथोचित है (सारणी 2)।

4.2 मूल्य

यह देखते हुए कि आईओएस परिणाम थोकमूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) के आवधिक डेटा के रिलीज़ होने के पहले आ जाता है, इसलिए यह जांच करना दिलचस्प होगा कि

सारणी 2: उपयुक्त रिग्रेशन समीकरणों के लिए समायोजित-आर² सांख्यिकी

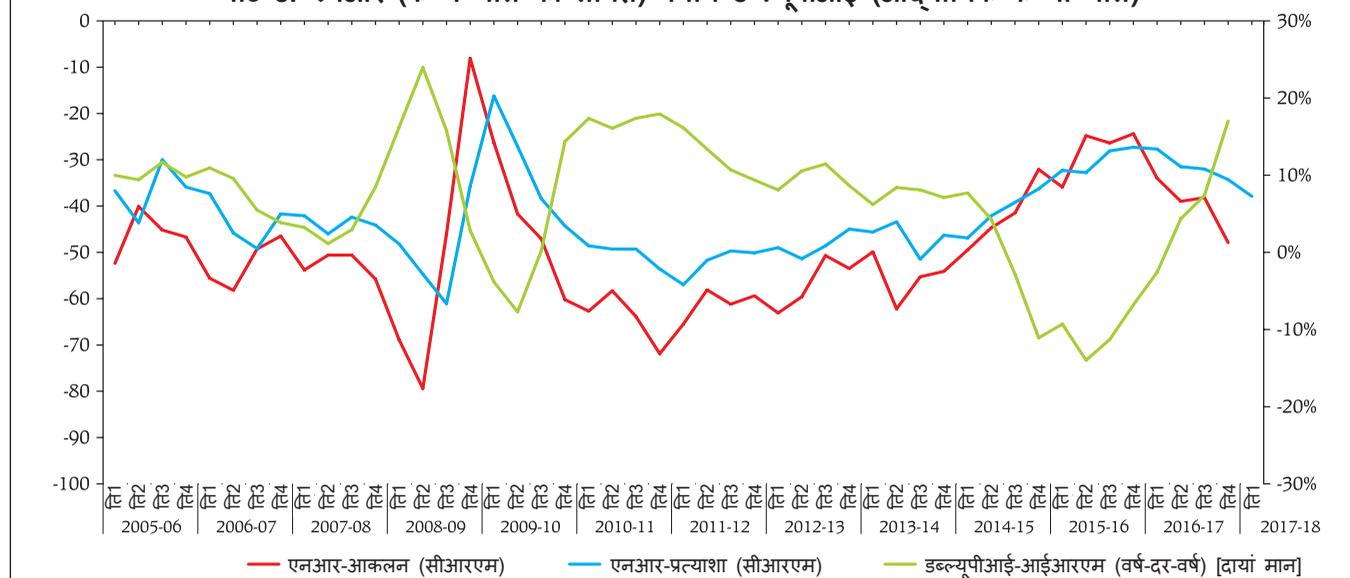
डिपेन्डेंट वेरिअबल (उत्पादन आकलन में वार्षिक वृद्धि)	व्याख्यात्मक वेरिअबल के रूप में सर्वे सूचकांक*	
	बीईआई-आकलन	बीईआई-प्रत्याशा
आईआईपी-विनिर्माण	0.7896	0.7020
जीवीए-विनिर्माण	0.5374	0.2510

* प्रत्येक रिग्रेशन समीकरण के व्याख्यात्मक वेरिअबल में स्थिरांक, डिपेन्डेंट वेरिअबल के पूर्व के अंक (4 तिमाही तक के अंतराल) और बीईआई शामिल हैं।

डब्ल्यूपीआई को लेकर सर्वे के परिणामों से क्या निष्कर्ष निकालकर सामने आता है। परिभाषा के अनुसार, किसी पैरामीटर को लेकर एनआर के उच्चतर अंक से तात्पर्य है कि उस पैरामीटर के संबंध में सुधार हुआ है या अत्यधिक आशावादी दृष्टिकोण पाया गया है। इस प्रकार, सीआरएम के संबंध में जो निवल प्रतिक्रियाएं मिली हैं, उन्हें औद्योगिक कच्चे माल (डब्ल्यूपीआई-आईआरएम) के डब्ल्यूपीआई में हुए परिवर्तनों के साथ नकारात्मक रूप से जोड़ा जाना चाहिए। दूसरी तरफ, एसपी के संबंध में जो निवल प्रतिक्रियाएं मिली हैं, उन्हें विनिर्मित उत्पादों के डब्ल्यूपीआई (डब्ल्यूपीआई-विनिर्मित) में हुए परिवर्तनों के साथ सकारात्मक रूप से जोड़ा जाना चाहिए।

कच्चे माल की लागत को लेकर आकलन और प्रत्याशा संबंधी जो निवल प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं, उनमें डब्ल्यूपीआई-आईआरएम में वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तन के मुताबिक यथोचित बदलाव आया है, लेकिन विपरीत दिशा में - एनआर-आकलन एवं डब्ल्यूपीआई-आईआरएम के बीच का सह-संबंध गुणांक

चार्ट 8: एनआर (कच्चे माल की लागत) बनाम डब्ल्यूपीआई (औद्योगिक कच्चा माल)



⁴ आईआईपी और जीवीए डेटा के आधार वर्ष क्रमशः 2004-05 एवं 2011-12 हैं। चूंकि जीवीए संबंधी डेटा (मूल कीमत) 2011-12 से ही उपलब्ध है, इसलिए पूर्व अवधि का जीवीए प्राप्त करने के लिए फेक्टर लागत कीमत पर जीडीपी को जोड़ा (लिंगिंग फेक्टर का प्रयोग करते हुए) गया।

सारणी 3: एनआर एवं मूल्य सूचकांकों के बीच सह-संबंध गुणांक

मूल्य सूचकांक में वार्षिक वृद्धि	कच्चे माल की लागत		बिक्री मूल्य	
	एनआर-आकलन	एनआर-प्रत्याशा	एनआर-आकलन	एनआर-प्रत्याशा
डब्ल्यूपीआई-आईआरएम	-0.7731*	-0.6876*	-	-
डब्ल्यूपीआई-विनिर्माण	-	-	0.6546*	0.7098*

* 1 प्रतिशत स्तर अत्यधिक है।

(-).7731 है और एनआर-प्रत्याशा का (-).6876 है, जो आंकड़ों की दृष्टि से बहुत अधिक है (चार्ट 8, सारणी 3)। बिक्री मूल्य को लेकर जो निवल प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं और डब्ल्यूपीआई-विनिर्मित उत्पादों में वार्षिक परिवर्तन, दोनों में भी एक जैसा ही बदलाव पाया गया - एनआर-आकलन और एनआर-प्रत्याशा के क्रमशः 0.6546 और 0.7098 सह-संबंध गुणांक आंकड़ों की दृष्टि से अत्यधिक हैं (चार्ट 9, सारणी 3)।

सांख्यिकीय आकलन का विश्लेषण दर्शाता है कि एनआर-आकलन (सीआरएम) और डब्ल्यूपीआई-आईआरएम के बीच, तथा एनआर-आकलन (एसपी) और डब्ल्यूपीआई-विनिर्मित वस्तुओं के बीच एक मजबूत संबंध है। इन समीकरणों के संबंध

सारणी 4: डब्ल्यूपीआई के संबंध में एनआर-आकलन का निष्पादन

डिपेंडेंट वेरिअबल (वाई)	मापदंड के संबंध में एनआर-आकलन	समायोजित - आर ²
डब्ल्यूपीआई-आईआरएम में वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तन	कच्चे माल की लागत	0.9123
डब्ल्यूपीआई-विनिर्माण में वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तन	बिक्री मूल्य	0.9234

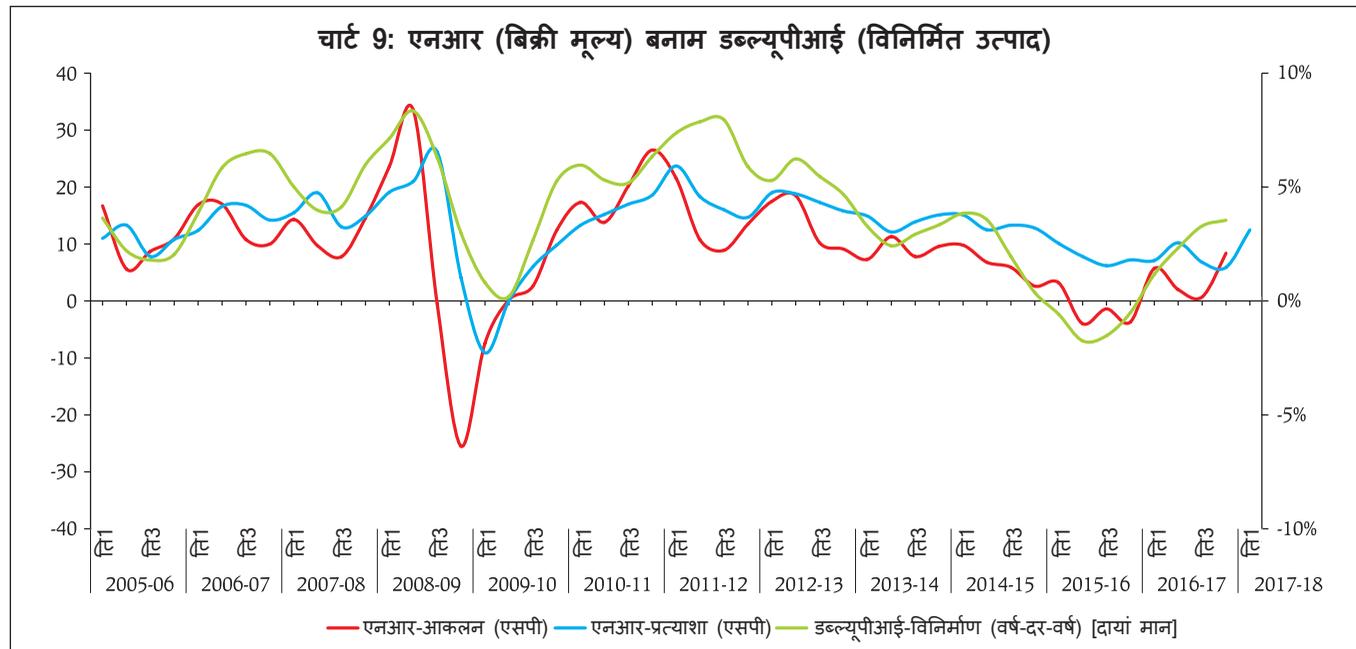
*' प्रत्येक रिगेशन समीकरण के व्याख्यात्मक वेरिअबल में स्थिरांक, डिपेंडेंट वेरिअबल के पूर्व के अंक (तिमाही के अंतराल पर) और बीईआई शामिल हैं।

में समायोजित-आर² आंकड़े सुदृढ़ बन पड़े हैं (सारणी 4)। एनआर-प्रत्याशा संबंधी समतुल्य परिणाम एक जैसे हैं, भले ही संबंध अपेक्षाकृत रूप से कमजोर हैं।

5. सार

औद्योगिक संभावना सर्वे के हाल के दौर में विनिर्माण क्षेत्र की कंपनियों द्वारा उत्पादन, आदेश बहियों, निर्यात, क्षमता उपयोगिता और रोजगार मापदंडों के मुताबिक यथा आकलित मांग स्थितियां 2016-17 की चौथी तिमाही में बेहतर के संकेत देती हैं और यह स्थिति 2017-18 की पहली तिमाही में संभवतः बनी रहेगी। फिर भी, माल-सूची की स्थितियों में अभी सुधार होना है। मूल्य की तरफ देखें तो पता चलता है कि 2016-17 के दौरान कच्चे माल की लागत के संबंध में जो प्रत्याशाएं प्राप्त हुई हैं उनमें कमी आई हैं। फिर भी, सर्वे के परिणाम विनिर्माण क्षेत्र की मूल्य निर्धारण शक्ति में सामान्य सुधार दर्शाते हैं। समग्र रूप से, 2016-17 के सर्वे परिणाम दर्शाते हैं कि यह क्षेत्र किसी सुस्पष्ट कायापलट के अभाव में संतुलित है।

चार्ट 9: एनआर (बिक्री मूल्य) बनाम डब्ल्यूपीआई (विनिर्मित उत्पाद)



इस आलेख में, अनुभव के आधार पर विश्लेषण किए गए थे कि क्या सर्वे के परिणामों से संगत सरकारी आंकड़ों में परिवर्तन की दिशा के बारे में कतिपय जानकारी प्राप्त करने की जांच की जा सके। यह पाया गया है कि बीईआई विनिर्माण क्षेत्र की गतिविधियों को भली-भांति ट्रैक करेगा और वह भी समवर्ती अवधि के आकलन का। साथ ही, सर्वे

का मूल्य पैरामीटर समरूपी डब्ल्यूपीआई-मुद्रास्फीति की ट्रैकिंग के संबंध में उपयोगी जानकारी रखता है। इस प्रकार, सर्वे के परिणाम वित्तीय बाजार और कारोबार से जुड़े नीति निर्माताओं एवं पेशेवरों के लिए भारतीय विनिर्माण क्षेत्र में अल्प-कालिक उतार-चढ़ाव के संबंध में उपयोगी सूचना प्रदान करते हैं।

अनुबंध 1:
कारोबार प्रत्याशा सूचकांक (बीईआई)

तिमाही	बीईआई-आकलन तिमाही	बीईआई-प्रत्याशा तिमाही
ति1:2015-16	104.8	115.2
ति2:2015-16	102.4	113.1
ति3:2015-16	103.6	113.4
ति4:2015-16	103.0	114.2
ति1:2016-17	104.0	110.9
ति2:2016-17	102.7	112.9
ति3:2016-17	101.1	112.9
ति4:2016-17	106.0	111.1
ति1:2017-18		114.2

अनुबंध 2
सारणी 2.1: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - उत्पादन

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)[@]

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया [#]	वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	34.1	17.8	48.1	16.3	39.6	10.9	49.5	28.7
ति2:2015-16	1304	34.1	18.9	46.9	15.2	40.3	11.4	48.3	28.9
ति3:2015-16	1337	34.2	18.2	47.6	16.0	40.5	11.3	48.2	29.2
ति4:2015-16	1342	35.6	18.8	45.6	16.8	41.2	10.2	48.6	31.1
ति1:2016-17	1275	34.5	17.2	48.3	17.3	38.8	13.8	47.4	25.0
ति2:2016-17	723	31.4	20.6	48.0	10.8	40.2	11.2	48.6	29.0
ति3:2016-17	1221	32.0	21.2	46.8	10.8	40.9	12.0	47.2	28.9
ति4:2016-17	1244	35.8	17.8	46.4	18.0	41.1	13.3	45.6	27.8
ति1:2017-18						41.6	11.7	46.7	29.9

उत्पादन में 'वृद्धि' आशाजनक है।

[@]: प्रतिशत में पूर्णांक करने के चलते 100 तक नहीं जोड़ा गया है। यह 2.1 से 2.22 तक की सभी सारणियों के लिए लागू है।

[#]: निवल प्रतिक्रिया (एनआर) आशाजनक और निराशाजनक करने वाले प्रतिक्रियादाताओं के प्रतिशत का अंतर है। अंतर का दायरा (-) 100 और 100 है। शून्य से अधिक मूल्य से विस्तार का संकेत मिलता है और शून्य से कम मूल्य से संकुचन का संकेत मिलता है।

सारणी 2.2 : मूल्यांकन और अपेक्षाएं - आदेश बही

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया	वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	30.8	17.7	51.5	13.2	37.8	10.5	51.7	27.3
ति2:2015-16	1304	31.1	19.7	49.3	11.4	37.4	11.6	51.0	25.8
ति3:2015-16	1337	30.4	18.8	50.8	11.5	37.4	11.9	50.8	25.5
ति4:2015-16	1342	31.8	19.7	48.5	12.1	39.7	10.6	49.8	29.1
ति1:2016-17	1275	32.1	16.5	51.3	15.6	35.5	14.3	50.3	21.2
ति2:2016-17	723	29.3	20.4	50.3	9.0	38.1	10.8	51.1	27.3
ति3:2016-17	1221	29.1	22.0	48.9	7.1	36.4	11.7	51.9	24.7
ति4:2016-17	1244	34.8	19.2	46.0	15.6	35.1	14.2	50.7	20.9
ति1:2017-18						39.5	11.5	49.0	28.0

आदेश बही में 'वृद्धि' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '[@]' और '[#]' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.3: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - लंबित बही

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		सामान्य से कम	सामान्य से अधिक	सामान्य	निवल प्रतिक्रिया	सामान्य से कम	सामान्य से अधिक	सामान्य	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	18.6	5.1	76.3	13.6	13.1	6.9	80.1	6.2
ति2:2015-16	1304	18.6	5.1	76.3	13.5	14.6	6.1	79.4	8.5
ति3:2015-16	1337	19.2	5.0	75.8	14.3	14.1	6.5	79.4	7.6
ति4:2015-16	1342	18.2	4.3	77.4	13.9	13.3	7.0	79.7	6.3
ति1:2016-17	1275	16.7	5.7	77.6	11.0	15.1	4.9	80.0	10.2
ति2:2016-17	723	18.9	5.2	75.9	13.7	12.9	6.3	80.8	6.6
ति3:2016-17	1222	19.0	5.3	75.7	13.7	12.9	6.7	80.4	6.2
ति4:2016-17	1244	18.1	5.1	76.9	13.0	15.3	5.0	79.7	10.3
ति1:2017-18						13.4	4.9	81.8	8.5

'सामान्य से कम' लंबित आदेश आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '[@]' और '[#]' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.4: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - क्षमता उपयोग (प्रमुख उत्पाद)

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया	वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	23.3	16.7	60.0	6.7	27.5	8.8	63.7	18.7
ति2:2016-16	1304	21.7	18.1	60.2	3.6	27.7	10.2	62.1	17.6
ति3:2015-16	1337	23.4	16.3	60.4	7.1	27.8	10.2	62.0	17.5
ति4:2015-16	1342	24.6	17.5	57.9	7.1	27.8	8.7	63.5	19.1
ति1:2016-17	1275	21.8	15.1	63.1	6.7	26.3	12.9	60.8	13.4
ति2:2016-17	723	21.5	17.9	60.7	3.6	26.5	9.7	63.9	16.8
ति3:2016-17	1222	20.2	17.9	61.9	2.3	27.4	10.2	62.5	17.2
ति4:2016-17	1244	25.9	15.7	58.4	10.2	27.6	11.2	61.2	16.4
ति1:2017-18						28.1	10.9	61.0	17.2

क्षमता उपयोग में 'वृद्धि' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.5: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - क्षमता उपयोग का स्तर (पिछली चार तिमाहियों के औसत की तुलना में)

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		सामान्य से अधिक	सामान्य से कम	सामान्य	निवल प्रतिक्रिया	सामान्य से अधिक	सामान्य से कम	सामान्य	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	10.2	18.6	71.3	-8.4	12.1	12.3	75.6	-0.2
ति2:2016-16	1304	8.8	19.3	71.9	-10.5	10.5	13.9	75.5	-3.4
ति3:2015-16	1337	8.7	18.6	72.6	-9.9	9.2	13.1	77.6	-3.9
ति4:2015-16	1342	9.8	19.2	71.0	-9.4	9.4	12.4	78.2	-3.0
ति1:2016-17	1275	10.9	16.6	72.5	-5.7	9.8	14.6	75.6	-4.8
ति2:2016-17	723	9.3	15.4	75.3	-6.0	10.3	11.9	77.8	-1.6
ति3:2016-17	1222	8.7	16.4	74.9	-7.7	10.8	11.5	77.7	-0.7
ति4:2016-17	1244	9.3	16.1	74.6	-6.8	10.6	12.9	76.5	-2.3
ति1:2017-18						9.9	12.2	77.9	-2.3

क्षमता उपयोग के स्तर में 'सामान्य से अधिक' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.6: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन (अगले 6 महीनों में प्रत्याशित मांग के संबंध में)

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		पर्याप्त से अधिक	पर्याप्त से कम	पर्याप्त	निवल प्रतिक्रिया	पर्याप्त से अधिक	पर्याप्त से कम	पर्याप्त	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	15.1	8.0	76.9	7.2	13.9	6.9	79.2	7.0
ति2:2016-16	1304	14.1	7.7	78.3	6.4	15.8	6.8	77.5	9.0
ति3:2015-16	1337	14.3	8.5	77.2	5.8	14.4	6.8	78.8	7.5
ति4:2015-16	1342	13.9	8.5	77.7	5.4	14.5	7.0	78.5	7.5
ति1:2016-17	1275	14.6	8.6	76.8	6.0	13.8	7.1	79.1	6.7
ति2:2016-17	723	14.4	8.2	77.3	6.2	13.6	7.6	78.8	6.0
ति3:2016-17	1222	12.3	9.1	78.6	3.2	14.2	7.4	78.4	6.8
ति4:2016-17	1244	14.1	7.1	78.7	7.0	11.9	7.4	80.7	4.5
ति1:2017-18						13.3	6.7	79.9	6.6

(प्रतिशत प्रतिक्रिया) उत्पादन क्षमता के मूल्यांकन में 'पर्याप्त से अधिक' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.7: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - निर्यात

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया	वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	24.1	14.0	62.0	10.1	27.6	8.1	64.3	19.5
ति2:2015-16	1304	23.5	17.8	58.7	5.7	27.5	8.0	64.5	19.6
ति3:2015-16	1337	23.3	17.7	59.0	5.7	27.3	10.6	62.1	16.7
ति4:2015-16	1342	22.1	18.8	59.1	3.3	26.9	10.0	63.1	16.9
ति1:2016-17	1275	21.5	15.3	63.1	6.2	25.7	12.0	62.3	13.7
ति2:2016-17	723	19.8	20.6	59.6	-0.8	26.3	9.5	64.2	16.8
ति3:2016-17	1221	22.9	18.5	58.6	4.4	24.3	13.2	62.5	11.2
ति4:2016-17	1244	24.3	17.7	58.0	6.6	25.3	13.2	61.5	12.1
ति1:2017-18						26.5	11.3	62.2	15.2

निर्यात में 'वृद्धि' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.8: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - आयात

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया	वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	19.8	9.1	71.0	10.7	20.3	7.9	71.8	12.4
ति2:2015-16	1304	18.8	10.4	70.7	8.4	18.0	8.1	73.9	9.9
ति3:2015-16	1337	17.2	11.1	71.8	6.1	18.0	8.8	73.2	9.2
ति4:2015-16	1342	17.6	12.9	69.4	4.7	16.4	8.6	75.0	7.7
ति1:2016-17	1275	18.1	9.7	72.3	8.4	16.7	10.9	72.4	5.8
ति2:2016-17	723	17.5	10.6	71.9	7.0	17.5	7.9	74.6	9.6
ति3:2016-17	1221	17.9	11.7	70.4	6.2	18.1	9.4	72.5	8.7
ति4:2016-17	1244	17.5	10.7	71.8	6.8	17.7	9.3	73.1	8.4
ति1:2017-18						17.3	7.2	75.5	10.1

आयात में 'वृद्धि' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.9: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - कचची सामग्री की इन्वेंटरी का स्तर

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		औसत से कम	औसत से अधिक	औसत	निवल प्रतिक्रिया	औसत से कम	औसत से अधिक	औसत	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	6.5	14.2	79.3	-7.7	7.1	10.0	83.0	-2.9
ति2:2015-16	1304	7.4	13.7	78.9	-6.3	5.5	11.5	83.0	-6.0
ति3:2015-16	1337	6.5	12.2	81.4	-5.7	5.5	10.6	83.9	-5.1
ति4:2015-16	1342	7.0	12.5	80.5	-5.5	5.3	9.9	84.8	-4.7
ति1:2016-17	1275	6.0	12.4	81.7	-6.4	5.9	9.7	84.4	-3.8
ति2:2016-17	723	7.0	11.8	81.2	-4.8	5.8	10.8	83.5	-5.0
ति3:2016-17	1221	7.3	11.7	81.2	-4.4	5.2	10.3	84.5	-5.2
ति4:2016-17	1244	6.9	12.4	81.1	-5.5	6.8	9.0	84.2	-2.2
ति1:2017-18						6.1	8.7	85.2	-2.6

कच्चे माल की इन्वेंटरी का स्तर 'औसत से कम' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.10: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - तैयार माल की इन्वेंटरी का स्तर

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		औसत से कम	औसत से अधिक	औसत	निवल प्रतिक्रिया	औसत से कम	औसत से अधिक	औसत	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	7.2	18.1	74.7	-10.9	5.8	13.4	80.9	-7.6
ति2:2015-16	1304	6.9	17.5	75.6	-10.6	6.4	14.6	78.9	-8.2
ति3:2015-16	1337	7.0	17.4	75.7	-10.4	6.3	11.6	82.1	-5.3
ति4:2015-16	1342	8.7	15.4	75.9	-6.7	6.2	12.1	81.6	-5.9
ति1:2016-17	1275	7.0	15.3	77.7	-8.3	7.0	11.1	81.9	-4.9
ति2:2016-17	723	6.7	15.8	77.5	-9.0	7.1	12.1	80.8	-5.0
ति3:2016-17	1221	6.4	15.3	78.3	-8.9	4.5	12.5	83.0	-7.9
ति4:2016-17	1244	7.3	16.6	76.1	-9.3	6.5	11.6	81.9	-5.1
ति1:2017-18						6.4	10.7	82.8	-4.3

तैयार माल की इन्वेंटरी का स्तर 'औसत से कम' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.11: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - रोजगार

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया	वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	16.7	9.3	74.0	7.4	15.8	7.0	77.2	8.8
ति2:2015-16	1304	15.2	9.3	75.5	5.9	16.5	6.6	76.8	9.9
ति3:2015-16	1337	15.3	9.4	75.3	5.8	15.7	6.1	78.2	9.6
ति4:2015-16	1342	14.2	10.1	75.7	4.1	15.3	6.7	78.0	8.6
ति1:2016-17	1275	15.0	9.7	75.3	5.3	15.1	8.0	76.9	7.1
ति2:2016-17	723	14.5	7.7	77.8	6.8	15.8	7.7	76.5	8.1
ति3:2016-17	1221	13.5	9.7	76.8	3.8	14.7	5.6	79.7	9.1
ति4:2016-17	1244	15.9	9.3	74.8	6.6	12.1	6.9	81.0	5.2
ति1:2017-18						15.9	6.6	77.5	9.3

रोजगार में 'वृद्धि' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.12: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - समग्र वित्तीय स्थिति

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		बेहतर	खराब	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया	बेहतर	खराब	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	27.9	13.2	59.1	14.4	34.3	8.0	57.7	26.3
ति2:2015-16	1304	27.5	14.0	58.6	13.5	34.2	9.1	56.7	25.1
ति3:2015-16	1337	26.2	12.9	60.9	13.2	34.8	8.8	56.4	26.0
ति4:2015-16	1342	26.6	12.3	61.0	14.3	33.3	8.5	58.2	24.7
ति1:2016-17	1275	27.9	11.9	60.1	16.0	33.1	8.3	58.6	24.8
ति2:2016-17	723	27.7	11.3	61.1	16.4	35.2	8.3	56.5	26.9
ति3:2016-17	1221	26.0	14.1	59.9	11.9	33.9	6.8	59.3	27.1
ति4:2016-17	1244	30.6	13.6	55.9	17.0	34.1	9.5	56.4	24.6
ति1:2017-18						37.9	7.0	55.1	30.9

समग्र वित्तीय स्थिति 'बेहतर' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.13: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - कार्यशील पूंजी वित्त जरूरत

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया	वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	30.2	6.8	63.0	23.5	32.3	5.1	62.6	27.2
ति2:2015-16	1304	30.2	6.0	63.8	24.2	29.6	4.7	65.7	25.0
ति3:2015-16	1337	30.3	6.7	62.9	23.6	29.9	4.3	65.8	25.5
ति4:2015-16	1342	31.7	6.8	61.4	24.9	30.1	4.9	65.0	25.2
ति1:2016-17	1275	28.1	7.2	64.7	20.8	30.0	5.4	64.6	24.6
ति2:2016-17	723	26.0	6.6	67.4	19.4	29.7	5.6	64.7	24.1
ति3:2016-17	1221	28.9	6.9	64.3	22.0	28.1	4.1	67.8	24.1
ति4:2016-17	1244	30.2	5.6	64.2	24.6	29.2	5.3	65.5	23.9
ति1:2017-18						29.4	5.1	65.5	24.3

कार्यशील पूंजी वित्त 'वृद्धि' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.14: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - वित्त उपलब्धता (आंतरिक उपचय से)

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		सुधार	खराब	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया	सुधार	खराब	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	21.5	10.1	68.3	11.4	24.7	6.6	68.8	18.1
ति2:2015-16	1304	21.1	10.8	68.1	10.4	23.9	7.2	68.9	16.7
ति3:2015-16	1337	22.3	9.4	68.3	12.9	23.5	6.7	69.8	16.8
ति4:2015-16	1342	21.7	9.3	69.0	12.4	26.1	6.1	67.8	20.0
ति1:2016-17	1275	22.4	8.9	68.6	13.5	25.6	6.1	68.3	19.5
ति2:2016-17	723	21.0	8.5	70.5	12.5	25.9	5.8	68.3	20.1
ति3:2016-17	1221	21.6	11.7	66.7	9.9	25.2	5.0	69.8	20.2
ति4:2016-17	1244	25.6	10.3	64.1	15.3	25.4	8.0	66.6	17.4
ति1:2017-18						27.5	6.2	66.3	21.3

वित्त-उपलब्धता में 'सुधार' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.15: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - वित्त उपलब्धता (बैंक और अन्य स्रोतों से)

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		सुधार	खराब	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया	सुधार	खराब	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	19.1	5.4	75.6	13.7	22.6	4.9	72.4	17.7
ति2:2015-16	1304	19.3	5.7	75.0	13.6	21.2	3.8	75.0	17.3
ति3:2015-16	1337	19.2	6.3	74.4	12.9	20.0	3.8	76.3	16.2
ति4:2015-16	1342	18.3	7.5	74.2	10.8	20.6	4.7	74.7	16.0
ति1:2016-17	1275	18.7	7.7	73.6	11.0	21.6	5.2	73.2	16.4
ति2:2016-17	723	18.3	5.6	76.1	12.7	21.7	5.5	72.7	16.2
ति3:2016-17	1221	19.6	7.9	72.5	11.7	21.8	3.3	74.9	18.5
ति4:2016-17	1244	21.3	7.6	71.1	13.7	22.5	5.6	71.9	16.9
ति1:2017-18						24.8	4.9	70.3	19.9

वित्त-उपलब्धता में 'सुधार' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.16 मूल्यांकन और अपेक्षाएं - वित्त उपलब्धता
(विदेश से, यदि लागू हो)

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		सुधार	खराब	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया	सुधार	खराब	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	13.0	4.8	82.2	8.2	14.4	4.0	81.6	10.4
ति2:2015-16	1304	11.1	5.0	83.9	6.1	12.9	3.5	83.6	9.3
ति3:2015-16	1337	11.3	5.2	83.5	6.2	11.5	3.5	85.0	8.0
ति4:2015-16	1342	8.8	5.9	85.3	2.9	12.1	3.9	84.1	8.2
ति1:2016-17	1275	10.6	5.0	84.4	5.6	10.0	4.7	85.4	5.3
ति2:2016-17	723	10.0	3.3	86.6	6.7	12.2	3.8	84.1	8.4
ति3:2016-17	1221	9.1	4.8	86.1	4.3	10.3	2.0	87.7	8.3
ति4:2016-17	1244	8.1	3.3	88.6	4.8	10.0	3.5	86.5	6.5
ति1:2017-18						9.8	2.8	87.4	7.0

वित्त-उपलब्धता में 'सुधार' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.17: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - वित्त लागत

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		कमी	वृद्धि	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया	कमी	वृद्धि	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	10.2	22.3	67.5	-12.1	8.8	21.8	69.4	-13.0
ति2:2015-16	1304	9.4	20.8	69.7	-11.4	9.9	18.7	71.4	-8.7
ति3:2015-16	1337	14.0	19.4	66.6	-5.4	10.2	17.9	71.9	-7.6
ति4:2015-16	1342	11.0	19.7	69.2	-8.7	10.5	15.9	73.6	-5.5
ति1:2016-17	1275	10.1	19.9	70.0	-9.8	8.8	17.1	74.1	-8.3
ति2:2016-17	723	9.4	17.3	73.3	-7.9	9.9	17.4	72.6	-7.5
ति3:2016-17	1221	12.9	16.1	71.1	-3.2	9.4	16.9	73.8	-7.5
ति4:2016-17	1244	15.8	16.7	67.6	-0.9	14.5	14.8	70.8	-0.3
ति1:2017-18						12.9	15.4	71.7	-2.5

वित्त लागत में 'कमी' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.18: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - कच्ची सामग्री की लागत

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		कमी	वृद्धि	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया	कमी	वृद्धि	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	8.6	44.5	46.9	-35.9	6.0	38.8	55.2	-32.8
ति2:2015-16	1304	13.2	38.1	48.7	-24.8	5.2	38.1	56.6	-32.9
ति3:2015-16	1337	12.4	38.7	48.9	-26.4	7.1	35.2	57.7	-28.1
ति4:2015-16	1342	13.3	37.7	49.0	-24.4	6.9	34.2	58.9	-27.3
ति1:2016-17	1275	7.5	41.5	51.0	-34.0	8.3	36.0	55.7	-27.7
ति2:2016-17	723	4.2	43.1	52.7	-39.0	6.0	37.5	56.5	-31.5
ति3:2016-17	1221	6.4	44.6	48.9	-38.2	5.5	37.4	57.1	-32.0
ति4:2016-17	1244	3.5	51.4	45.0	-47.9	5.1	39.4	55.6	-34.3
ति1:2017-18						4.1	42.0	54.0	-37.9

कच्ची सामग्री की लागत में 'कमी' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.19: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - विक्रय मूल्य

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		वृद्धि	कमी	No change	निवल प्रतिक्रिया	वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	18.3	15.2	66.5	3.1	19.1	8.8	72.1	10.3
ति2:2015-16	1304	15.8	19.8	64.4	-4.0	19.5	11.6	68.8	7.9
ति3:2015-16	1337	16.7	18.0	65.3	-1.4	18.3	12.2	69.5	6.2
ति4:2015-16	1342	15.9	19.6	64.5	-3.7	17.9	10.7	71.4	7.2
ति1:2016-17	1275	18.9	13.2	67.9	5.7	20.2	13.1	66.7	7.1
ति2:2016-17	723	16.5	14.5	69.0	2.0	19.8	9.7	70.5	10.1
ति3:2016-17	1221	16.9	16.2	66.9	0.7	17.2	10.4	72.4	6.8
ति4:2016-17	1244	21.4	13.0	65.6	8.4	16.8	10.9	72.3	5.9
ति1:2017-18						21.6	9.1	69.3	12.5

विक्रय मूल्य में 'वृद्धि' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.20: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - लाभ मार्जिन

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		वृद्धि	कमी	No change	निवल प्रतिक्रिया	वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	14.2	28.5	57.3	-14.2	18.8	19.3	61.9	-0.5
ति2:2015-16	1304	13.1	30.0	56.9	-16.9	18.5	20.0	61.5	-1.6
ति3:2015-16	1337	14.3	29.5	56.2	-15.3	18.4	19.7	61.9	-1.3
ति4:2015-16	1342	13.4	30.1	56.5	-16.7	18.1	20.1	61.8	-2.0
ति1:2016-17	1275	14.4	27.4	58.2	-12.8	18.5	22.1	59.4	-3.6
ति2:2016-17	723	15.8	28.8	55.4	-12.9	19.1	19.3	61.6	-0.2
ति3:2016-17	1221	15.3	28.3	56.4	-13.0	19.5	19.4	61.2	0.1
ति4:2016-17	1244	16.7	27.8	55.5	-11.1	18.5	21.3	60.2	-2.8
ति1:2017-18						20.3	19.2	60.4	1.1

लाभ मार्जिन में 'वृद्धि' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.21: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - समय कारोबार स्थिति

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		बेहतर	खराब	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया	बेहतर	खराब	कोई परिवर्तन नहीं	निवल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	32.5	12.9	54.6	19.6	42.7	6.7	50.6	36.0
ति2:2015-16	1304	30.2	16.3	53.6	13.9	40.3	8.2	51.5	32.0
ति3:2015-16	1337	31.3	14.0	54.7	17.4	39.9	8.3	51.8	31.6
ति4:2015-16	1342	30.8	14.6	54.6	16.2	40.9	7.6	51.5	33.3
ति1:2016-17	1275	33.3	12.1	54.6	21.2	39.4	8.9	51.7	30.5
ति2:2016-17	723	31.4	14.0	54.6	17.4	41.2	7.7	51.1	33.5
ति3:2016-17	1221	29.4	16.4	54.2	13.0	40.1	8.7	51.2	31.3
ति4:2016-17	1244	36.3	14.3	49.5	22.0	39.4	11.5	49.1	27.9
ति1:2017-18						43.6	7.6	48.8	36.0

समय कारोबार स्थिति 'बेहतर' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

सारणी 2.22: मूल्यांकन और अपेक्षाएं - वेतन/अन्य पारिश्रमिक

(प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत)

तिमाही	कुल प्रतिक्रियाएं	मूल्यांकन				अपेक्षाएं			
		वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निबल प्रतिक्रिया	वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं	निबल प्रतिक्रिया
ति1:2015-16	1299	36.9	2.6	60.5	34.2	27.4	3.9	68.7	23.5
ति2:2015-16	1304	31.7	2.8	65.6	28.9	30.0	2.7	67.3	27.3
ति3:2015-16	1337	28.4	3.2	68.4	25.1	24.3	2.3	73.4	22.0
ति4:2015-16	1342	30.5	3.0	66.5	27.5	25.0	2.8	72.2	22.1
ति1:2016-17	1275	34.9	2.9	62.2	32.0	33.2	2.9	63.9	30.3
ति2:2016-17	723	35.8	3.0	61.2	32.8	30.0	3.1	66.9	26.9
ति3:2016-17	1222	28.9	2.8	68.3	26.1	26.6	2.0	71.4	24.7
ति4:2016-17	1244	30.0	2.7	67.3	27.3	25.0	3.3	71.8	21.7
ति1:2017-18						38.8	2.2	59	36.6

वेतन/अन्य पारिश्रमिक में 'वृद्धि' आशाजनक है। सारणी 2.1 में दिए गए फुटनोट '@' और '#' यहां भी लागू हैं।

परिवारों का मुद्रास्फीति प्रत्याशा सर्वेक्षण: 2016-17*

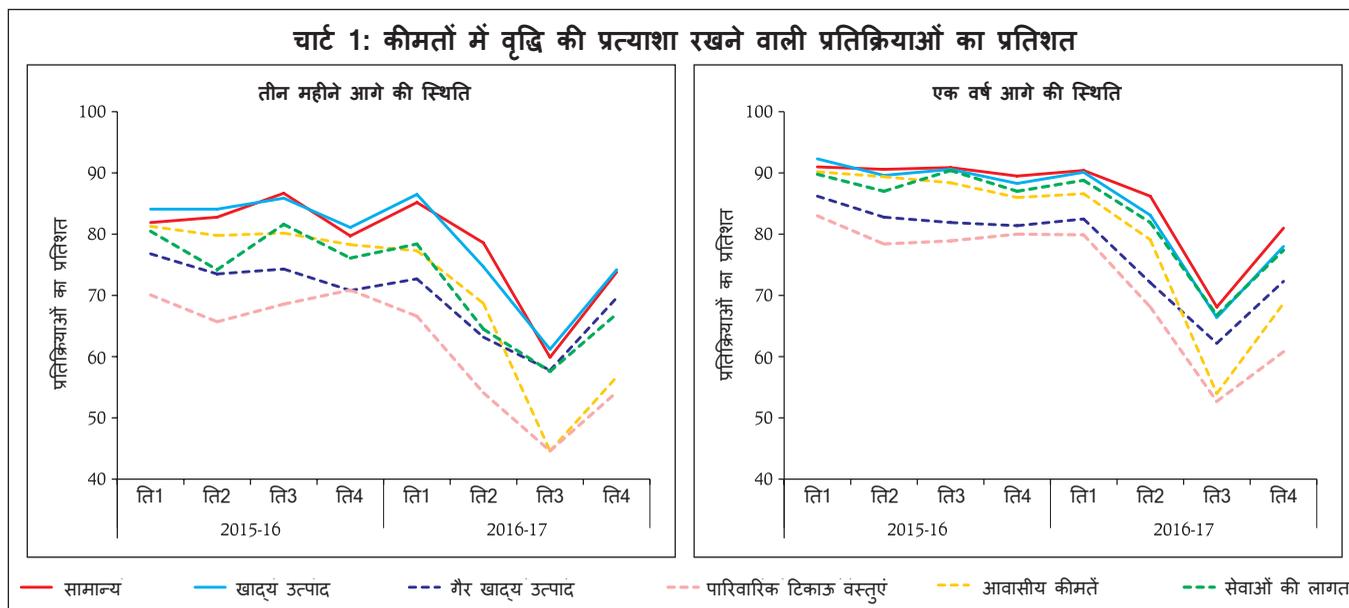
1. प्रस्तावना

1.1 परिवारों की मुद्रास्फीति प्रत्याशाएं खर्च और बचत संबंधी उनके निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और इस प्रकार इनसे मौद्रिक नीति तैयार करने के लिए जरूरी सूचना प्राप्त होती है। इसी परिप्रेक्ष्य में, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा (आरबीआई) सितम्बर 2005 से परिवारों का मुद्रास्फीति प्रत्याशा सर्वेक्षण किया जा रहा है। वर्तमान में यह सर्वेक्षण 18 शहरों में किया जाता है जिसके तहत प्रत्येक राउंड में 5500 परिवारों का नमूना सर्वेक्षण किया जाता है (अनुबन्ध)। सर्वेक्षण में परिवारों द्वारा कीमतों और महंगाई संबंधी तीन माह आगे की तथा एक वर्ष आगे¹ की प्रत्याशाओं एवं अनुमानों संबंधी उनकी गुणात्मक और मात्रात्मक प्रतिक्रियाओं को प्रकाश में लाया जाता है। वर्तमान वार्षिक आलेख में सर्वेक्षण के चार त्रैमासिक चक्रों (44 से 47वें चक्र)² के परिणामों का विश्लेषण किया गया है।

2. सर्वेक्षण के परिणाम

2.1 वर्ष 2016-17 की दूसरी तिमाही से 2016-17 की चौथी तिमाही तक के सर्वेक्षण में आगामी तीन माह एवं आगामी एक वर्ष तक कीमतों में उछाल आने की संभावना व्यक्त करने वालों का अनुपात वर्ष 2015-16 की उन्हीं तिमाहियों के अनुपात से कम था। तिमाही-दर-तिमाही आधार पर, तीन माह आगे की अवधि के लिए इस प्रकार की प्रतिक्रिया देने वालों का अनुपात 2016-17 की पहली तिमाही के 85.2 प्रतिशत से गिरकर 2016-17 की चौथी तिमाही में 73.8 प्रतिशत रहा और यह 2016-17 की तीसरी तिमाही में 59.9 प्रतिशत के न्यूनतम स्तर पर रहा। इसी प्रकार, एक वर्ष आगे की अवधि के लिए इस प्रकार की प्रतिक्रिया देने वालों का अनुपात 2016-17 की पहली तिमाही के 90.4 प्रतिशत से गिरकर 2016-17 की चौथी तिमाही में 81.4 प्रतिशत रहा और यह 2016-17 की तीसरी तिमाही में 68.1 प्रतिशत के न्यूनतम स्तर पर रहा (चार्ट 1)। बहुत से खाद्य उत्पादों की कीमतों में होने वाली मौसमी गिरावट और विमुद्रीकरण की घटना संयोग से एक ही समय में हुई जिसके कारण वर्ष 2016-17 की तीसरी तिमाही में मुद्रास्फीति संबंधी परिवारों के दृष्टिकोण में तेजी से बदलाव देखने को मिला।

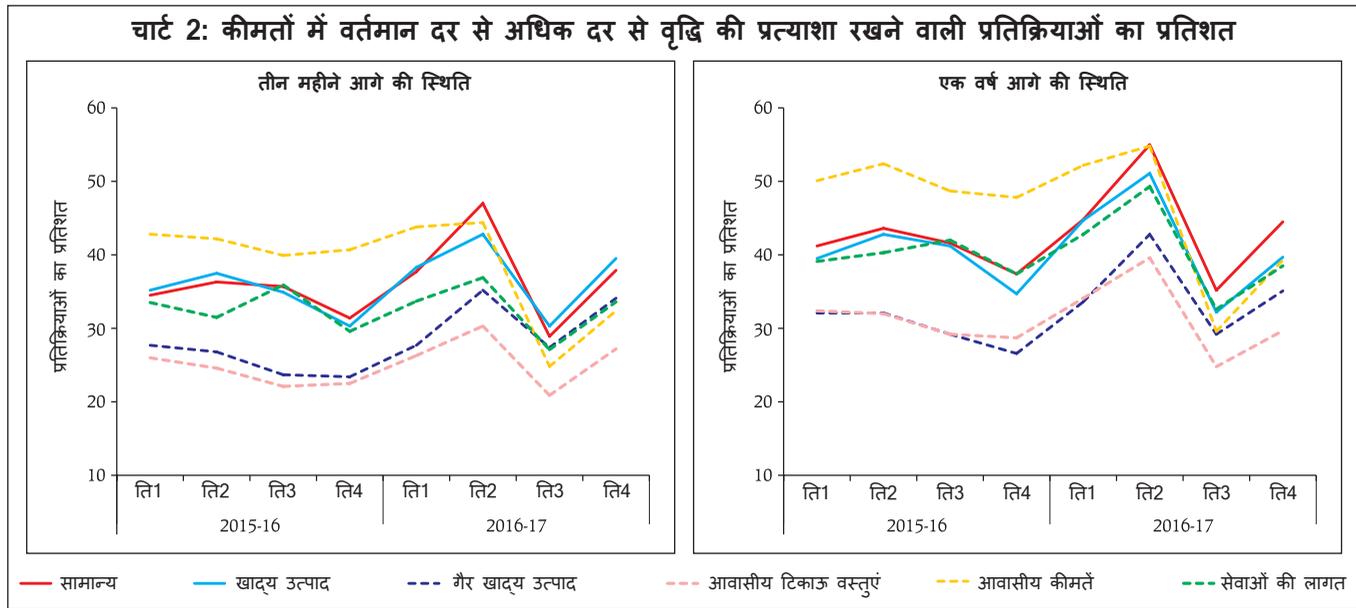
चार्ट 1: कीमतों में वृद्धि की प्रत्याशा रखने वाली प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत



* सांख्यिकीय और सूचना प्रबंध विभाग के परिवार सर्वेक्षण प्रभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई द्वारा तैयार किया गया। पिछला वार्षिक आलेख भारिबें बुलेटिन के जून 2016 के अंक में प्रकाशित हुआ था। सर्वेक्षण के परिणाम नियमित रूप से भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट पर प्रकाशित किए जा रहे हैं।

¹ परिवारों की मुद्रास्फीति प्रत्याशाएं मुद्रास्फीति के आधिकारिक मानों के साथ सामान्यतया तुलनीय नहीं होतीं क्योंकि वे अपने खुद के उपभोक्ता बास्केट से संबंधित होती हैं।

² सर्वेक्षण के त्रैमासिक चक्रों के अतिरिक्त, भारतीय रिज़र्व बैंक ने वर्ष 2014 से प्रायोगिक तौर पर मई और नवंबर महीनों में आईईएसएच के दो अतिरिक्त चक्रों की शुरुआत की है ताकि इस सर्वेक्षण का तालमेल द्विमासिक मौद्रिक नीति समीक्षा के साथ बैठाया जा सके। इस अतिरिक्त चक्र (नवंबर 2016 चक्र) के परिणाम वर्ष 2016 में पहली बार पब्लिक डोमेन में डाले गए।

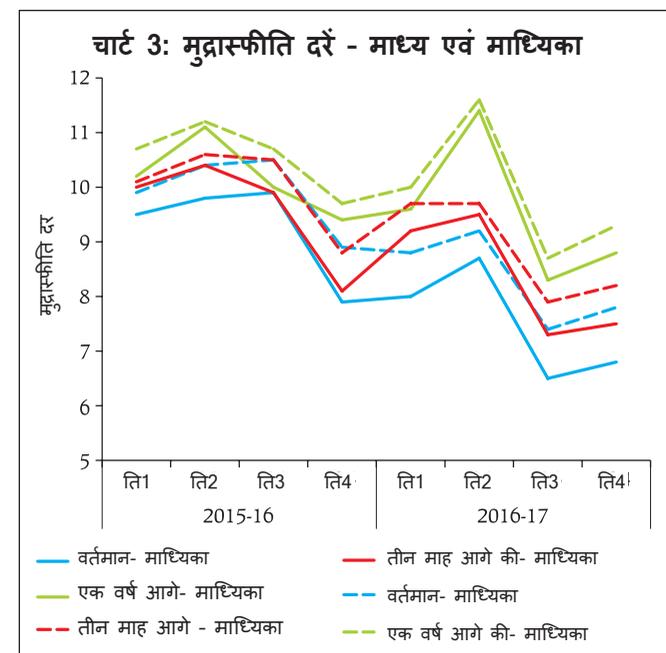


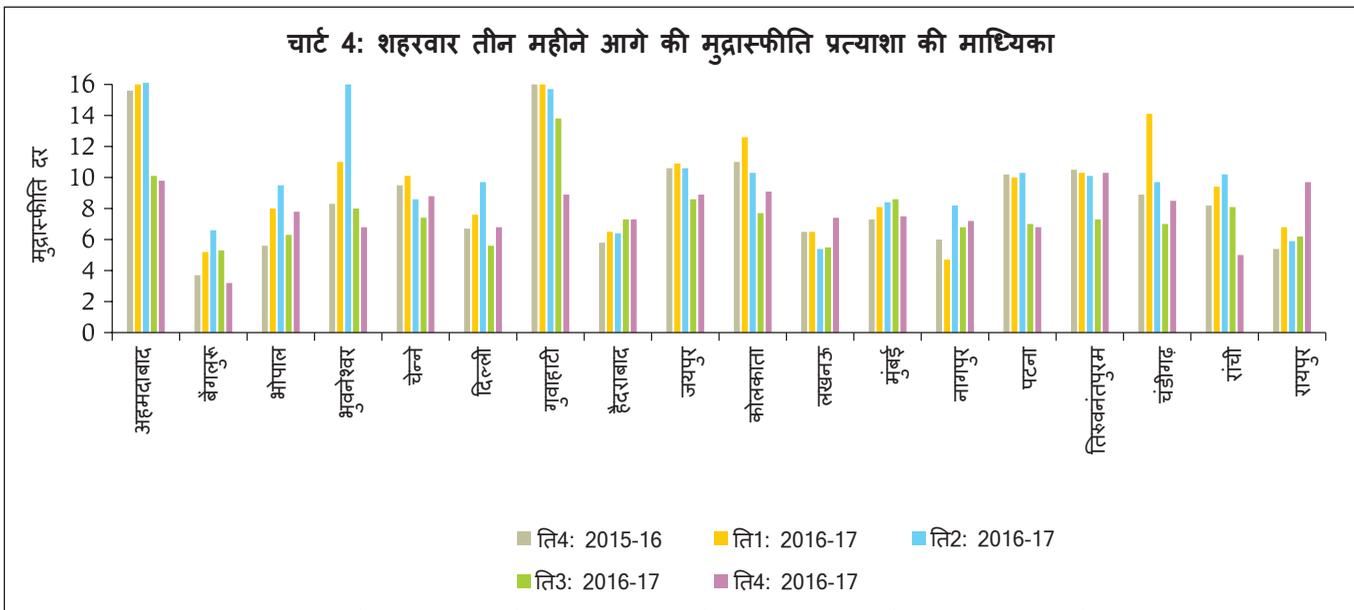
2.2 ऐसे परिवार जिन्होंने कीमतों के सामान्यतया बढ़ने का अनुमान लगाया था, उनसे कहा गया कि वे आगामी तीन महीनों के लिए और आगामी एक वर्ष के लिए कीमतों में होने वाली वृद्धि की दर का अनुमान लगाएं। वर्ष-दर-वर्ष आधार पर कीमतों में सामान्य रूप से वर्तमान दर से अधिक दर से वृद्धि का अनुमान लगाने वाले परिवारों का प्रतिशत 2016-17 की तीसरी तिमाही को छोड़कर सभी तिमाहियों में अपेक्षाकृत अधिक था और मौसमी पैटर्न के अनुरूप यह 2016-17 की दूसरी तिमाही में यह अपने उच्चतम स्तर पर था।

2.3 वर्ष 2016-17 के दौरान विभिन्न उत्पाद समूहों से संबंधित दोनों प्रकार की कीमत प्रत्याशाओं - आगामी तीन महीनों के लिए और आगामी एक वर्ष के लिए - में बड़ा बदलाव देखा गया। ऐसा आवासीय अथवा घरेलू टिकाऊ वस्तुओं के मामले में प्रमुखता से देखने को मिला जिसमें कीमतें कम रहने का अनुमान करने वालों के अनुपात में काफी परिवर्तन दिखायी पड़ा। इन सब के बावजूद तीसरी तिमाही को छोड़कर सभी उत्पाद समूहों में एक वर्ष पूर्व की स्थिति की तुलना में उत्पाद स्तरीय कीमतें वर्तमान दरों से ज्यादा बढ़ने की प्रत्याशा रखने वालों का अनुपात सामान्यतया उच्चतर स्तर पर रहा (चार्ट 2)।

2.4 प्राप्त प्रतिक्रियाओं में आगामी तीन महीनों और साथ ही अगले एक वर्ष के लिए व्यक्त मुद्रास्फीति प्रत्याशा के स्तर के मात्रात्मक आकलन से पता चला कि वर्ष-दर-वर्ष आधार पर वर्ष 2016-17 की प्रत्येक तिमाही में तीन माह आगे की मुद्रास्फीति प्रत्याशा का स्तर कम बना रहा (तालिका 6)। यह कमी जहाँ 60 से 90 बेसिस अंकों के बीच रही, यह 2016-17

की तीसरी तिमाही में 260 बेसिस अंक रही। 2016-17 की दूसरी तिमाही, जबकि 2015-16 की दूसरी तिमाही की तुलना में माध्यिका मान थोड़ा अधिक रहा, को छोड़कर एक वर्ष आगे की प्रत्याशा में भी यही पैटर्न बना रहा (चार्ट 3 टेबल 6)। यदि वैश्विक आर्थिक संकट की अवधि को छोड़ दें तो 2016-17 की तीसरी तिमाही में मुद्रास्फीति प्रत्याशा का माध्यिका मान इस तरह के सर्वेक्षण के अब तक का न्यूनतम स्तर पर था। वर्तमान धारणाओं के माध्यिका मान और तीन माह आगे की मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं के बीच अंतराल जो कि 2015-16

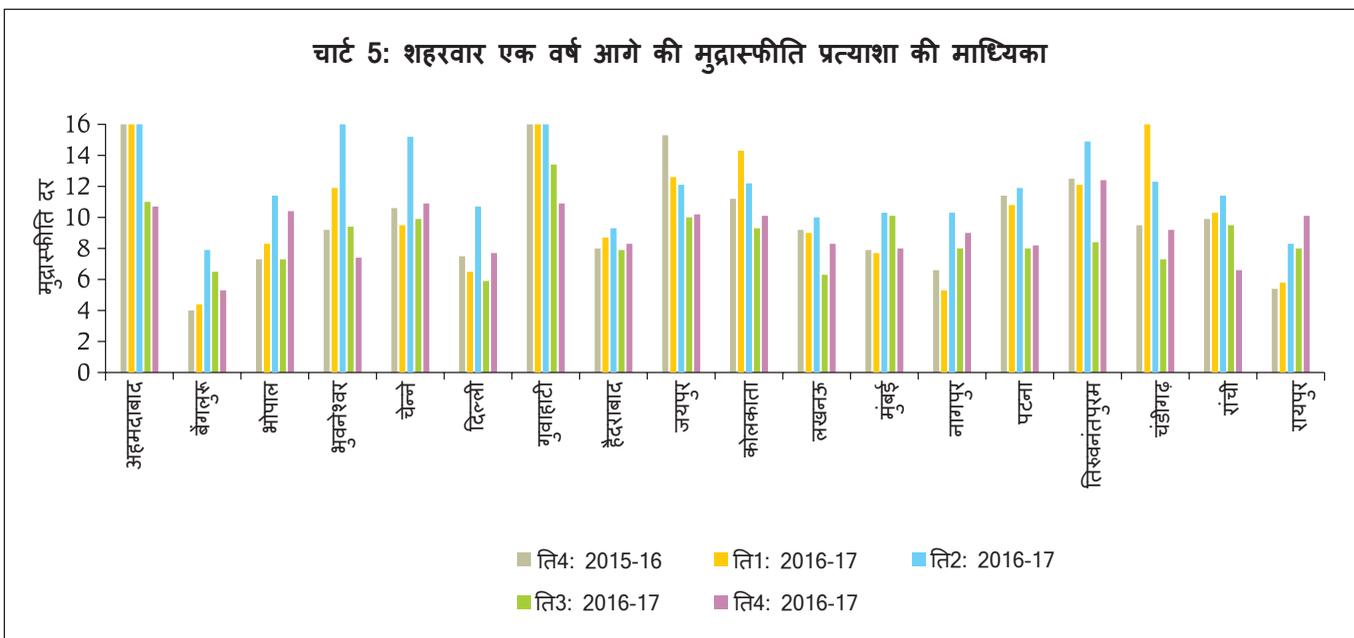




के उत्तरार्ध में तेजी से कम हुआ था, 2016-17 में पुनः बढ़ गया और माध्य मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं के माध्य में भी उसी प्रकार का उतार-चढ़ाव देखा गया ।

2.5 परिवर्तनों के विश्लेषण (एएनओवीए) से पता चलता है कि मुद्रास्फीति धारणाओं और प्रत्याशाओं से संबंधित परिवर्तन के लिए 'शहर' महत्वपूर्ण स्रोत रहा है (सारणी 7)। हाल की तिमाहियों में शहरों के बीच असमानता में कुछ कमी आई है।

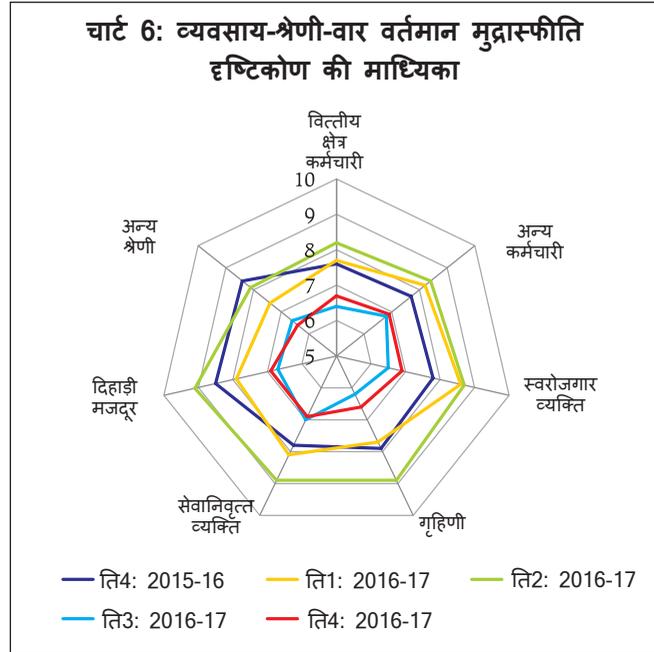
2016-17 की पहली छमाही के दौरान अपेक्षाकृत अधिक माध्यिका मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं दर्ज करने वाले शहर - गुवाहाटी और अहमदाबाद ने दूसरी छमाही के दौरान इसमें तेजी से गिरावट के पक्ष में मत दिया। दूसरी तरफ, 2016-17 के दौरान रायपुर ने माध्यिका मुद्रास्फीति में वृद्धि दर्ज की जिसके अंतर्गत सर्वाधिक वृद्धि 2016-17 की चौथी तिमाही में देखी गई (चार्ट 4 एवं 5, सारणी 8)।



2.6 सेवानिवृत्त लोगों एवं दिहाड़ी मजदूरों से आमतौर पर अपेक्षाकृत अधिक माध्यिका धारणाओं ओर प्रत्याशाओं की रिपोर्ट प्राप्त हुई है, जबकि वित्तीय क्षेत्र के कर्मचारियों एवं

अन्य से अपेक्षाकृत कम माध्यिका मुद्रास्फीति अनुभूतियों एवं संभावनाओं की रिपोर्ट प्राप्त हुई हैं (चार्ट 6)।

2.7 लगभग 0.30 दायरे वाली माध्य मुद्रास्फीति³ के संबंध में अपेक्षाकृत छोटे बूटस्ट्रैप कॉन्फिडेंस इंटरवल्स (99 प्रतिशत) से यह संकेत मिलता है कि जनसंख्या के हाउसहोल्डों की माध्य मुद्रास्फीति अनुभूतियों और संभावनाओं के लिए बिंदुवार आकलन काफी सटीक हैं (सारणी 9)।



3. निष्कर्ष

3.1 2016-17 के दौरान परिवारों की मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं में, विशेष रूप से विमुद्रीकरण के बाद, कमी आयी। यह कमी सभी उत्पाद समूहों में देखी गयी, किंतु इसका अधिक असर आवास और टिकाऊ घरेलू वस्तुओं के मूल्यों पर देखा गया। गुवाहाटी और अहमदाबाद शहरों, जहां 2016-17 के पूर्वार्द्ध तक माध्यिका मुद्रास्फीति प्रत्याशाएं अखिल भारतीय औसत से काफी अधिक रहीं, में भी काफी कमी देखी गई। हालांकि, मुद्रास्फीति की वर्तमान धारणा और तीन माह तथा एक वर्ष बाद की प्रत्याशाओं में एकरूपता देखी गयी।

³ माध्य मुद्रास्फीति (99 प्रतिशत) से संबंधित बूटस्ट्रैप कॉन्फिडेंस इंटरवल की गणना के लिए प्रतिस्थापन के साथ यादृच्छिक नमूने लेने (एसआरएसडब्ल्यूआर) का प्रयोग करते हुए 10,000 नमूने पुनः लिए गए।

अनुबंध : आंकड़ों की सारणी

सारणी 1: सामान्य मूल्य प्रत्याशा के संबंध में तीन महीने एवं एक वर्ष आगे की प्रत्याशा का सकल सारणीकरण
ति1: 2016-17

सामान्य मूल्य प्रत्याशा एक वर्ष आगे	सामान्य मूल्य प्रत्याशा तीन महीने आगे						कुल
	वर्तमान दर से अधिक मूल्य वृद्धि	वर्तमान दर के समान मूल्य वृद्धि	वर्तमान दर से कम मूल्य वृद्धि	मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं	मूल्यों में गिरावट		
वर्तमान दर से अधिक मूल्य वृद्धि	29.4	8.8	3.2	2.8	0.6	44.8	
वर्तमान दर के समान मूल्य वृद्धि	4.2	16.1	3.9	2.9	0.4	27.6	
वर्तमान दर से कम मूल्य वृद्धि	2.3	2.3	9.9	2.9	0.5	18.0	
मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं	1.1	1.1	1.2	2.3	0.5	6.3	
मूल्यों में गिरावट	0.7	0.4	0.5	0.5	1.3	3.4	
कुल	37.7	28.7	18.8	11.4	3.4	100.0	

अध्ययन अवधि के दौरान एक वर्ष आगे की सामान्य मूल्य प्रत्याशा निर्भर है तीन महीने आगे की सामान्य मूल्य प्रत्याशा पर जो 5 प्रतिशत स्तर महत्व पर है।

सारणी 2: सामान्य मूल्य प्रत्याशा के संबंध में तीन महीने एवं एक वर्ष आगे की प्रत्याशा का सकल सारणीकरण
ति2: 2016-17

सामान्य मूल्य प्रत्याशा एक वर्ष आगे	सामान्य मूल्य प्रत्याशा तीन महीने आगे						कुल
	वर्तमान दर से अधिक मूल्य वृद्धि	वर्तमान दर के समान मूल्य वृद्धि	वर्तमान दर से कम मूल्य वृद्धि	मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं	मूल्यों में गिरावट		
वर्तमान दर से अधिक मूल्य वृद्धि	36.2	7.0	5.0	5.5	1.3	55.0	
वर्तमान दर के समान मूल्य वृद्धि	5.4	7.9	2.1	4.1	0.9	20.4	
वर्तमान दर से कम मूल्य वृद्धि	2.1	1.4	4.6	2.2	0.5	10.8	
मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं	2.4	1.7	0.8	3.0	1.3	9.2	
मूल्यों में गिरावट	0.8	0.6	0.5	0.9	1.8	4.6	
कुल	47.0	18.5	13.0	15.7	5.8	100.0	

सारणी 3 : सामान्य मूल्य प्रत्याशा के संबंध में तीन महीने एवं एक वर्ष आगे की प्रत्याशा का सकल सारणीकरण
ति3: 2016-17

सामान्य मूल्य प्रत्याशा एक वर्ष आगे	सामान्य मूल्य प्रत्याशा तीन महीने आगे						कुल
	वर्तमान दर से अधिक मूल्य वृद्धि	वर्तमान दर के समान मूल्य वृद्धि	वर्तमान दर से कम मूल्य वृद्धि	मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं	मूल्यों में गिरावट		
वर्तमान दर से अधिक मूल्य वृद्धि	22.5	5.3	1.5	4.9	0.9	35.2	
वर्तमान दर के समान मूल्य वृद्धि	3.3	13.5	1.5	5.7	1.0	24.9	
वर्तमान दर से कम मूल्य वृद्धि	0.6	0.9	3.6	2.4	0.5	8.0	
मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं	2.0	2.4	0.9	11.5	3.0	19.8	
मूल्यों में गिरावट	0.7	0.8	0.4	2.4	7.8	12.1	
कुल	28.9	23.0	8.0	26.9	13.3	100.0	

**सारणी 4: सामान्य मूल्य प्रत्याशा के संबंध में तीन महीने एवं एक वर्ष आगे की प्रत्याशा का सकल सारणीकरण
ति4: 2016-17**

सामान्य मूल्य प्रत्याशा एक वर्ष आगे	सामान्य मूल्य प्रत्याशा तीन महीने आगे						कुल
	वर्तमान दर से अधिक मूल्य वृद्धि	वर्तमान दर के समान मूल्य वृद्धि	वर्तमान दर से कम मूल्य वृद्धि	मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं	मूल्यों में गिरावट		
वर्तमान दर से अधिक मूल्य वृद्धि	30.5	6.6	1.4	5.4	0.6	44.5	
वर्तमान दर के समान मूल्य वृद्धि	4.3	16.0	1.8	6.0	0.4	28.5	
वर्तमान दर से कम मूल्य वृद्धि	0.8	1.5	4.3	1.3	0.1	8.0	
मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं	1.8	2.7	0.8	7.4	1.0	13.6	
मूल्यों में गिरावट	0.5	0.6	0.3	1.4	2.7	5.4	
कुल	37.9	27.3	8.6	21.5	4.7	100.0	

सारणी 5 मुद्रास्फीति दर का वितरण- दृष्टिकोण और प्रत्याशा (2016-17)

(प्रतिशत में)

मुद्रास्फीति दर	वर्तमान				तीन महीने आगे				एक वर्ष आगे			
	ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2	ति3	ति4
<1	0.9	0.8	3.3	1.8	1.0	1.2	3.2	1.8	0.7	0.3	3.6	1.6
1-2	1.8	0.6	1.3	1.2	2.0	1.2	1.6	2.7	1.8	0.4	1.8	1.7
2-3	2.5	1.9	4.5	4.3	3.2	5.3	4.5	5.1	2.3	0.8	3.6	2.5
3-4	3.6	3.2	6.5	5.5	3.2	4.4	5.6	4.9	4.1	1.3	3.5	3.6
4-5	10.0	4.7	7.9	8.2	5.0	3.5	7.0	5.5	9.1	2.3	5.1	4.7
5-6	16.0	14.5	21.4	21.2	7.1	6.5	13.2	11.6	8.6	3.7	10.1	8.5
6-7	7.6	7.5	9.8	10.3	10.1	6.3	11.4	11.5	5.2	5.5	8.1	8.5
7-8	8.0	10.2	10.8	11.6	9.5	9.3	13.0	13.5	6.5	5.8	10.6	10.3
8-9	7.1	9.7	7.1	6.5	7.1	8.3	8.3	9.5	6.4	6.3	10.4	10.7
9-10	10.5	4.4	2.8	3.9	8.9	7.2	5.2	5.4	9.4	6.7	6.6	7.6
10-11	8.9	20.1	12.1	9.7	7.7	11.3	9.2	8.0	7.6	13.8	12.4	12.5
11-12	1.6	1.7	0.9	1.8	5.2	4.6	2.5	2.6	4.4	7.8	2.7	2.9
12-13	1.2	1.9	0.8	0.8	3.9	6.7	2.7	3.5	3.1	7.5	3.9	4.6
13-14	0.5	0.7	0.3	0.6	2.4	2.4	1.0	1.3	2.2	3.0	1.4	1.6
14-15	2.4	0.7	0.5	0.8	3.4	1.4	0.8	1.0	4.2	3.3	1.2	1.7
15-16	3.1	5.0	2.7	2.4	4.2	5.6	3.2	3.6	5.5	8.6	6.3	5.5
>=16	14.4	12.4	7.4	9.3	16.0	14.8	7.5	8.5	19.0	22.9	8.6	11.6
कुल	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0

सारणी 6: मुद्रास्फीति दर- मध्यमान,माधिका और मानक विचलन

सर्वेक्षण चक्र	तिमाही	वर्तमान			प्रत्याशा					
		मध्यमान	माधिका	मा.वि.	तीन महीने आगे			एक वर्ष आगे		
					मध्यमान	माधिका	मा.वि.	मध्यमान	माधिका	मा.वि.
40	ति1:2015-16	9.9	9.5	4	10.1	10	4.4	10.7	10.2	4.4
41	ति2:2015-16	10.4	9.8	4.3	10.6	10.4	4.3	11.2	11.1	4.5
42	ति3:2015-16	10.5	9.9	4.2	10.5	9.9	4.1	10.7	10	4.3
43	ति4:2015-16	8.9	7.9	4.4	8.8	8.1	4.6	9.7	9.4	4.6
44	ति1:2016-17	8.8	8.0	4.4	9.7	9.2	4.4	10.0	9.6	4.7
45	ति2:2016-17	9.2	8.7	4.0	9.7	9.5	4.4	11.6	11.4	3.9
46	ति3:2016-17	7.4	6.5	3.9	7.9	7.3	4.1	8.7	8.3	4.3
47	ति4:2016-17	7.8	6.8	4.0	8.2	7.5	4.1	9.3	8.8	4.2

सारणी 7 : अनोवा(एएनओवीए) परिणाम: कारक जो समस्त उतार-चढ़ाव की व्याख्या करते हैं

सर्वेक्षण चक्र	सर्वेक्षण तिमाही	वर्तमान	तीन महीने आगे	एक वर्ष आगे
43	ति4:2015-16	शहर, उम्र-समूह	शहर	शहर, श्रेणी
44	ति1:2016-17	शहर, उम्र-समूह, श्रेणी	शहर, श्रेणी	शहर, श्रेणी
45	ति2:2016-17	शहर, उम्र-समूह	शहर, आय-समूह,	शहर
46	ति3:2016-17	शहर, लिंग, उम्र -समूह	शहर, श्रेणी, आय-समूह	शहर, श्रेणी
47	ति4:2016-17	शहर, उम्र समूह	शहर, श्रेणी	शहर, श्रेणी

सारणी 8: शहरवार मध्यमान(मीडियन) मुद्रास्फीति दृष्टिकोण और प्रत्याशा

शहर	वर्तमान				तीन महीने आगे				एक वर्ष आगे			
	ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2	ति3	ति4
अहमदाबाद	16.0	15.6	10.1	8.5	16.2	16.1	10.1	9.8	16.2	16.3	11.0	10.7
बेंगलुरु	5.1	6.8	4.2	5.0	5.2	6.6	5.3	3.2	4.4	7.9	6.5	5.3
भोपाल	5.8	8.9	5.5	5.7	8.0	9.5	6.3	7.8	8.3	11.4	7.3	10.4
भुवनेश्वर	9.1	15.6	6.6	5.6	11.0	16.2	8.0	6.8	11.9	16.3	9.4	7.4
चेन्नै	7.7	8.5	5.9	6.7	10.1	8.6	7.4	8.8	9.5	15.2	9.9	10.9
दिल्ली	5.8	7.7	5.1	6.2	7.6	9.7	5.6	6.8	6.5	10.7	5.9	7.7
गुवाहाटी	16.2	15.4	11.9	11.8	16.2	15.7	13.8	8.9	16.2	16.3	13.4	10.9
हैदराबाद	6.5	6.7	7.3	6.7	6.5	6.4	7.3	7.3	8.7	9.3	7.9	8.3
जयपुर	9.4	10.3	8.1	8.0	10.9	10.6	8.6	8.9	12.6	12.1	10.0	10.2
कोलकाता	10.6	9.8	7.9	8.5	12.6	10.3	7.7	9.1	14.3	12.2	9.3	10.1
लखनऊ	7.8	7.3	5.3	6.2	6.5	5.4	5.5	7.4	9.0	10.0	6.3	8.3
मुंबई	7.1	7.2	7.5	6.9	8.1	8.4	8.6	7.5	7.7	10.3	10.1	8.0
नागपुर	3.6	8.2	5.7	5.9	4.7	8.2	6.8	7.2	5.3	10.3	8.0	9.0
पटना	8.7	9.0	6.0	6.1	10.0	10.3	7.0	6.8	10.8	11.9	8.0	8.2
तिरुवनंतपुरम	12.7	10.7	7.1	10.4	10.3	10.1	7.3	10.3	12.1	14.9	8.4	12.4
चंडीगढ़	13.3	8.3	7.8	7.9	14.1	9.7	7.0	8.5	16.0	12.3	7.3	9.2
रांची	8.1	9.1	7.4	4.6	9.4	10.2	8.1	5.0	10.3	11.4	9.5	6.6
रायपुर	5.0	5.7	6.8	9.3	6.8	5.9	6.2	9.7	5.8	8.3	8.0	10.1

सारणी 9 : 10000 रीसैंपल के आधार पर बूटस्ट्रैप विश्वसनीयता अंतराल (बीसीआई) - 99 प्रतिशत							
सर्वेक्षण चक्र	सर्वेक्षण तिमाही	वर्तमान		तीन महीने आगे		एक वर्ष आगे	
		मध्य के लिए बीसीआई	अंतराल विस्तार	मध्य के लिए बीसीआई	अंतराल विस्तार	मध्य के लिए बीसीआई	अंतराल विस्तार
44	ति1:2016-17	(8.62, 8.93)	0.30	(9.52, 9.83)	0.31	(9.78, 10.12)	0.33
45	ति2:2016-17	(9.10, 9.38)	0.29	(9.55, 9.86)	0.31	(11.48, 11.77)	0.29
46	ति3:2016-17	(7.30, 7.58)	0.29	(7.75, 8.04)	0.29	(8.58, 8.89)	0.31
47	ति4:2016-17	(7.62, 7.91)	0.29	(8.03, 8.33)	0.30	(9.14, 9.45)	0.31

अनुबंध: हाउसहोल्ड मुद्रास्फीति प्रत्याशा सर्वेक्षण- नमूना कवरेज और सर्वेक्षण अनुसूची

सर्वेक्षण के तिमाही राउंड में 18 शहरों के, प्रत्येक राउंड में चार महानगरों अर्थात् दिल्ली, कोलकाता, मुंबई और चेन्नई शहर प्रत्येक के 500 परिवारों तथा चौदह प्रमुख शहरों अर्थात् अहमदाबाद, बेंगलुरु, भोपाल, भुवनेश्वर, चंडीगढ़, गुवाहाटी, हैदराबाद, जयपुर, लखनऊ, नागपुर, पटना, रायपुर, रांची और तिरुवनंतपुरम⁴ से 250 परिवारों को नमूने के तौर पर लेते हुए 5,500 परिवारों का सर्वेक्षण आयोजित किया गया था।

आईईएसएच सर्वेक्षण चार चरणों में आयोजित किया। चरण 1 में प्रतिक्रियाओं के प्रोफाइल की जानकारी अर्थात् नाम, लिंग, आयु, उत्तरदाताओं की श्रेणी आदि की जानकारी। चरण 2 और 3 में सामान्य और विभिन्न उत्पाद समूह हेतु

मूल्य प्रत्याशाओं के संबंध में गुणवत्ता-युक्त प्रतिक्रियाओं को आगामी तीन महीनों और एक वर्ष के संदर्भ में एकत्रित करता है जिसमें पाँच विकल्पों का उपयोग करते हुए उत्तरदाताओं की मूल्य प्रत्याशाओं को नोट किया जाता है अर्थात् (i) वर्तमान दर से अधिक मूल्य में बढ़ोतरी (ii) वर्तमान दर के समान मूल्य में वृद्धि (iii) वर्तमान दर से मूल्य में कम वृद्धि (iv) मूल्य में परिवर्तन नहीं और (v) मूल्य में गिरावट आदि। चरण 4 में आगामी तीन माह और एक वर्ष की अवधि के लिए वर्तमान और अपेक्षित मुद्रास्फीति के संबंध में मात्रात्मक प्रत्युत्तर एकत्रित करता है। जिसमें 100 आधार अंकों के मध्यवर्ती श्रेणी अंतराल के साथ मुद्रास्फीति दर का दायरा "1 प्रतिशत से कम" से लेकर "16 प्रतिशत और अधिक" तक का है।

⁴ यह सुनिश्चित किया गया कि नमूने का आधार कई शहरों में फैला हो और उसमें लिंगानुपात एवं पेशेवरों से प्राप्त नमूनों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व शामिल हो।

सरकारी आस्तियों के लिए पूंजी आवश्यकता : कुछ मुद्दे और चिंताएं*

वैश्विक वित्तीय संकट के बाद और विशेष रूप से 2011 के यूरो ज़ोन संकट के पश्चात् सरकारी बांडों की लगभग जोखिम रहित प्रतिष्ठा पर प्रश्न चिह्न लग गया है। बीसीबीएस ने 2015 और 2016 के लिए अपनी कार्ययोजना में सरकारी एक्सपोज़रों के लिए पूंजी आवश्यकता को शामिल करने का निर्णय लिया, जो कि धीरे-धीरे सीजीएफएस, एफएसबी जैसे अन्य वैश्विक मंचों और यहां तक कि जी20 में भी चर्चा सत्रों में क्रमिक रूप से स्थान बना रहा है। यद्यपि, न्यायपीठ अभी भी बैंकों के सरकारी एक्सपोज़र हेतु तरजीही व्यवस्था के पक्ष में है, किंतु सरकारी आस्तियों पर किसी प्रकार का जोखिम भार आरोपित करने का अर्थ होगा एक आमूल-चूल परिवर्तन और इसके निश्चित रूप से दूरगामी प्रतिप्रभाव होंगे, विशेषतः बैंकों के वर्चस्व वाली वित्तीय प्रणाली पर।

पृष्ठभूमि

वैश्विक संकट के बाद और यूरो-क्षेत्र में सार्वजनिक ऋण की व्यवहार्यता पर पड़ने वाले दबावों के परिप्रेक्ष्य में, इस पारंपरिक विवेक कि सरकारी बांड 'जोखिम रहित' होते हैं, पर प्रश्न उठ रहे हैं और इस पर बुद्धिजीवियों और नीति-निर्माताओं द्वारा चर्चा की जा रही है। क्योंकि, सरकार पर आई मुसीबत बैंकिंग प्रणाली और वित्तीय स्थिरता को प्रभावित कर सकती है। किसी देश के गंभीर राजकोषीय दबाव की स्थिति में जाने पर सरकारी बांडों को प्रदत्त 'शून्य जोखिम भार' बैंकों को प्रणालीगत जोखिम के प्रति कमजोर बना सकता है। जहां विवेकपूर्ण विनियमन सरकार पर संकट को नहीं रोक सकता है, वहीं एक सुदृढ़ विनियामकीय ढांचा सरकार पर आई मुसीबत का बैंकिंग प्रणाली पर प्रभाव कम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है। अब नीति-निर्माता सरकारी कर्ज और बैंकों के तुलन-पत्र के बीच की कड़ी का समाधान तलाशने के मार्गों पर विचार कर रहे हैं।

* अंतरराष्ट्रीय विभाग में तैनात डॉ. अनुपम प्रकाश और श्रीमती संगीता मिश्रा एवं श्री अजय कुमार चौधरी, मुमप्र. कोलकाता कार्यालय, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा तैयार किया गया। इस आलेख में प्रस्तुत किए गए विचार लेखकों के हैं और वे भारतीय रिज़र्व बैंक के दृष्टिकोण को नहीं दर्शाते हैं।

डॉ. मृदुल सागर, परामर्शदाता अंतरराष्ट्रीय विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा प्रकाशन के लिए प्राधिकृत।

इस परिप्रेक्ष्य में, जनवरी 2014 में अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक (बीआईएस) में गवर्नरों और शीर्ष पर्यवेक्षकों (जीएचओएस) में इस बात पर सहमति बनी कि बैंकिंग पर्यवेक्षण संबंधी बासल समिति (बीसीबीएस) को सरकारी एक्सपोज़रों संबंधी विनियामकीय स्थिति की समीक्षा करनी चाहिए। तदनुसार, 2015 के पूर्वार्ध में बीसीबीएस द्वारा सरकारी एक्सपोज़र संबंधी कार्यदल (टीएफएसई) का गठन किया गया जिसकी सिफारिशें अभी प्रकाशित होनी हैं। इसका कार्यक्षेत्र मानकीकृत पद्धति (एसए) और आंतरिक रेटिंग आधारित (आईआरबी) पद्धति दोनों के तहत पूंजी विनियमन में सरकारी एक्सपोज़रों में ऋण जोखिम दृष्टिकोण; बड़ी एक्सपोज़र प्रथाओं और सरकारी एक्सपोज़रों के प्रति उनके दृष्टिकोण और समष्टि-विवेकपूर्ण प्रथाओं और सरकारी एक्सपोज़रों के प्रति उनके दृष्टिकोण की जांच करना है। चलनिधि कवरेज अनुपात (एलसीआर)/ निवल स्थिर निधि अनुपात (एनएसएफआर) और लीवरेज अनुपात (एलआर) जैसे अन्य विनियामकीय अनुपातों और अन्य मानकों एवं मौद्रिक नीति का कार्यान्वयन, यदि कोई हो, की भी जांच टीएफएसई द्वारा की जाएगी।

साथ ही साथ, बीआईएस आर्थिक परामर्शदात्री समिति (ईसीसी) ने दो पहलुओं नामतः सरकारी एक्सपोज़रों पर लगाए जाने वाले संभावित जोखिम भार से मौद्रिक नीति पर पड़ने वाले प्रभाव की क्षमता और बाजार चलनिधि पर पड़ने वाले प्रभाव की क्षमता की भी जांच की। वैश्विक वित्तीय प्रणाली संबंधी समिति (सीजीएफएस) भी बैंकों के सरकारी एक्सपोज़रों के विनियामकीय दृष्टिकोण में होने वाले संभावित परिवर्तनों से वित्तीय स्थिरता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन कर रही है, इसमें विशेष रूप से सरकारी कर्ज बाजारों, बैंक व्यापार मॉडलों और सामान्य रूप से समष्टि आर्थिक स्थितियां शामिल हैं। ईसीसी और सीजीएफएस दोनों ही अपने परिणामों से टीएफएसई को अवगत करा रही हैं।

यह भी रोचक है कि 2017 में जर्मनी की अध्यक्षता में जी20 भी इसके सदस्यों द्वारा अपनाए जाने वाले आर्थिक आघात-सहनीयता सिद्धांत के रूप में पूर्व में अयोग्य बैंकों और सरकार के बीच गठ-जोड़ से उभरने वाले जोखिमों के मुद्दे पर चर्चा कर रहा है।

इस पृष्ठभूमि में, अगला भाग भारत सहित बासेल पूंजी ढांचे में सरकारी जोखिम के लिए मानकीकृत दृष्टिकोण प्रतिपादित करता है। भाग III सरकारी आस्तियों पर लगाए गए जोखिम भार के समर्थन में उपलब्ध साहित्य को दर्शाता है।

इस मुद्दे पर भारतीय परिप्रेक्ष्य भाग IV में दिया गया है और भविष्य के मुद्दों का संक्षिप्त विवरण भाग V में दिया गया है।

II. बासेल पूंजी ढांचे में सरकारी जोखिम को कैसे व्यक्त किया गया है?

सरकारी जोखिम के परिप्रेक्ष्य में बासेल I के तहत बैंक ओईसीडी सदस्य देशों के सरकारी एक्सपोजर हेतु शून्य जोखिम भार लगाते हैं, जबकि, गैर-ओईसीडी देशों के प्रति एक्सपोजरों के लिए शत-प्रतिशत का जोखिम भार लगाते हुए एकदम विरोधाभासी व्यवहार किया जाता है। वर्तमान में, अधिकतर न्यायाधिकार क्षेत्र बैंकिंग खातों में बासेल II ढांचे का पालन करते हैं। इस संबंध में बासेल III ने कोई परिवर्तन नहीं किए हैं। सरकारी एक्सपोजरों के प्रति व्यवहृत मौजूदा विनियामकीय व्यवस्थाओं का सारांश अनुबंध-1 में दिया गया है जिनमें किसी अन्य आस्ति श्रेणियों की तुलना में इन्हें कहीं अधिक तरजीह प्रदान की गई है।

बासेल-II मानदंडों के अनुसार, न्यायाधिकार क्षेत्रों के पास यह लचीलता होती है वे एसए अथवा आईआरबी किसी एक पद्धति अथवा दोनों को अपना लें। एसए जहां बाह्य क्रेडिट रेटिंग पर निर्भर होती है वहीं आईआरबी बैंक के स्व-जोखिम अनुमानों पर निर्भर होती है।

मानकीकृत पद्धति (एसए)

एसए के तहत बाह्य क्रेडिट रेटिंग्स पर आधारित क्रेडिट जोखिम लिए उच्चतम-गुणवत्ता क्रेडिट (एएए से एए तक) जिन पर शून्य जोखिम होता है, को छोड़कर, रेटिंग की सभी श्रेणियों हेतु धनात्मक जोखिम भार प्रदान किया गया है (सारणी 1)। तथापि, एसए पद्धति यह भी बतलाती है कि, “घरेलू मुद्रा में अंकित और उसी करेंसी में निधि-पोषित सरकारी बांडों में

सारणी 1: मानकीकृत पद्धति के तहत सरकारी आस्तियों के लिए जोखिम भार (प्रतिशत)	
क्रेडिट रेटिंग	जोखिम भार
एएए से एए-	0
ए+ से ए-	20
बीबीबी+ से बीबीबी-	50
बीबीबी+ से बी-	100
बी से नीचे	150
रेटिंग रहित	100

स्रोत: बैंकिंग पर्यवेक्षण संबंधी बासेल समिति, बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट, दिसंबर, 2015

बैंकों के एक्सपोजरों को राष्ट्रीय विवेक के अनुसार कम जोखिम भार प्रदान किया जा सकता है।”¹

आंतरिक रेटिंग आधारित पद्धति- क्रेडिट जोखिम

वैश्विक प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंकों (जीएसआईबी) सहित अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय बैंकों के लिए यह सबसे अधिक प्रचलित पद्धति है। इस पद्धति में, सरकारी एक्सपोजरों के लिए जोखिम भार की गणना एक भौतिक (ग्रैनुअल) रेटिंग पैमाने का उपयोग करते हुए की जाती है जिसका आधार बीसीबीएस द्वारा विकसित एक नमूना होता है। जोखिम भार प्राथमिक रूप से चूक की संभावना (पीडी), चूक की स्थिति में नुकसान (एलजीडी), चूक की स्थिति में एक्सपोजर और दिए गए एक्सपोजर हेतु प्रभावी परिपक्वता (एम) के विषय में बैंक द्वारा लगाए गए अपने अनुमानों पर निर्भर होता है। आधारभूत आईआरबी पद्धति बैंकों को इस बात की अनुमति प्रदान करती है कि वे पीडी के लिए अपने जोखिम अनुमानों पर निर्भर रहें परंतु उनके लिए यह अपेक्षित होता है कि वे 2.5 वर्षों की परिपक्वता के साथ पर्यवेक्षकों द्वारा निर्धारित 45 प्रतिशत की मानकीकृत एलजीडी का उपयोग करें। पीडी पर्यवेक्षणीय सत्यापन के अधीन होती है। पीडी और तदनुसूची जोखिम भार सारणी-2 में दिए गए हैं।

यद्यपि आईआरबी पद्धति स्वतः सरकारी बांडों के लिए शून्य जोखिम भार को परिणति प्रदान नहीं करती है फिर भी दो तरीकों से उन्हें प्राथमिकता प्रदान करती है। पहला, कारपोरेट और बैंक जोखिमों के विपरीत सरकारी एक्सपोजरों के लिए कोई पीडी फ्लोर नहीं होता है ताकि बैंक उन पर नगण्य अथवा शून्य प्रतिशत जोखिम भार लगा सकें (यदि आंतरिक

सारणी 2: सरकारी एक्सपोजरों के लिए व्याख्यात्मक आईआरबी जोखिम भार

चूक की संभावना	जोखिम भार (%)
0.01	7.53
0.02	11.32
0.03	14.44
0.05	19.65
0.10	29.65
0.25	49.47
0.50	69.61
1.00	92.32
5.00	149.86
10.00	193.09

एलजीडी 45 प्रतिशत और परिपक्वता 2.5 वर्ष मानते हुए
स्रोत: बीसीबीएस

¹ बासेल II दस्तावेज का पैरा 54

रूप से अनुमानित पीडी शून्य है तो)। दूसरे, बैंक सशर्त रूप से, विशेष रूप से जहां पीडी की गणना करना चुनौतीपूर्ण है, 'आईआरबी का आंशिक उपयोग' (अर्थात् सरकारी एक्सपोज़रों (तात्पर्य शून्य जोखिम भार) के लिए मानकीकृत पद्धति का उपयोग) और अन्य जोखिमों के लिए आईआरबी पद्धति का) कर सकते हैं।

इस प्रकार, मानकीकृत पद्धति के तहत राष्ट्रीय विवेक का या पीडी के लिए फ्लोर-विहीनता का अथवा आईआरबी आंशिक उपयोग खंड का उपयोग करते हुए सरकारी एक्सपोज़रों के प्रति सामान्य रूप से कमतर जोखिम, अधिकांशतः शून्य भार को लागू किया जाता है।²

बड़े एक्सपोज़र ढांचे के तहत सरकारी एक्सपोज़रों की व्यवस्था

बासेल ढांचे में किसी एक प्रतिपक्ष के अचानक चूक कर देने से होने वाले बड़े नुकसान को न्यूनतम रखने हेतु बैंकों के बड़े एक्सपोज़रों के संबंध में अपेक्षाओं/सीमाओं की व्यवस्था की गई है। बासेल ढांचे में सरकारों और केंद्रीय बैंकों के साथ ही सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (पीएसई) को भी सरकार के रूप में व्यवहृत किया जाता है जिन्हें बड़ी एक्सपोज़र सीमाओं से छूट प्राप्त है। बीसीबीएस के तहत टीएफएसई के भीतर संकेंद्रित सरकारी जोखिमों के साथ किए जाने वाले समुचित व्यवहार पर चर्चा की जा रही है जो कि सरकारी जोखिमों के साथ किए जाने वाले व्यवहार की व्यापक समीक्षा का एक हिस्सा है। यद्यपि, ईसीसी कार्य समूह मौद्रिक नीति विनियमन पर सरकारी एक्सपोज़र में परिवर्तन के प्रभावों का विश्लेषण कर रहा है, उसने इस प्रकार के एक्सपोज़रों पर बड़ी एक्सपोज़र सीमाएं लगाने की संभावना की भी जांच की है परंतु यह मुद्दा अभी अनिर्णयन की स्थिति में है।

एलसीआर ढांचे के तहत सरकारी एक्सपोज़रों की व्यवस्था

एलसीआर के तहत किसी बैंक से यह अपेक्षा होती है कि वह गैर-प्रभारित उच्च-गुणवत्ता वाली चलनिधि आस्तियों (एचक्यूएलए) का पर्याप्त स्टॉक रखें ताकि 30 दिन तक चलने वाली गंभीर चलनिधि दबाव की स्थिति का सामना किया जा सके। कुछ विनिर्दिष्ट स्थितियों के अधीन सरकारों और केंद्रीय बैंकों द्वारा जारी की विपणनीय प्रतिभूतियों को बिना किसी

² जहां अमेरिका अभी भी मानकीकृत पद्धति का उपयोग करता है, ईयू अभी हाल तक सामान्यीकृत शून्य जोखिम भार के जरिए आईआरबी के स्थायी आंशिक नियमों का उपयोग कर रहा था जिन्हें 2017-2020 के बीच चरणबद्ध रूप में समाप्त किया जाना है। नया ईयू फ्रेमवर्क जो जनवरी 2014 से लागू हुआ है और जो यह अपेक्षा करता है कि समाप्त के बाद क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों के आकलनों का उपयोग किया जाए। इस दिशा में बेल्जियम के सबसे बड़े बैंक केबीसी ग्रुप ने सरकारी बांडों को जोखिम रहित बताने वाली पद्धति को मई 2014 में समाप्त कर दिया।

मार्जिन के (यद्यपि, पर्यवेक्षणीय विवेक के अनुसार मार्जिन संभव है) एचक्यूएलए माना जाता है। इस प्रकार एलसीआर ढांचे के तहत बैंक उच्चतर सरकारी एक्सपोज़र (जो कि एचक्यूएलए का भाग है) हेतु प्रोत्साहित होते हैं। इस प्रकार के परिदृश्य में, सभी वित्तीय विनियमनों में जहां इसे लागू किया जाना है उनमें सामंजस्य सुनिश्चित करना अनिवार्य होगा।

भारत में सरकारों पर दावों की व्यवस्था

वर्तमान समय में भारत में सभी बैंक क्रेडिट जोखिम के लिए बासेल II मानकीकृत पद्धति के तहत आते हैं। जारी की गई और स्वदेशी सरकार द्वारा गारंटीशुदा प्रतिभूतियां दोनो को बासेल II के तहत अनुमत राष्ट्रीय विवेक के अनुसार शून्य जोखिम प्रभार प्रदान किया जाता है। जहां तक विदेशी सरकारों पर दावों का संबंध है उनपर वह जोखिम भार आरोपित किया जाता है जो अंतरराष्ट्रीय क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों द्वारा उन सरकारों को प्रदान की गई रेटिंग्स के अनुसार होता है। विदेशी सरकारों के घरेलू करेंसी में अंकित दावों जिन्हें उस न्यायाधिकार क्षेत्र में उसी करेंसी के माध्यम से जुटाया गया था को उन्हीं संसाधनों से पूरा किया जाता है तथापि, वे शून्य प्रतिशत जोखिम भार आकर्षित करते हैं जिसकी अनुमति बासेल ढांचे³ के अनुसार प्रदत्त है (आरबीआई 2012)।

भारतीय रिजर्व बैंक के दिशानिर्देशों के अनुसार, पर्याप्त आंकड़ों के अभाव में यदि बैंक यह पाते हैं कि सरकारी एक्सपोज़रों के प्रति आईआरबी पद्धति को लागू कर पाना कठिन है तो उन्हें मानकीकृत पद्धति के अनुसार माना जा सकता है बशर्ते आईआरबी के तहत उन पर कुल आंशिक उपयोग की सीमा आरोपित की जाए। तथापि, उनके लिए यह अपेक्षित होता है कि वे शीघ्रतापूर्वक इन एक्सपोज़रों के प्रति आईआरबी पद्धति को लागू करने का प्रयास करें।

स्तम्भ 2 (पर्यवेक्षणीय समीक्षा प्रक्रिया) सरकारी जोखिम की निगरानी और बैंकों की जोखिम प्रोफाइल पर इसके प्रभाव को समावेशित करता है। जो जोखिम स्तम्भ 1 के तहत पूरी तरह से नहीं समा पाते हैं उनकी व्यवस्था विशेष रूप से स्तम्भ 2 के तहत की गई है। सामान्य रूप से सरकारी जोखिमों को चिह्नित नहीं किया जाता है परंतु, वैश्विक गतिविधियों के परिप्रेक्ष्य में पर्यवेक्षक कुछ विशिष्ट उपायों पर विचार कर सकते हैं विशेष रूप से तब, जबकि क्रेडिट जोखिम प्रबंधकीय स्तरों से कहीं अधिक हो जाए। स्तम्भ 2 के विवेकपूर्ण उपाय, जिन्हें पर्यवेक्षक सरकारी जोखिमों के लिए लागू कर सकते हैं, एक व्यापक क्षेत्र कवर कर लेते हैं जो कि वरिष्ठ प्रबंधन से चर्चा करने से लेकर एक्सपोज़रों के मूल्यांकन के समायोजन

³ जहां तक उप-सरकारी निकार्यों का संबंध है, यद्यपि जो दावे राज्य सरकारों द्वारा निर्गत किए जाते हैं उन्हें शून्य जोखिम प्रदान किया जाता है किंतु उनके द्वारा गारंटीशुदा को 20 प्रतिशत का जोखिम भार प्रदान किया गया है।

या पूंजी आधार को सुदृढ़ करने जैसी कार्यवाहियों तक विस्तारित होता है।

III. सरकारी आस्तियों के लिए पूंजी अपेक्षाएं क्यों?

वैश्विक वित्तीय संकट के बाद, विशेष रूप से यूरोपीय सरकारी कर्ज संकट के पश्चात्, यह स्पष्ट हो गया था कि सरकारी एक्सपोज़रों जिन्हें वित्तीय नियामकों द्वारा मोटे तौर पर जोखिम रहित आस्तियां माना जाता रहा है और इसलिए उन पर शून्य जोखिम भार आरोपित किया जा रहा है, वे वास्तव में जोखिम रहित (नूये, 2012) नहीं हो सकती हैं। इसी संबंध में, कैरुआना (2011) यह उल्लेख करते हैं कि वैश्विक वित्तीय संकट ने प्रारंभ में निजी वित्त संस्थानों की कमजोरियों को उजागर किया परंतु समय बीतने के साथ-साथ इसने कमजोर सरकारी वित्त के साथ संबंध विकसित किए और वित्तीय प्रणालियों एवं सामान्य तौर पर अर्थव्यवस्था दोनों की कमियों को पेशतर कर दिया।

सरकार हेतु जोखिम तब उत्पन्न होता है जब सरकार कर राजस्व की तुलना में कहीं अधिक एक उल्लेखनीय अवधि तक खर्च करती हैं और बड़ी उधारियां लेती हैं और परिणामस्वरूप, करार किए गए अपने कर्ज उत्तरदायित्वों को पूरा नहीं कर पाती हैं। यह जोखिम क्रेडिट/चूक जोखिम की श्रेणी में आता है। और इस बात का कोई मूल्य नहीं होता है कि कर्ज का अंकन स्थानीय मुद्रा में है अथवा विदेशी मुद्रा में। यद्यपि, कि बाद वाली परिस्थिति क्रेडिट जोखिम के और सन्निकट होती है और पहली वाली स्थिति अप्रत्यक्ष रूप में क्रेडिट जोखिम पैदा करती है। पूर्ववर्ती स्थिति में, चूंकि कर्ज स्थानीय मुद्रा में होता है अतः सरकार आसानी से अपेक्षित राशि की मुद्रा छाप सकती है ताकि कर्ज का भुगतान किया जा सके और चूक से बचा जा सके अर्थात् यह कर्ज का मौद्रीकरण कर सकती है। सरकारी कर्ज का मौद्रीकरण निःसन्देह चूक के बराबर ही होता है क्योंकि तदनुसूची मुद्रास्फीति वास्तविक मुद्रा-शेष की धारिता को कम कर देती है जो कि एक स्पष्ट चूक की स्थिति बना देती है (गुडहार्ट, 2012)। दूसरा विकल्प, जिसके जरिए सरकार स्थानीय मुद्रा में अंकित कर्ज, विशेष रूप से विदेशी निवेशकों द्वारा धारित, चुका सकती है, वह है मुद्रा का अवमूल्यन कर देना। इस मामले में, जहां सरकारी क्रेडिट जोखिम खत्म हो जाता है परंतु मुद्रा का अवमूल्यन अपने आप में जोखिम की संभावना, पूंजी बहिर्वाह और रेटिंग में कमी का एक स्रोत बन जाता है। इसलिए बाजार कर्ज में अवमूल्यन जोखिम और कर्ज के मौद्रीकरण के जोखिम को सरकारी जोखिम के साथ ही चूक के जोखिम के प्रमुख घटकों के रूप में चिह्नित किया जाता है (ईएसआरबी रिपोर्ट 2015)। इस प्रकार, यद्यपि सरकारी जोखिम के भौतिक रूप में परिणत होने की संभावना कम ही होती है परंतु उसका प्रभाव काफी अधिक होता है, सरकार पर

आनेवाली आपदा कई रूप धारण कर सकती है, जो कि सीधे-सीधे चूक (आधार-भूत चूक) करने से लेकर भुगतान करने की इच्छाशक्ति का समाप्त होना (रणनीतिक चूक), भुगतान करने की अस्थायी अक्षमता (तकनीकी चूक), मुद्रा का पुनः अंकन (वास्तविक चूक) अथवा दायित्वों को बढ़ते देना तक कुछ भी हो सकता है। सरकारी आपदा में चूक से इतर घटनाएं भी शामिल होती हैं जैसे कि रेटिंग में बहु-बिंदीय कमी होना और बाजार मूल्यांकन में गिरावट होते जाना। ऐतिहासिक रूप से इस प्रकार की घटनाएं प्रत्यक्ष चूक की तुलना में कहीं अधिक होती हैं।

उपर्युक्त तर्क के परिप्रेक्ष्य में, यह दलील दी जाती है कि यदि विनियमन का उद्देश्य किसी भी नुकसान को वहन करने की क्षमता हेतु प्रावधान करना है, तो सरकारी एक्सपोज़रों पर शून्य जोखिम भार आरोपित करना से इसके साथ समझौता करना होगा। सरकारी एक्सपोज़रों के लिए इस प्रकार का तरजीही विनियामकीय व्यवहार इन जोखिम पूर्ण सरकारी कर्ज में निवेश को विशेष रूप से आकर्षक बना सकता है जैसा कि यूरो क्षेत्र के चारों ओर विद्यमान देशों के मामले में हुआ (आचार्य और स्टीफेन, 2014) और दीर्घावधि में बैंक-सरकार गठजोड़ में परिणत हो सकता है और तदनुसूची प्रणालीगत जोखिमों (यथा- संक्रामकता और नैतिक संकट जोखिम) को उत्पन्न कर सकता है। यह गठजोड़ आयरलैंड के मामले में सामने आया था जहां बैंकिंग क्षेत्र के दबाव को कम करने के लिए सरकार ने पूंजी लगाने और गारंटिया प्रदान करने के रूप में काफी बड़े स्तर पर सहायता प्रदान की जिससे अंततः सरकार को यूरोपीय यूनियन/अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के पास निधीयन के लिए जाना पड़ा (आचार्य, ड्रेश्चेलर और शनाबेल, 2011)। ग्रीस के मामले में, सरकार के राजकोषीय संकट और उसके बाद की पुनः निर्माण प्रक्रिया ने वस्तुतः ग्रीस और साइप्रस के बैंकिंग सेक्टर को 2013 में धराशायी कर दिया था (ज़ेटलमेयर, ट्रेबसेश और गुलाटी, 2013)। तब से ही तथाकथित रूप से 'समस्याओं का मकड़जाल (डूम लूप)' (ग्रास, 2013), 'घातक गतिरोध' (फिरही और तिरोले, 2015), या 'खतरनाक तिकड़ी- हार्डअस टैंगो' (मर्लर और पिसानी-फैरी, 2012) बैंकों और सरकारों के बीच ये मुद्दे गहन नीतिगत और अकादमिक चर्चा का विषय बन गए हैं। इसे वित्तीय बाध्यता के समर्थन के रूप में भी देखा जा सकता है (अर्थात् ऐसी नीतियां जिनमें यह अपेक्षित हो कि निजी बचतों को सरकारी बांडों में निवेशित किया जाए और इससे दीर्घावधि में पूंजी दुराबंटन की आशंका बन जाती है) (हैनाउन, 2011)। सरकारी एक्सपोज़र पर शून्य जोखिम भार की स्थिति संभवतः निजी क्षेत्र को होने वाले क्रेडिट प्रवाह को बाहर कर देगी, विशेष रूप से कम संवृद्धि वाली परिस्थितियों में (ग्रे एवं अन्य, 2014)। अतः, यह विचारधारा दलील देती है कि मूलभूत जोखिमों को

ध्यान में रखते हुए सरकारी कर्ज पर भी कुछ जोखिम भार आरोपित किया जाना चाहिए।

इस प्रकार के अध्ययन करने के भी प्रयास किए गए हैं ताकि यह पता चल सके कि शून्य जोखिम भारों के कारण बैंक पूंजीकरण कितना कम है, जिसे 'सरकारी राज सहायता' (सॉवरेन सब्सिडी) नाम दिया गया है। सरकारी एक्सपोजर पर समुचित जोखिम भार की गणना करने की वैकल्पिक पद्धति यह सुझाव देती है कि 2013 में औसत रूप में यूरो जोन के संबंध में, सरकारी राज सहायता की राशि बैंकों की टिआर-1 पूंजी की लगभग 100 प्रतिशत है (कोरते और स्टीफेन, 2014)। बीसीबीएस द्वारा पहले से ही निर्धारित किए गए विनियामकीय अनुपातों के बीच लीवरेज अनुपात की गुंजाइश है क्योंकि इसमें सरकारी जोखिम को शामिल किया गया है, अतः यह सरकारी जोखिम को समाप्त करने के अपर्याप्त हो सकता है क्योंकि अधिकतर बैंकों के लिए यह नियंत्रक मात्रिक नहीं है। इसके अतिरिक्त, हाल के वर्षों में बासेल III के बाद अन्य आस्ति श्रेणियों के तहत पूंजी अपेक्षाओं को बढ़ा दिया गया है, जिससे सरकारी जोखिम एक्सपोजर और अन्य आस्ति श्रेणियों के बीच 'अंतर' से संबंधित पूंजी अपेक्षाओं में वृद्धि हो गई है। जबकि, लीवरेज अनुपात में सरकारी जोखिमों को शामिल ही किया गया है, बीसीबीएस द्वारा पहले से निर्धारित विनियामकीय अनुपातों के बीच यह कहना अपर्याप्त होगा कि सरकारी जोखिम को समाप्त नहीं किया जा सकता क्योंकि यह अधिकतर बैंकों के लिए एक बाधाकारी मीट्रिक नहीं है। इसके अतिरिक्त, बासेल III के बाद हाल के वर्षों में अन्य आस्ति श्रेणियों हेतु पूंजी आवश्यकताएं बढ़ गई हैं जिससे संबंधित सरकारी एक्सपोजरों और अन्य आस्ति श्रेणियों के बीच पूंजी आवश्यकता का "अंतराल" बढ़ गया है।

IV. मामले पर भारतीय दृष्टिकोण

इस मामले को लेकर किसी नतीजे पर पहुंच पाना बहुत मुश्किल है। सॉवरेन जोखिमों को लेकर किसी व्यापक दृष्टिकोण को न अपनाने के भी उतने ही ठोस कारण हैं, क्योंकि दूर-दूर तक महसूस किया जाता है कि यह स्पष्टतया ईयू-विशिष्ट मामला है और उसके साथ ऐसा ही बर्ताव किया जाना चाहिए। आम तौर पर महसूस किया जाता है कि एक छोटे से जोखिम भार का वित्तीय बाजार पर विशेषतः और संपूर्ण अर्थव्यवस्था पर सामान्यतः अत्यधिक प्रभाव पड़ सकता है, जबकि जोखिम भार की सीमा एवं होनेवाले लाभ के निर्धारण के तौर-तरीके अब तक निश्चित नहीं हैं। सॉवरेन एक्सपोजर के साथ विनियामक व्यवहार में परिवर्तन को लेकर भारत, ब्राजील एवं रूस समेत कुछ ईएमई के साथ-साथ जापान और इटली जैसे कुछ ईई द्वारा चिंता जताई गई है।

सभी सॉवरेन कर्ज के साथ एक जैसा व्यवहार नहीं किया जा सकता है। चूक की घटनाएं महत्वपूर्ण हैं और उसी प्रकार

मुद्रास्फीति के अभिलेख एवं मुद्रास्फीति लक्ष्यों को लेकर केंद्रीय बैंक की प्रतिबद्धताएं भी। राजकोषीय विवेक के साथ-साथ आर्थिक वृद्धि दर के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता एवं कर्ज को चुकता करने की क्षमता अन्य महत्वपूर्ण बातें हैं जिन पर गौर किया जाना है। उपर्युक्त के मद्देनजर, सॉवरेन आस्तियों के लिए जोखिम भार निर्दिष्ट करने में व्यावहारिक समस्याएं हैं। सॉवरेन कर्ज संबंधी चूक अक्सर नहीं हुआ करते लेकिन ऐसी घटनाएं कभी-कभार होती हैं। इसलिए, सभी मॉडलिंग को लेकर इस बात की बाध्यता है कि उसके लिए डाटा प्वाइंट उपलब्ध नहीं होते और उस पर अनुमान तथा अन्य कारकों का प्रभाव पड़ता है, जो शायद विश्वसनीय न हो। जोखिम भार के संबंध में किसी प्रक्रियात्मक फ्रेमवर्क, चाहे वह बाह्य क्रेडिट रेटिंग या कॉर्पोरेट डिफाल्ट स्वैप (सीडीएस) जैसे अन्य संभाव्य बाजार संकेतकों पर आधारित हो, से भावी संकट में सॉवरेन/बैंक फीडबैक लूप में संभवतः वृद्धि हो सकता है।⁴ सॉवरेन रेटिंग के आधार पर सॉवरेन जोखिमों का आकलन करने से इस बात की संभावना है कि वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान पाए गए रेटिंग पर विनियामक निर्भरता से हम प्रतिकूल परिणाम के जाल में पुनः फंस सकते हैं। संकटकाल के बाद रेटिंग एजेंसियों की कार्य-पद्धतियों में कतिपय संशोधन के बावजूद उनकी विश्वसनीयता एवं भूमिका को लेकर अभी भी स्थिति संदेहास्पद बनी हुई है।⁵ अनुभवमूलक साक्ष्य से पता चलता है कि रेटिंग एजेंसियां एई को उनकी बुनियादी बातों की परवाह किए बगैर उच्चतर रेटिंग प्रदान करती हैं, और इस प्रकार ईएमई के विरुद्ध पक्षपात का समर्थन करती हैं (छी और अन्य, 2015; कराकस और अन्य, 2011)। सभी बीआईएस ईएमई देशों ने एक स्वर में इस बात पर जोर दिया है कि हाल के वर्षों में उनकी बुनियादी बातों में सुधार के बावजूद उनकी रेटिंग बेहतर नहीं हुई है (अनुबंध 2)। रेटिंग में जड़त्व के मामले भी बिल्कुल साफ हैं। जहां तक सीडीएस स्प्रेड का संबंध है, वे दूषित हैं और बाजार के विचार को दर्शाते हैं एवं साथ ही सभी ईएमई में पर्याप्त आपसी संचलन प्रदर्शित करते हैं। रेटिंग एवं स्प्रेड दोनों एक लंबे समय तक, जिस दौरान जोखिम बढ़ता गया, अकारण ही संतोषप्रद प्रतीत होते रहे और जब तक उसमें अचानक ही बदलाव किया गया, तब तक देर हो चुकी थी। इस प्रकार, दोनों ही ऋण जोखिम के अच्छे संकेतक नहीं हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है- मुद्रा की प्रकृति। कोई भी जोखिम भारिता फ्रेमवर्क तैयार करते समय इस बात पर समुचित ध्यान दिया जाना चाहिए कि स्थानीय और विदेशी

4 सीडीएस स्प्रेड जैसे कई बाजार आधारित संकेतक दूषित हैं और ऋण जोखिम के लिए बिल्कुल अच्छे संकेतक नहीं हैं।

5 सितंबर 2015 में अंकारा में आयोजित डीआईएस, ईएमई के संबंध में गवर्नर की बैठक की कार्यसूची का एक मद था।

मुद्रा में सरकारी उधारराशियाँ कितनी रही हैं और यहाँ पर चूक की बड़ी घटनाओं में बाहरी कारकों का प्रभाव भी कार्य करने लगता है। कोई केंद्रीय बैंक कितना भी स्वायत्त क्यों न हो, वह स्थानीय मुद्रा संबंधी केंद्र सरकार के दायित्व को पूरा करने में उसकी सहायता अवश्य करेगा, भले ही ऐसा करते हुए मूल्यहास या मुद्रास्फीति की स्थिति उत्पन्न हो जाए, फिर भी, व्यावहारिक रूप से देखें तो स्थानीय मुद्रा में चूक की संभावना नहीं होती। मौद्रिक संघों का मामला बहुत अलग होता है क्योंकि यहाँ केंद्रीय बैंक और केंद्र सरकार के बीच संघटनात्मक संबंध समाप्त हो जाता है। उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में, जिसमें भारत भी शामिल है, स्थानीय मुद्रा में सरकारी चूक की कल्पना करना भी मुश्किल है। उदाहरण के तौर पर, किसी मौद्रिक संघ में शामिल किसी एक देश की खराब राजकोषीय नीति का कुप्रभाव दूसरे देशों तक फैल जाता है और संघ की मौद्रिक नीति पर भी उसका विपरीत प्रभाव पड़ सकता है (बेनुआ, 2014)। बहुत से अध्ययनों में मुख्यतया यूरो क्षेत्र, जो कि एक मौद्रिक संघ है, के देशों में सरकार-बैंक मिलीभगत और उसके परिणामस्वरूप हुए विनियामकीय पूंजी अंतरपणन के साक्ष्य मिले हैं। यहां तक कि सरकारी सब्सिडी की गणना करते समय कोर्ट और स्टीफेन (2014) भी स्पष्ट रूप से कहते हैं कि गैर घरेलू सरकारी सब्सिडी प्राप्त करने वाले बैंकों को संबंधित सरकारों से अपेक्षाकृत कहीं अधिक सार्वजनिक आपातकालीन प्रबंध की आवश्यकता पड़ सकती है।

इसके अलावा, बैंक और सरकार के आपसी संबंध हमेशा हानिकारक नहीं होते हैं। कुछ हद तक जब कोई संकट उन कारकों को प्रतिबिंबित करता है जो मूल सिद्धांतों से पूरी तरह न्यायसंगत नहीं हैं तो बैंकों और अन्य घरेलू वित्तीय अभिकर्ता द्वारा खरीददारियां, सरकार और घरेलू बैंकिंग क्षेत्र को स्थिर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। भारत में, घरेलू बैंक उस समय सरकारी ऋण खरीदने में सक्षम थे जब कई अन्य प्रतिभागी (यानी, विदेशी बैंक, आस्ति प्रबंधक, आदि) बाजार से पीछे हट रहे थे और इस तरह, इसने प्रतिफल तथा अंतराल को स्थिर करके तनाव को काफी सीमित करने, और यकीनन, सरकारी चलनिधि संकट न होने देने में योगदान दिया जैसा कि इटली और स्पेन में हुआ था। हालांकि, जब संकट मुख्य रूप से मूल सिद्धांतों से प्रेरित होता है, तो बैंकों के हितधारकों के लिए बढ़ता एक्सपोजर बहुत अधिक हानिकारक हो सकता है जैसा कि ग्रीस और साइप्रस के मामले बयां करते हैं।

सरकारी कर्ज बाजार वित्तीय प्रणाली के लिए आधार प्रतिफल वक्र प्रदान करता है, और इसलिए उनके विनियामक बर्ताव में मामूली परिवर्तन भी वित्तीय बाजारों के लिए

घातक हो सकते हैं। जैसा कि हम जानते हैं, वित्तीय सिद्धांत में, सरकारी प्रतिभूतियों पर अर्जित प्रतिलाभ आम तौर पर बेंचमार्क दर के रूप में कार्य करते हैं और उन्हें जोखिम मुक्त प्रतिलाभ के रूप में संदर्भित किया जाता है, जिसे बदले में वित्तीय बाजारों में अन्य सभी गैर-सरकारी प्रतिभूतियों की कीमत के लिए उपयोग किया जाता है। यदि सरकारी बॉन्ड के लिए जोखिम भार बढ़ता है तो जोखिम-मुक्त दर से मूल्य निर्धारित की जाने वाली वित्तीय साधनों की संपूर्ण सीमा पर प्रतिलाभ बढ़ जाएगी। इसमें पूंजी की लागत पर बहुत गंभीर प्रभाव पड़ेंगे, जिससे निवेश और वृद्धि को नुकसान हो सकता है। ऐसे समय में जब अर्थव्यवस्था समुत्थान पथ पर है, तो हो सकता है कि यह मार्ग अख्तियार करना विवेकपूर्ण न हो। यदि किसी देश में सरकारी ऋण का जोखिम भार किया जाना है, तो स्थानीय मुद्रा 'जोखिम रहित दर' के बिना स्पष्ट रूप से एक मुद्रा होगी जब तक कि कोई नया 'जोखिम मुक्त' (एंकर) आस्ति सृजित नहीं की जाती है। नीलसन (2016) के अनुसार, 'अपनी मुद्रा में 'जोखिम मुक्त दर' के बिना एक अच्छी तरह से चलने वाली बाजार अर्थव्यवस्था की कल्पना करना किसी भी ज्ञात बाजार अर्थव्यवस्था को समर्थन प्रदान करने वाली वित्त सिद्धांतों की अवहेलना होगी।

इसके अलावा, यह ध्यान में रखा जाना आवश्यक है कि जब इन एक्सपोजर के लिए ज्ञात छूट के साथ विनियामक फ्रेमवर्क के क्षेत्र हैं तो ऐसे विनियामक फ्रेमवर्क के पॉकेट हैं जो ऐसे एक्सपोजर (उदाहरण के लिए, लीवरेज अनुपात) के लिए सकारात्मक पूंजी आवश्यकताओं को निर्धारित करते हैं। लीवरेज अनुपात यह सुनिश्चित करता है कि हर समय बैंक आस्तियों के सभी घटकों के लिए सरकारी एक्सपोजर सहित पूंजी की एक निश्चित राशि रखी जाए। इसके अलावा, संकट के बाद के अन्य सुधारों, जैसे कि वैश्विक तौर पर प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंकों के लिए कुल हानि-अवशोषित करने वाली क्षमता (टीएलएसी) की अपेक्षाएँ, बेल-इन नियमावली और वसूली एवं समाधान फ्रेमवर्क में हुई प्रगति से कम से कम "बैंक टू सोवरेन" चैनल के संबंध में बैंक-सरकार साँठगाँठ को शिथिल करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, सरकारी ऋण के लिए जोखिम भार देना पहले से स्थापित एलसीआर मानदंडों के विपरीत हो सकता है और इसलिए, यह वांछनीय नहीं हो सकता है। जहां एलसीआर बैंकों को अधिक सरकारी ऋण (जो कि उच्च गुणवत्ता वाले चलनिधि आस्तियों का हिस्सा हैं) रखने के लिए प्रोत्साहित करता है, वहीं जोखिम भार देने का मौजूदा प्रस्ताव सरकारी ऋण⁶ रखने के लिए अवप्रेरक के रूप में कार्य कर सकता है।

⁶ यह ध्यान दिया जा सकता है कि लीवरेज अनुपात को छोड़कर, अन्य सभी नियामक अनुपातों को राष्ट्रीकृत एक्सपोजर पर जोखिम भार लगाने के कारण बदल दिया जाएगा।

इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि मार्च 2017 के अंत तक कुल केंद्रीय सरकार के घरेलू ऋण का 47 प्रतिशत बैंकों में था। ऐसे एक्सपोजर पर कोई भी जोखिम भार बैंकों की प्रतिभूति पोर्टफोलियो में एक प्रमुख बदलाव का कारण हो सकता है जिससे वित्तीय बाजार में अस्थिरता और मौद्रिक नीति संचरण में कमी आ सकती है। पूंजी पर्याप्तता उद्देश्यों के लिए सरकारी प्रतिभूतियों को जोखिम भार देने से तत्काल सरकारी प्रतिभूतियों (और इसलिए प्रतिफल) की मांग बदल जाएगी और रेपो [दोनों चलनिधि समायोजन सुविधा (एलएएफ) और बाजार रेपो]⁷ के लिए उच्च मार्जिन की भी आवश्यकता होगी, जो बदले में बैंकों द्वारा रखे गए अतिरिक्त सांविधिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर)⁸ के किसी भी स्टॉक के मुकाबले संपार्श्विक और चलनिधि तक पहुंच के स्तर के मूल्य निर्धारण को बदल देगा। मौद्रिक नीति के एक सहज चक्र में, मुद्रा बाजार की दर और प्रतिफल दोनों कठिन हो जाएंगे, जो कि मौद्रिक नीति के साथ सीधे विरोधाभास में काम करने वाली विनियामक नीतियों का काल्पनिक मामला होगा। सामान्यतया, पूंजी पर्याप्तता उद्देश्य के लिए पूंजी प्रभार को बैंकों द्वारा लागत कारक माना जाएगा, जबकि गैर-बैंक इस तरह के विनियामक बाधाओं का सामना कर सकते हैं और इसलिए, संभवतः प्रतिफल को अस्थिरता से जोड़ते हुए, प्राथमिक एवं द्वितीयक बाजार में बोली पद्धति बदल सकती है। ऐसे समय तक जब बैंक और गैर बैंक अपनी सरकारी प्रतिभूति पोर्टफोलियो पर बैंकों के लिए नए पूंजी प्रभार में समायोजित करते हैं, तब प्रतिफल में अस्थिरता मौद्रिक नीति संचरण के लिए जटिलताएं जोड़ देगा। सरकारी घरेलू ऋण की बड़ी राशि को अवशोषित करने की बैंकों की क्षमता में कमी सरकार के राजकोषीय गुंजाइश को सीमित कर सकते हैं और राजकोषीय स्थितियों की गतिशीलता को अनुचक्रीय तरीके से बढ़ा सकते हैं।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, सरकारी जोखिम को रोकने के लिए जो वैकल्पिक विनियामक की आवश्यकता पर विचार किया जा रहा वह बड़े एक्सपोजर (एलई) फ्रेमवर्क के तहत दिए गए राष्ट्रिक एक्सपोजर के छूट को हटाना है।

⁷ वर्तमान में, एलएएफ के अंतर्गत रेपो लेनदेन पर 4 प्रतिशत मार्जिन तथा प्रतिभूतियों की चलनिधि पर निर्भर करते हुए बाजार रेपो के लिए 2 से 5 प्रतिशत।

⁸ जून 24, 2017 से प्रभावी, भारत में बैंकों को अपने निवल मांग और आवधिक देयताओं का 20 प्रतिशत नगदी, सोना और भार-रहित प्रतिभूतियों के रूप रखना सांविधिक रूप से अपेक्षित है।

हालांकि, इससे जुड़ी अन्य चिंताएं भी हैं। जब एलई प्रतिबंध बाध्यकारी हो जाता है, तो सीमांत पूंजी जरूरतें राष्ट्रिक एक्सपोजर पर जोखिम भार से बहुत ज्यादा अपेक्षित हैं। इसका कारण यह है कि जब जोखिम भार समायोजन की कुछ गुंजाइश को छोड़ते हैं तो एलई सीमा के मामले में ऐसी कोई गुंजाइश उपलब्ध नहीं होगी। सरकारी ऋण पर जोखिम भार का सामना किए बैंक और पूंजी जुटाने की आवश्यकता के बिना अन्य आस्तियों के एक्सपोजर को कम करके अधिकतम पूंजी आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं। हालांकि, हार्ड एलई सीमा को या तो सरकारी ऋण में बैंकों के एक्सपोजर को कम करने या पूंजी में वृद्धि की आवश्यकता होगी। यह ध्यान देने योग्य है कि न केवल भारत में, बल्कि कई अन्य अर्थव्यवस्थाओं में बैंक, एई और ईएमई दोनों, अपने पोर्टफोलियो में सरकारी कर्ज का बड़ा हिस्सा रखते हैं। यहां तक कि जापान और इटली में भी सरकारी कर्ज बैंकों की आस्ति पोर्टफोलियो का लगभग 18 प्रतिशत है। इस प्रकार, एलई सीमा, सामान्य तौर पर, मौद्रिक नीति संचरण के लिए जोखिम भार से ज्यादा चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं। कॉर्पोरेट बॉन्ड जैसे अन्य चलनिधि आस्तियों की पर्याप्त उपलब्धता के अभाव में बैंक चलनिधि आस्तियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मुख्य रूप से सरकारी बॉन्ड पर निर्भर रहते हैं। इसमें सरकारी प्रतिभूति बाजार, और एलसीआर को पूरा करने की बैंकों की क्षमता में महत्वपूर्ण व्यवधान पैदा करने की संभावना है। सरकार के लिए उधार लेने की लागत बढ़ाने से सरकार की ऋण के वित्तपोषण के लिए एलई सीमा का भी गंभीर प्रभाव पड़ सकता है।

V. भावी दिशा

ऐतिहासिक रूप से घरेलू मुद्रा में मूल्यवर्गित सरकारी ऋण पर पूर्ण डिफॉल्ट बहुत ही असामान्य रहा है। भारत सरकार जैसी कई सरकारों ने कभी भी अपने घरेलू मुद्रा वाले ऋण पर कभी चूक नहीं किया है, इसलिए इस तरह के एक्सपोजर के लिए गैर-शून्य जोखिम भार की जरूरी आवश्यकता का कोई औचित्य नहीं है। बीसीबीएस के कुछ अन्य सदस्यों के साथ भारत ने राष्ट्रिक एक्सपोजर के लिए लागू वर्तमान पूंजी फ्रेमवर्क के संशोधन के बारे में अपनी आशंका जाहिर कर दी है क्योंकि मौजूदा फ्रेमवर्क उपयुक्त जोखिम भार निर्धारित करने और इसके लिए सभी मौकों का ख्याल रखने के लिए राष्ट्रीय नियामकों को पर्याप्त लचीलापन प्रदान करता है।

आगे चलकर, विभिन्न वैश्विक मंचों में जिन प्रमुख नीतिगत विकल्पों पर विचार किया जा रहा है, वे निम्नलिखित हैं -

ए) पहला, सरकारी एक्सपोजर के वर्तमान आधारभूत बर्ताव को जारी रहना चाहिए क्योंकि सरकारी एक्सपोजरों के विनियामकीय बर्ताव में किसी भी प्रकार के परिवर्तन का बॉण्ड बाजारों, बैंकिंग प्रणाली, मौद्रिक नीति के संचरण और सामान्य रूप से वित्तीय प्रणाली पर गंभीर प्रभाव पड़ सकते हैं, जो इस स्थिति में अवांछनीय होंगे। इसके साथ ही, विभिन्न देशों में विद्यमान अंतरों, डेटा केंद्रों की अनुपलब्धता और सरकारी जोखिमों के मूल्यन के उचित सूचकों के बारे में सर्वसम्मति नहीं होने को देखते हुए सरकारी आस्तियों के संबंध में पूंजीगत आवश्यकताओं को जबरन लागू करने से जुड़ी व्यावहारिक कठिनाइयां भी हैं।

बी) 'सरकारी' को केंद्र सरकार और केंद्रीय बैंक एक्सपोजरों में विभक्त करने और केंद्र सरकार के घरेलू एक्सपोजरों (अधिकांश) के संबंध में धनात्मक होते हुए भी बहुत कम मानकीकृत जोखिम भार प्रदान करने तथा केंद्रीय बैंक की मौद्रिक नीतियों⁹ के हिस्से के रूप में प्रयुक्त केंद्रीय बैंक के एक्सपोजर को छूट प्रदान करने के माध्यम से उनके संबंध में अलग-अलग बर्ताव करना।

सी) बैंक के सरकारी संकेंद्रणों के प्रभावों पर आधारित जोड़े जाने वाले सीमांत जोखिम भार में परिवर्तन हो सकता है। सहज रूप में, इसका तात्पर्य यह है कि बैंक के सरकारी संकेंद्रण का प्रभाव जितना अधिक होगा उतना ही अधिक जोखिम भार जोड़ा जाएगा¹⁰।

डी) नीतिगत विकल्पों के अंतिम स्वरूप निम्नलिखित रूप धारण कर सकते हैं - (i) सरकारी एक्सपोजरों के संबंध में बर्तावों, यथा सरकारी जोखिम की निगरानी के संबंध में मार्गदर्शन, सरकारी जोखिम का दबाव परीक्षण, इत्यादि को संशोधित करते हुए पिलर 2 (पर्यवेक्षी समीक्षा प्रक्रिया) को लागू करना; (ii) सरकारी एक्सपोजरों से संबंधित बर्तावों, यथा बैंक के एक्सपोजरों का अधिक प्रकटीकरण एवं विभिन्न सरकारी संस्थानों का देश-वार विश्लेषण, मुद्रा-वार विश्लेषण, इत्यादि के अनुसार आस्तियों का जोखिम भार; इत्यादि को संशोधित करते हुए पिलर 3 को लागू करना।

सरकारी जोखिम भार का प्रकाशन कार्य अभी जारी है और इसके परिणामों के बारे में अभी कहना जल्दबाजी होगी, किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि शीघ्र ही हम जोखिम मुक्त आस्तियों के संसार से स्वतंत्र होंगे। महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि कब और कितने स्वतंत्र होंगे। जब तक कोई विश्वसनीय विकल्प तैयार नहीं किए जाते, जिन्हें सभी क्षेत्राधिकारों में निरंतर लागू किया जा सके, तब तक सभी क्षेत्राधिकारों में सरकारी जोखिम को एक समान बर्ताव के अंतर्गत रखने वाले वर्तमान एसए ढांचे को फिलहाल जारी रहना चाहिए। बहर हाल, लीवरेज अनुपात इस संबंध में चिंताओं का कुछ हद तक हल उपलब्ध कराता है। इसके अलावा, किसी भी प्रभाव के मूल्यांकन में संचरण के विभिन्न माध्यमों, नामतः - सरकारी धारिता का आकार, घरेलू पूर्वाग्रह, पूंजीगत संसाधनों तथा निधीयन पैटर्न; को भी अंतर्निहित होना चाहिए, जो सरकारी बॉण्ड बाजारों, अन्य प्रतिभूति बाजारों, बैंकों के कारोबारी मॉडलों, और सबसे अधिक महत्वपूर्ण समष्टिगत वित्तीय स्थिरता जैसे बहुत से क्षेत्रों पर प्रभाव को ध्यान में रखेंगे। बात समाप्त करते हुए, अंतर्ग्रस्त मामलों की संवेदनशीलता के मद्देनजर, सावधान, समग्र और क्रमिक उपागम की अपेक्षा है।

⁹ सरकारी एवं केंद्रीय बैंक के एक्सपोजर के बीच अंतर इसीसी रिपोर्ट पर आधारित है, जिसमें निम्नलिखित अनुशंसाएं की गईं - (i) केंद्रीय बैंक के एक्सपोजरों पर रोक से मौद्रिक नीति परिचालनों पर सरकारी कर्ज एक्सपोजरों पर रोक की तुलना में अधिक बाधा उत्पन्न होने की संभावना है; और (ii) बड़े एक्सपोजर की निश्चित सीमाएं जोखिम भारों की तुलना में अधिक बाधाकारी हैं। ये अनुशंसाएं उपर्युक्त नीतिगत विकल्पों के डिजाइन एवं समायोजन में दर्शाई गई हैं।

¹⁰ (बी) में दर्शाए गए जोखिम भारित ढांचा विकल्पों के अनुरूप, सभी केंद्रीय बैंकों के एक्सपोजर को जोड़े जाने वाले सीमांत जोखिम भार तथा सरकारी एक्सपोजरों के संबंध में बड़े एक्सपोजर की कोई 'निर्धारित' सीमा नहीं होने से छूट प्राप्त होगी।

संदर्भ

आचार्य, विरल, इटामार ड्रेक्सलर और फिलिप स्काब्लबल (2011), "ए पीरिक् विक्टरी? बैंक बेलआउट्स एवं सॉवरिन क्रेडिट रिस्क", एनबीईआर वर्किंग पेपर सीरीज नंबर 17136

आचार्य वी.वी. और ससा स्टेफेन (2014), "द ग्रेटेस्ट कैरी ट्रेड एवर? अंडरस्टैंडिंग यूरो जोन बैंक रिस्कस", जर्नल ऑफ फाइनेंशियल इकोनॉमिक्स, नवंबर।

अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक (2013), "ट्रीटमेंट ऑफ सॉवरिन रिस्क इन द बासेल कैपिटल फ्रेमवर्क", बीआईएस तिमाही समीक्षा, दिसंबर।

बैंकिंग पर्यवेक्षण से संबंधित बासेल समिति (2015), "रिविजन टू द स्टैंडर्डाइज्ड एप्रोच फॉर क्रेडिट रिस्क - सेकेंड कन्सल्टेटिव डॉक्यूमेंट", दिसंबर (<http://www.bis.org/bcbs/publ/d347.htm>)।

बेनोइट कोयरे, (2016), "सॉवरिन डेट इन द यूरो एरिया - टू सेफ ऑर टू रिस्की?" हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के मिंडा डे गुन्ज़बर्ग सेंटर फॉर यूरोपियन स्टडीज, कैम्ब्रिज, नवंबर में मुख्य भाषण।

कारुआना जेमे (2011), "बासेल III : न्यू स्ट्रेन्स एंड ओल्ड डिबेट्स-चैलेंजेज फॉर सुपरवाइजर्स, रिस्क मैनेजर्स एंड ऑडिटर्स", बीआईएस, 14 अक्टूबर।

ची एस.डब्ल्यू, चेंग फैन फह और एननार मोहम्मद नाशीर (2015), "मैक्रोइकोनॉमिक डिटरमिनेंट्स ऑफ सॉवरिन क्रेडिट रेटिंग्स", इंटरनेशनल बिजनेस रिसर्च, वॉल्यूम 8 क्र.सं. 2.

यूरोपीय प्रणालीगत जोखिम बोर्ड (एसएसआरबी) की सरकारी एक्सपेजर के विनियामकीय बर्ताव से संबंधित रिपोर्ट, मार्च 2015.

फरही इमैनुएल और जीन तिरोल, "डेडली इम्ब्रेस : सॉवरिन एंड फाइनेंशियल बैलेंस शीट्स डूम लूप्स", हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, 27 अक्टूबर।

गुडहार्ट, सी। (2012), "सॉवरिन रेटिंग्स व्हेन डिफॉल्ट केन कम एक्सप्लिसिटली ऑर व्हाया इन्फ्लेशन", वीओएक्सईयू, 2 फरवरी।

ग्रे एस, फिलिप करम और रीमा टस्क (2014), "आर बैंक्स रिअली लेजी ? इविडेंस फ्रॉम मिडिल ईस्ट एंड नॉर्थ अफ्रिका", आईएमएफ वर्किंग पेपर, मई।

ग्रॉस, डी. (2013), " बैंकिंग यूनियन विद ए सोवरेन वायरस : द सेल्फ-सर्विंग रेग्युलेटरी ट्रीटमेंट ऑफ सेवरेन डेट इन द यूरो एरिया", सीईपीएस वर्किंग पेपर नंबर 289।

हन्नौन, एच (2011), "सोवरेन रिस्क इन बैंक रेग्युलेशन एंड सुपरविजन: व्हेयर डू वी स्टैंड?" सम्मेलन योगदान, वित्तीय स्थिरता संस्थान उच्च स्तरीय मीटिंग, अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक।

कराकस डी जी, मेहताप हिरिकिरिलालर और हुसेन ओत्तुर्क (2011), "सोवरेन रिस्क रेटिंग्स: बायस्ड टुवार्ड डेवलपड कंट्रीज?", *इमरजिंग मार्केट्स फ़ाइनेंस एंड ट्रेड*, मई-जून 2011, खंड 47, सप्लीमेंट 2, पीपी. 69-87

कोर्टे, जे एंड एस स्टीफन (2014), "ए सोवरेन सब्सिडी" - जीरो रिस्क वेट एंड सोवरेन रिस्क स्पीलओवर्स", वोक्स *सीईपीआर पॉलिसी पोर्टल*, सितंबर। <http://voxeu.org/article/sovereign-subsidy-zero-risk-weights-and-sovereign-risk-spillovers>

मर्लर सिल्विया एंड जीन पिस्मानी फेरी (2012), "हजाईस टैंगो: यूरो-सोवरेन-बैंक इंटरडिपेंडेंस एंड फ़ाइनेंशियल स्टेबिलिटी इन द यूरो एरिया क्षेत्र, *सार्वजनिक ऋण, मौद्रिक नीति और वित्तीय स्थिरता*, बैंक्य डी फ्रांस, वित्तीय स्थिरता की समीक्षा संख्या 16, अप्रैल।

नील्सन, एरिक एफ. (2016), "रिस्क वेटिंग सोवरेन डेट इज द रॉग वे टू गो", सोवरेन एंड बैंकिंग रिस्कस: वॉट पॉलिसीज, यूरोपियन इकोनोमी, जुलाई।

नोमी डेनियल (2012), "इज सोवरेन रिस्क प्रोपर्टी एड्रेसेड बाई फ़िनेंशियल रेग्युलेशन?" बैंक्य डी फ्रांस, वित्तीय स्थिरता समीक्षा, 16 अप्रैल।

भारतीय रिज़र्व बैंक (2012), मास्टर परिपत्र - पूंजी पर्याप्तता और बाजार अनुशासन पर विवेकपूर्ण दिशानिर्देश - नई पूंजी पर्याप्तता फ्रेमवर्क (एनसीएएफ), 2 जुलाई।

जेट्टेलमयेर, ट्रेबेश और गुलाटी (2013), "द ग्रीक डेट रिस्ट्रक्चरिंग: एन ऑटोप्सी", पीटरसन इंस्टीट्यूट फॉर इंटरनैशनल इकोनॉमिक्स वर्किंग पेपर नं. 2013- 13-8।

अनुबंध 1:**सरकारी एक्सपोजर के साथ वर्तमान में किए गए विनियामक बर्ताव का सार****ऋण जोखिम: मानकीकृत दृष्टिकोण**

- रेटिंग-आधारित अवलोकन सारणी। घरेलू मुद्रा में मूल्यवर्गित एवं वित्तपोषित सरकारी एक्सपोजर के लिए अधिमान्य चूक जोखिम भार लगाने के संबंध में राष्ट्रीय विवेक का प्रयोग करना।
- व्यवहार में, सभी बीसीबीएस सदस्यों द्वारा 0% जोखिम भार लगाया गया है (यद्यपि कतिपय बैंकिंग समूहों के संबंध में समेकित स्तर पर ऐसा हमेशा नहीं पाया जाता है)।

ऋण जोखिम: आंतरिक रेटिंग-आधारित (आईआरबी) दृष्टिकोण

- सरकारी एक्सपोजर के लिए 0.03% पीडी फ्लोर की छूट (अर्थात 0% पीडी लगाया जा सकता है)।
- व्यवहार में, अधिकांश आईआरबी सरकारी एक्सपोजर का सकारात्मक जोखिम भार है।

ऋण जोखिम: ऋण जोखिम रोकथाम फ्रेमवर्क

- कोर मार्केट पार्टिसिपेन्ट के साथ रेपो अनुसार सरकारी लेनदेन हेतु जीरो हेयरकट करने के लिए राष्ट्रीय विवेक का प्रयोग करना।

संशोधित बाजार जोखिम फ्रेमवर्क

- चूक जोखिम: मानकीकृत दृष्टिकोण में घरेलू मुद्रा में मूल्यवर्गित एवं वित्तपोषित सरकारी एक्सपोजर के लिए अधिमान्य चूक जोखिम भार लगाने के संबंध में राष्ट्रीय विवेक का प्रयोग करना। व्यवहार में, सभी बीसीबीएस सदस्यों द्वारा 0% भार लगाया गया है।
- ऋण स्प्रेड जोखिम: मानकीकृत एवं आंतरिक मॉडल दृष्टिकोण, दोनों में सकारात्मक ऋण स्प्रेड जोखिम प्रभार।
- सामान्य ब्याज दर जोखिम: बाजार जोखिम आवश्यकताओं के हिस्से के रूप में पूंजीकृत।

लार्ज एक्सपोजर फ्रेमवर्क

- सरकारी एक्सपोजर की छूट।

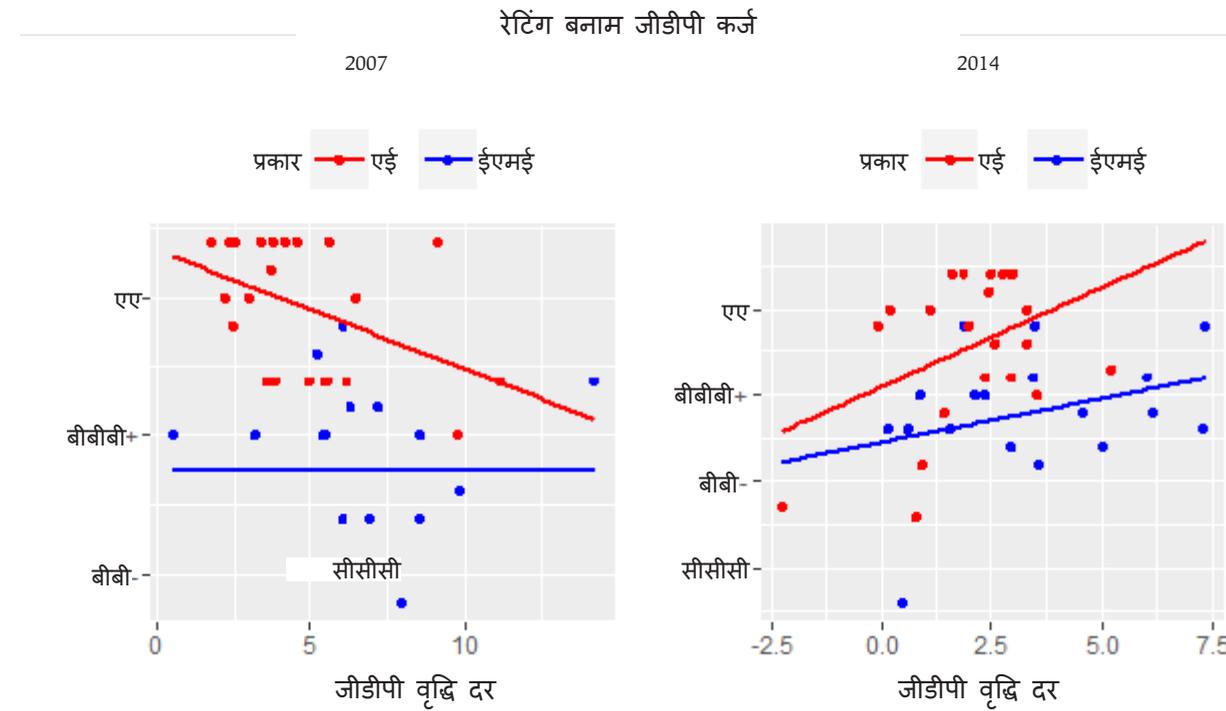
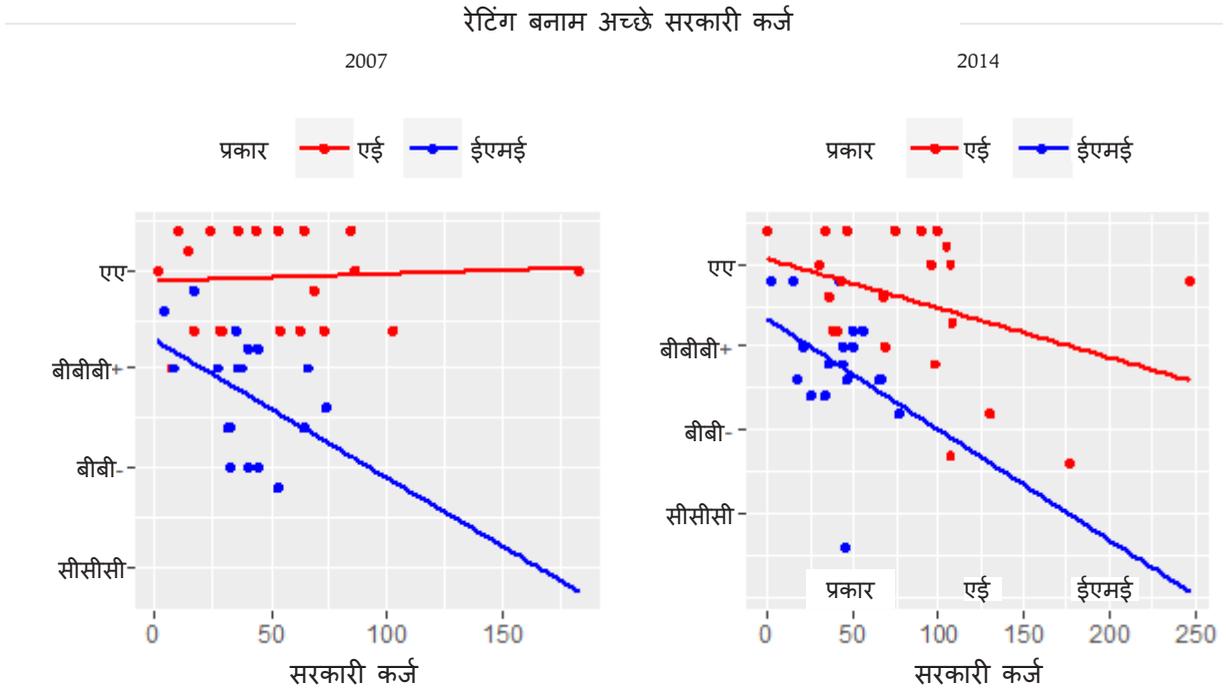
लीवरेज अनुपात फ्रेमवर्क

- सरकारी एक्सपोजर का समावेशन।

चलनिधि मानक

- उच्च-गुणवत्ता वाली चलनिधि आस्तियों के रूप में पात्र घरेलू सरकारी कर्ज की राशि के संबंध में कोई सीमा नहीं है, साथ ही इसमें कोई हेयरकट नहीं किया गया है।

**अनुबंध 2:
रेटिंग बनाम सरकारी कर्ज और जीडीपी वृद्धि**



वैश्विक बैंकिंग - हाल की गतिविधियां और भावी परिदृश्य*

वैश्विक वृद्धि एवं व्यापार में मंदी के मद्देनजर, हाल के वर्षों में वैश्विक बैंकिंग प्रणाली बहुत सी चुनौतियों से जूझती रही। वैश्विक बैंकिंग गतिविधि के व्यापक पुनरुज्जीवन का इंतजार अभी भी है क्योंकि कुछ उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और भारत सहित अधिकांश उभरती अर्थव्यवस्थाओं की बैंकिंग प्रणालियों के निष्पादन पर निम्न लाभप्रदता और आस्ति गुणवत्ता के कमजोर होने की मार पड़ी है। इन चिंताओं के बावजूद, उभरती अर्थव्यवस्थाओं ने वैश्विक बैंकिंग प्रणाली में अपनी स्थिति को मजबूत करना जारी रखा। सकारात्मक पक्ष को देखा जाए तो, वैश्विक वित्तीय संकट के बाद से उठाए गए विभिन्न विनियामकीय/पर्यवेक्षीय सुधारों से वैश्विक बैंको की पूंजीगत स्थिति को मजबूत बनाने में मदद मिली है।

I. प्रस्तावना

वैश्विक वित्तीय संकट एवं आसन्न कर्ज संकट ने वैश्विक बैंकिंग प्रणाली की कमजोरियों और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर वास्तविक, वित्तीय और भरोसे के माध्यम से पड़ने वाले विपरीत प्रभावों को प्रत्यक्ष लाकर खड़ा कर दिया है। इसके अलावा, इन्होंने वैश्विक स्तर पर विनियामकीय और पर्यवेक्षी सहयोग की जरूरत को भी रेखांकित किया है। तब से, राष्ट्रीय और बहु-पक्षीय -दोनों स्तर पर कार्रवाई के बहुत से परिदृश्य देखे गए हैं। वर्ष 2016 तक कुछ नई चिंताएं उभर कर आ चुकी हैं।

वैश्विक वृद्धि एवं कारोबार के मंदी के दौर में वैश्विक बैंकिंग प्रणाली विनियामकीय/पर्यवेक्षी सुधारों; वैश्विक बैंकों की पूंजीगत स्थिति में सुधार; वैश्विक बैंकिंग की सुस्त गतिविधि; ऋण वृद्धि की मंद गति, लाभप्रदता में कमी; और आस्ति

* यह लेख भारतीय रिज़र्व बैंक, आर्थिक एवं नीति अनुसंधान विभाग के बैंकिंग अनुसंधान प्रभाग की श्रीमती रेखा मिश्रा के मार्गदर्शन में डॉ. राजमाल, डॉ. पल्लवी चवाण, श्री राधेश्याम मिश्रा एवं श्रीमती अन्वेष्ठा दास ने तैयार किया गया है। इस लेख में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। ये विचार भारतीय रिज़र्व बैंक के मत का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

श्री बी. एम. मिश्रा, प्रधान परामर्शदाता, आर्थिक और नीति अनुसंधान विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा प्रकाशन हेतु प्राधिकृत।

गुणवत्ता संबंधी चिंताओं के परीक्षण और पीड़ा के मिलेजुले दौर से गुजर रही है।

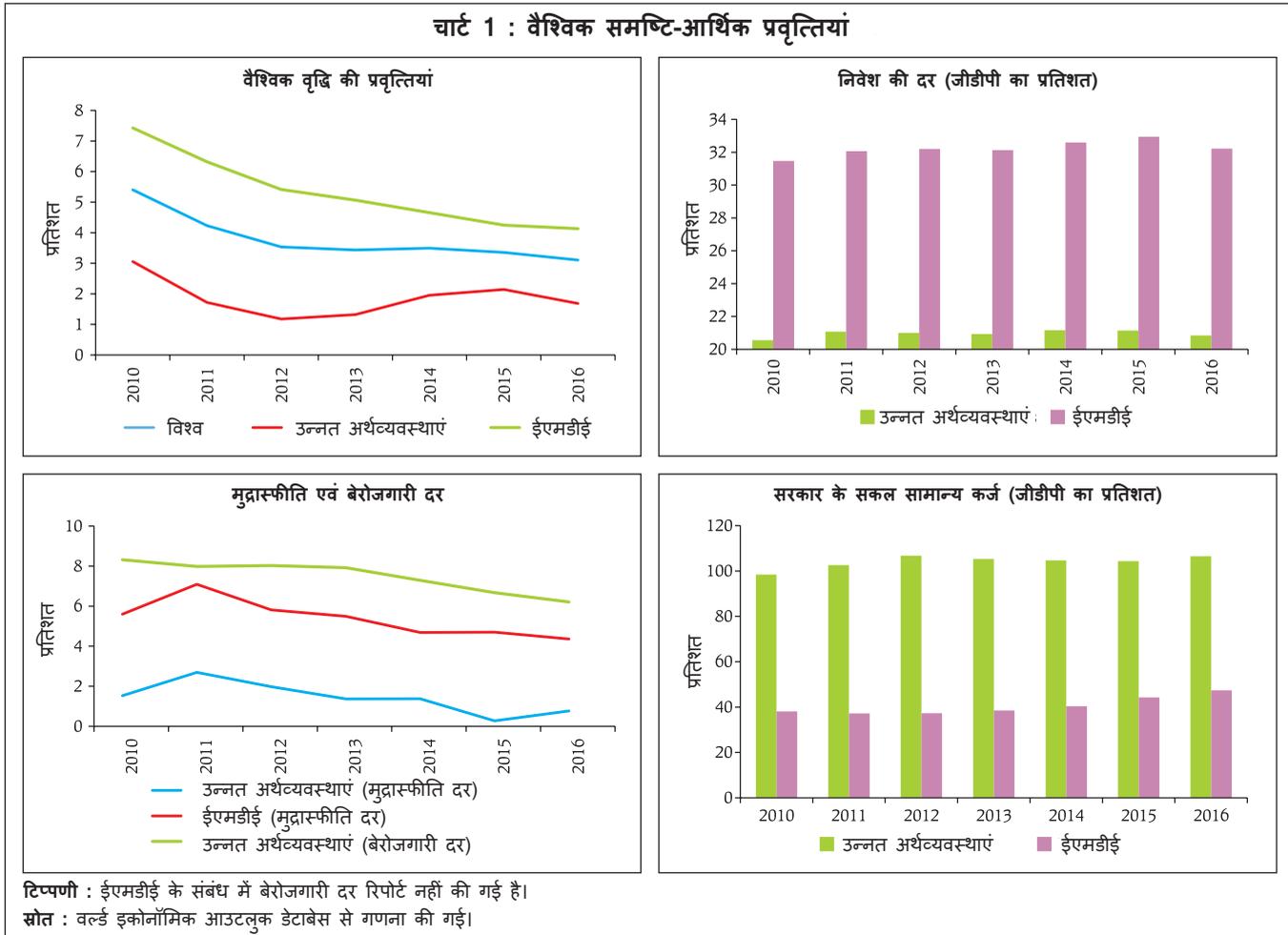
इस लेख में वैश्विक बैंकिंग प्रणाली की वृद्धि एवं सेहत की समीक्षा और वैश्विक विनियामकीय सुधारों के संबंध में हुई प्रगति का विश्लेषण किया गया है। व्यापक रूप से 2010 के दशक पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसमें वर्ष 2016 पर अधिक विस्तृत विचार-विमर्श किया गया है। शेष लेख को निम्नानुसार पेश किया गया है। लेख के दूसरे खंड में वैश्विक आर्थिक प्रवृत्तियों के मद्देनजर, चुनिंदा उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (एई) एवं उभरते बाजारों वाली विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) से संबंधित मजबूती और लाभप्रदता के सामान्य सूचकों का प्रयोग करते हुए बैंकिंग निष्पादन का विश्लेषण किया गया है। तीसरे खंड में, विशिष्ट प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं/आर्थिक समूहों की बैंकिंग प्रणालियों के निष्पादन का मूल्यांकन किया गया है। शीर्ष 100 वैश्विक बैंकों के निष्पादन को खंड चार में प्रस्तुत किया गया है। प्रमुख विनियामकीय एवं पर्यवेक्षी नीतिगत पहल की चर्चा खंड पांच में की गई है। खंड छह में उपसंहार तथा भविष्य की संभावनाओं का जिक्र है।

II. वैश्विक बैंकिंग प्रवृत्ति

बृहत्-वित्तीय जोखिम बने रहे

2016 में वैश्विक अर्थव्यवस्था की वृद्धि मंद रही, जो उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और उभरते बाजारों वाली विकासशील अर्थव्यवस्थाओं -दोनों में देखी गई। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) द्वारा अप्रैल 2017 में जारी विश्व आर्थिक संभावना में वैश्विक आर्थिक वृद्धि 3.1 प्रतिशत रिपोर्ट की गई, जो 2015 में दर्ज वृद्धि की तुलना में कम रही। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और उभरते बाजारों वाली विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि क्रमशः 1.7 प्रतिशत एवं 4.1 प्रतिशत रही। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बेरोजगारी की दर में 2016 में कमी होने के बावजूद पण्य मूल्यों के अपेक्षाकृत अधिक होने के कारण इन अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति में वृद्धि होती रही है। हालांकि, उभरते बाजारों वाली विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में यह दबाव थोड़ा कम हुआ। सरकार के सामान्य तुलन पत्रों में कर्ज का हिस्सा उच्च स्तर पर बना रहा। हालांकि, अमेरिका के नीतिगत रुझान से जुड़ी अनिश्चितताओं और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले इसके असर के मद्देनजर भविष्य की आर्थिक संभावनाओं के बारे में अनिश्चितता बनी रही (चार्ट 1)।

चार्ट 1 : वैश्विक समष्टि-आर्थिक प्रवृत्तियां



सभी एई एवं ईएमडीई के अंतर्गत ऋण वृद्धि के भिन्नता भरे पैटर्न

सभी अर्थव्यवस्थाओं के अंतर्गत ऋण वृद्धि की प्रवृत्ति में भिन्नता भरे पैटर्न देखे गए, जिसके तहत भिन्न-भिन्न वृद्धि एवं बैंक तुलन पत्र में सुधार की अलग-अलग स्थितियों का पता चलता है। तथापि, 2016 में सामान्य रूप से अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं के अंतर्गत ऋण वृद्धि में मंदी आई। अमेरिका, जर्मनी एवं फ्रांस जैसी उन्नत अर्थव्यवस्थाओं ने अपनी ऋण वृद्धि बरकरार रखा किंतु यूके एवं जापान की वृद्धि में कुछ लचीलापन देखा गया। स्पेन और पुर्तगाल में कमी का दौर जारी रहा।

ईएमडीई के मध्य, भारत और रूस में बड़े ऋणों की चूक का ऋण वृद्धि पर हानिकारक असर पड़ा। हाल के महीनों में ब्राजील की ऋण वृद्धि में कमी आई। तथापि, चीनी कॉर्पोरेटों

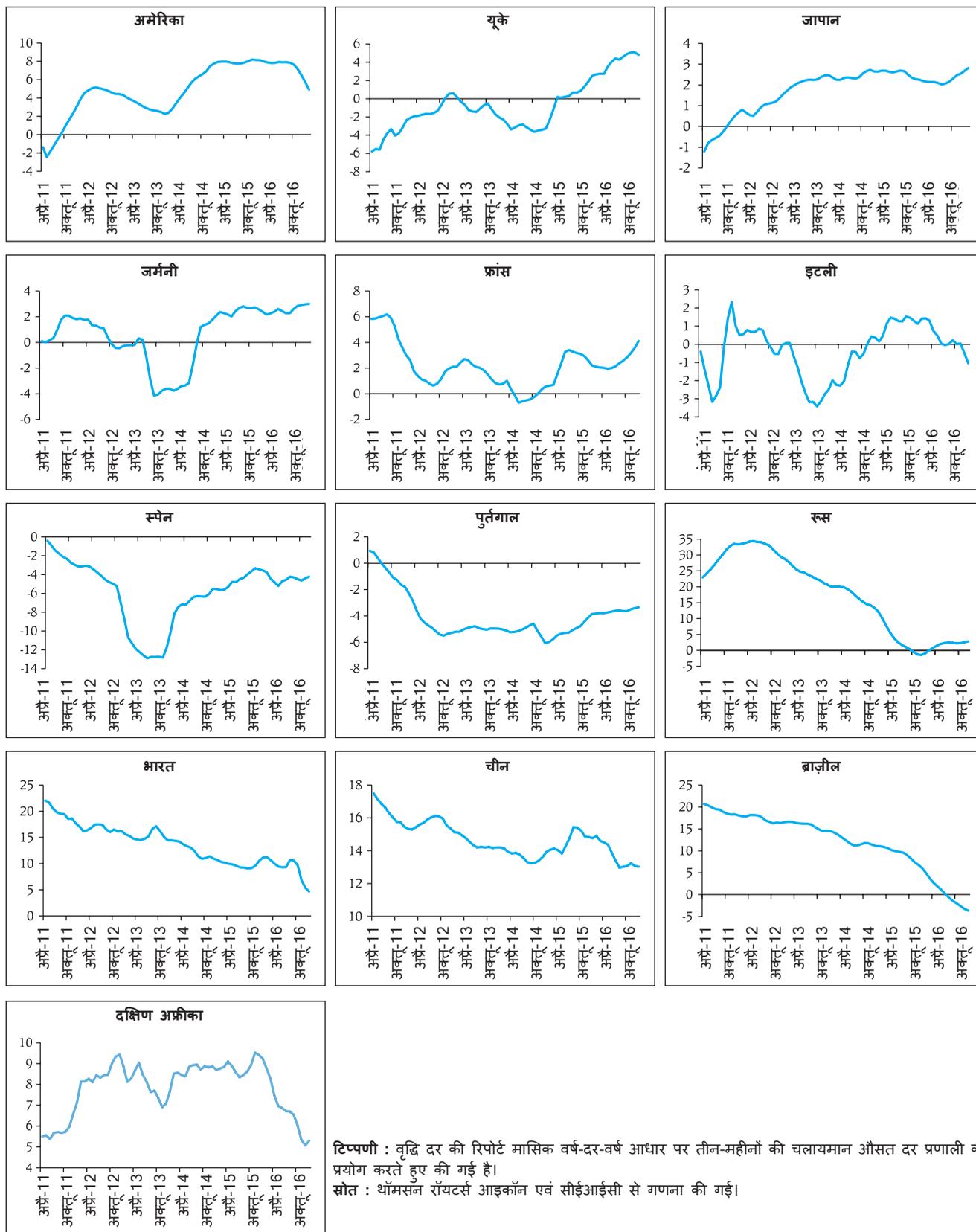
की पहले से विद्यमान उच्च लिवरेज की स्थिति को देखते हुए चीन की अत्यधिक ऋण वृद्धि जारी रही जो 10 प्रतिशत से अधिक रही (चार्ट 2)। ऋण वृद्धि की इन कमजोर करने वाली प्रवृत्तियों के मद्देनजर, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट - अक्टूबर 2016 में इन अर्थव्यवस्थाओं के लिए कमजोर पड़ चुके कॉर्पोरेट तुलन पत्रों को सुगमतापूर्वक डिलिवरेज करने के साथ ही ऋण वृद्धि की बहाली को चुनौती के रूप में चिह्नित किया है, जिसका निकट भविष्य में इन अर्थव्यवस्थाओं की वृद्धि-संभावनाओं पर प्रभाव पड़ेगा।

आस्तियों पर प्रतिलाभ निम्न स्तर पर बना रहा

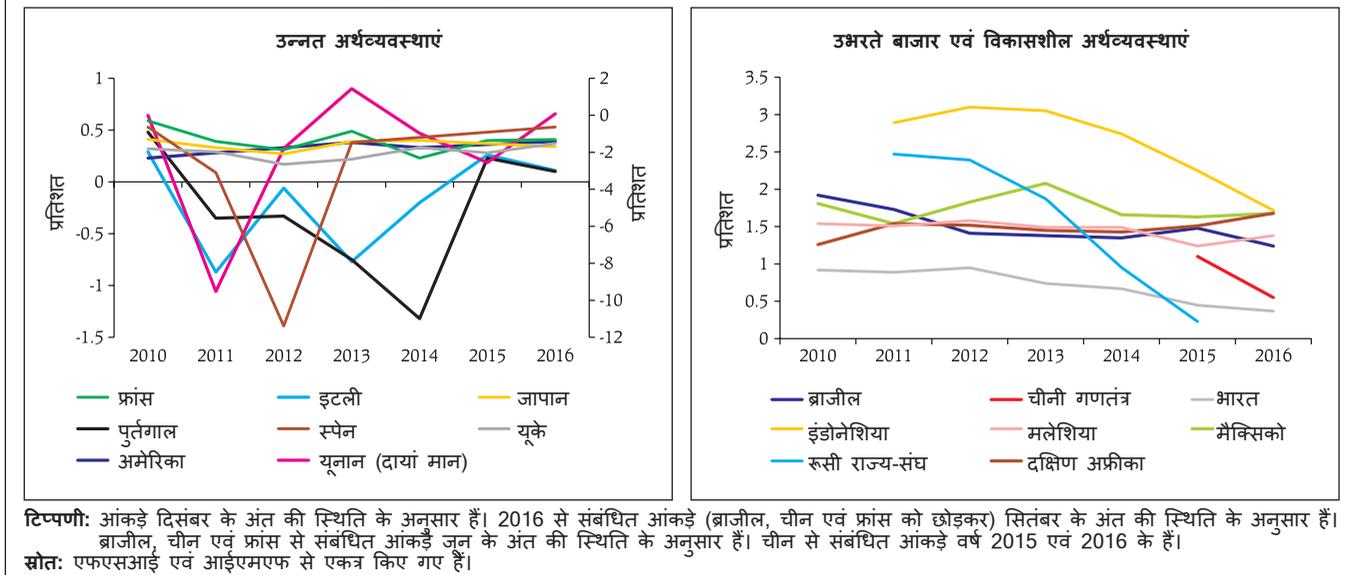
आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए)¹ के निम्न स्तर पर होने से ज्ञात होने वाली कमजोर ऋण वृद्धि से वृद्धि को सहारा प्रदान करने एवं प्रतिकूल आर्थिक चक्रों के माध्यम से पूंजी

¹ औसत कुल आस्तियों की तुलना में निवल लाभ अनुपात।

चार्ट 2 : बैंक ऋण वृद्धि का तीन महीनों के दौरान लिया गया चलायमान औसत, प्रतिशत रूप में



चार्ट 3 : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं से संबंधित बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ



स्तरों को बनाए रखने की बैंकों की क्षमता पर और अधिक प्रभाव पड़ने की संभावना है। एई के मध्य देखा जाए तो अमेरिका और यूके के बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ में हाल के वर्षों में थोड़ा सुधार हुआ है। यूरो-क्षेत्र की परिधि में आने वाली अर्थव्यवस्थाओं, जैसे ग्रीस, इटली, पुर्तगाल एवं स्पेन के बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ में वृद्धि रिपोर्ट की गई है, जो पहले ऋणात्मक स्तर पर हुआ करता था। ईएमडीई के मध्य देखा जाए तो दबावपूर्ण आस्तियों के बड़े बोझ के कारण रूस एवं भारत के बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ में काफी गिरावट आई। चीनी बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ में भी तेजी से गिरावट आई। इंडोनेशियाई बैंकों की लाभप्रदता के आंकड़ों में ऋण लागत बढ़ने के कारण हाल के वर्षों में निरंतर गिरावट आई है। हालांकि, ईएमडीई के अन्य बैंकों की तुलना में उनकी लाभप्रदता उच्च स्तर पर बनी रही (चार्ट 3)।

पूँजी पर्याप्तता स्थिर रही

प्रमुख देशों के बैंकों की पूँजी पर्याप्तता, जो जोखिम-भारित आस्तियों की तुलना में विनियामकीय पूँजी अनुपात के रूप में परिभाषित है, की स्थिति सितंबर 2016 के अंत की स्थिति में पिछले वर्ष की समरूप तिमाही की तुलना में स्थिर रही। 2010 से, अमेरिका को छोड़कर अन्य उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की पूँजीगत स्थिति में लगातार सुधार हुआ है, जिसका कारण

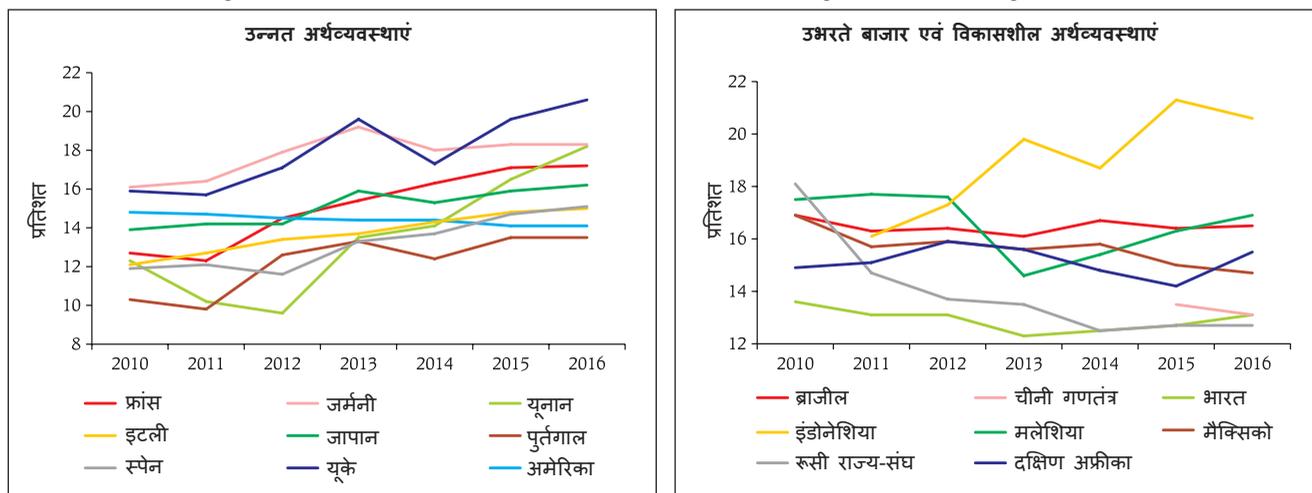
पूँजीगत अपेक्षाओं का मजबूत होना तथा धीरे-धीरे बासेल III को लागू किया जाना माना जा सकता है। हालांकि, रूस और मैक्सिको जैसी ईएमडीई से संबंधित पूँजीगत स्थितियां या तो खराब हुई हैं या अपरिवर्तित रही हैं, जिसका कारण बैंकिंग क्षेत्र के विभिन्न मुद्दों को माना जा सकता है। जिनके कारण इन देशों के बैंकों को अपेक्षाकृत उच्च स्तर पर पूँजीगत बफर तैयार करने में बाधा उत्पन्न हुई। भारत में पूँजी पर्याप्तता की स्थिति में थोड़ा सुधार देखा गया, हालांकि यह स्थिति अधिकांश प्रमुख ईएमडीई की तुलना में निम्न स्तर पर रही (चार्ट 4)।

ईएमडीई में सुधार के साथ लिवरेज अनुपात में भिन्नता की प्रवृत्ति

लिवरेज अनुपात² जोखिम-आधारित पूँजी पर्याप्तताओं के विश्वसनीय अनुपूरक उपाय के रूप में कार्यशील है और इसके माध्यम से बैंकिंग क्षेत्र में लिवरेज की स्थिति में रोक लगाने की कोशिश की जाती है। बासेल III के मानकों के अंतर्गत कम से कम 3 प्रतिशत का लिवरेज अनुपात अनिवार्य किया गया है। 2010 से, एई और ईएमडीई - दोनों की दीर्घावधिक प्रवृत्तियों से बासेल III ढांचे के अंतर्गत विनियामकीय अनिवार्यताओं के कारण लिवरेज अनुपात में सुधार का पता चलता है (चार्ट 5)।

² आस्तियों की तुलना में पूँजी अनुपात

चार्ट 4 : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात (सीआरएआर)



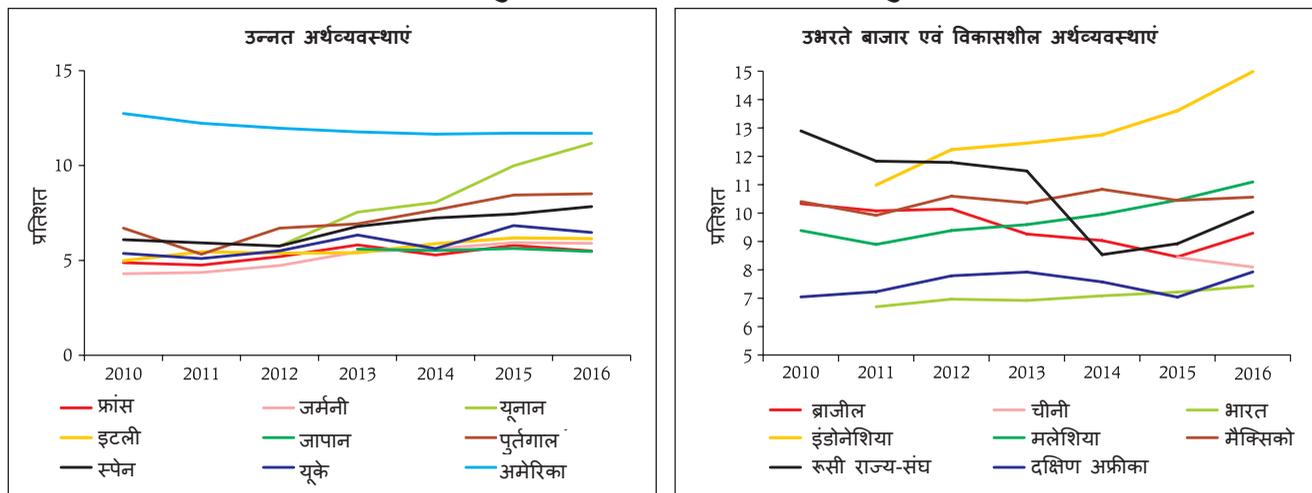
टिप्पणी : आंकड़े दिसंबर के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। 2016 से संबंधित आंकड़े (ब्राजील, चीन एवं फ्रांस को छोड़कर) सितंबर के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। ब्राजील, चीन एवं फ्रांस से संबंधित आंकड़े जून के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। चीन से संबंधित आंकड़े वर्ष 2015 एवं 2016 के हैं।
स्रोत : एफएसआई एवं आईएमएफ से एकत्र किए गए हैं।

अधिकांश ईएमडीई की आस्ति गुणवत्ता में गिरावट

यूरो-क्षेत्र की परिधि के अंतर्गत आने वाली अर्थव्यवस्थाओं का अनर्जक ऋण (एनपीएल) अनुपात³ प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं से काफी उच्च स्तर पर बना रहा। भारत, रूस, इंडोनेशिया एवं ब्राजील सहित अधिकांश ईएमडीई के एनपीएल अनुपात में वृद्धि की सामान्य प्रवृत्ति देखी गई (चार्ट 6)। इन देशों में आस्ति

गुणवत्ता में गिरावट आने के बहुत से कारण थे, यथा - भारत के मामले में क्षेत्र विशेष की समस्याएं, ब्राजील और रूस के मामले में आर्थिक कमजोरी और चीन⁴ के मामले में कॉर्पोरेट लिवरेज का अतिरेक। बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में गिरावट का बैंकों की ऋण प्रदान करने की क्षमता पर विपरीत असर पड़ता है, उनकी लाभप्रदता कम हो जाती है, उनकी बैंक पूंजी का

चार्ट 5 : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में लिवरेज अनुपात

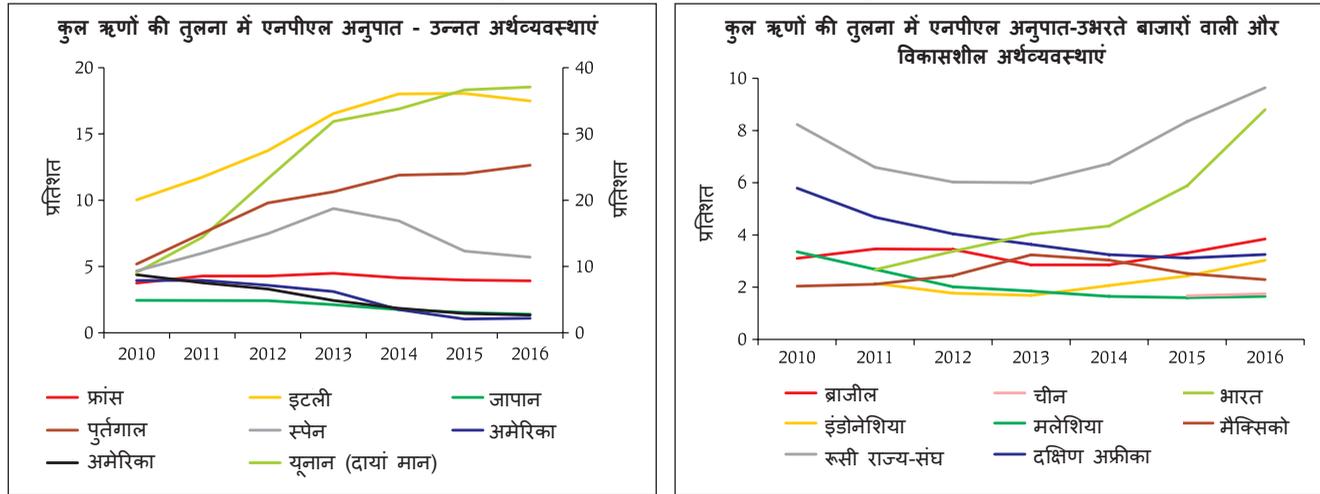


टिप्पणी : आंकड़े दिसंबर के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। 2016 से संबंधित आंकड़े (ब्राजील, चीन एवं फ्रांस को छोड़कर) सितंबर के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। ब्राजील, चीन एवं फ्रांस से संबंधित आंकड़े जून के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। चीन से संबंधित आंकड़े वर्ष 2015 एवं 2016 के हैं।
स्रोत : एफएसआई एवं आईएमएफ से एकत्र किए गए हैं।

³ कुल ऋण की तुलना में एनपीएल अनुपात

⁴ वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट, अप्रैल 2017, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष।

चार्ट 6 : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में आस्ति गुणवत्ता



टिप्पणी : आंकड़े दिसंबर के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। 2016 से संबंधित आंकड़े (ब्राजील, चीन एवं फ्रांस एवं इटली को छोड़कर) जून के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। ब्राजील, चीन एवं फ्रांस एवं इटली से संबंधित आंकड़े जून के अंत की स्थिति के अनुसार हैं। चीन से संबंधित आंकड़े वर्ष 2015 एवं 2016 के हैं।
स्रोत : एफएसआई एवं आईएमएफ से एकत्र किए गए हैं।

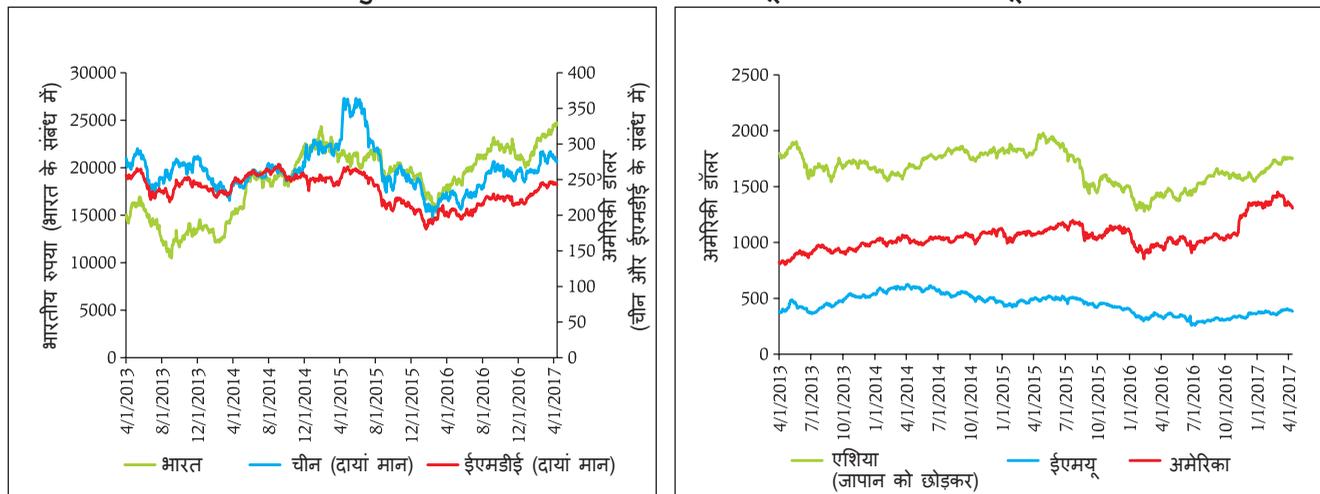
क्षरण होता है और इसके कारण इन अर्थव्यवस्थाओं के समक्ष चुनौती उत्पन्न हो सकती है।

बैंक के शेयर सूचकांकों में जबर्दस्त तेजी आई

बैंक की लाभप्रदता, बाजार के रुख एवं सामान्य आर्थिक वातावरण के सूचक माने जाने वाले बैंक के शेयर सूचकांक में 2016 की दूसरी छमाही में अमेरिका में 30 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई, जिसके कारण निम्नलिखित हैं - अमेरिकी बैंकों की

लाभप्रदता में सुधार होना, फेड द्वारा दरों में अधिक बार वृद्धि किया जाना और डॉड-फ्रैंक वाल स्ट्रीट सुधारों एवं उपभोक्ता संरक्षण कानून में संशोधन की संभावनाएं। यूरो-क्षेत्र के अंतर्गत 2016 की पहली छमाही में बैंक शेयर सूचकांक में गिरावट आई किंतु वर्ष के उत्तरार्द्ध में इनमें सुधार हुआ। 2016 के दौरान बैंकों और उभरते बाजारों की बिक्री का निष्पादन कमजोर रहने के कारण ईएमडीई के बैंक शेयरों पर प्रतिलाभ ठंडा (बहुत कम) रहा (चार्ट 7)।

चार्ट 7 : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं/अर्थव्यवस्था समूहों में बैंकों के शेयर सूचकांक



टिप्पणी : ईएमयू से तात्पर्य यूरोपियन मॉडिक संघ से है।
स्रोत : थॉमसन रॉयटर्स, डेटा स्ट्रीम से एकत्र किए गए हैं।

यूरो-क्षेत्र में सीडीएस स्प्रेड उच्च स्तर पर बना रहा

ऋण जोखिम प्रबंध के लिए सरकारी ऋण-चूक की अदला-बदली (सीडीएस) महत्वपूर्ण जरिया है जो सरकारी कर्ज पर होने वाली हानि से निवेशकों की रक्षा करता है। दबाव की अवधि के दौरान बांड स्प्रेड की तुलना में सीडीएस स्प्रेड में नई सूचनाएं अधिक तेजी से प्रकट हुईं (आईएमएफ-जीएफएसआर, अप्रैल 2013)।

यूरो-क्षेत्र की परिधि पर स्थित अर्थव्यवस्थाओं का सरकारी सीडीएस स्प्रेड उच्च स्तर पर बना रहा, जो उन अर्थव्यवस्थाओं की कमजोरियों के कारण था। जून 2016 में, यूके और यूरोपीय संघ (ईयू) के बैंकों के बैंक-सीडीएस स्प्रेड में तेजी से वृद्धि हुई, जिसका कारण जून 2016 में यूके में हुए जनमत संग्रह, जो ब्रेक्सिट के नाम से प्रसिद्ध हुआ, का परिणाम रहा। हालांकि,

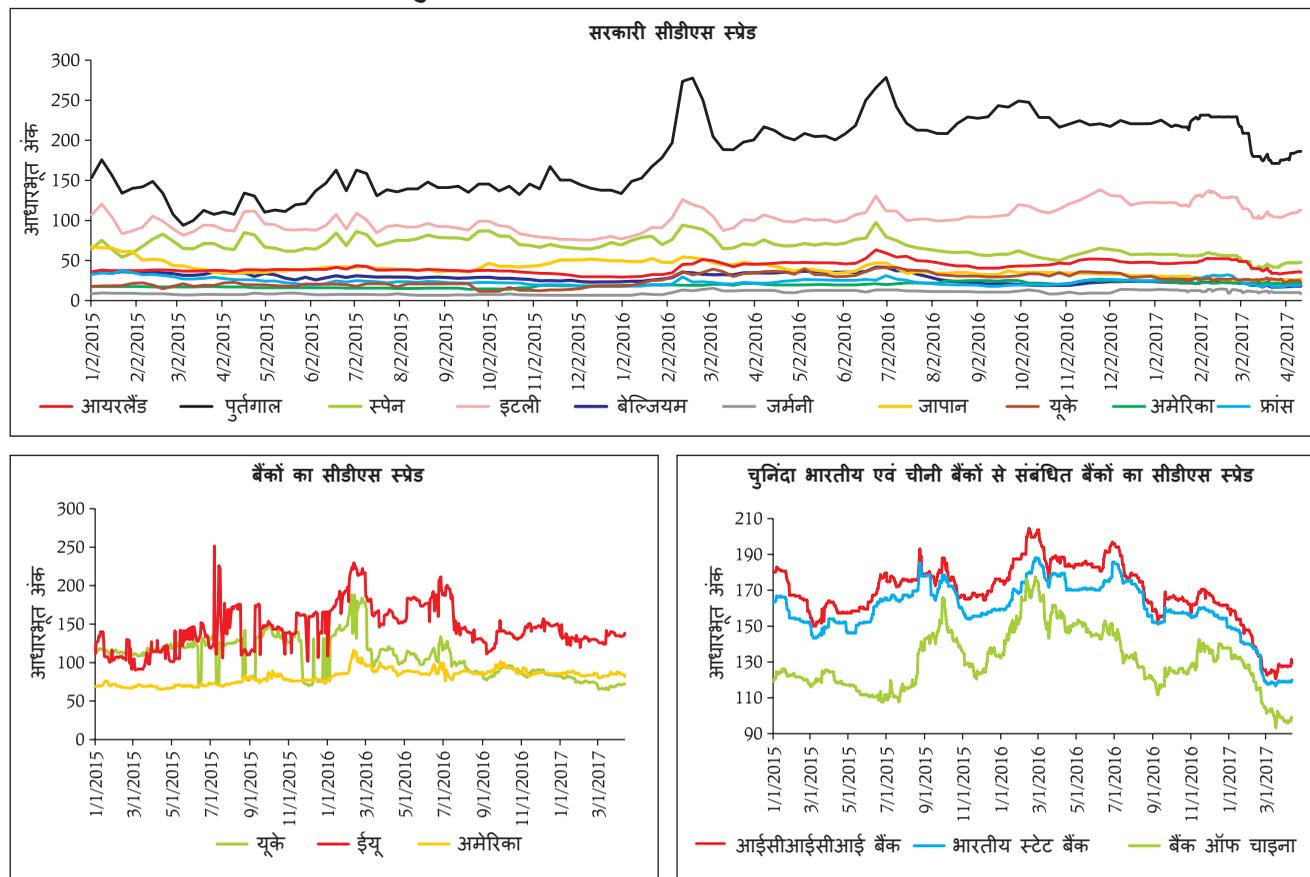
बाद में इसमें कमी आई। यूरो-क्षेत्र के बैंक स्प्रेड अमेरिका और यूके की तुलना में उच्च स्तर पर रहे। प्रमुख भारतीय बैंकों, नामतः भारतीय स्टेट बैंक एवं आईसीआईसीआई बैंक के सीडीएस स्प्रेड में बैलेंस सीट क्लीनअप के अग्रसक्रिय कदम उठाए जाने के बाद जुलाई 2016 से कमी देखी गई। हालांकि, हाल के महीनों के दौरान आईसीआईसीआई बैंक के सीडीएस स्प्रेड में सुधार देखा गया (चार्ट 8)।

III. चुनिंदा विकसित क्षेत्रों एवं देशों में बैंकिंग की प्रवृत्तियां

i) अमेरिकी बैंकिंग प्रणाली - बहाली के संकेत

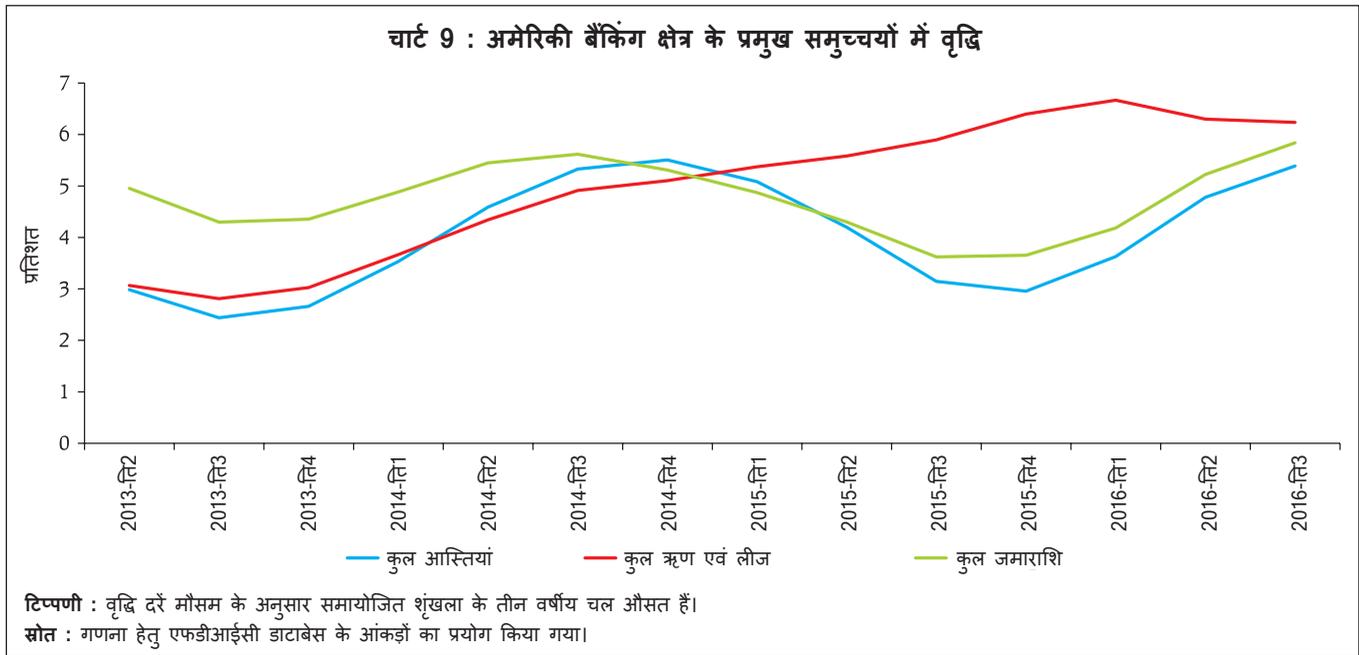
वैश्विक वित्तीय संकट के अनुगामी जोरदार झटके के बाद अमेरिका में बैंक ऋण वृद्धि 2011 की तीसरी तिमाही से प्रारंभ होकर 2016 की शुरुआत तक जारी रही। हालांकि, 2016⁵ की दूसरी और तीसरी तिमाही में यह वृद्धि कुछ मंद

चार्ट 8 : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में सरकारी एवं बैंकों के सीडीएस स्प्रेड



स्रोत : थॉमसन रॉयटर्स आइकॉन।

⁵ अलग से उल्लेख नहीं किया गया हो तो इस लेख में वर्ष से तात्पर्य कैलेंडर वर्ष है।

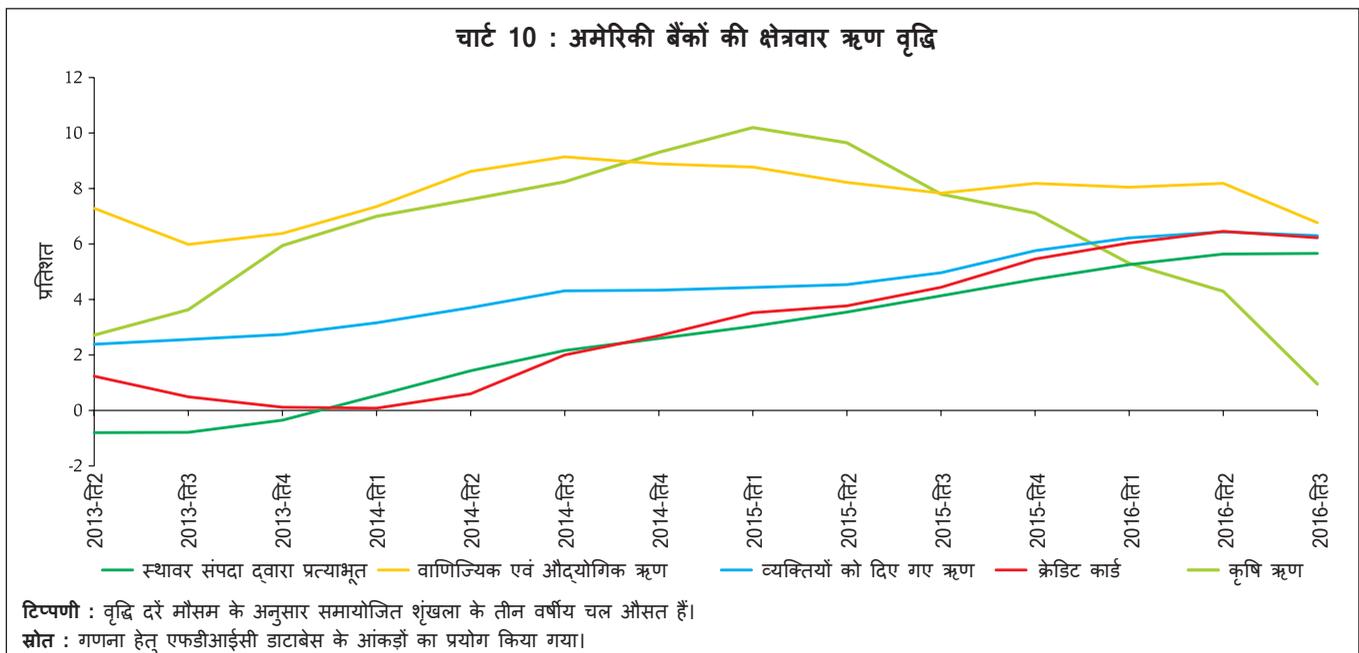


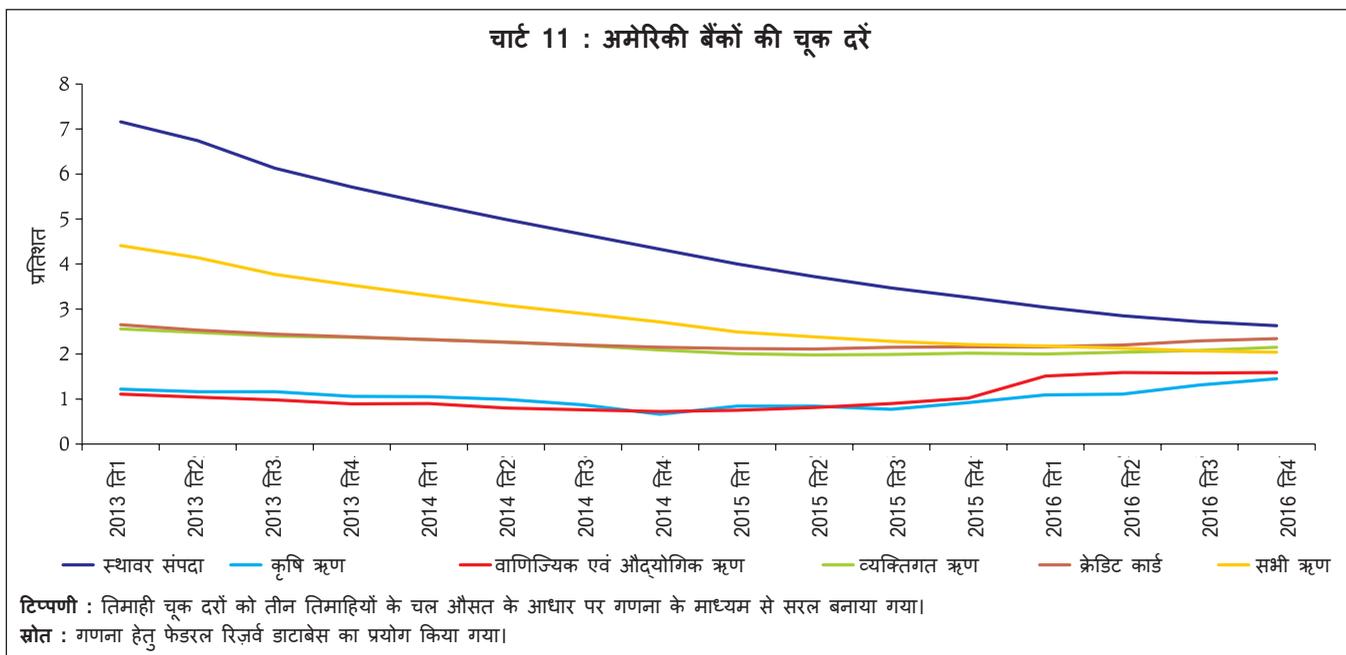
हुई। इस बढ़ती प्रवृत्ति के अनुरूप 2016 में बैंक जमाराशियों में भी वृद्धि देखी गई, किंतु जमाराशि में वृद्धि स्पष्ट रूप से ऋण की अपेक्षा कम रही (चार्ट 9)।

विस्तृत आधार के साथ ऋण वृद्धि का पुनरुज्जीवन

वैश्विक वित्तीय संकट की शुरुआत के साथ ही प्रत्येक क्षेत्र/हिस्से को प्राप्त होने वाले ऋण पर आघात पड़ा, किंतु वाणिज्यिक एवं औद्योगिक क्षेत्र, तथा स्थावर संपदा द्वारा

प्रत्याभूत ऋण पर सबसे बुरा असर पड़ा। संकट के बाद हुई बहाली का आधार सामान्य रूप से विस्तृत रहा जिसके अंतर्गत उक्त क्षेत्रों सहित सभी ऋण प्राप्त-कर्ता क्षेत्रों में वृद्धि हुई। हालांकि, 2012 की तीसरी तिमाही के बाद, वाणिज्यिक और औद्योगिक क्षेत्र की अधिक वृद्धि हुई। यद्यपि, अन्य क्षेत्रों की तुलना में यह वृद्धि अधिक रही। इसके विपरीत, स्थावर संपदा द्वारा प्रत्याभूत ऋण में वृद्धि जारी रही (चार्ट 10)। इस अवधि





के दौरान खुदरा ऋण में भी मजबूत वृद्धि हुई। उपभोक्ता के विश्वास में वृद्धि होने और बेरोजगारी में कमी के तुरंत बाद 2016 में खुदरा ऋण में वृद्धि जारी रही।

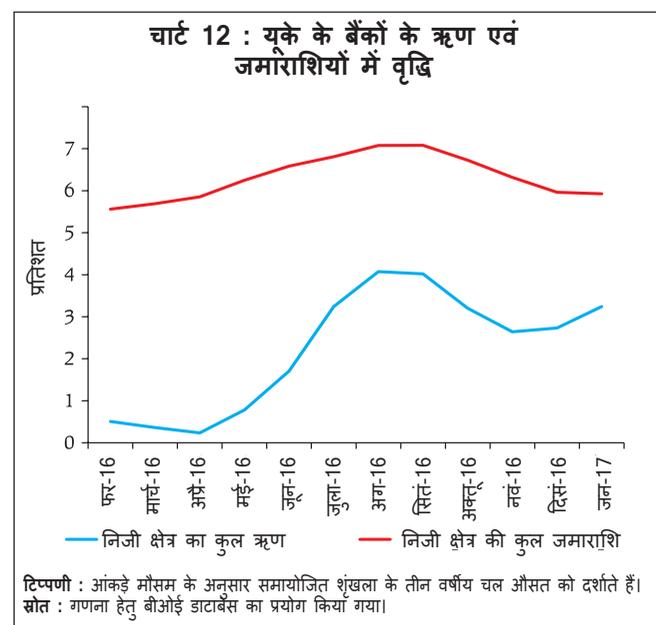
एनपीएल में कमी की प्रवृत्ति

संकट-पश्चात अमेरिकी बैंकिंग प्रणाली का सबसे कमजोर हिस्सा एनपीएल, विशेषरूप से स्थावर संपदा क्षेत्र से संबंधित, रहा है। अनुगामी वर्षों में इसमें लगातार गिरावट देखी गई। हालांकि, इस क्षेत्र में चूक की दर सर्वाधिक⁶ स्तर पर बनी रहीं। वाणिज्यिक और औद्योगिक क्षेत्र में चूक दरों के सबसे कम होने के बावजूद 2016 में अब तक उनमें मामूली वृद्धि हुई है (चार्ट 11)।

ii) यूके की बैंकिंग प्रणाली - अच्छी वृद्धि हुई किंतु अनिश्चितता बनी रही

ब्रेक्सिट के उपरांत, यूके की बैंकिंग प्रणाली विनियामकों, निवेशकों एवं जमाकर्ताओं सहित सभी हिस्सेदारों की निगरानी में रही है। यूके की बैंकिंग प्रणाली के बारे में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष सहित विभिन्न स्रोतों के विश्लेषण से यूके के बैंकों की हालत बढ़िया होने का पता चला, जिसमें पर्याप्त चलनिधि

उपलब्ध है और ब्रेक्सिट⁷ के परिणामी प्रतिकूल प्रभावों से निपटने के लिए उसके पास पर्याप्त पूंजी बफर है। प्रमुख बैंकिंग सूचकों में 2017 में अब तक अच्छी वृद्धि हुई है। निजी क्षेत्र की ऋण वृद्धि में, सितंबर और नवंबर 2016 के बीच आई कमी को छोड़कर, अप्रैल 2016 से जनवरी 2017 तक तेजी आई। निजी क्षेत्र की जमाराशि में भी सितंबर 2016 तक वृद्धि होती रही, उसके बाद इसमें थोड़ी मंदी आई (चार्ट 12)।

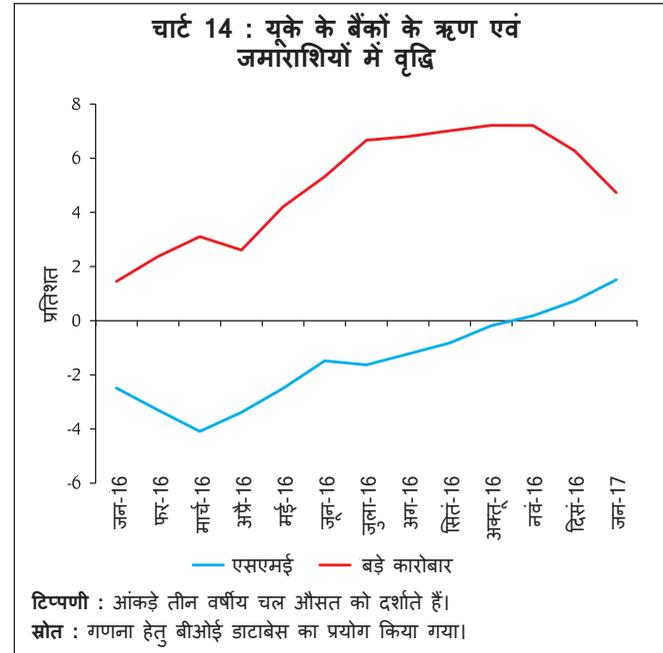
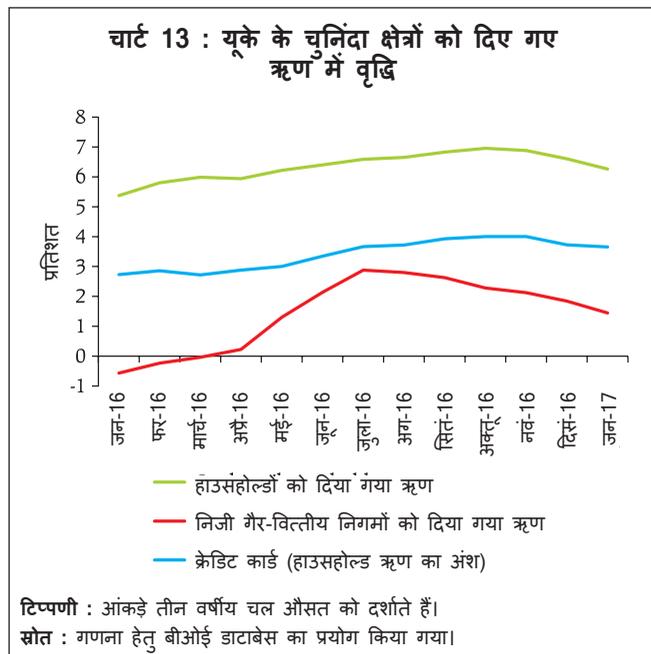


⁶ चूक दरों को मौसम के अनुसार समायोजित किया गया है। इनसे तात्पर्य ऐसे ऋणों से है जो 30 दिनों या उससे अधिक से बकाया हों और उन पर ब्याज अभी भी जमा हो रहा हो या जिनमें ब्याज जमा नहीं भी हो रहा हो।

⁷ जीएफएसआर - अक्टूबर 2016, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष

बैंक ऑफ इंग्लैंड (बीओई) के आंकड़ों से हाउसहोल्ड ऋण (व्यक्तियों और गैर-निगमित उद्यमों को दिए जाने वाले ऋण सहित), जो निजी क्षेत्र के ऋण का एक हिस्सा है, में वृद्धि होने का पता चलता है। हालांकि, बैंक ऋण और जमाराशि के दो सूचकों (जिनका जिक्र पहले किया गया) के अनुरूप अक्टूबर 2016 के बाद इसमें थोड़ी मंदी देखी गई। निजी गैर-वित्तीय निगमों को दिए जाने वाले ऋण, जो निजी क्षेत्र को दिए जाने वाले ऋण का दूसरा हिस्सा है, में जुलाई 2016 के बाद तेजी से और लगातार गिरावट देखी गई। संभवतः इसका कारण ब्रेक्सिट था (चार्ट 13)। इसके अलावा, बड़े कारोबारों के लिए दिए जाने वाले ऋण में भी जुलाई 2016 में स्पष्ट अंतर देखा गया। इन निगमों की जुलाई के बाद ऋण वृद्धि पहले की तुलना में कम थी (चार्ट 14)।

2016 के अधिकांश हिस्से के दौरान कारोबार के दूसरे प्रमुख हिस्से लघु और मझोले उद्यमों (एसएमई) को दिए जाने वाले ऋण में कमी आई (चार्ट 14)। हालांकि, 2017 में अब तक एसएमई ऋण में गिरावट की गति मंद हुई है। यह तथ्य बैंक ऑफ इंग्लैंड के ऋण परिस्थिति सर्वेक्षण से भी साबित हुआ, जिससे ऋण प्रवाह, पुनर्भुक्तान एवं चूक के बारे में बैंकों के मत की जानकारी प्राप्त हुई। इस सर्वेक्षण के अनुसार, 2016 की प्रथम तिमाही तक विस्तारित होने वाली



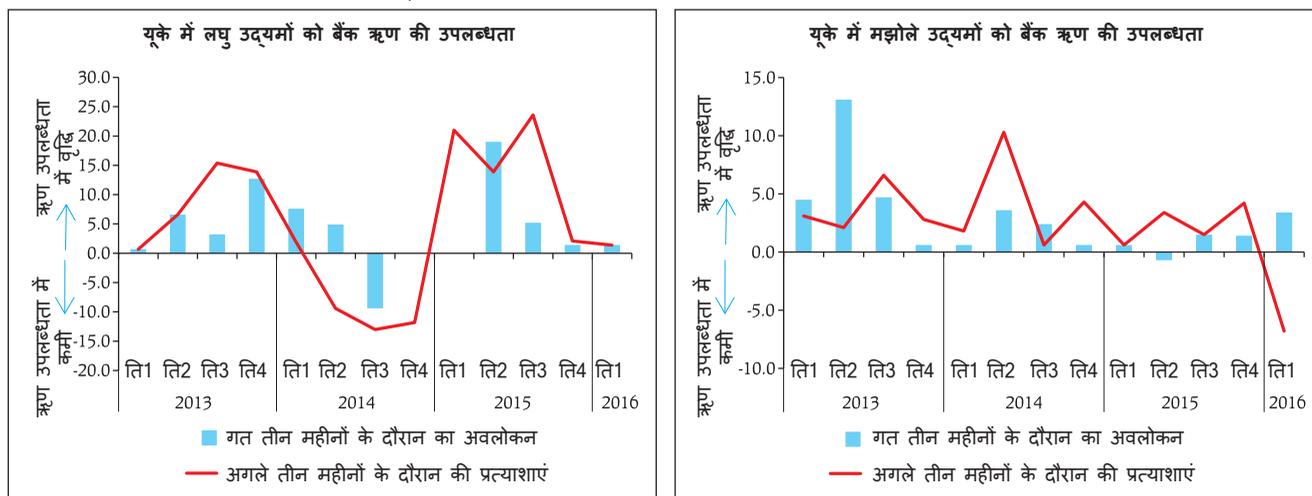
ब्रेक्सिट से पूर्व की अवधि में लघु एवं मध्यम -दोनों उद्यमों को दिए जाने वाले बैंक ऋण से संबंधित अतीत के प्रेक्षणों और भविष्य की संभावनाओं को व्यापक रूप से सकारात्मक दर्शाया गया (चार्ट 15)⁸।

यूके में हाउसहोल्ड कर्ज के उच्च स्तर के मद्देनजर, ब्रेक्सिट के उपरांत स्थावर संपदा बाजार में जारी समायोजन का हाउसहोल्ड चूक (डिफाल्ट) पर कुछ असर हो सकता है। 2016 की चौथी तिमाही तक उपलब्ध आंकड़ों से प्रत्याभूत हाउसहोल्ड ऋण के संबंध में चूक में कमी का पता चलता है (चार्ट 16)।

इसके आगे, बहुत से कारक यूके के बैंकों के संबंध में अनिश्चित वातावरण की ओर संकेत करते हैं। इनमें से कुछ संकेत निम्न लिखित हैं - (क) यूके में आर्थिक संभावना और रोजगार की बिगड़ती स्थिति; (ख) इस बात के मद्देनजर कि एसएमई बैंक ऋण के लिए स्थावर संपदा पर बहुत अधिक निर्भर होते हैं, स्थावर संपदा बाजार में समायोजन के बाद एसएमई के उपलब्ध ऋण में कमी होना; (ग) स्थावर संपदा बाजारों में समायोजन का हाउसहोल्ड क्षेत्र में पुनर्भुक्तान पर भी विपरीत असर पड़ा; और (घ) यूके के बैंकों में ब्याज दरें कम होने के साथ ही परिचालन लागत की अधिकता के बाद लाभप्रदता का निरंतर कम होना।

⁸ 2016 की दूसरी तिमाही से संबंधित आंकड़े अभी उपलब्ध नहीं हैं।

चार्ट 15: यूके में एसएमई को ऋण की उपलब्धता के संबंध में प्रत्याशाएं



टिप्पणी: आंकड़े निवल शेष दर्शाते हैं, जिसका अनुमान बाजार में उनकी हिस्सेदारी के अनुसार प्रश्न का उत्तर देने वाले ऋणदाताओं की प्रतिक्रियाओं पर विचार-विमर्श करके किया गया है।
स्रोत: बीओई, क्रेडिट कन्डीशन्स सर्वे।

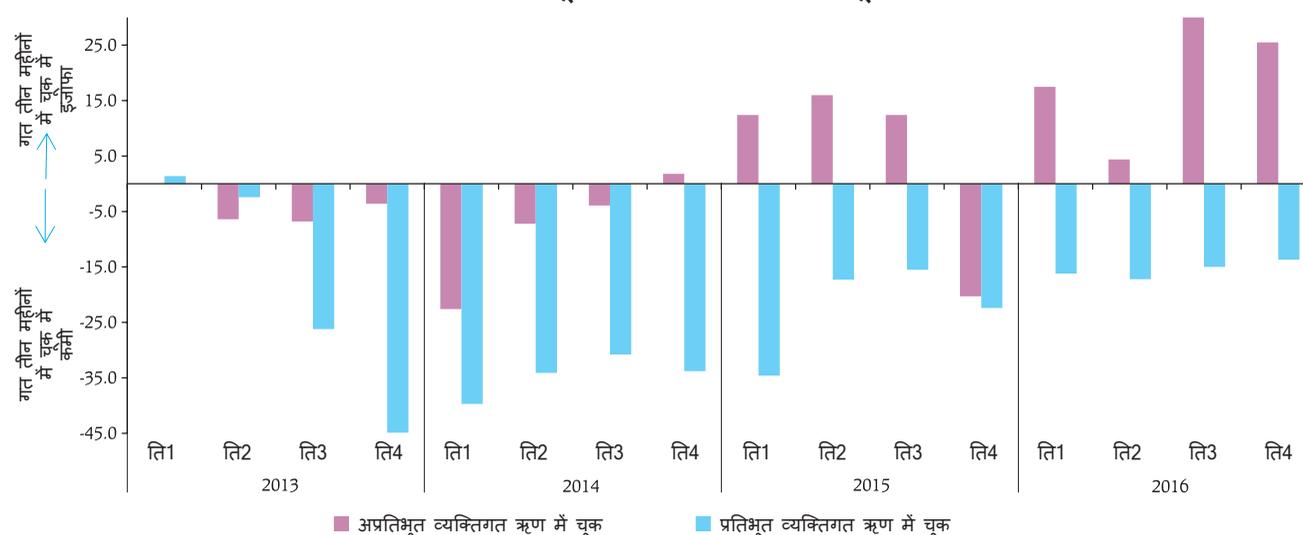
iii) यूरो क्षेत्र में बैंकिंग प्रणाली - वित्तपोषण के स्रोतों में स्थिरता की बढ़ती ऋण वृद्धि में बढ़ती

कुल मिलाकर, 2016 में यूरो क्षेत्र के बैंकों के तुलन पत्र की वृद्धि में इजाफा हुआ था। इसके अतिरिक्त, 2015 के उत्तरार्ध से आस्ति वृद्धि चक्र का निर्माण भी अपेक्षाकृत रूप से उच्च स्तर पर था। इस अवधि के दौरान दूसरी सकारात्मक

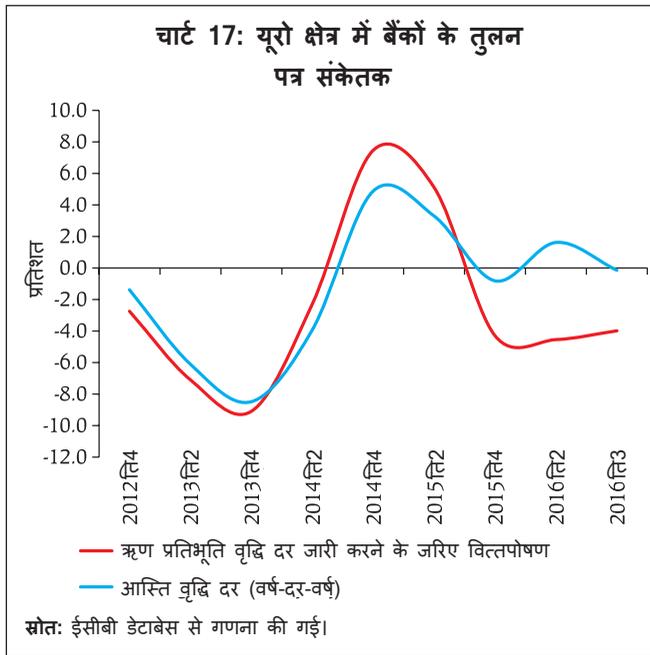
विशेषता यह थी की ऋण प्रतिभूतियां जारी करने के जरिए बैंकों के वित्तपोषण के विकास चक्र को अत्यंत निम्न स्तर पर सीमित किया गया था (चार्ट 17)।

निजी गैर-वित्तीय क्षेत्र को प्रदत्त ऋण ने जून 2015 से सकारात्मक वृद्धि की। प्रमुख सदस्य देशों में, जहां फ्रांस और जर्मनी ने सितंबर 2016 में करीब-करीब इस प्रवृत्ति का पीछा

चार्ट 16: यूके में हाउसहोल्ड ऋण में चूक



टिप्पणी: आंकड़े निवल शेष दर्शाते हैं, जिसका अनुमान बाजार में उनकी हिस्सेदारी के अनुसार प्रश्न का उत्तर देने वाले ऋणदाताओं की प्रतिक्रियाओं पर विचार-विमर्श करके किया गया है।
स्रोत: बीओई, क्रेडिट कन्डीशन्स सर्वे।

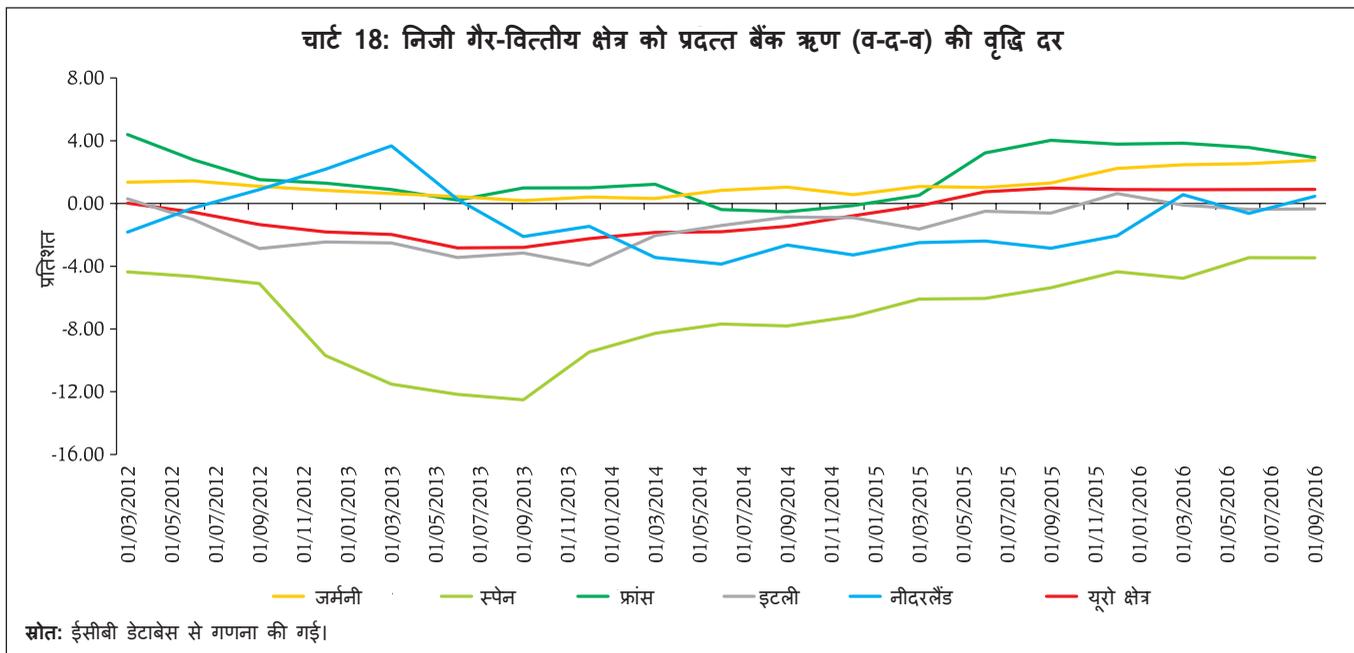


किया, वहीं इटली और नीदरलैंड में वृद्धि जून 2016 में फिर से ऋणात्मक हो गई। फिर भी, सितंबर 2016 में नीदरलैंड ने एक बार फिर वृद्धि की। इसके विपरीत, स्पेन में ऋण वृद्धि में गिरावट जारी रही (चार्ट 18)।

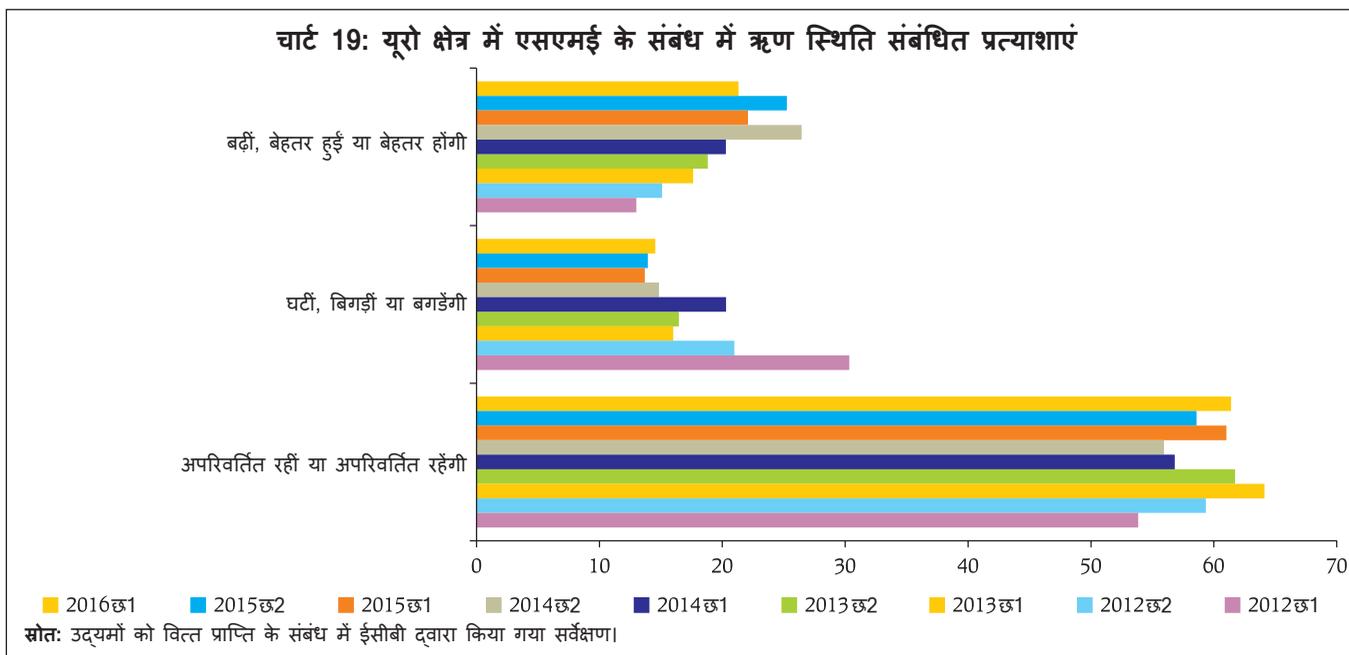
यूरो क्षेत्र में एसएमई का कुल फर्मों में 99.8 प्रतिशत, कारोबार में 60 प्रतिशत एवं रोजगार में 70 प्रतिशत हिस्सा था

और वह काफी हद तक बैंक वित्त पर आश्रित था।⁹ यूरो क्षेत्र में एसएमई को वित्त की सुलभता के संबंध में ईसीबी सर्वेक्षण से मालूम होता है कि इन उद्यमों को ऋण की उपलब्धता में सुधार को लेकर जो उम्मीद की जाती है वह 2014 के उत्तरार्ध से संभावित गिरावट की जो उम्मीद की गई है, उससे कहीं अधिक है (चार्ट 19)।

अक्टूबर 2016 के जीएफएसआर में, आईएमएफ ने पाया कि 2015 के अंत में, यूरो क्षेत्र के बैंक 2004-06 के दौरान के अपने औसत लाभ का आधा आय भी नहीं कर पा रहे थे। यूरो क्षेत्र के बैंकों की लाभप्रदता अत्यंत कम होने के बावजूद उसके द्वारा निजी गैर-वित्तीय क्षेत्र को प्रदत्त ऋण की वृद्धि में इजाफा हुआ जो ईसीबी द्वारा जून 2014 से किए गए उपायों की बदौलत हो पाया क्योंकि उन्होंने बैंकों को अधिक ऋण देने के लिए बढ़ावा दिया था। ईसीबी द्वारा किए गए उपायों में से एक उपाय था ऋणात्मक जमा दर लागू करना। यह वह जमाराशि सुविधा है, जिसके तहत बैंक अपने धन को ईसीबी के पास एक रात के लिए रखते हैं और बदले में ब्याज प्राप्त करते हैं, जिसे ऋणात्मक कर दिया गया ताकि ज्यादा उधार दिया जा सके (चार्ट 20)। यह नीति मुख्य पुनर्वित्तीयन

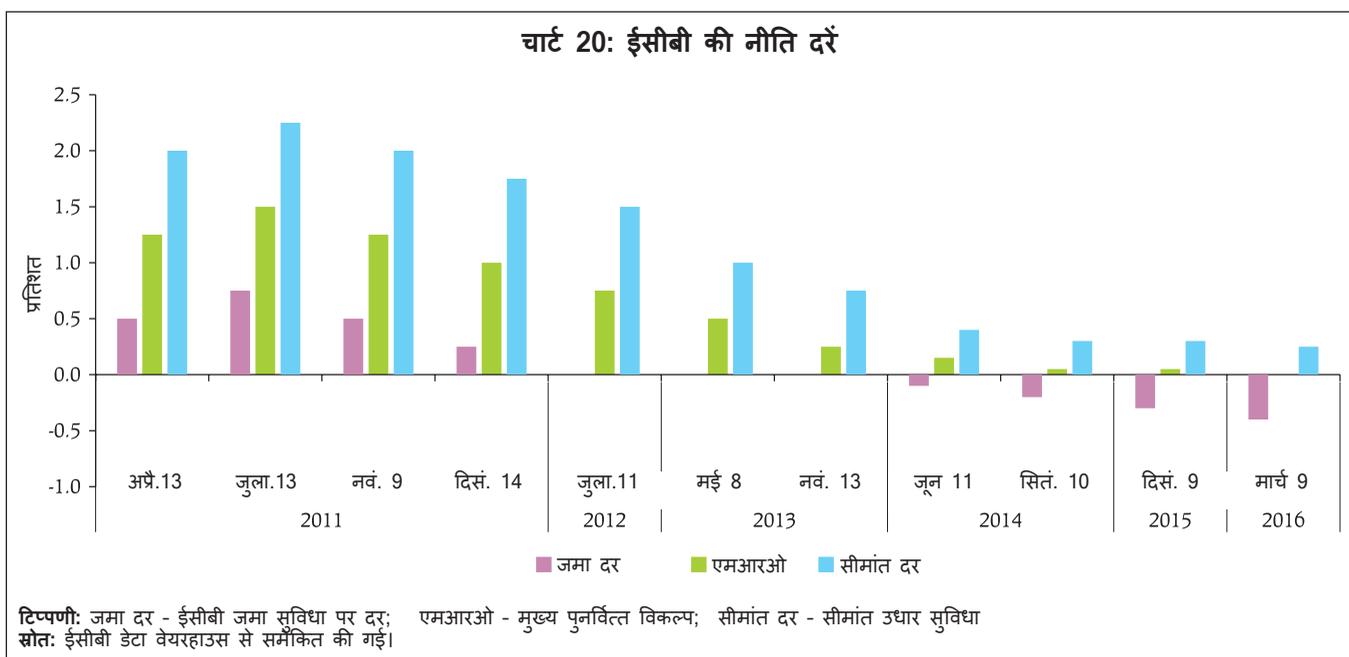


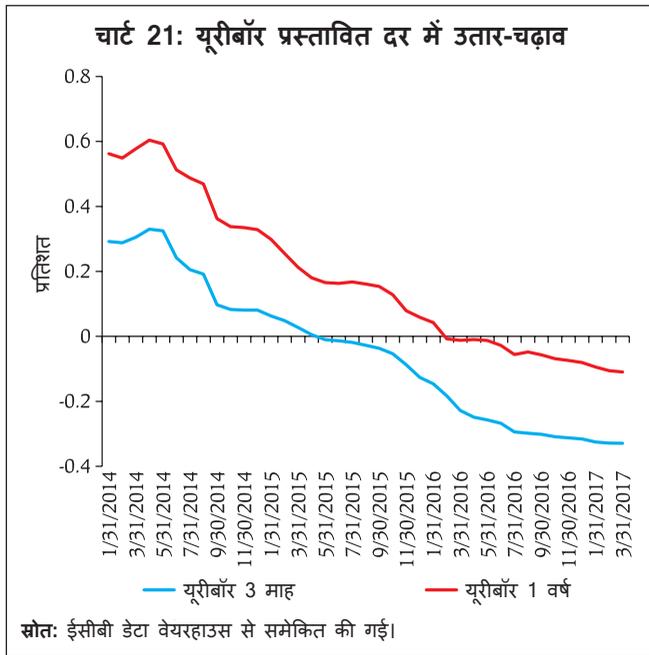
⁹ आंकड़े, ईसीबी/उद्यमों को वित्त की सुलभता/सर्वेक्षण विवरण एवं प्रणाली संबंधी सूचना से प्राप्त किए गए।



परिचालनों (वह ब्याज दर जिस पर बैंकिंग प्रणाली को थोक में नकदी उपलब्ध कराई जाती है) एवं सीमांत उधार सुविधा (वह ब्याज दर जिस पर बैंकों को एक रात के लिए ऋण प्रदान किया जाता है) पर लागू ब्याज दर में जारी कटौती की एक पूरक व्यवस्था है।

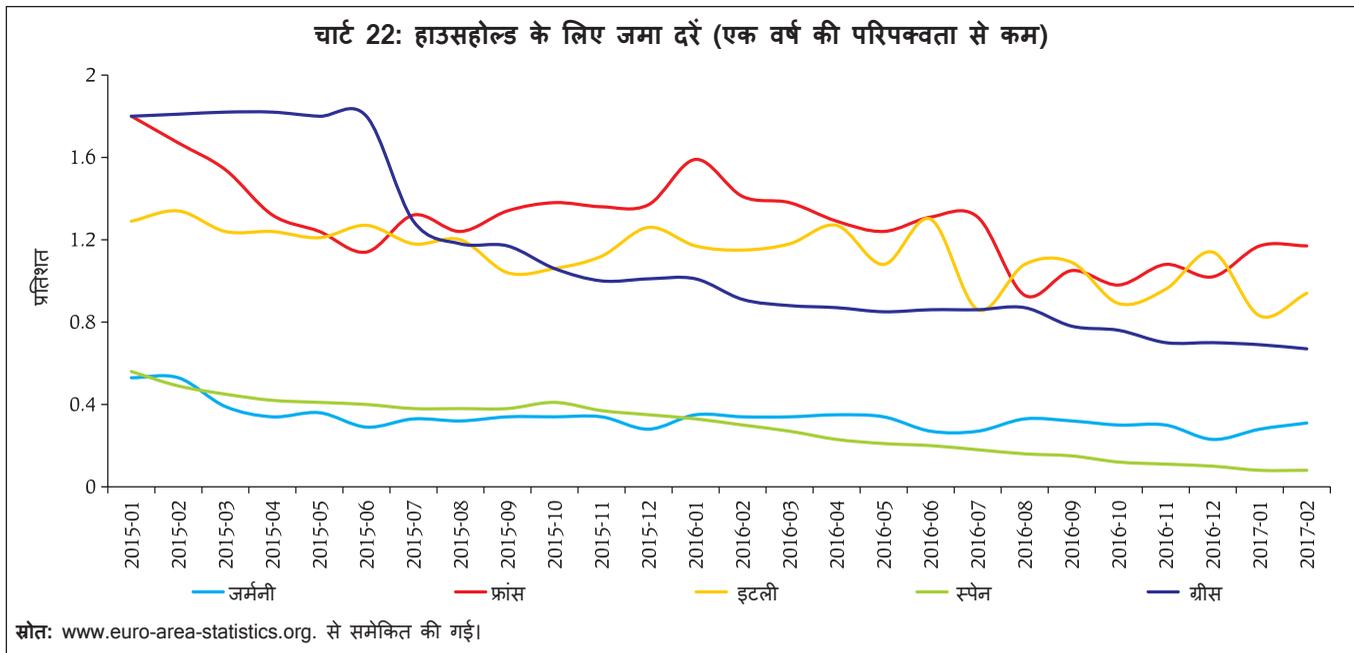
2014 तक, ईसीबी की जारी नीतियों के माध्यम से उपलब्ध कराई गई नकदी का उपयोग बैंकों ने गैर-वित्तीय क्षेत्र को निधि अंतरित करने के बजाय मुख्यतः अपने कर्ज को कम करने के लिए किया। इसलिए, ईसीबी ने सितंबर 2014 में ऋणात्मक दर लागू किया और साथ ही मात्रात्मक



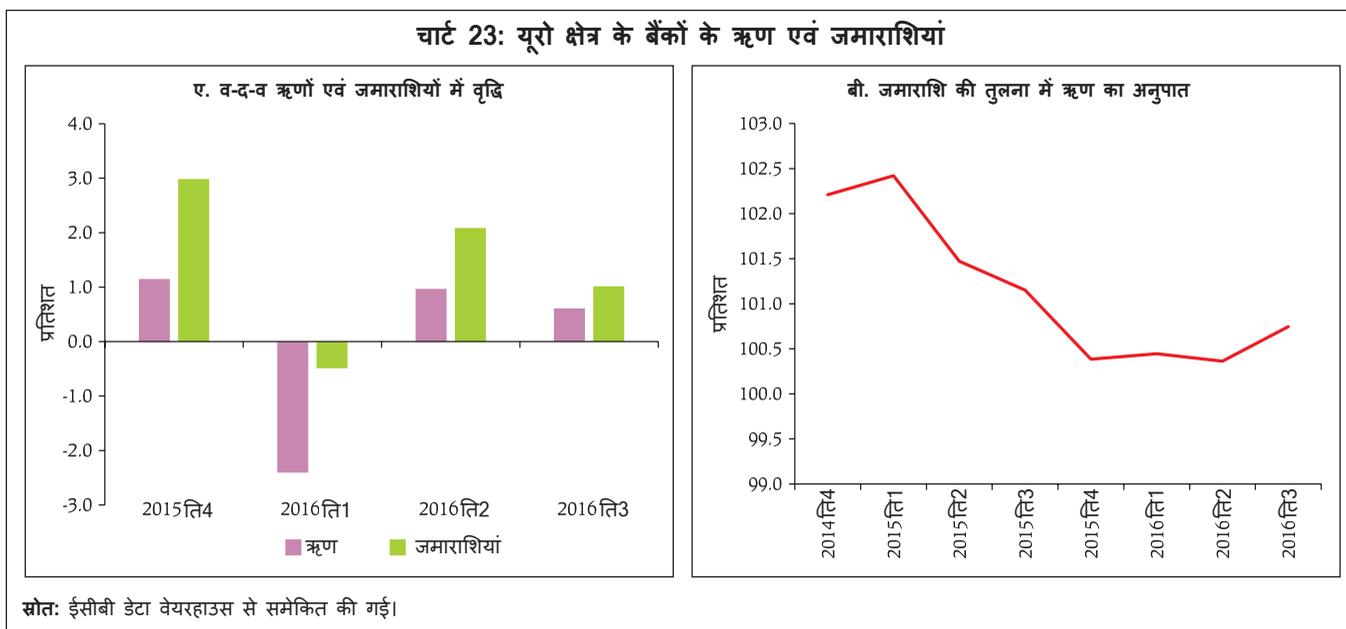


सुलभता फिर से आरंभ की। 2014 से यूरोबॉर (यूरो अंतर-बैंक प्रस्तावित दर) में लगातार गिरावट आई है जिसकी वजह

से 2015 से दरें ऋणात्मक होने लगीं (चार्ट 21)। इसकी बदौलत (क) अंतरबैंक बाजार में चलनिधि में आधिक्य पाया गया और (ख) यूरो क्षेत्र के सरकारों की ऋण पात्रता बेहतर हुई। जैसा कि पहले भी गौर किया गया, वित्तपोषण का पहलू देखें तो पता चलता है कि यूरो क्षेत्र के बैंकों ने गत वर्ष होलसेल फंडिंग के बजाय ऋण प्रतिभूतियां जारी कीं। इस बदलाव की बदौलत सदस्य देशों द्वारा जमाराशि जैसे स्थिर फंडिंग विकल्प अपनाए जाने लगे। चुनिंदा सदस्यों देशों¹⁰ में अल्पावधि जमा दरों में गिरावट से पता चलता है कि इन देशों में वित्तपोषण को लेकर बैंकों का तनाव हल्का हुआ है (चार्ट 22)। वास्तव में, यूरो क्षेत्र के सभी बैंकों का जमा की तुलना में ऋण का अनुपात 2015 की पहली तिमाही में 102.4 प्रतिशत था जो 2016 की तीसरी तिमाही में घटकर 100.7 प्रतिशत रह गया, क्योंकि यूरो क्षेत्र के बैंकों की कुल जमाओं में उस क्षेत्र के कुल ऋणों की अपेक्षा उच्च दर से वृद्धि हुई (चार्ट 23ए एवं 23बी)।



¹⁰ इटली के सिवाय सभी प्रमुख यूरो क्षेत्र के देशों में, कम से कम दिसंबर 2016 तक, जिस अवधि तक तुलन पत्र का आंकड़ा उपलब्ध है, यह रुझान पाया गया।



IV. विश्व के शीर्ष 100 बैंकों के कार्यनिष्पादन

शीर्ष 100 में स्थान बनाए रखने वाले बैंक

2015 और 2016 के बीच विश्व के शीर्ष बैंकों के रैंक (टिआर 1 पूंजी के अनुसार वैश्विक रैंक का निर्धारण) में कोई खास बदलाव नहीं पाया गया। रैंक के सहसंबंध गुणांक शीर्ष के 20 और शीर्ष के 50 बैंकों के क्रमशः 0.95 और 0.97 हैं।¹¹

उभरती अर्थव्यवस्थाओं की आस्ति के हिस्से में इजाफा

यद्यपि, एई और ईएमडीई से शीर्ष 100 में स्थान पाने वाले बैंकों की संख्या 2015 और 2016 में मोटे तौर पर समान रहीं, लेकिन ईएमडीई के बैंकों की आस्तियों का हिस्सा बढ़ा, जो सामान्यतः वैश्विक वित्तीय संकट के बाद पाया गया रुझान था (चार्ट 24)।

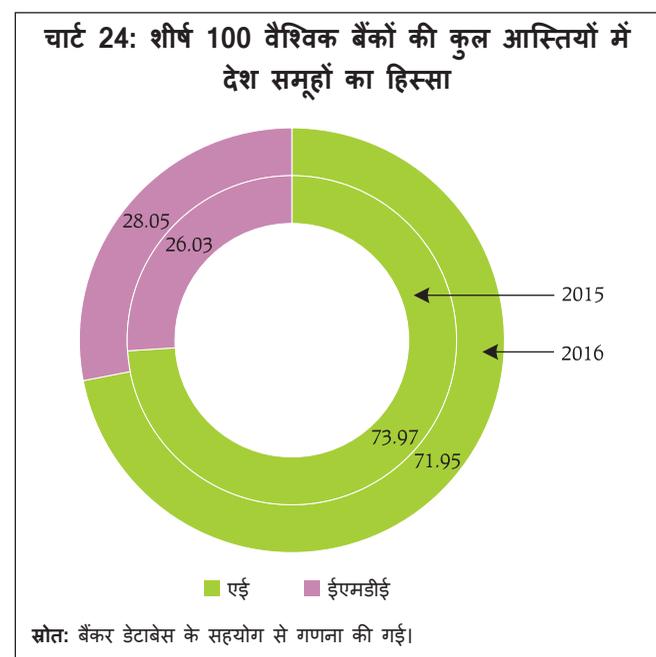
शीर्ष 100 बैंकों में, जापान और अमरीका को छोड़कर, व्यक्तिगत एई की आस्ति का हिस्सा 2015 और 2016 में घटा और फ्रांस, जर्मनी एवं यूके में यह गिरावट सुस्पष्ट थी।

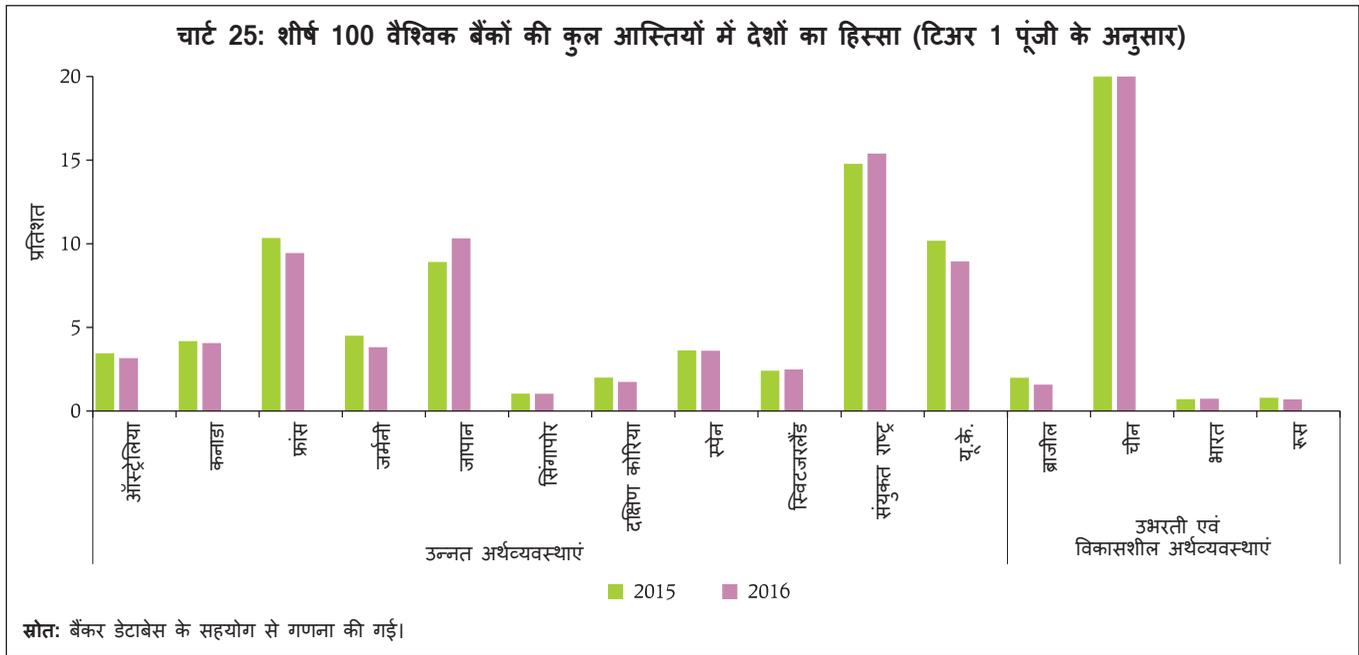
¹¹ यह बैंकर डेटाबेस के आधार पर की गई गणना है। गुणांकों का आकलन इस अनुमान के आधार पर किया गया था कि बैंकों के सैम्पल दो वर्षों के बीच समान थे। इस प्रकार फिर से रैंकिंग की गई, जिसके लिए इन वर्षों के बीच नए जोड़े गए/निकाले गए बैंकों को हटाया गया। चूंकि अधिकांश देश कैलेंडर वर्ष का पालन करता है, इसलिए इस डेटाबेस में किसी अमुक वर्ष के लिए डेटा सीरीज़ गत वर्ष के दिसंबर तक ही उपलब्ध हो पाया है।

इसके विपरीत, ईएमडीई का हिस्सा बढ़ा जो चीन की बदौलत हुआ (चार्ट 25)।

शीर्ष 100 बैंकों की लाभप्रदता में बढ़ता अंतर

शीर्ष 100 बैंकों की लाभप्रदता में बढ़ता अंतर दर्शाता है कि ऋणात्मक आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए) सूचित करने वाले बैंकों का हिस्सा 2015 के 2 प्रतिशत से बढ़कर 2016 में





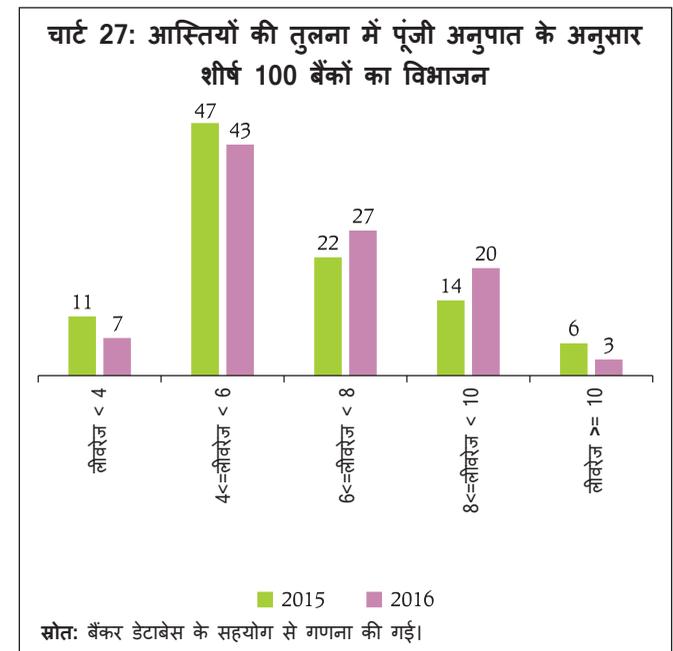
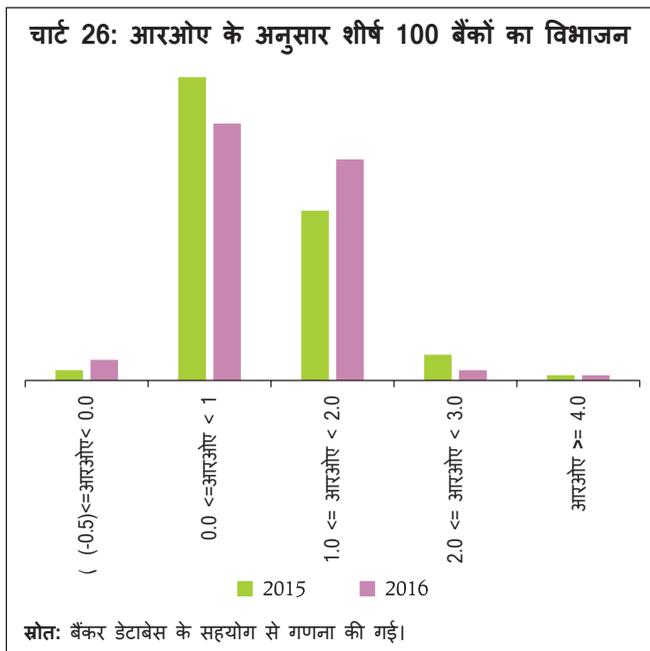
4 प्रतिशत तक पहुंच गया है और उच्चतर आरओए (0 और 2 प्रतिशत के बीच) सूचित करने वाले बैंकों का हिस्सा 92 प्रतिशत से बढ़कर 93 प्रतिशत हो गया है (चार्ट 26)।

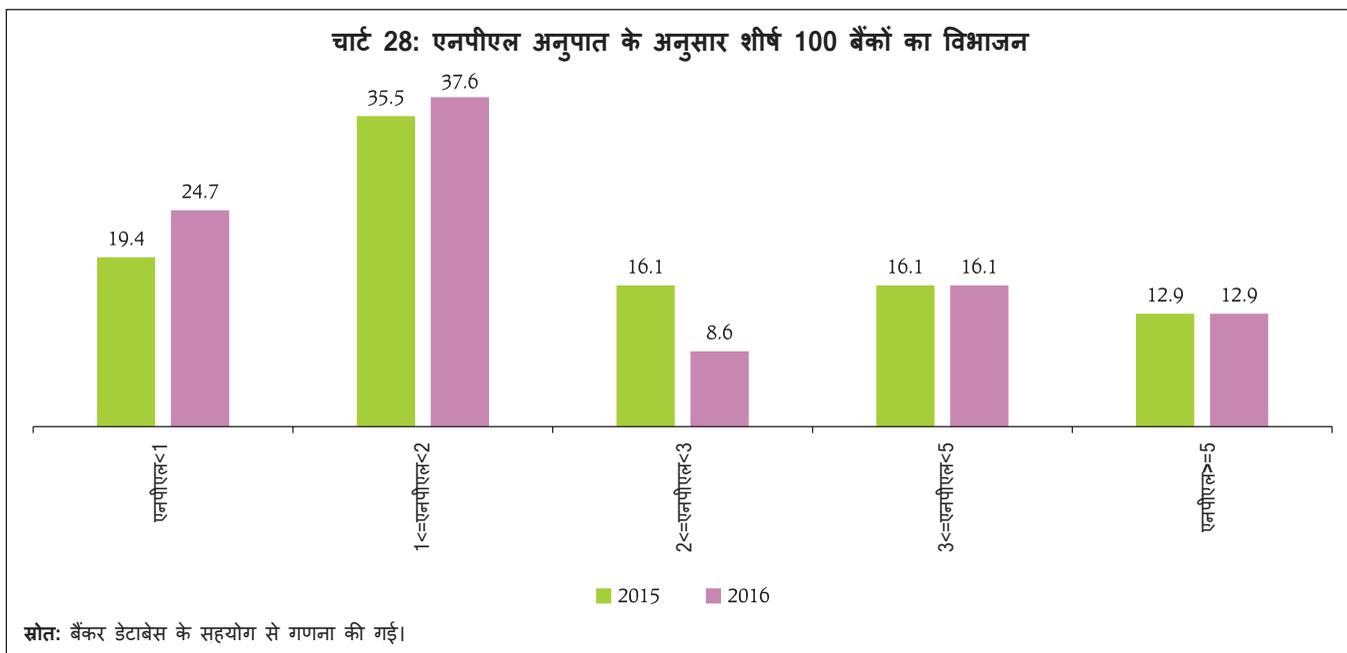
शीर्ष 100 बैंकों की वित्तीय सुदृढ़ता में सुधार

2015 और 2016 के बीच, आस्तियों की तुलना में पूंजी का अनुपात (निम्नतर वित्तीय लीवरेज) (6 से 10 प्रतिशत के

दायरे में), उच्च सूचित करने वाले बैंकों की संख्या में वृद्धि हुई जो 36 प्रतिशत से बढ़कर 47 प्रतिशत हो गई (चार्ट 27)।

दूसरा सकारात्मक बदलाव यह था कि शीर्ष 100 बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में कुल मिलाकर सुधार हुआ। पहला, उन बैंकों के हिस्सों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ जिनका अनर्जक उधार आकार वर्ग उच्चतर अर्थात् 3 प्रतिशत से अधिक के



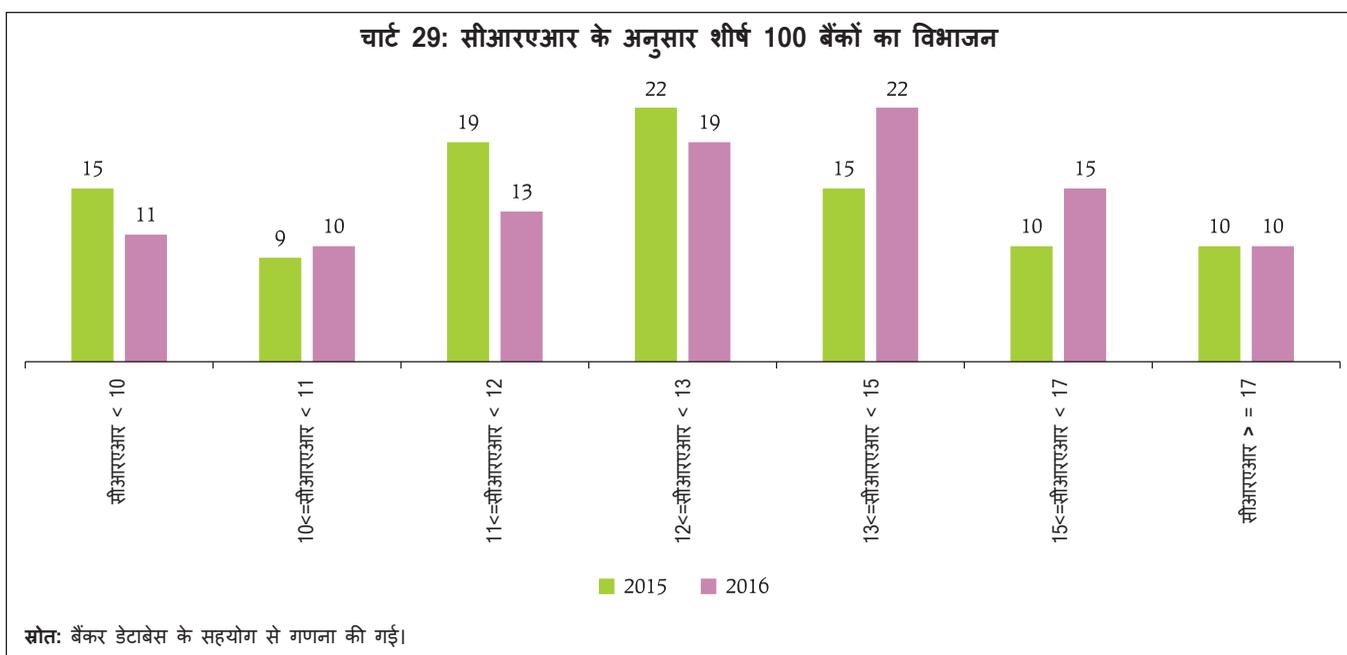


दायरे में था। दूसरा, उन बैंकों के हिस्सों में तेजी से गिरावट आई जिन्होंने 2-3 प्रतिशत के बीच अनर्जक उधार सूचित किया (चार्ट 28)।

तीसरा, यह भी देखा जा सकता है कि पूंजी पर्याप्तता स्थिति को सुदृढ़ करने पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। 13 से 17 प्रतिशत सीआरएआर वाले बैंकों का संकेंद्रण 25 प्रतिशत से बढ़कर 37 प्रतिशत हो गया (चार्ट 29)।

V. वैश्विक बैंकिंग नीति को दुरुस्त करना

विनियामक रिफॉर्म एवं विश्व स्तर पर सक्रिय बैंकों की निगरानी के लिए एक बेहतर सुसंगत ढांचा तैयार करने की बढ़ती मान्यता को महसूस किया गया। तदनुसार, 2016 में वैश्विक विनियामक मानकों का सुदृढ़ीकरण जारी रहा। बैंकिंग जगत ने जो बेहतर आघात सहनीयता दिखाया, वह बासेल III पूंजी पर्याप्तता मानदंडों के प्रभाव को दर्शाता है। हाल में,



उन नीतियों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है जो जनता के भरोसे को बढ़ावा दे और साथ ही बैंकों की सुरक्षा एवं दृढ़ता को कायम रखे। विश्व स्तर पर विनियामक रिफॉर्म को लागू करने की बदौलत प्रमुख बैंकों की पूंजी एवं चलनिधि बफर में वृद्धि हुई है।

बैंकों द्वारा नए कारोबार की वास्तविकताओं और नए विनियामक मानकों को अपनाए जाने के जरिए अशोध्य ऋणों को कम करने एवं तुलन पत्र को मजबूत करने के जो प्रयास किए गए, वे निम्न वृद्धि एवं निम्न ब्याज दरों के युग की अनिवार्यता को दर्शाते हैं। बढ़ती अनिश्चितताओं के इस दौर में नीति निर्माताओं की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है, क्योंकि विनियामक रिफॉर्म एजेंडा जो पूरा किया जाना है।

हाल में, विश्व स्तर पर विनियामक मानकों में जो बड़े बदलाव हुए हैं, उनमें शामिल हैं :

कुल हानि-अवशोषण क्षमता पूंजी मानक

बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति (बीसीबीएस) द्वारा अक्टूबर 2016 में जो अंतिम मानक जारी किया गया था, वह विश्व स्तर पर प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंक (जी-एसआईबी) एवं गैर-एसआईबी, दोनों पर लागू होता है और साथ ही उसका लक्ष्य है वित्तीय प्रणाली में संक्रामकता के जोखिम को कम करना। मानक का एक महत्वपूर्ण तत्व है कि बैंकों को अपने टिआर 2 पूंजी से एक न्यूनतम सीमा तक कुल हानि-अवशोषण क्षमता (टीएलएसी) पूंजी अवश्य घटा लेनी चाहिए जो विनियामक पूंजी के रूप में अन्यथा योग्य न हो।

बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम के लिए मानक (आईआरआरबीबी)

बीसीबीएस द्वारा अप्रैल 2016 में ब्याज दर जोखिम के प्रबंधन और पर्यवेक्षण संबंधी 2004 के सिद्धान्तों में संशोधन करते हुए नए मानक जारी किए गए थे। ये मानक बैंकों द्वारा आईआरआरबीबी की पहचान, माप, निगरानी और नियंत्रण के साथ-साथ उसके पर्यवेक्षण के लिए पर्यवेक्षी प्रत्याशाएं निर्धारित करते हैं। 2004 के मानकों में, अन्य चीजों के साथ-साथ की गई वृद्धि में बैंक की आईआरआरबीबी प्रबंधन प्रक्रिया को लेकर प्रत्याशा, बेहतर प्रकटीकरण आवश्यकताएं, अपडेटेड मानकीकृत ढांचा एवं बहिर्वासी बैंकों का पता लगाने के लिए स्पष्ट न्यूनतम सीमा, जिसे बैंक की कुल पूंजी के 20 प्रतिशत से

घटाकर बैंक की टिआर 1 पूंजी का 15 प्रतिशत कर दिया गया है, के संबंध में अधिक व्यापक मार्गदर्शन शामिल हैं। मानकों को 2018 तक लागू करने की उम्मीद की जा रही है।

लेखांकन प्रावधानों का विनियामक बर्ताव

बीसीबीएस द्वारा अक्टूबर 2016 में लेखांकन प्रावधानों के विनियामक बर्ताव से जुड़े नीति संबंधी मामलों पर सलाहकार दस्तावेज और साथ ही चर्चा पत्र जारी किए गए थे। नए लेखांकन मानक बनाते समय प्रावधानीकरण मानकों में संशोधन किया गया है ताकि ऋण हानि के आकलन में आधुनिक विचारों से ओत-प्रोत मूल्यांकनों को शामिल किया जा सके। सलाहकार दस्तावेज में मानकीकृत एवं आंतरिक रेटिंग-आधारित दृष्टिकोणों के अंतर्गत प्रावधानों के वर्तमान विनियामक बर्ताव को अल्प काल के लिए बरकरार रखने का समिति के प्रस्ताव का उल्लेख किया गया है। इसमें ऋण हानि के संबंध में प्रत्याशित नए मानकों के अंतर्गत प्रावधानों के दीर्घकालिक विनियामक बर्ताव के लिए नीतिगत विकल्प शामिल हैं।

प्रतिभूतिकरण ढांचे में संशोधन

बीसीबीएस ने जुलाई 2016 में प्रतिभूतिकरण एकसपोजर के विनियामक पूंजी बर्ताव के लिए अपडेटेड मानक प्रकाशित किया ताकि प्रतिभूतिकरण संबंधी 2014 के पूंजी मानकों में संशोधन करते हुए "सरल, पारदर्शी एवं तुलनीय" (एसटीसी) प्रतिभूतिकरणों के लिए विनियामक पूंजी बर्ताव को शामिल किया जा सके। एसटीसी प्रतिभूतिकरणों के लिए पूंजी बर्ताव को बासेल समिति एवं अंतरराष्ट्रीय प्रतिभूति आयोग संगठन द्वारा प्रकाशित 2015 के एसटीसी मानदंड की तर्ज पर तैयार किया गया है। इसमें अतिरिक्त मानदंड निर्धारित किया गया है जो एसटीसी प्रतिभूतिकरणों के पूंजी बर्ताव को अन्य प्रतिभूतिकरण लेनदेनों से अलग करता है। यह उम्मीद की जाती है कि मानक एक बार कारगर (अर्थात्, जनवरी 2018 में) हो जाने से अधिक आघात सहनीय बैंकिंग क्षेत्र का निर्माण हो सकेगा।

विभिन्न विनियामक रिफॉर्म के कार्यान्वयन में शामिल मुख्य उपलब्धियां इस प्रकार हैं :

रिफॉर्म हेतु जी20 एजेंडा का कार्यान्वयन

वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) ने रिफॉर्म के कार्यान्वयन एवं प्रभाव के विषय में जी20 को प्रस्तुत अपनी दूसरी वार्षिक

रिपोर्ट में रिफॉर्म कार्यक्रम के चार मूल तत्वों पर प्रकाश डाला, जिसमें शामिल हैं : (i) वित्तीय संस्थाओं की आघात सहनीयता को बढ़ाना; (ii) टू-बिग-टू-फैल धारणा को खत्म करना; (iii) डेरिवेटिव बाजारों को महफूज़ रखना; और (iv) शैडो बैंकिंग को आघात सहनीय बाजार-आधारित वित्त में बदलना। जहां तक रिफॉर्म के कार्यान्वयन की प्रगति का संबंध है, यह स्थिर रही है लेकिन मूल क्षेत्रों में समान नहीं है।

बासेल III को अपनाना

आम तौर पर, बासेल III पूंजी और चलनिधि मानकों का कार्यान्वयन समय पर होता रहा है और तत्संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बैंकों पर नज़र रखी गई थी। फिर भी, कई प्रमुख एई, बासेल ढांचे से उनके नियमों में हुए भूल का समाधान नहीं कर सके। सभी 24 एफएसबी क्षेत्राधिकारों में बासेल III के जोखिम-आधारित पूंजी और चलनिधि विनियमों के मूल तत्व हैं। जी-एसआईबी के लिए हानि के अधिकाधिक अवशोषण आवश्यकताओं के संबंध में अंतिम नियम सभी क्षेत्राधिकारों में लागू हैं।

जी-एसआईबीएस

जी-एसआईबी के मामले में, हानि के अधिकाधिक अवशोषण के कार्यान्वयन एवं अधिक गहन पर्यवेक्षण पर बराबर नज़र रखी जा रही है। वर्ष 2016 में, एफएसबी द्वारा जी-एसआईबी की सूची प्रकाशित की गई और 30 संस्थाएं निर्धारित की गईं। 2016 के दौरान, चार बैंकों ने उच्चतर बकेट में और तीन बैंकों ने निम्नतर बकेट में स्थान पाया।

VI. निष्कर्ष और भावी दृष्टिकोण

इस आलेख में किए गए विश्लेषण के आधार पर चार व्यापक टिप्पणियां की जा सकती हैं। पहला, बैंक ऋण वृद्धि, जो विश्व स्तर पर बैंकिंग प्रणाली की आस्तियों के विस्तार के लिए महत्वपूर्ण है और इस संबंध में एई और ईएमडीई के बीच काफी अंतर पाया गया है, जिसमें एई की वृद्धि के मामले में आघात सहनीय स्वरूप देखने को मिलता है। अमरीका सहित अधिकांश एई में, खुदरा क्षेत्र ही एक ऐसा क्षेत्र है जिसने आघात

सहनीयता दिखाई। ऐसे क्षेत्र, जो ऋण के लिए बैंक वित्त पर भारी मात्रा में निर्भर करते हैं और रोजगार एवं वृद्धि की बहाली के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जैसे एसएमई, उनकी संभावना भी मौटे तौर पर सकारात्मक रही। फिर भी, आर्थिक दृष्टि से तंग एई, नामतः, स्पेन, पुर्तगाल और इटली में ऋण वृद्धि में गिरावट चिंता का विषय बना रहा। इसके ठीक विपरीत, अधिकांश ईएमडीई में ऋण वृद्धि में गिरावट आ रही थी या ऋणात्मक भी हो रही थी जो आस्ति की गुणवत्ता को लेकर लगातार चिंता जताने की वजह से हुआ। दिलचस्प बात यह है कि, ईएमडीई की ऋण वृद्धि में गिरावट के होते हुए भी, इन अर्थव्यवस्थाओं के बैंकों की विश्व स्तर पर बैंकिंग आस्तियों में हिस्सेदारी बढ़ी।

ईएमडीई की आस्ति गुणवत्ता, जो दूसरा चिंताजनक विषय है, खराब रही। स्पेन, पुर्तगाल एवं इटली के सिवाय अधिकांश एई की आस्ति गुणवत्ता में स्पष्ट सुधार आया। तीसरा, अधिकांश एई की लाभप्रदता, जिसका ऋण वृद्धि एवं आस्ति गुणवत्ता से गहरा संबंध है, मामूली सुधार आया जैसा आरओए में वृद्धि से पता चलता है। तथापि, इन सभी अर्थव्यवस्थाओं में आरओए 1 प्रतिशत से कम रहा। इसके विपरीत, अधिकांश ईएमडीई में बैंकिंग प्रणालियों की लाभप्रदता में गिरावट साफ दिखाई देती है। चौथा, फिर भी, जहां तक पूंजी पर्याप्तता स्तरों में सुधार का संबंध है, एई एवं ईएमडीई, दोनों, में समान रुझान पाया गया।

विश्व स्तर पर, नीति निर्माता अपनी बैंकिंग प्रणालियों के विनियामक ढांचे को मजबूत करने की प्रक्रिया में लगे हुए हैं। इनमें से कुछ नीतियों के तत्काल परिणाम मिले हैं और बाकी का बाद में आ सकता है। उम्मीद की जाती है कि ये सभी मिलकर विश्व स्तर पर बैंकिंग प्रणाली को अधिक मजबूत और आघात सहनीय बनाएंगे।

फिर भी, सुदृढ़ता बढ़ाने के लिए किए गए सकारात्मक प्रयासों के बावजूद, विश्व स्तर पर बैंकिंग प्रणाली को कई जोखिमों और चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ये जोखिम न केवल बैंकिंग प्रणाली के भीतर से बल्कि आम तौर पर वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिति, और खास तौर पर

हाउसहोल्ड की आर्थिक नीतियों एवं रुझानों तथा कॉर्पोरेट लीवरेज से भी उत्पन्न हुआ। इसके अतिरिक्त, इन जोखिमों का एई और ईएमडीई में भिन्न-भिन्न रूप से प्रभाव पड़ता है। एई के भीतर भी, इन जोखिमों का यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं पर भिन्न रूप से प्रभाव पड़ा जो सरकारी ऋण संकट से पीड़ित थे।

वर्तमान समय में, यह देखते हुए कि विश्व स्तर पर बैंकिंग प्रणाली की संभावना पर जोखिमों का भारी बोझ जारी रहने वाला है, इसलिए यह जरूरी है कि एई और ईएमडीई, दोनों, विश्व स्तर पर बैंकिंग प्रणाली के सुदृढ़ीकरण और बहाली के लिए अलग और संयुक्त रूप से कार्य करना जारी रखें। इन प्रयासों का विशेष रूप से कतिपय एई द्वारा संभावित विनियामक रोलबैक को लेकर बढ़ती चिंता के आलोक में महत्व है। बैंकों की समष्टि-विवेकपूर्ण निगरानी को सशक्त करते हुए बैंकिंग विनियामक रिफॉर्म का सतत रूप से कार्यान्वयन करने के लिए अधिक प्रतिबद्धता होनी चाहिए। तथापि, इस बदलाव की उचित रूप से जांच करने की जरूरत है ताकि विश्व स्तर

पर अर्थव्यवस्था पर बुरा असर न पड़े, विशेष रूप से तब से जब से वैश्विक वृद्धि कमजोर रही। इसके साथ ही, बैंकों की समष्टि-विवेकपूर्ण ढांचे में परिवर्तनों के बाद, विनियामक मध्यस्थता जिसकी वजह से जोखिम शैडो बैंकिंग क्षेत्र पर मंडराने लगता है, पर भी ध्यानपूर्वक नज़र रखने की जरूरत है।

आगे, वैश्विक बैंकिंग प्रणाली की भावी राह कैसी होगी, इस बात का निर्णय नीतिगत रिफॉर्म के साथ-साथ वैश्विक आर्थिक संभावना करेगी। साथ ही, विश्व स्तर पर विभिन्न दूसरी महत्वपूर्ण घटनाएं वैश्विक बैंकिंग संभावना को आकार प्रदान करेगी, जिसमें ब्रेक्सिट को अमल करना एवं वित्तीय सेवा उद्योग से जुड़े संगत दिशानिर्देश, अपारंपरिक मौद्रिक नीति से अमरीका की वापसी की गति और समय, पेरिफरल यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं में राजकोषीय तनाव का कुशल समाधान तथा चीन और भारत सहित अधिकांश ईएमडीई में कॉर्पोरेट डीलीवरेजिंग भी शामिल हैं।

वर्तमान सांख्यिकी

चुनिंदा आर्थिक संकेतक
भारतीय रिज़र्व बैंक
मुद्रा और बैंकिंग
मूल्य और उत्पादन
सरकारी खाते और खजाना बिल
वित्तीय बाजार
बाह्य क्षेत्र
भुगतान और निपटान प्रणालियाँ
प्रासंगिक श्रृंखला

विषयवस्तु

संख्या	शीर्षक	पृष्ठ
1	चुनिंदा आर्थिक संकेतक भारतीय रिज़र्व बैंक	83
2	भारतीय रिज़र्व बैंक - देयताएं और आस्तियां	84
3	भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा चलनिधि परिचालन	85
4	भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा अमरीकी डालर का क्रय/विक्रय	86
4ए	भारतीय रिज़र्व बैंक में बकाया वायदे का (अवशिष्ट परिपक्वता के अनुसार) परिपक्वता विश्लेषण (मिलियन अमरीकी डॉलर)	87
5	भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थायी सुविधाएं मुद्रा और बैंकिंग	87
6	मुद्रा स्टॉक मात्रा	88
7	मुद्रा स्टॉक (एम ₃) के स्रोत	89
8	मौद्रिक सर्वेक्षण	90
9	चलनिधि समुच्चय	90
10	भारतीय रिज़र्व बैंक सर्वेक्षण	91
11	आरक्षित मुद्रा - घटक और स्रोत	91
12	वाणिज्य बैंक सर्वेक्षण	92
13	अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के निवेश	92
14	भारत में कारोबार - सभी अनुसूचित बैंक और सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंक	93
15	प्रमुख क्षेत्रों द्वारा सकल बैंक ऋण का अभिनियोजन	94
16	सकल बैंक ऋण का उद्योग-वार अभिनियोजन	95
17	भारतीय रिज़र्व बैंक में खाते रखने वाले राज्य सहकारी बैंक मूल्य और उत्पादन	96
18	उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (आधार: 2012=100)	97
19	अन्य उपभोक्ता मूल्य सूचकांक	97
20	मुंबई में सोने और चांदी का मासिक औसत मूल्य	97
21	थोक मूल्य सूचकांक	98
22	औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आधार: 2011-12=100) सरकारी खाते और खज़ाना बिल	101
23	केन्द्र सरकार के खाते - एक नज़र में	101
24	खज़ाना बिल - स्वामित्व का स्वरूप	102
25	खज़ाना बिलों की नीलामी वित्तीय बाजार	102
26	दैनिक मांग मुद्रा दरें	103
27	जमाराशि प्रमाण-पत्र	104
28	वाणिज्यिक पत्र	104
29	चुनिंदा वित्तीय बाजारों में औसत दैनिक टर्नओवर	104
30	गैर-सरकारी पब्लिक लिमिटेड कंपनियों के नए पूंजी निर्गम	105

संख्या	शीर्षक	पृष्ठ
	बाह्य क्षेत्र	
31	विदेशी व्यापार	106
32	विदेशी मुद्रा भंडार	106
33	अनिवासी भारतीयों की जमाराशियां	106
34	विदेशी निवेश अंतर्वाह	107
35	निवासी भारतीयों के लिए उदारीकृत विप्रेषण योजना के अंतर्गत जावक विप्रेषण	107
36	भारतीय रुपये का वास्तविक प्रभावी विनिमय दर सूचकांक और सांकेतिक प्रभावी विनिमय दर सूचकांक	108
37	बाह्य वाणिज्यिक उधार	108
38	भारत का समग्र भुगतान संतुलन (मिलियन अमरीकी डॉलर)	109
39	भारत का समग्र भुगतान संतुलन (बिलियन ₹)	110
40	बीपीएम 6 के अनुसार भारत में भुगतान संतुलन का मानक प्रस्तुतीकरण (मिलियन अमरीकी डॉलर)	111
41	बीपीएम 6 के अनुसार भारत में भुगतान संतुलन का मानक प्रस्तुतीकरण (बिलियन ₹)	112
42	अंतरराष्ट्रीय निवेश स्थिति	113
	भुगतान और निपटान प्रणालियाँ	
43	भुगतान प्रणाली संकेतक	114
	प्रासंगिक शृंखला	
44	लघु बचत	115
45	केंद्र और राज्य सरकारों की प्रतिभूतियों के स्वामित्व का स्वरूप	116
46	केन्द्र और राज्य सरकारों की संयुक्त प्राप्तियां और संवितरण	

टिप्पणियां : .. = उपलब्ध नहीं।
 - = शून्य/नगण्य
 प्रा/अ = प्रारंभिक/अनंतिम आसं = आंशिक रूप से संशोधित

सं. 1 : चुनिंदा आर्थिक संकेतक

मद	2016-17	2015-16		2016-17	
		ति3	ति4	ति3	ति4
	1	2	3	4	5
1 वस्तु क्षेत्र (% परिवर्तन)					
1.1 आधार मूल्यों पर जीवीए	6.6	7.3	8.7	6.7	5.6
1.1.1 कृषि	4.9	-2.1	1.5	6.9	5.2
1.1.2 उद्योग	7.0	12.0	11.9	7.2	5.5
1.1.3 सेवाएं	6.7	9.0	9.4	6.4	5.7
1.1क अंतिम खपत व्यय	10.5	5.8	10.6	12.5	10.2
1.1ख सकल नियत पूंजी निर्माण	2.4	7.0	3.9	1.7	-2.1
	2016-17	2016		2017	
		मार्च	अप्रै.	मार्च	अप्रै.
	1	2	3	4	5
1.2 औद्योगिक उत्पादन सूचकांक	5.0	5.5	6.5	2.7	-
2 मुद्रा और बैंकिंग (% परिवर्तन)					
2.1 अनुसूचित वाणिज्य बैंक					
2.1.1 जमा राशियां	11.3	9.3	8.7	11.3	11.5
2.1.2 ऋण	4.6	10.9	8.7	4.6	5.2
2.1.2.1 गैर-खाद्यान्न ऋण	5.3	10.9	8.9	5.3	6.0
2.1.3 सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश	17.4	5.4	4.6	17.4	18.7
2.2 मुद्रा स्टॉक मात्रा					
2.2.1 आरक्षित मुद्रा (एम0)	-12.9	13.1	14.4	-12.9	-10.6
2.2.2 स्थूल मुद्रा (एम3)	10.6	10.1	10.8	10.6	7.1
3 अनुपात (%)					
3.1 आरक्षित नकदी निधि अनुपात	4.00	4.00	4.00	4.00	4.00
3.2 सांविधिक चलनिधि अनुपात	20.50	21.50	21.25	20.50	20.50
3.3 नकदी-जमा अनुपात	4.8	4.8	4.8	4.8	4.9
3.4 ऋण-जमा अनुपात	72.9	77.7	75.9	72.9	71.7
3.5 वृद्धिशील ऋण-जमा अनुपात	41.8	89.8	-8.7	41.8	164.9
3.6 निवेश-जमा अनुपात	28.2	28.1	28.3	28.2	30.1
3.7 वृद्धिशील निवेश-जमा अनुपात	28.3	16.9	33.9	28.3	-114.4
4 व्याज दरें (%)					
4.1 नीति रिपो दर	6.25	6.75	6.50	6.25	6.25
4.2 रिवर्स रिपो दर	5.75	5.75	6.00	5.75	6.00
4.3 सीमांत स्थायी सुविधा दर	6.75	7.75	7.00	6.75	6.50
4.4 बैंक दर	6.75	7.75	7.00	6.75	6.50
4.5 आधार दर	9.25/9.60	9.30/9.70	9.30/9.70	9.25/9.60	9.10/9.60
4.6 एमसीएलआर	7.75/8.20	-	8.90/9.15	7.8/8.2	7.8/8.2
4.7 एक वर्ष से अधिक की मीयादी जमा दर	6.50/7.00	7.0/7.9	7.0/8.0	6.5/7.0	6.5/7.0
4.8 बचत जमा दर	4.00	4.00	4.00	4.00	4.00
4.9 मांग मुद्रा दर (भारित औसत)	5.97	6.91	6.49	5.97	6.00
4.10 91-दिवसीय खजाना बिल (प्राथमिक) आय	5.82	7.27	6.81	5.82	6.19
4.11 182-दिवसीय खजाना बिल (प्राथमिक) आय	6.05	7.17	6.91	6.05	6.31
4.12 364-दिवसीय खजाना बिल (प्राथमिक) आय	6.14	7.11	6.91	6.14	6.45
4.13 10-वर्षीय सरकारी प्रतिभूतियों पर आय	7.08	7.34	7.44	7.08	7.20
5 आरबीआई संदर्भ दर और फारवर्ड प्रीमिया					
5.1 भा.रु.-अमरीकी डालर हाजिर दर (₹ प्रति विदेशी मुद्रा)	64.84	66.86	66.52	64.84	64.22
5.2 भा.रु.-यूरो हाजिर दर (₹ प्रति विदेशी मुद्रा)	69.25	74.91	75.73	69.25	69.88
5.3 फारवर्ड प्रीमिआ अमरीकी डालर 1-माह (%)	5.09	9.69	7.22	5.09	5.61
3-माह (%)	4.97	7.69	6.80	4.97	5.23
6-माह (%)	4.90	7.13	6.57	4.90	5.15
6 मुद्रास्फीति (%)					
6.1 अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक	3.8	4.8	5.5	3.8	3.0
6.2 औद्योगिक कामगारों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक	4.1	5.5	5.9	2.6	2.2
6.3 थोक मूल्य सूचकांक	1.7	-2.0	-1.1	5.3	3.9
6.3.1 प्राथमिक वस्तुएं	3.5	2.4	3.8	4.0	1.8
6.3.2 ईंधन और पावर	-0.1	-16.8	-14.2	23.7	18.5
6.3.3 विनिर्मित उत्पाद	1.3	-1.1	-0.8	3.0	2.7
7 विदेशी व्यापार (% परिवर्तन)					
7.1 आयात	-0.2	-22.9	-23.0	45.3	46.8
7.2 निर्यात	4.7	-4.7	-5.6	27.2	17.9

भारतीय रिज़र्व बैंक

सं. 2 : भारतीय रिज़र्व बैंक - देयताएं और आस्तियां*

(बिलियन ₹)

मद	अंतिम शुक्रवार/शुक्रवार की स्थिति						
	2016-17	2016	2017				
		मई	अप्रै. 28	मई 5	मई 12	मई 19	मई 26
	1	2	3	4	5	6	7
1 निर्गम विभाग							
1.1 देयताएं							
1.1.1 संचलन में नोट	13,101.81	17,110.79	14,069.52	14,304.35	14,491.75	14,568.41	14,627.57
1.1.2 बैंकिंग विभाग में रखे गए नोट	0.12	0.14	0.16	0.17	0.19	0.19	0.18
1.1/1.2 कुल देयताएं (जारी किए गए कुल नोट) या आस्तियां	13,101.93	17,110.94	14,069.68	14,304.52	14,491.94	14,568.60	14,627.75
1.2 आस्तियां							
1.2.1 सोने के सिक्के और बुलियन	675.08	698.63	675.08	687.79	687.79	687.79	687.79
1.2.2 विदेशी प्रतिभूतियां	12,422.35	16,399.40	13,386.86	13,609.20	13,796.80	13,873.68	13,933.04
1.2.3 रुपया सिक्का	4.50	2.44	7.74	7.53	7.35	7.14	6.93
1.2.4 भारत सरकार की रुपया प्रतिभूतियां	—	10.46	—	—	—	—	—
2 बैंकिंग विभाग							
2.1 देयताएं							
2.1.1 जमाराशियां	10,389.43	4,996.03	9,426.27	9,675.84	9,128.75	9,409.58	9,312.46
2.1.1.1 केंद्र सरकार	50.00	1.00	1.00	1.00	1.01	1.01	1.00
2.1.1.2 बाजार स्थिरीकरण योजना	—	—	473.06	709.81	946.73	946.73	946.73
2.1.1.3 राज्य सरकारें	0.42	0.42	0.42	0.42	0.42	0.42	0.42
2.1.1.4 अनुसूचित वाणिज्य बैंक	5,087.73	3,839.48	4,482.13	4,434.02	4,319.86	4,519.35	4,329.50
2.1.1.5 अनुसूचित राज्य सहकारी बैंक	55.13	33.73	40.82	38.47	38.42	38.36	38.26
2.1.1.6 गैर-अनुसूचित राज्य सहकारी बैंक	18.92	14.37	17.18	15.71	17.28	16.33	16.91
2.1.1.7 अन्य बैंक	279.49	209.61	253.46	252.03	250.92	250.47	253.53
2.1.1.8 अन्य	4,897.74	897.40	4,158.20	4,224.38	3,554.11	3,636.91	3,726.10
2.1.2 अन्य देयताएं	8,411.18	9,957.08	8,326.55	8,351.48	8,338.38	8,723.98	8,565.84
2.1/2.2 कुल देयताएं या आस्तियां	18,800.61	14,953.10	17,752.83	18,027.33	17,467.13	18,133.55	17,878.30
2.2 आस्तियां							
2.2.1 नोट और सिक्के	0.12	0.14	0.16	0.17	0.19	0.19	0.18
2.2.2 विदेश में रखे शेष	10,263.49	6,340.45	9,259.47	9,228.10	9,011.26	9,437.02	9,200.77
2.2.3 ऋण और अग्रिम							
2.2.3.1 केन्द्र सरकार	—	—	157.41	510.82	139.18	349.88	348.55
2.2.3.2 राज्य सरकारें	12.62	5.56	8.25	0.63	5.22	16.39	10.16
2.2.3.3 अनुसूचित वाणिज्य बैंक	218.10	957.40	18.25	15.20	32.35	34.50	22.85
2.2.3.4 अनुसूचित राज्य सहकारी बैंक	—	—	—	—	0.35	0.35	0.35
2.2.3.5 भारतीय औद्योगिक विकास बैंक	—	—	—	—	—	—	—
2.2.3.6 नाबाई	—	—	—	—	—	—	—
2.2.3.7 एक्जिम बैंक	—	—	—	—	—	—	—
2.2.3.8 अन्य	39.91	52.81	20.73	20.98	23.48	38.05	33.41
2.2.4 खरीदे और भुनाए गए बिल							
2.2.4.1 आंतरिक	—	—	—	—	—	—	—
2.2.4.2 सरकारी खज़ाना बिल	—	—	—	—	—	—	—
2.2.5 निवेश	7,528.11	6,761.01	7,530.60	7,480.74	7,481.40	7,482.07	7,482.73
2.2.6 अन्य आस्तियां	738.26	835.72	757.97	770.69	773.69	775.10	779.30
2.2.6.1 सोना	613.19	634.58	613.19	624.73	624.73	624.73	624.73

* डाटा अनंतिम है।

सं. 3 : भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा चलनिधि परिचालन

(बिलियन ₹)

दिनांक	चलनिधि समायोजन सुविधा				एमएसएफ	स्थायी चलनिधि सुविधाएं	बाज़ार स्थिरीकरण योजना	ओएमओ (एकमुश्त)		निवल अंतर्वेशन (+)/ अवशोषण (-) (1+3+5+6+9-2-4-7-8)
	रिपो	रिवर्स रिपो	परिवर्तन-शील रिपो दर	परिवर्तन-शील रिवर्स रिपो दर				विक्रय	क्रय	
अप्रै. 3, 2017	17.21	850.88	3.00	1,645.08	7.55	-2.71	-	-	-	-2,470.91
अप्रै. 4, 2017	-	292.33	-	-	41.85	-	-	-	-	-250.48
अप्रै. 5, 2017	12.55	677.89	-	1,685.90	0.10	-	-	-	-	-2,351.14
अप्रै. 6, 2017	10.45	527.28	-	1,258.44	2.20	-	-	-	-	-1,773.07
अप्रै. 7, 2017	12.05	749.26	-	748.80	-	-	-	-	-	-1,486.01
अप्रै. 10, 2017	12.55	276.92	-	1,081.98	-	-	-	-	-	-1,346.35
अप्रै. 11, 2017	9.05	278.91	-	359.94	0.10	-	-	-	-	-629.70
अप्रै. 12, 2017	9.05	155.36	-	1,012.63	100.40	-	-	-	-	-1,058.54
अप्रै. 13, 2017	9.70	258.62	2.50	806.01	12.25	-	-	-	-	-1,040.18
अप्रै. 15, 2017	-	161.72	-	-	-	-	-	-	-	-161.72
अप्रै. 17, 2017	9.05	86.94	-	891.81	0.90	-	250.00	-	-	-1,218.80
अप्रै. 18, 2017	9.05	115.74	-	311.04	29.20	-	-	-	-	-388.53
अप्रै. 19, 2017	9.05	147.50	-	831.03	-	-0.90	-	-	-	-970.38
अप्रै. 20, 2017	9.05	211.56	-	662.66	2.10	-0.70	-	-	-	-863.77
अप्रै. 21, 2017	9.05	255.90	-	437.08	0.20	-	-	-	-	-683.73
अप्रै. 24, 2017	9.05	79.39	-	431.97	5.00	-1.60	250.00	0.10	-	-749.01
अप्रै. 25, 2017	10.25	154.88	4.50	38.70	1.00	-	-	-	-	-177.83
अप्रै. 26, 2017	10.25	192.71	-	394.26	1.50	1.20	-	-	-	-574.02
अप्रै. 27, 2017	14.55	196.21	-	574.53	0.80	1.48	-	-	-	-753.91
अप्रै. 28, 2017	11.70	509.90	8.25	419.96	2.85	-	-	-	-	-907.06
अप्रै. 29, 2017	60.00	24.66	-	-	1.10	-	-	-	-	36.44

सं. 4ए भारतीय रिज़र्व बैंक में बकाया वायदे का (अवशिष्ट परिपक्वता के अनुसार)
परिपक्वता विश्लेषण (मिलियन अमरीकी डॉलर)

मद	31 अप्रैल 2017 तक		
	दीर्घ(+)	अल्प (-)	निवल(1-2)
	1	2	3
1. 1 माह तक	2,893	1,917	976
2. 1 माह से अधिक और 3 माह तक	4,488	3,620	868
3. 3 माह से अधिक और 1 वर्ष तक	15,256	1,414	13,842
4. 1 वर्ष से अधिक	0	2,133	-2,133
कुल (1+2+3+4)	22,637	9,084	13,553

सं. 5: भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थायी सुविधाएं

(बिलियन ₹)

मद	नियत अंतिम शुक्रवार की स्थिति							
	2016-17	2016		2017				
		मई 27	दिसं. 23	जन. 20	फर. 17	मार्च 31	अप्रै. 28	मई 26
	1	2	3	4	5	6	7	8
1 सीमांत स्थायी सुविधा	19.3	–	4.2	–	–	19.3	2.9	0.4
2 अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के लिए निर्यात ऋण पुनर्वित्त								
2.1 सीमा	–	–	–	–	–	–	–	–
2.2 बकाया	–	–	–	–	–	–	–	–
3 प्राथमिक व्यापारियों के लिए चलनिधि सुविधा								
3.1 सीमा	28.0	28.0	28.0	28.0	28.0	28.0	28.0	28.0
3.2 बकाया	14.8	23.4	12.3	12.3	10.6	14.8	11.6	17.8
4 अन्य								
4.1 सीमा	–	–	–	–	–	–	–	–
4.2 बकाया	–	–	–	–	–	–	–	–
5 कुल बकाया (1+2.2+3.2+4.2)	34.1	23.4	16.4	12.3	10.6	34.1	14.5	18.2

मुद्रा और बैंकिंग

सं. 6: मुद्रा स्टॉक मात्रा

(बिलियन ₹)

मद	मार्च 31 /माह के नियत अंतिम शुक्रवार/नियत शुक्रवार की बकाया स्थिति				
	2015-16	2016	2017		
		अप्रै. 29	मार्च 31	अप्रै. 14	अप्रै. 28
	1	2	3	4	5
1 जनता के पास मुद्रा (1.1 + 1.2 + 1.3 - 1.4)	15,972.5	16,486.2	12,637.1	13,286.6	13,523.7
1.1 संचलन में नोट	16,415.6	16,979.8	13,101.8	13,646.2	14,069.5
1.2 रुपये सिक्के का संचलन	211.6	213.9	243.4	243.4	243.4
1.3 छोटे सिक्कों का संचलन	7.4	7.4	7.4	7.4	7.4
1.4 बैंकों के पास नकदी	662.1	714.9	715.6	610.4	796.6
2 जनता की जमाराशियां	10,052.8	10,226.7	14,317.2	12,326.1	12,571.2
2.1 बैंकों के पास मांग जमाराशियां	9,898.3	10,093.6	14,106.3	12,113.4	12,394.5
2.2 रिज़र्व बैंक के पास 'अन्य' जमाराशियां	154.5	133.1	210.9	212.8	176.6
3 एम₁ (1 + 2)	26,025.4	26,713.0	26,954.3	25,612.8	26,094.9
4 डाकघर बचत बैंक जमाराशियां	615.7	647.0	930.9	930.9	930.9
5 एम₂ (3 + 4)	26,641.1	27,360.0	27,885.2	26,543.7	27,025.8
6 बैंकों के पास मीयादी जमाराशियां	90,150.8	92,147.5	101,489.5	101,408.6	101,166.5
7 एम₃ (3 + 6)	116,176.2	118,860.5	128,443.9	127,021.4	127,261.4
8 कुल डाकघर जमाराशियां	2,084.1	2,121.4	2,542.2	2,542.2	2,542.2
9 एम₄ (7 + 8)	118,260.3	120,981.9	130,986.0	129,563.5	129,803.6

सं. 7: मुद्रा स्टॉक (एम₃) का स्रोत

(बिलियन ₹)

स्रोत	मार्च 31 /माह के लिए नियत अंतिम शुकवार/ नियत शुकवार की स्थिति के अनुसार बकाया				
	2015-16	2016	2017		
		अप्रै. 29	मार्च 31	अप्रै. 14	अप्रै. 28
	1	2	3	4	5
1 सरकार को निवल बैंक ऋण	32,384.8	35,015.9	38,690.9	40,952.6	41,204.4
1.1 आरबीआई का सरकार को निवल ऋण (1.1.1-1.1.2)	4,250.0	6,168.5	6,208.1	7,097.2	7,196.3
1.1.1 सरकार पर दावे	6,167.0	6,492.3	7,512.0	7,505.9	7,670.8
1.1.1.1 केन्द्र सरकार	6,162.2	6,473.9	7,499.4	7,500.4	7,662.6
1.1.1.2 राज्य सरकारें	4.8	18.4	12.6	5.5	8.3
1.1.2 आरबीआई के पास सरकार की जमाराशियां	1,917.0	323.8	1,303.9	408.7	474.5
1.1.2.1 केन्द्र सरकार	1,916.6	323.3	1,303.5	408.2	474.1
1.1.2.2 राज्य सरकारें	0.4	0.4	0.4	0.4	0.4
1.2 सरकार को अन्य बैंक ऋण	28,134.9	28,847.4	32,482.8	33,855.4	34,008.0
2 वाणिज्यिक क्षेत्र को बैंक ऋण	78,030.7	77,914.4	84,514.3	82,118.7	81,769.2
2.1 आरबीआई का वाणिज्यिक क्षेत्र को ऋण	200.8	82.7	72.9	54.3	53.7
2.2 वाणिज्यिक क्षेत्र को अन्य बैंकों द्वारा दिया गया ऋण	77,829.9	77,831.7	84,441.4	82,064.5	81,715.5
2.2.1 वाणिज्य बैंकों द्वारा बैंक ऋण	72,496.1	72,322.9	78,815.3	76,467.8	76,113.2
2.2.2 सहकारी बैंकों द्वारा बैंक ऋण	5,285.3	5,460.5	5,548.9	5,512.2	5,518.1
2.2.3 वाणिज्य और सहकारी बैंकों द्वारा अन्य प्रतिभूतियों में निवेश	48.4	48.2	77.2	84.5	84.2
3 बैंकिंग क्षेत्र की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियां (3.1 + 3.2)	25,337.2	25,590.3	24,920.1	24,734.0	24,880.7
3.1 आरबीआई की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियां (3.1.1-3.1.2)	23,834.8	24,087.8	23,972.1	23,786.0	23,932.7
3.1.1 सकल विदेशी आस्तियां	23,836.8	24,089.8	23,974.1	23,788.1	23,934.6
3.1.2 विदेशी देयताएं	2.0	2.0	2.0	2.0	1.9
3.2 अन्य बैंकों की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियां	1,502.5	1,502.5	948.0	948.0	948.0
4 जनता के प्रति सरकार की मुद्रा देयताएं	219.1	221.4	250.9	250.9	250.9
5 बैंकिंग क्षेत्र की निवल गैर-मौद्रिक देयताएं	19,795.6	19,881.4	19,932.3	21,034.8	20,843.7
5.1 आरबीआई की निवल गैर-मौद्रिक देयताएं	9,541.7	9,716.0	8,333.5	8,120.9	8,228.9
5.2 अन्य बैंकों की निवल गैर-मौद्रिक देयताएं (अवशिष्ट)	10,253.9	10,165.4	11,598.9	12,913.9	12,614.9
एम₃ (1+2+3+4-5)	116,176.2	118,860.5	128,443.9	127,021.4	127,261.4

सं. 8: मौद्रिक सर्वेक्षण

(बिलियन ₹)

मद	मार्च 31 /माह के लिए नियत अंतिम शुक्रवार/ नियत शुक्रवार की स्थिति के अनुसार बकाया				
	2015-16	2016	2017		
		अप्रै. 29	मार्च 31	अप्रै. 14	अप्रै. 28
	1	2	3	4	5
मौद्रिक समुच्चय					
एन एम1 (1.1 + 1.2.1+1.3)	26,025.4	26,713.0	26,954.4	25,612.8	26,094.9
एन एम2 (एन एम1 + 1.2.2.1)	65,238.9	66,812.3	72,005.3	70,629.9	71,007.5
एन एम3 (एन एम2 + 1.2.2.2 + 1.4 = 2.1 + 2.2 + 2.3 - 2.4- 2.5)	116,156.4	118,782.2	130,222.1	128,841.1	128,885.6
1 घटक					
1.1 जनता के पास मुद्रा	15,972.5	16,486.2	12,637.2	13,286.6	13,523.7
1.2. निवासियों की कुल जमाराशियां	97,039.6	99,203.3	114,219.5	112,151.4	112,200.3
1.2.1 मांग जमाराशियां	9,898.3	10,093.6	14,106.3	12,113.4	12,394.5
1.2.2 निवासियों की सावधि जमाराशियां	87,141.2	89,109.7	100,113.2	100,038.0	99,805.8
1.2.2.1 अल्पावधि सावधि जमाराशियां	39,213.5	40,099.4	45,050.9	45,017.1	44,912.6
1.2.2.1.1 जमा प्रमाण-पत्र	2,068.2	2,506.0	1,570.6	1,846.0	1,779.8
1.2.2.2 दीर्घावधि सावधि जमाराशियां	47,927.7	49,010.3	55,062.2	55,020.9	54,893.2
1.3 भा.रि.बैं. के पास 'अन्य' जमाराशियां	154.5	133.1	210.9	212.8	176.6
1.4 वित्तीय संस्थाओं से मांग /सावधि निधीयन	2,989.8	2,959.6	3,154.5	3,190.3	2,985.0
2 स्रोत					
2.1 देशी ऋण	115,922.7	118,607.6	129,709.2	129,924.2	129,767.6
2.1.1 सरकार को निवल बैंक ऋण	32,384.8	35,015.9	38,691.0	40,952.6	41,204.4
2.1.1.1 सरकार को निवल भा.रि.बैं. ऋण	4,250.0	6,168.5	6,208.1	7,097.2	7,196.3
2.1.1.2 बैंकिंग प्रणाली द्वारा सरकार को ऋण	28,134.9	28,847.4	32,482.9	33,855.4	34,008.0
2.1.2 वाणिज्यिक क्षेत्र को बैंक ऋण	83,537.9	83,591.7	91,018.3	88,971.6	88,563.3
2.1.2.1 वाणिज्यिक क्षेत्र को भा.रि.बैंक ऋण	200.8	82.7	72.9	54.3	53.7
2.1.2.2 बैंकिंग प्रणाली द्वारा वाणिज्यिक क्षेत्र को ऋण	83,337.0	83,509.0	90,945.4	88,917.4	88,509.5
2.1.2.2.1 अन्य निवेश (गैर-एसएलआर प्रतिभूतियां)	5,412.0	5,605.6	6,462.5	6,777.6	6,718.9
2.2 जनता के प्रति सरकार की मुद्रा देयताएं	219.1	221.4	250.9	250.9	250.9
2.3 बैंकिंग क्षेत्र की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियां	21,586.9	22,159.9	23,819.8	23,677.6	23,605.0
2.3.1 भा.रि.बैं. की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियां	23,834.8	24,087.8	23,972.1	23,786.0	23,932.7
2.3.2 बैंकिंग प्रणाली की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियां	-2,247.8	-1,927.8	-152.3	-108.4	-327.8
2.4 पूंजी खाता	18,310.9	18,946.3	18,195.5	18,080.5	18,292.0
2.5 अन्य मदें (निवल)	3,261.5	3,260.3	5,362.3	6,931.1	6,445.8

सं. 9: चलनिधि समुच्चय

(बिलियन ₹)

समुच्चय	2015-16	2016	2017		
	1	अप्रै.	फर.	मार्च	अप्रै.
		2	3	4	5
1 एन एम ₃	116,156.4	118,782.2	125,040.2	130,222.1	128,885.6
2 डाकघर जमाराशियां	2,084.1	2,121.4	2,542.2	2,542.2	2,542.2
3 एन ₁ (1 + 2)	118,240.5	120,903.7	127,582.3	132,764.2	131,427.8
4 वित्तीय संस्थाओं की देयताएं	29.3	29.3	29.3	29.3	29.3
4.1 सावधि मुद्रा उधार	26.6	26.6	26.6	26.6	26.6
4.2 जमा प्रमाण-पत्र	0.3	0.3	0.3	0.3	0.3
4.3 सावधि जमाराशियां	2.5	2.5	2.5	2.5	2.5
5 एन ₂ (3 + 4)	118,269.8	120,933.0	127,611.6	132,793.6	131,457.1
6 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के पास जनता की जमाराशियां	394.7	451.5	..
7 एन ₃ (5 + 6)	118,664.5	133,245.0	..

सं. 10: भारतीय रिज़र्व बैंक सर्वेक्षण

(बिलियन ₹)

मद	मार्च 31 /माह के लिए नियत अंतिम शुक्रवार/ नियत शुक्रवार की स्थिति के अनुसार बकाया				
	2015-16	2016		2017	
		अप्रै. 29	मार्च 31	अप्रै. 14	अप्रै. 28
	1	2	3	4	5
1 घटक					
1.1 संचलन में मुद्रा	16,634.6	17,201.2	13,352.7	13,897.0	14,320.4
1.2 भा.रि.बैं. के पास बैंकों की जमाराशियां	5,018.3	4,244.8	5,441.3	4,616.3	4,793.6
1.2.1 अनुसूचित वाणिज्य बैंक	4,738.7	3,982.7	5,087.7	4,304.1	4,482.1
1.3 भा.रि.बैं. के पास 'अन्य' जमाराशियां	154.5	133.1	210.9	212.8	176.6
आरक्षित मुद्रा (1.1+1.2+1.3=2.1+2.2+2.3-2.4-2.5)	21,807.4	21,579.1	19,004.8	18,726.1	19,290.6
2 स्रोत					
2.1 भा.रि.बैं.के देशी ऋण	7,295.3	6,985.9	3,115.3	2,810.2	3,335.9
2.1.1 सरकार को निवल भा.रि.बैं.ऋण	4,250.0	6,168.5	6,208.1	7,097.2	7,196.3
2.1.1.1 केन्द्र सरकार को निवल भा.रि.बैं.ऋण(2.1.1.1.1+2.1.1.1.2+2.1.1.1.3+2.1.1.1.4-2.1.1.1.5)	4,245.6	6,150.5	6,195.9	7,092.2	7,188.5
2.1.1.1.1 केन्द्र सरकार को ऋण और अग्रिम	-	-	-	-	157.4
2.1.1.1.2 खज़ाना बिलों में निवेश	-	-	-	-	-
2.1.1.1.3 दिनांकित सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश	6,159.5	6,471.0	7,494.9	7,496.2	7,497.4
2.1.1.1.3.1 केन्द्र सरकार की प्रतिभूतियां	6,149.0	6,460.6	7,494.9	7,496.2	7,497.4
2.1.1.1.4 रुपया सिक्के	2.8	2.8	4.5	4.2	7.7
2.1.1.1.5 केन्द्र सरकार की जमाराशियां	1,916.6	323.3	1,303.5	408.2	474.1
2.1.1.2 राज्य सरकारों को निवल भा.रि.बैं. ऋण	4.3	18.0	12.2	5.1	7.8
2.1.2 बैंकों पर भा.रि.बैं. के दावे	2,844.5	734.8	-3,165.7	-4,341.3	-3,914.2
2.1.2.1 अनुसूचित वाणिज्य बैंकों को ऋण और अग्रिम	2,844.5	734.8	-3,165.7	-4,341.3	-3,914.2
2.1.3 वाणिज्यिक क्षेत्र को भा.रि.बैं. के ऋण	200.8	82.7	72.9	54.3	53.7
2.1.3.1 प्राथमिक व्यापारियों को ऋण और अग्रिम	27.0	25.8	14.8	12.1	11.6
2.1.3.2 नाबार्ड को ऋण और अग्रिम	-	-	-	-	-
2.2 जनता के प्रति सरकार की मुद्रा देयताएं	219.1	221.4	250.9	250.9	250.9
2.3 भा.रि.बैं. की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियां	23,834.8	24,087.8	23,972.1	23,786.0	23,932.7
2.3.1 सोना	1,334.3	1,334.3	1,288.3	1,288.3	1,288.3
2.3.2 विदेशी मुद्रा आस्तियां	22,500.6	22,753.7	22,684.0	22,497.9	22,644.6
2.4 पूंजी खाता	8,728.0	8,878.9	7,512.8	7,307.0	7,378.5
2.5 अन्य मदें (निवल)	813.7	837.1	820.6	814.0	850.4

सं. 11: आरक्षित मुद्रा - घटक और स्रोत

(बिलियन ₹)

मद	मार्च 31 /माह के अंतिम शुक्रवार/शुक्रवार की स्थिति के अनुसार बकाया						
	2015-16	2016		2017			
		अप्रै. 29	मार्च 31	अप्रै. 7	अप्रै. 14	अप्रै. 21	अप्रै. 28
	1	2	3	4	5	6	7
आरक्षित मुद्रा (1.1 + 1.2 + 1.3 = 2.1 + 2.2 + 2.3 + 2.4 + 2.5 - 2.6)	21,807.4	21,579.1	19,004.8	18,268.9	18,726.1	19,096.1	19,290.6
1 घटक							
1.1 संचलन में मुद्रा	16,634.6	17,201.2	13,352.7	13,616.6	13,897.0	14,174.8	14,320.4
1.2 भा.रि.बैं. के पास बैंकों की जमाराशियां	5,018.3	4,244.8	5,441.3	4,473.0	4,616.3	4,745.2	4,793.6
1.3 भा.रि.बैं. के पास 'अन्य' जमाराशियां	154.5	133.1	210.9	179.4	212.8	176.1	176.6
2 स्रोत							
2.1 सरकार को निवल रिज़र्व बैंक ऋण	4,250.0	6,168.5	6,208.1	6,948.3	7,097.2	7,536.1	7,196.3
2.2 बैंकों को रिज़र्व बैंक ऋण	2,844.5	734.8	-3,165.7	-4,654.3	-4,341.3	-4,424.8	-3,914.2
2.3 वाणिज्यिक क्षेत्र को रिज़र्व बैंक ऋण	200.8	82.7	72.9	59.7	54.3	52.6	53.7
2.4 भा.रि.बैं. की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियां	23,834.8	24,087.8	23,972.1	23,755.6	23,786.0	23,954.5	23,932.7
2.5 जनता के प्रति सरकार की मुद्रा देयताएं	219.1	221.4	250.9	250.9	250.9	250.9	250.9
2.6 भा.रि.बैं. की निवल गैर मौद्रिक देयताएं	9,541.7	9,716.0	8,333.5	8,091.2	8,120.9	8,273.2	8,228.9

सं. 12: वाणिज्य बैंक सर्वेक्षण

(बिलियन ₹)

मद	माह के नियत अंतिम शुक्रवार/ माह के नियत शुक्रवार की स्थिति के अनुसार बकाया				
	2015-16	2016	2017		
		अप्रै. 29	मार्च 31	अप्रै. 14	अप्रै. 28
	1	2	3	4	5
1 घटक					
1.1 निवासियों की कुल जमाराशियां	90,263.3	92,215.4	106,728.9	104,742.2	104,804.2
1.1.1 मांग जमाराशियां	8,890.0	9,037.6	12,953.3	10,976.9	11,261.0
1.1.2 निवासियों की सावधि जमाराशियां	81,373.4	83,177.8	93,775.6	93,765.3	93,543.2
1.1.2.1 अल्पावधि सावधि जमाराशियां	36,618.0	37,430.0	42,199.0	42,194.4	42,094.4
1.1.2.1.1 जमा प्रमाण-पत्र	2,068.2	2,506.0	1,570.6	1,846.0	1,779.8
1.1.2.2 दीर्घावधि सावधि जमाराशियां	44,755.4	45,747.8	51,576.6	51,570.9	51,448.8
1.2 वित्तीय संस्थाओं से मांग/सावधि निधायन	2,989.8	2,959.6	3,154.5	3,190.3	2,985.0
2 स्रोत					
2.1 देशी ऋण	104,171.4	104,839.0	115,665.6	115,024.2	114,777.7
2.1.1 सरकार को ऋण	26,239.3	26,910.3	30,422.4	31,774.6	31,940.6
2.1.2 वाणिज्यिक क्षेत्र को ऋण	77,932.1	77,928.7	85,243.2	83,249.5	82,837.1
2.1.2.1 बैंक ऋण	72,496.1	72,322.9	78,815.3	76,467.8	76,113.2
2.1.2.1.1 गैर-खाद्यान्न ऋण	71,443.6	71,282.2	78,279.6	75,982.3	75,556.4
2.1.2.2 प्राथमिक व्यापारियों को निवल ऋण	97.8	74.4	44.2	77.9	77.7
2.1.2.3 अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवेश	15.8	15.5	10.9	15.9	16.9
2.1.2.4 अन्य निवेश (गैर-एसएलआर प्रतिभूतियों में)	5,322.4	5,516.0	6,372.9	6,688.0	6,629.3
2.2 वाणिज्य बैंकों की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियां (2.2.1-2.2.2-2.2.3)	-2,247.8	-1,927.8	-152.3	-108.4	-327.8
2.2.1 विदेशी मुद्रा आस्तियां	1,847.4	2,137.3	1,983.5	2,054.9	1,715.6
2.2.2 अनिवासी विदेशी मुद्रा प्रत्यावर्तनीय मीयादी जमाराशियां	3,009.6	3,037.8	1,376.3	1,370.6	1,360.7
2.2.3 समुद्रपार विदेशी मुद्रा उधार	1,085.6	1,027.3	759.5	792.8	682.7
2.3 निवल बैंक रिजर्व (2.3.1+2.3.2-2.3.3)	2,290.1	3,868.7	8,871.2	9,159.2	9,093.2
2.3.1 भा.रि.बैं. के पास शेष	3,874.4	3,982.7	5,087.7	4,304.1	4,482.1
2.3.2 उपलब्ध नकदी	574.4	620.7	617.7	513.7	696.9
2.3.3 भा.रि.बैं. से ऋण और अग्रिम	2,158.7	734.8	-3,165.7	-4,341.3	-3,914.2
2.4 पूंजी खाता	9,341.1	9,825.8	10,441.0	10,531.8	10,671.8
2.5 अन्य मदें (निवल) (2.1+2.2+2.3-2.4-1.1-1.2)	1,619.5	1,779.1	4,060.1	5,610.5	5,082.2
2.5.1 अन्य मांग और मीयादी देयताएं (2.2.3 का निवल)	3,954.8	3,779.3	3,995.0	5,817.0	5,041.6
2.5.2 निवल अंतर-बैंक देयताएं (प्राथमिक व्यापारियों से इतर)	-256.0	-239.0	-108.8	-163.4	-194.1

सं. 13: अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के निवेश

(बिलियन ₹)

मद	मार्च 31, 2017 की स्थिति	2016	2017		
		अप्रै. 15	मार्च 31	अप्रै. 14	अप्रै. 28
	1	2	3	4	5
1 एसएलआर प्रतिभूतियां	30,309.3	27,045.8	30,309.3	31,790.5	31,957.5
2 वाणिज्यिक पत्र	1,159.4	741.9	1,159.4	1,104.0	1,114.1
3 निम्नलिखित द्वारा जारी शेयर					
3.1 सरकारी उद्यम	92.0	76.7	92.0	82.4	95.3
3.2 निजी कारपोरेट क्षेत्र	567.3	436.5	567.3	580.8	588.6
3.3 अन्य	51.8	73.9	51.8	49.0	48.2
4 निम्नलिखित द्वारा जारी बांड / डिबेंचर					
4.1 सरकारी उद्यम	1,118.5	1,180.0	1,118.5	1,072.6	1,048.9
4.2 निजी कारपोरेट क्षेत्र	1,685.6	1,322.4	1,685.6	1,595.1	1,554.0
4.3 अन्य	810.8	658.8	810.8	757.8	755.6
5 निम्नलिखित द्वारा जारी लिखत					
5.1 म्यूचुअल फंड	134.0	586.1	134.0	631.9	610.6
5.2 वित्तीय संस्थाएं	844.8	623.2	844.8	814.3	814.0

सं. 14: भारत में कारोबार - सभी अनुसूचित बैंक और सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंक

(बिलियन ₹)

मद	नियत अंतिम शुक्रवार (मार्च के संबंध में) /नियत शुक्रवार की स्थिति							
	सभी अनुसूचित बैंक				सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंक			
	2016-17	2016	2017		2016-17	2016	2017	
		अप्रै.	मार्च	अप्रै.		अप्रै.	मार्च	अप्रै.
	1	2	3	4	5	6	7	8
सूचना देने वाले बैंकों की संख्या	221	218	221	215	150	148	150	144
1 बैंकिंग प्रणाली के प्रति देयताएं	2,472.4	2,329.4	2,472.4	2,459.4	2,405.4	2,260.0	2,405.4	2,395.7
1.1 बैंकों से मांग और मीयादी जमाराशियां	1,841.8	1,604.4	1,841.8	1,726.2	1,774.9	1,537.7	1,774.9	1,663.1
1.2 बैंकों से उधार राशि	572.2	642.5	572.2	685.7	572.1	639.8	572.1	685.1
1.3 अन्य मांग और मीयादी देयताएं	58.4	82.5	58.4	47.6	58.4	82.5	58.4	47.6
2 अन्य के प्रति देयताएं	118,470.8	105,726.6	118,470.8	117,961.3	115,442.3	103,019.4	115,442.3	114,874.1
2.1 कुल जमाराशियां	110,510.3	97,840.3	110,510.3	109,128.8	107,601.1	95,253.2	107,601.1	106,164.9
2.1.1 मांग	13,091.9	9,258.1	13,091.9	11,534.0	12,801.5	9,037.6	12,801.5	11,261.0
2.1.2 मीयादी	97,418.4	88,582.2	97,418.4	97,594.8	94,799.6	86,215.6	94,799.6	94,903.9
2.2 उधार	3,181.5	2,997.9	3,181.5	3,014.8	3,151.9	2,959.6	3,151.9	2,985.0
2.3 अन्य मांग और मीयादी देयताएं	4,779.0	4,888.4	4,779.0	5,817.7	4,689.3	4,806.6	4,689.3	5,724.2
3 रिज़र्व बैंक से उधार	218.1	886.5	218.1	18.3	218.1	886.5	218.1	18.3
3.1 मीयादी बिल / वचन पत्रों की जमानत पर	—	—	—	—	—	—	—	—
3.2 अन्य	218.1	886.5	218.1	18.3	218.1	886.5	218.1	18.3
4 उपलब्ध नकदी और रिज़र्व बैंक के पास शेष	5,868.7	4,727.3	5,868.7	5,323.6	5,700.8	4,603.4	5,700.8	5,179.0
4.1 उपलब्ध नकदी	629.9	633.9	629.9	716.6	613.02	620.7	613.0	696.9
4.2 रिज़र्व बैंक के पास शेष	5,238.8	4,093.4	5,238.8	4,607.1	5,087.7	3,982.7	5,087.7	4,482.1
5 बैंकिंग प्रणाली के पास आस्तियां	2,918.9	2,963.2	2,918.9	3,153.6	2,421.6	2,573.4	2,421.6	2,667.5
5.1 अन्य बैंकों के पास शेष	1,889.6	1,760.6	1,889.6	2,109.0	1,691.7	1,605.1	1,691.7	1,911.7
5.1.1 चालू खाते में	191.4	152.6	191.4	157.0	154.8	134.0	154.8	137.0
5.1.2 अन्य खातों में	1,698.2	1,608.0	1,698.2	1,952.0	1,536.9	1,471.1	1,536.9	1,774.7
5.2 मांग और अल्पसूचना पर मुद्रा	296.9	478.0	296.9	376.3	77.0	325.5	77.0	182.6
5.3 बैंकों को अग्रिम	373.1	275.7	373.1	366.5	372.1	260.9	372.1	355.3
5.4 अन्य आस्तियां	359.2	448.9	359.2	301.8	280.8	381.9	280.8	217.9
6 निवेश	31,160.8	27,695.3	31,160.8	32,885.9	30,309.3	26,925.7	30,309.3	31,957.5
6.1 सरकारी प्रतिभूतियां	31,144.4	27,668.7	31,144.4	32,821.1	30,297.1	26,910.3	30,297.1	31,940.6
6.2 अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियां	16.4	26.6	16.4	64.8	12.2	15.5	12.2	16.9
7 बैंक ऋण	80,885.3	74,535.7	80,885.3	78,529.9	78,482.2	72,322.9	78,482.2	76,113.2
7क खाद्यान्न ऋण	652.4	1,203.4	652.4	749.2	539.3	1,040.7	539.3	556.8
7.1 ऋण नकदी-ऋण और ओवरड्राफ्ट	78,556.4	72,337.0	78,556.4	76,427.5	76,214.7	70,166.8	76,214.7	74,072.5
7.2 देशी बिल - खरीदे गए	263.0	276.1	263.0	233.9	245.5	267.1	245.5	216.9
7.3 देशी बिल- भुनाए गए	1,403.1	1,303.2	1,403.1	1,289.4	1,366.2	1,275.8	1,366.2	1,251.2
7.4 विदेशी बिल - खरीदे गए	248.6	227.5	248.6	212.2	246.4	226.3	246.4	210.1
7.5 विदेशी बिल - भुनाए गए	414.2	391.8	414.2	366.9	409.4	386.9	409.4	362.5

सं. 15: प्रमुख क्षेत्रों द्वारा सकल बैंक ऋण का अभिनियोजन

(बिलियन ₹)

मद	बकाया स्थिति				वृद्धि (%)	
	मार्च 31, 2017	2016	2017		वित्तीय वर्ष में अब तक	वर्ष-दर- वर्ष
		अप्रै. 29	मार्च 31	अप्रै. 28	2017-18	2017
	1	2	3	4	5	6
1 सकल बैंक ऋण	68,352	63,205	68,352	65,935	-3.5	4.3
1.1 खाद्यान्न ऋण	393	888	393	485	23.3	-45.4
1.2 गैर-खाद्यान्न ऋण	67,959	62,317	67,959	65,451	-3.7	5.0
1.2.1 कृषि और उससे जुड़ी गतिविधियां	9,373	8,471	9,373	9,148	-2.4	8.0
1.2.2 उद्योग	25,475	25,197	25,475	24,941	-2.1	-1.0
1.2.2.1 सूक्ष्म और लघु	3,485	3,421	3,485	3,404	-2.3	-0.5
1.2.2.2 मझौले	1,001	1,038	1,001	944	-5.7	-9.1
1.2.2.3 बड़े	20,989	20,738	20,989	20,593	-1.9	-0.7
1.2.3 सेवाएं	17,627	15,254	17,627	15,987	-9.3	4.8
1.2.3.1 परिवहन परिचालक	1,087	1,022	1,087	1,071	-1.5	4.7
1.2.3.2 कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर	175	187	175	171	-2.3	-8.6
1.2.3.3 पर्यटन, होटल और रेस्तरां	362	358	362	347	-4.2	-3.0
1.2.3.4 नौवहन	111	95	111	70	-37.2	-26.4
1.2.3.5 पेशेवर सेवाएं	1,344	1,174	1,344	1,307	-2.8	11.3
1.2.3.6 व्यापार	4,103	3,659	4,103	3,876	-5.5	5.9
1.2.3.6.1 थोक व्यापार	1,905	1,645	1,905	1,749	-8.2	6.3
1.2.3.6.2 खुदरा व्यापार	2,199	2,014	2,199	2,127	-3.3	5.6
1.2.3.7 वाणिज्यिक स्थावर संपदा	1,823	1,801	1,823	1,788	-1.9	-0.7
1.2.3.8 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ	3,817	3,501	3,817	3,400	-10.9	-2.9
1.2.3.9 अन्य सेवाएं	4,805	3,458	4,805	3,958	-17.6	14.4
1.2.4 व्यक्तिगत ऋण	15,484	13,395	15,484	15,375	-0.7	14.8
1.2.4.1 उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	169	151	169	171	1.2	13.5
1.2.4.2 आवास	8,183	7,197	8,183	8,160	-0.3	13.4
1.2.4.3 मीयादी जमाराशि की जमानत पर अग्रिम	621	600	621	542	-12.7	-9.7
1.2.4.4 शेयरों और बांडों की जमानत पर व्यक्तियों को अग्रिम	54	50	54	51	-4.7	1.8
1.2.4.5 क्रेडिट कार्ड बकाया	521	410	521	541	3.9	32.1
1.2.4.6 शिक्षा	669	648	669	668	-0.1	3.1
1.2.4.7 वाहन ऋण	1,634	1,431	1,634	1,645	0.7	14.9
1.2.4.8 अन्य व्यक्तिगत ऋण	3,634	2,907	3,634	3,596	-1.0	23.7
1.2अ प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र	22,996	21,232	22,996	22,366	-2.7	5.3
1.2अ.1 कृषि और उससे जुड़ी गतिविधियां	9,358	8,460	9,358	9,128	-2.5	7.9
1.2अ.2 सूक्ष्म और लघु उद्यम	8,621	8,065	8,621	8,344	-3.2	3.5
1.2अ.2.1 विनिर्माण	3,499	3,421	3,499	3,404	-2.7	-0.5
1.2अ.2.2 सेवाएं	5,122	4,643	5,122	4,939	-3.6	6.4
1.2अ.3 आवास	3,449	3,231	3,449	3,389	-1.7	4.9
1.2अ.4 माइक्रो क्रेडिट	150	152	150	143	-5.0	-6.3
1.2अ.5 शिक्षा ऋण	574	565	574	575	0.1	1.7
1.2अ.6 अजा/अजजा के लिए राज्य प्रायोजित संस्थाएं	3	2	3	2	-9.1	18.6
1.2अ.7 कमजोर वर्ग	5,261	4,588	5,261	5,010	-4.8	9.2
1.2अ.8 निर्यात ऋण	425	452	425	421	-0.9	-6.9

सं. 16: सकल बैंक ऋण का उद्योग-वार अभिनियोजन

(बिलियन ₹)

उद्योग	बकाया स्थिति				वृद्धि (%)	
	मार्च 31, 2017	2016	2017		वित्तीय वर्ष में अब तक	वर्ष-दर-वर्ष
		अप्रै. 29	मार्च 31	अप्रै. 28		
	1	2	3	4	5	6
1 उद्योग	25,475	25,197	25,475	24,941	-2.1	-1.0
1.1 खनन और उत्खनन (कोयला सहित)	328	349	328	336	2.3	-3.7
1.2 खाद्य प्रसंस्करण	1,345	1,366	1,345	1,317	-2.1	-3.5
1.2.1 चीनी	316	375	316	309	-2.1	-17.4
1.2.2 खाद्य तेल और वनस्पति	168	179	168	169	0.6	-5.5
1.2.3 चाय	35	31	35	34	-0.9	11.0
1.2.4 अन्य	826	781	826	804	-2.6	3.0
1.3 पेय पदार्थ और तंबाकू	168	165	168	163	-2.9	-1.4
1.4 वस्त्र	1,807	1,875	1,807	1,792	-0.8	-4.4
1.4.1 सूती वस्त्र	888	943	888	889	0.1	-5.8
1.4.2 जूट से बने वस्त्र	22	19	22	22	-0.2	14.8
1.4.3 मानव-निर्मित वस्त्र	201	198	201	198	-1.9	-0.1
1.4.4 अन्य वस्त्र	696	715	696	683	-1.8	-4.4
1.5 चमड़ा और चमड़े से बने उत्पाद	104	101	104	100	-4.1	-0.9
1.6 लकड़ी और लकड़ी से बने उत्पाद	101	96	101	98	-3.0	1.5
1.7 कागज़ और कागज़ से बने उत्पाद	316	327	316	312	-1.2	-4.5
1.8 पेट्रोलियम, कोयला उत्पाद और आण्विक इंधन	577	505	577	535	-7.2	6.0
1.9 रसायन और रासायनिक उत्पाद	1,666	1,506	1,666	1,521	-8.7	1.0
1.9.1 उर्वरक	328	248	328	220	-32.9	-11.3
1.9.2 औषधि और दवाइयां	445	495	445	428	-3.9	-13.6
1.9.3 पेट्रो केमिकल्स	514	343	514	485	-5.6	41.5
1.9.4 अन्य	393	421	393	389	-1.1	-7.6
1.10 रबड़, प्लास्टिक और उनके उत्पाद	372	342	372	355	-4.6	3.8
1.11 कांच और कांच के सामान	77	81	77	76	-0.9	-6.3
1.12 सीमेन्ट और सीमेन्ट से बने उत्पाद	523	520	523	519	-0.7	-0.2
1.13 मूल धातु और धातु उत्पाद	3,920	3,869	3,920	3,850	-1.8	-0.5
1.13.1 लोहा और स्टील	2,937	2,868	2,937	2,931	-0.2	2.2
1.13.2 अन्य धातु और धातु से बने उत्पाद	983	1,000	983	919	-6.6	-8.2
1.14 सभी अभियांत्रिकी	1,420	1,435	1,420	1,370	-3.5	-4.6
1.14.1 इलेक्ट्रॉनिक्स	314	346	314	304	-3.3	-12.1
1.14.2 अन्य	1,106	1,090	1,106	1,066	-3.6	-2.2
1.15 वाहन, वाहन के पुर्जे और परिवहन उपस्कर	709	655	709	691	-2.6	5.5
1.16 रत्न और आभूषण	705	667	705	671	-4.8	0.7
1.17 निर्माण	814	773	814	798	-2.0	3.1
1.18 इन्फ्रास्ट्रक्चर	8,675	8,725	8,675	8,597	-0.9	-1.5
1.18.1 पावर	5,048	5,120	5,048	5,020	-0.6	-2.0
1.18.2 दूरसंचार	833	921	833	811	-2.7	-11.9
1.18.3 सड़क	1,685	1,633	1,685	1,659	-1.5	1.6
1.18.4 अन्य इन्फ्रास्ट्रक्चर	1,109	1,052	1,109	1,108	-0.1	5.3
1.19 अन्य उद्योग	1,892	1,840	1,892	1,840	-2.7	0.0

सं. 17: भारतीय रिज़र्व बैंक में राज्य सहकारी बैंकों के खाते

(बिलियन ₹)

मद	नियत अंतिम शुक्रवार (मार्च के संबंध में)/अंतिम शुक्रवार/नियत शुक्रवार की स्थिति					
	2015-16	2016		2017		
		जन. 29	दिसं. 30	जन. 06	जन. 20	जन. 27
	1	2	3	4	5	6
सूचना देने वाले बैंकों की संख्या	32	32	30	30	30	30
1 कुल जमाराशियां (2.1.1.2+2.2.1.2)	420.2	398.6	475.4	472.8	475.4	470.3
2 मांग और मीयादी देयताएं						
2.1 मांग देयताएं	152.3	149.4	171.1	174.5	154.5	154.3
2.1.1 जमाराशियां						
2.1.1.1 अंतर-बैंक	34.2	29.9	39.9	44.3	37.5	37.2
2.1.1.2 अन्य	77.8	77.2	93.4	89.2	88.8	88.4
2.1.2 बैंकों से उधार	9.5	7.6	10.0	11.4	0.0	0.0
2.1.3 अन्य मांग देयताएं	30.9	34.6	27.8	29.7	28.3	28.6
2.2 मीयादी देयताएं	840.5	840.0	897.9	907.0	905.2	895.9
2.2.1 जमाराशियां						
2.2.1.1 अंतर-बैंक	491.8	511.7	508.5	515.8	511.4	506.7
2.2.1.2 अन्य	342.4	321.4	382.0	383.7	386.6	381.8
2.2.2 बैंकों से उधार	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
2.2.3 अन्य मीयादी देयताएं	6.3	6.9	7.4	7.5	7.2	7.3
3 रिज़र्व बैंक से उधार	0.0	0.4	0.0	0.0	0.0	0.0
4 अधिसूचित बैंक/राज्य सरकार से उधार	435.4	444.0	421.7	415.7	453.6	464.1
4.1 मांग	164.0	149.8	148.7	146.0	153.6	156.0
4.2 मीयादी	271.5	294.2	272.9	269.6	299.9	308.1
5 उपलब्ध नकदी और रिज़र्व बैंक के पास शेष	46.1	42.4	55.9	48.8	48.6	50.6
5.1 उपलब्ध नकदी	2.4	2.3	11.7	4.4	4.9	4.9
5.2 रिज़र्व बैंक के पास शेष	43.8	40.1	44.2	44.4	43.7	45.7
6 चालू खाते में अन्य बैंकों के पास शेष	6.8	5.5	13.9	15.0	8.6	8.2
7 सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश	298.8	293.9	302.7	305.5	306.8	304.9
8 मांग और अल्प सूचना पर मुद्रा	191.3	183.0	265.2	251.3	273.8	272.7
9 बैंक ऋण (10.1+11)	446.8	430.8	423.8	437.5	436.5	439.6
10 अग्रिम						
10.1 ऋण, नकदी-ऋण और ओवरड्राफ्ट	446.8	430.8	423.8	437.5	436.5	439.6
10.2 बैंकों से प्राप्य राशि	727.9	732.0	710.2	708.7	722.9	732.1
11 खरीदे और भुनाए गए बिल	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0

मूल्य और उत्पादन

सं. 18: उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (आधार: 2012=100)

समूह/उप समूह	2016-17			ग्रामीण			शहरी			मिश्रित		
	ग्रामीण	शहरी	मिश्रित	अप्रै. 16	मार्च 17	अप्रै. 17	अप्रै. 16	मार्च 17	अप्रै. 17	अप्रै. 16	मार्च 17	अप्रै. 17
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1 खाद्य और पेय पदार्थ	135.3	134.9	135.2	131.8	133.4	133.5	131.8	132.6	133.3	131.8	133.1	133.4
1.1 अनाज और उत्पाद	130.8	128.9	130.2	127.4	133.6	133.2	124.9	132.7	132.7	126.6	133.3	133.0
1.2 मांस और मछली	137.9	140.1	138.7	135.4	138.8	138.8	139.3	139.4	140.5	136.8	139.0	139.4
1.3 अंडा	128.9	130.7	129.6	123.4	128.8	127.2	119.9	128.4	124.6	122.0	128.6	126.2
1.4 दूध और उत्पाद	135.2	132.4	134.1	131.3	137.2	137.6	130.2	134.9	136.3	130.9	136.3	137.1
1.5 तेल और चर्बी	120.3	112.0	117.3	118.2	121.6	121.3	108.9	114.0	113.5	114.8	118.8	118.4
1.6 फल	138.1	132.8	135.6	138.1	139.7	142.0	131.1	136.8	137.6	134.8	138.3	139.9
1.7 सब्जी	139.2	144.8	141.1	134.1	119.7	121.5	136.8	122.2	127.0	135.0	120.5	123.4
1.8 दाल और उत्पाद	165.6	170.3	167.2	162.7	148.0	144.4	176.9	135.8	133.8	167.5	143.9	140.8
1.9 चीनी और उत्पाद	112.1	114.9	113.0	105.0	116.9	117.4	109.1	120.3	120.8	106.4	118.0	118.5
1.10 मसाले	135.1	143.8	138.0	131.4	135.6	134.4	140.4	142.6	141.4	134.4	137.9	136.7
1.11 गैर नशीले पेय पदार्थ	128.1	122.4	125.7	125.4	129.8	130.1	121.1	123.6	123.8	123.6	127.2	127.5
1.12 तैयार भोजन, नाश्ता, मिठाई	141.7	139.2	140.5	137.4	145.4	145.5	135.9	142.4	142.6	136.7	144.0	144.2
2 पान, तंबाकू और मादक पदार्थ	140.1	144.2	141.2	135.5	144.2	144.4	141.5	147.5	148.0	137.1	145.1	145.4
3 कपड़ा और जूते	137.9	127.8	133.9	134.4	140.8	141.6	125.8	129.6	130.0	131.0	136.4	137.0
3.1 कपड़ा	138.6	128.9	134.8	135.0	141.6	142.4	126.8	130.8	131.2	131.8	137.3	138.0
3.2 जूते	133.7	121.7	128.7	130.6	136.2	136.9	120.5	122.8	123.0	126.4	130.6	131.1
4 आवास	--	128.0	128.0	--	--	--	125.6	131.1	131.7	125.6	131.1	131.7
5 ईंधन और लाइट	130.1	116.4	124.9	127.0	134.2	134.9	114.6	120.8	121.4	122.3	129.1	129.8
6 विविध	125.0	120.6	122.9	121.7	127.4	127.5	118.2	122.6	122.5	120.0	125.1	125.1
6.1 घरेलू सामान और सेवा	131.3	124.3	128.0	128.0	134.1	134.3	122.8	125.6	126.0	125.5	130.1	130.4
6.2 स्वास्थ्य	128.1	121.6	125.6	125.2	130.6	131.0	120.0	123.1	123.4	123.2	127.8	128.1
6.3 परिवहन और संचार	117.4	112.8	114.9	114.4	119.8	119.2	110.0	115.6	114.2	112.1	117.6	116.6
6.4 मनोरंजन	125.9	121.0	123.2	123.2	128.3	128.3	119.5	122.4	122.6	121.1	125.0	125.1
6.5 शिक्षा	132.3	131.1	131.6	127.9	135.2	135.8	127.6	132.8	133.6	127.7	133.8	134.5
6.6 व्यक्तिगत देखभाल और प्रभाव	121.7	120.3	121.1	118.4	123.3	123.8	117.6	121.7	122.2	118.1	122.6	123.1
सामान्य सूचकांक (सभी समूह)	132.4	127.9	130.3	129.0	132.8	132.9	125.3	128.7	129.1	127.3	130.9	131.1

स्रोत: केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार।

सं. 19: अन्य उपभोक्ता मूल्य सूचकांक

मद	आधार वर्ष	योजक कारक	2016-17	2016		2017	
				अप्रै.	मार्च	अप्रै.	अप्रै.
	1	2	3	4	5	6	6
1 औद्योगिक कामगार उपभोक्ता मूल्य सूचकांक	2001	4.63	276	271	275	277	
2 कृषि श्रमिक उपभोक्ता मूल्य सूचकांक	1986-87	5.89	870	848	866	870	
3 ग्रामीण श्रमिक उपभोक्ता मूल्य सूचकांक	1986-87	-	875	854	872	876	

स्रोत: श्रम ब्यूरो, श्रम और रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार।

सं. 20: मुंबई में सोने और चांदी का मासिक औसत मूल्य

मद	2016-17		2016		2017	
			अप्रै.		मार्च	
	1	2	3	4	5	6
1 मानक स्वर्ण (₹ प्रति 10 ग्राम)		29,665	28,818	28,758		29,010
2 चांदी (₹ प्रति किलोग्राम)		42,748	38,656	42,100		42,142

स्रोत: मुंबई में सोने और चांदी के मूल्य के लिए बिजनेस स्टैंडर्ड/बिजनेस लाइन/द इकोनॉमिक टाइम्स, मुंबई।

सं. 21: थोक मूल्य सूचकांक
(आधार: 2011-12=100)

पण्य	भारत	2016-17	2016	2017		
			अप्रै.	फर.	मार्च (अ)	अप्रै.(अ)
	1	2	3	4	5	6
1 सभी पण्य	100.000	111.6	109.0	113.0	113.4	113.2
1.1 प्राथमिक वस्तुएं	22.618	128.9	126.1	127.0	127.9	128.4
1.1.1 खाद्य वस्तुएं	15.256	140.4	137.8	136.6	138.5	139.4
1.1.1.1 खाद्यान्न (अनाज+ दाल)	3.462	152.0	143.5	150.2	146.8	146.6
1.1.1.2 फल और सब्जियाँ	3.475	138.7	136.6	120.6	128.0	131.0
1.1.1.3 दूध	4.440	134.3	131.9	135.4	136.5	137.4
1.1.1.4 अंडा, मांस और मछली	2.402	133.5	136.3	135.0	140.2	141.1
1.1.1.5 मसाले	0.529	140.5	140.1	135.3	127.8	126.6
1.1.1.6 अन्य खाद्य वस्तुएं	0.948	150.5	150.9	155.8	157.0	157.0
1.1.2 खाद्येतर वस्तुएं	4.119	122.2	121.4	123.9	121.6	121.2
1.1.2.1 फाइबर	0.839	117.1	103.7	123.0	124.9	121.8
1.1.2.2 तिलहन	1.115	136.0	142.0	128.8	128.7	129.9
1.1.2.3 अन्य खाद्येतर वस्तुएं	1.960	114.8	115.2	116.5	114.4	114.6
1.1.2.4 फूल	0.204	137.4	140.1	171.0	139.0	135.2
1.1.3 खनिज	0.833	112.9	104.3	112.7	112.7	112.7
1.1.3.1 धात्विक खनिज	0.648	98.2	88.2	98.7	98.7	98.7
1.1.3.2 अन्य खनिज	0.185	164.3	160.6	161.7	161.7	161.7
1.1.4 कच्चा तेल और नैसर्गिक गैस	2.410	73.4	68.1	77.0	76.7	76.5
1.2 ईंधन और बिजली	13.152	86.4	78.3	94.5	94.6	92.8
1.2.1 कोल	2.138	108.9	106.4	115.9	116.1	116.3
1.2.1.1 कोकिंग कोल	0.647	108.2	101.4	130.8	131.5	132.3
1.2.1.2 गैर-कोकिंग कोल	1.401	110.5	109.6	110.7	110.7	110.7
1.2.1.3 लिग्नाइट	0.090	89.8	92.5	89.9	89.9	89.9
1.2.2 खनिज तेल	7.950	73.3	61.9	83.8	83.9	80.8
1.2.3 बिजली	3.064	104.5	101.1	107.4	107.4	107.4
1.3 विनिर्मित उत्पाद	64.231	110.7	109.2	111.8	112.1	112.1
1.3.1 खाद्य उत्पादों का विनिर्माण	9.122	125.4	120.0	128.0	127.4	127.3
1.3.1.1 मांस का परिरक्षण और प्रसंस्करण	0.134	137.1	132.7	138.0	136.3	136.3
1.3.1.2 मछली, क्रस्टेशियस,मोलस्क और उनके उत्पादों का प्रसंस्करण एवं परिरक्षण	0.204	127.7	123.9	130.6	127.6	127.8
1.3.1.3 फल और सब्जियों का परिरक्षण और प्रसंस्करण	0.138	120.1	118.4	118.9	118.8	119.2
1.3.1.4 सब्जियाँ और पशु तेल एवं चर्बी	2.643	107.0	103.1	110.0	108.4	108.1
1.3.1.5 डेयरी उत्पाद	1.165	132.2	125.7	138.6	139.6	139.8
1.3.1.6 अनाज मिल के उत्पाद	2.010	136.2	126.6	138.6	137.4	137.3
1.3.1.7 स्टार्च और स्टार्च के उत्पाद	0.110	114.6	114.3	112.9	112.9	112.9
1.3.1.8 बेकरी उत्पाद	0.215	127.1	124.6	128.0	129.7	129.7
1.3.1.9 चीनी,गुड़ और शहद	1.163	124.8	117.0	132.9	133.2	132.9
1.3.1.10 कोक, चॉकलेट और चीनी कन्फेक्शनरी	0.175	125.5	128.1	124.1	122.7	122.6
1.3.1.11 मैक्रोनी,नूडल्स, कूसकूस और उसके जैसे मैदे से बने उत्पाद	0.026	137.9	121.0	133.4	141.4	141.4
1.3.1.12 चाय और कॉफी उत्पाद	0.371	126.2	130.0	117.2	121.9	122.0
1.3.1.13 प्रसंस्कृत मसाले और नमक	0.163	124.8	122.3	120.9	120.1	119.3
1.3.1.14 प्रसंस्कृत तैयार खाद्य पदार्थ	0.024	126.3	127.6	124.7	125.9	126.2
1.3.1.15 स्वास्थ्य पूरक	0.225	143.2	140.7	142.2	142.2	142.2
1.3.1.16 पशु के लिए तैयार खाद्य	0.356	165.4	162.9	159.9	157.5	157.5
1.3.2 पेय पदार्थों का विनिर्माण	0.909	116.1	115.5	116.9	117.1	117.2
1.3.2.1 शराब और स्पिरिट	0.408	113.3	111.8	114.1	114.3	114.4
1.3.2.2 माल्ट लिकर और माल्ट	0.225	114.2	112.4	115.0	115.6	115.6
1.3.2.3 शीतल पेय,मिनरल वॉटर और बोतलबन्द पानी के अन्य उत्पाद	0.275	121.7	123.5	122.7	122.6	122.8
1.3.3 विनिर्मित तंबाकू उत्पाद	0.514	141.9	142.7	141.1	145.9	145.7
1.3.3.1 तंबाकू के उत्पाद	0.514	141.9	142.7	141.1	145.9	145.7
1.3.4 वस्त्र विनिर्माण	4.881	111.2	109.5	112.0	113.1	113.3
1.3.4.1 धागों की कटाई और वस्त्र तैयार करना	2.582	103.2	100.1	104.8	106.3	106.6
1.3.4.2 बुनाई और तैयार वस्त्र	1.509	120.9	121.3	119.7	120.5	120.7
1.3.4.3 बुने हुए और क्रॉचिडेट फेब्रिक्स	0.193	107.1	107.4	108.5	108.6	108.6
1.3.4.4 कपड़ों को छोड़कर निर्मित वस्त्र लेख	0.299	121.7	119.6	123.4	123.6	123.7
1.3.4.5 डोरियाँ, रस्ती और नेटिंग	0.098	143.1	142.3	145.1	146.7	146.7
1.3.4.6 अन्य वस्त्र	0.201	112.9	112.1	116.2	117.3	116.8
1.3.5 विनिर्मित तैयार वस्त्र	0.814	131.1	127.0	132.1	133.3	134.1
1.3.5.1 फर से बने वस्त्रों को छोड़कर वुलन के तैयार वस्त्र	0.593	133.9	131.2	134.9	135.8	136.8
1.3.5.2 बुने हुए क्रॉचिडेट वस्त्र	0.221	123.4	116.0	124.6	126.5	126.7

सं. 21: थोक मूल्य सूचकांक (जारी)
(आधार: 2011-12=100)

पण्य	भारांक	2016-17	2016	2017			
		1	2	अप्रै.	फर.	मार्च (अ)	अप्रै.(अ)
				3	4	5	6
1.3.6 चमड़ा और उससे बने हुए उत्पाद	0.535	122.6	123.7	120.4	120.0	120.2	
1.3.6.1 चमड़ेकी टैनिंग और ड्रेसिंग; ड्रेसिंग और फर की रंगायी	0.142	120.0	122.3	116.6	118.0	118.0	
1.3.6.2 सामान, हैंडबैग, काठी और दोहन	0.075	132.2	132.0	131.1	129.4	129.6	
1.3.6.3 जूते-चप्पल	0.318	121.4	122.4	119.5	118.6	119.0	
1.3.7 लकड़ी के विनिर्माण और लकड़ी और कॉर्क के उत्पाद	0.772	129.9	129.8	130.7	130.9	131.3	
1.3.7.1 आरा मिलिंग और लकड़ी के उत्पाद	0.124	122.9	121.8	122.6	122.2	122.0	
1.3.7.2 विनियर शीट, प्लायवुड का विनिर्माण, लॅमिन बोर्ड, पार्टिकल बोर्ड और अन्य पॅनल बोर्ड	0.493	127.4	127.8	128.2	129.2	129.8	
1.3.7.3 बिल्डरों की बढ़ईगीरी	0.036	153.8	143.2	159.4	159.5	160.5	
1.3.7.4 लकड़ी के डिब्बे	0.119	140.3	142.5	140.6	138.4	138.4	
1.3.8 कागज़ और कागज़ के उत्पाद	1.113	113.6	112.3	114.6	115.6	115.6	
1.3.8.1 लुगदी, कागज़ और कागज़ बोर्ड	0.493	117.7	116.5	119.8	121.1	121.3	
1.3.8.2 लहरदार कागज़ और पेपर बोर्ड और कागज़ के पात्र और पेपर बोर्ड	0.314	114.8	112.3	114.1	114.4	114.4	
1.3.8.3 कागज़ की अन्य सामग्री और पेपर बोर्ड	0.306	105.9	105.6	106.6	107.7	107.7	
1.3.9 मुद्रण और रिकार्ड मीडिया का पुनरुत्पादन	0.676	141.0	139.3	143.1	143.3	142.7	
1.3.9.1 मुद्रण	0.676	141.0	139.3	143.1	143.3	142.7	
1.3.10 रसायन और रासायनिक उत्पाद का विनिर्माण	6.465	111.0	111.5	111.3	111.6	111.4	
1.3.10.1 मूल रसायन	1.433	104.6	103.9	106.2	106.4	106.3	
1.3.10.2 उर्वरक और नाइट्रोजन यौगिक	1.485	118.7	121.3	116.7	116.7	116.8	
1.3.10.3 प्लास्टिक और सिंथेटिक रबड़ प्राथमिक रूप में	1.001	113.7	114.7	114.4	114.4	113.4	
1.3.10.4 कीटनाशक और अन्य एगोकेमिकल उत्पाद	0.454	116.8	116.7	117.0	117.4	115.7	
1.3.10.5 पेन्ट, वार्निश और समान कोटिंग, मुद्रण स्याही और मैस्टिक्स	0.491	108.5	108.3	109.1	110.4	111.0	
1.3.10.6 साबुन और डिटरजेंट, सफाई और चमकाने की सामग्री, इत्र और शौचालय सफाई की सामग्री	0.612	113.7	113.5	113.7	114.4	114.5	
1.3.10.7 अन्य रासायनिक उत्पाद	0.692	106.5	105.9	107.3	107.9	107.6	
1.3.10.8 मानव निर्मित फाइबर	0.296	94.1	94.3	98.3	97.6	97.7	
1.3.11 फार्मास्यूटिकल्स, औषधीय रसायन और वनस्पति उत्पाद का विनिर्माण	1.993	119.7	118.4	121.1	120.9	121.0	
1.3.11.1 फार्मास्यूटिकल्स, औषधीय रसायन और वनस्पति उत्पाद	1.993	119.7	118.4	121.1	120.9	121.0	
1.3.12 रबड़ और प्लास्टिक उत्पाद का विनिर्माण	2.299	107.5	107.4	108.8	108.7	108.7	
1.3.12.1 रबड़ टायर और ट्यूब, रबड़ टायर की रिट्रीडिंग और पुनर्निर्माण	0.609	101.4	100.4	102.8	103.4	103.4	
1.3.12.2 रबड़ के अन्य उत्पाद	0.272	90.5	89.5	92.3	91.6	91.4	
1.3.12.3 प्लास्टिक उत्पाद	1.418	113.3	113.9	114.6	114.2	114.4	
1.3.13 अन्य अधात्विक खनिज उत्पादों का विनिर्माण	3.202	109.8	109.2	108.9	109.2	109.3	
1.3.13.1 कांच और कांच उत्पाद	0.295	116.6	116.7	116.7	116.8	116.7	
1.3.13.2 आग रोधक उत्पाद	0.223	116.1	113.1	114.3	116.5	116.8	
1.3.13.3 मिट्टी से बनी भवन निर्माण सामग्री	0.121	94.3	101.8	88.4	92.5	92.7	
1.3.13.4 चीनी मिट्टी के बर्तन और चीनी मिट्टी	0.222	111.8	111.4	112.0	112.7	112.7	
1.3.13.5 सीमेन्ट, चूना और प्लास्टर	1.645	110.6	108.9	109.3	109.3	109.5	
1.3.13.6 कंक्रीट, सीमेन्ट और प्लास्टर से बनी वस्तुएं	0.292	115.4	115.5	116.8	116.8	115.9	
1.3.13.7 पत्थरों को काटना, आकार देना और संवारना	0.234	117.3	115.0	117.8	116.8	116.9	
1.3.13.8 अन्य अधात्विक खनिज उत्पाद	0.169	70.9	77.1	68.8	69.5	69.5	
1.3.14 मूल धातुओं का विनिर्माण	9.646	91.1	89.9	93.7	94.8	94.9	
1.3.14.1 स्टील तैयार करने में प्रयुक्त सामग्री	1.411	82.9	81.4	88.1	88.2	88.2	
1.3.14.2 मेटलिक आयरन	0.653	79.2	78.1	82.6	83.5	83.5	
1.3.14.3 नरम इस्पात-अर्ध निर्मित इस्पात	1.274	89.8	91.2	89.2	90.0	90.0	
1.3.14.4 नरम इस्पात- लंबे उत्पाद	1.081	85.2	86.0	87.1	88.4	88.7	
1.3.14.5 नरम इस्पात- चपटे उत्पाद	1.144	89.0	87.6	91.4	92.3	92.3	
1.3.14.6 स्टेनलेस स्टील के अतिरिक्त एलॉय स्टील-आकार	0.067	85.6	88.5	90.8	93.2	92.8	
1.3.14.7 स्टेनलेस स्टील अर्ध निर्मित	0.924	84.1	79.4	86.9	90.9	91.2	
1.3.14.8 पाइप और ट्यूब	0.205	108.1	104.4	112.0	112.0	111.6	
1.3.14.9 कीमती धातु सहित अलौह धातु	1.693	100.1	97.9	104.8	104.8	104.5	
1.3.14.10 कास्टिंग	0.925	102.4	101.5	102.0	105.1	105.6	
1.3.14.11 स्टील से गढ़ी वस्तुएं	0.271	118.2	118.0	117.5	118.0	118.0	
1.3.15 मशीनरी और उपकरणों को छोड़कर गढ़े हुए धातु उत्पादों का विनिर्माण	3.155	105.0	103.7	107.6	107.5	106.9	
1.3.15.1 इमारती धातु उत्पाद	1.031	102.2	102.7	105.2	101.9	101.7	
1.3.15.2 धातु से बने टैंक, जलाशय और डिब्बे	0.660	109.2	106.9	116.3	119.6	119.8	
1.3.15.3 बाष्प चालित जनरेटर, सेंट्रल हीटिंग हॉट वाटर बॉयलर्स को छोड़कर	0.145	108.5	108.2	105.5	105.5	105.5	
1.3.15.4 धातु की फोर्जिंग, दबाना, रोल बनाना, स्टाम्प लगाना, पाउडर धातु विज्ञान	0.383	94.7	94.9	91.7	93.0	89.5	
1.3.15.5 कटलरी, हस्त चालित उपकरण और सामान्य हार्डवेयर	0.208	111.5	108.1	114.4	114.5	113.3	
1.3.15.6 अन्य गढ़े हुए धातु उत्पाद	0.728	108.1	104.9	110.1	110.4	110.3	
1.3.16 कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक और ऑप्टिकल उत्पादों का विनिर्माण	2.009	108.4	107.4	108.8	108.4	108.5	
1.3.16.1 इलेक्ट्रॉनिक पुरजे	0.402	106.8	105.3	106.0	106.4	106.6	
1.3.16.2 कंप्यूटर और संबंधित उपकरण	0.336	127.3	127.3	127.3	127.3	127.3	

सं. 21: थोक मूल्य सूचकांक (समाप्त)
(आधार: 2011-12=100)

पण्य	भारत	2016-17	2016		2017	
			अप्रै.	फर.	मार्च (अ)	अप्रै.(अ)
			1	2	3	4
1.3.16.3 संचार उपकरण	0.310	104.1	104.1	104.1	104.1	104.1
1.3.16.4 उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स	0.641	100.0	99.7	100.8	99.8	99.8
1.3.16.5 मापने, जांचने, नेविगेशन और नियंत्रण उपकरण	0.181	103.1	101.5	106.1	103.7	103.7
1.3.16.6 हाथ घड़ी और दीवार घड़ी	0.076	137.9	126.8	140.6	140.6	142.0
1.3.16.7 विभासन, विद्युत चिकित्सकीय एवं विद्युत उपचारात्मक उपकरण	0.055	104.3	105.4	102.8	102.8	102.8
1.3.16.8 ऑप्टिकल उपकरण और फोटोग्राफिक उपकरण	0.008	96.6	98.3	95.7	96.3	99.1
1.3.17 इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का विनिर्माण	2.930	108.2	108.6	108.0	108.4	108.5
1.3.17.1 विद्युत मोटर्स, जनरेटर, ट्रांसफार्मर और बिजली वितरण और नियंत्रण संबंधी उपकरण	1.298	105.0	105.6	104.9	104.7	104.7
1.3.17.2 बैटरी और एन्युम्युलेटर	0.236	120.5	121.7	121.3	121.5	122.1
1.3.17.3 डेटा संचरण या छवियों के सजीव प्रसारण के लिए फाइबर ऑप्टिक केबल	0.133	118.8	118.5	117.2	116.2	116.2
1.3.17.4 अन्य इलेक्ट्रॉनिक और बिजली के वायर और केबल	0.428	99.7	99.9	101.8	102.0	101.9
1.3.17.5 वायरिंग संबंधी चीजें और बिजली के प्रकाश और सजावट के उपकरण	0.263	108.8	110.0	105.8	110.6	110.9
1.3.17.6 घरेलू उपकरण	0.366	119.4	118.8	118.8	118.8	118.7
1.3.17.7 अन्य इलेक्ट्रिकल उपकरण	0.206	104.4	104.5	103.0	103.9	103.9
1.3.18 मशीनरी और उपकरणों का विनिर्माण	4.789	107.9	107.8	108.2	108.3	108.4
1.3.18.1 इंजन और टर्बाइन, एयरक्राफ्ट, वाहन और दुपहिया वाहनों के इंजन को छोड़कर	0.638	104.1	104.8	103.7	103.8	104.2
1.3.18.2 तरल बिजली उपकरण	0.162	114.3	114.0	113.9	114.8	114.8
1.3.18.3 अन्य पंप, कंप्रेसर, नल और वाल्व	0.552	106.4	106.1	106.4	104.5	104.5
1.3.18.4 बेयरिंग, गियर्स, गेयरिंग और ड्राइविंग उपकरण	0.340	104.4	104.1	105.3	105.4	105.4
1.3.18.5 ओवन, फर्नेस और फर्नेस बर्नर भट्टियां	0.008	77.8	83.7	74.9	74.9	74.9
1.3.18.6 माल उठाने एवं चढ़ाने -उतारने वाले उपकरण	0.285	103.2	102.9	104.3	105.4	105.4
1.3.18.7 कार्यालय मशीनरी और उपकरण	0.006	130.2	130.2	130.2	130.2	130.2
1.3.18.8 सामान्य प्रयोजन के अन्य उपकरण	0.437	124.9	123.1	125.7	126.1	125.6
1.3.18.9 कृषि और वानिकी मशीनरी	0.833	112.4	112.6	112.2	112.9	112.9
1.3.18.10 धातु निर्माण करनेवाली मशीनरी और मशीन टूल्स	0.224	100.2	101.8	102.5	101.2	101.2
1.3.18.11 खनन, उत्खनन और निर्माण के लिए मशीनरी	0.371	79.6	83.0	76.8	77.5	77.5
1.3.18.12 खाद्य, पेय और तंबाकू प्रसंस्करण के लिए मशीनरी	0.228	116.9	114.3	122.1	122.6	123.9
1.3.18.13 कपड़ा, परिधान और चमड़े के उत्पादन से जुड़ी मशीनरी	0.192	116.1	113.7	115.9	115.9	115.9
1.3.18.14 अन्य विशेष प्रयोजनों के लिए मशीनरी	0.468	115.8	114.9	116.7	117.0	117.5
1.3.18.15 अक्षय ऊर्जा उत्पादन मशीनरी	0.046	73.7	75.7	72.4	72.6	71.7
1.3.19 मोटर वाहन, ट्रेलरों और अर्ध-ट्रेलरों का विनिर्माण	4.969	110.4	110.1	110.2	110.6	110.6
1.3.19.1 मोटर वाहन	2.600	113.4	112.9	113.3	113.5	113.4
1.3.19.2 मोटर वाहन पुरजे और सहायक उपकरण	2.368	107.2	107.1	106.9	107.5	107.6
1.3.20 अन्य परिवहन उपकरणों का विनिर्माण	1.648	107.7	104.1	109.7	109.9	108.1
1.3.20.1 जहाजों और तैरने वाली वस्तुओं का निर्माण	0.117	158.7	158.6	158.8	158.7	158.7
1.3.20.2 रेलवे इंजन और रोलिंग स्टॉक	0.110	100.6	95.6	102.6	103.8	103.8
1.3.20.3 मोटर साइकल	1.302	102.8	98.9	104.9	105.1	102.8
1.3.20.4 साइकल और अवैध गाड़ी	0.117	117.9	115.1	120.2	120.2	120.2
1.3.20.5 अन्य परिवहन उपकरण	0.002	116.5	113.8	118.9	119.4	119.8
1.3.21 फर्नीचर का विनिर्माण	0.727	114.2	112.2	115.9	117.1	117.3
1.3.21.1 फर्नीचर	0.727	114.2	112.2	115.9	117.1	117.3
1.3.22 अन्य विनिर्माण	1.064	119.7	113.8	114.1	115.1	115.1
1.3.22.1 आभूषण और संबंधित सामग्री	0.996	118.4	112.0	112.9	113.7	113.7
1.3.22.2 संगीत उपकरण	0.001	158.0	166.2	150.5	149.4	149.4
1.3.22.3 खेल के सामान	0.012	124.7	119.7	126.6	126.2	126.8
1.3.22.4 खेल और खिलौने	0.005	125.2	125.3	127.2	127.2	127.2
1.3.22.5 चिकित्सा और दंत चिकित्सा उपकरण और सामग्री	0.049	143.3	147.3	134.9	138.5	138.5
2 खाद्य सूचकांक	24.378	134.8	131.1	133.4	134.3	134.9

स्रोत: आर्थिक सलाहकार का कार्यालय, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार।

सं. 22: औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आधार: 2011-12=100)

उद्योग	भारंक	2015-16	2016-17	मार्च	
				2016	2017
	1	2	3	4	5
सामान्य सूचकांक	100.00	114.9	120.7	128.0	131.5
1 क्षेत्रवार वर्गीकरण					
1.1 खनन और उत्खनन	14.37	97.3	102.5	116.0	127.2
1.2 विनिर्माण	77.63	116.2	121.9	129.1	130.6
1.3 बिजली	7.99	133.8	141.6	139.3	147.9
2 उपयोग आधारित वर्गीकरण					
2.1 मूल वस्तुएं	34.05	112.0	117.5	125.2	132.3
2.2 पूंजीगत माल	8.22	98.0	99.9	122.4	121.2
2.3 मध्यवर्ती माल	17.22	118.4	121.9	130.2	128.4
2.4 बुनियादी ढांचा/निर्माण माल	12.34	120.3	124.9	134.1	135.2
2.5 उपभोक्ता टिकाऊ माल	12.84	120.3	127.7	132.4	131.4
2.6 उपभोक्ता गैर-टिकाऊ माल	15.33	117.6	128.2	126.4	136.0

स्रोत : केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार।

सरकारी खाते और खज़ाना बिल

सं. 23: केन्द्र सरकार के खाते - एक नज़र में

(राशि बिलियन ₹ में)

मद	2017-18			2016-17		
	बजट अनुमान	अप्रैल 2017		अंतिम खाते	संशोधित अनुमान	संशोधित अनुमान के प्रतिशत में अंतिम खाते
		वास्तविक	बजट अनुमान का प्रतिशत			
	1	2	3	4	5	6
1 राजस्व प्राप्तियां	15,157.7	350.8	2.3	13762.8	14,235.6	96.7
1.1 कर राजस्व (निवल)	12,270.1	230.3	1.9	11020.6	10,887.9	101.2
1.2 करेतर राजस्व	2,887.6	120.5	4.2	2742.2	3,347.7	81.9
2 पूंजीगत प्राप्तियां	6,309.6	2,070.7	32.8	5985.7	5,908.5	101.3
2.1 ऋण की वसूली	119.3	2.6	2.1	157.6	110.7	142.3
2.2 अन्य प्राप्तियां	725.0	11.9	1.6	477.5	455.0	104.9
2.3 उधारियां और अन्य देयताएं	5,465.3	2,056.2	37.6	5350.7	5,342.7	100.1
3 कुल प्राप्तियां (1+2)	21,467.4	2,421.5	11.3	19748.6	20,144.1	98.0
4 राजस्व व्यय	18,369.3	2,134.6	11.6	16845.6	17,345.6	97.1
4.1 व्याज भुगतान	5,230.8	194.2	3.7	4805.2	4,830.7	99.5
5 पूंजी व्यय	3,098.0	286.9	9.3	2903.0	2,798.5	103.7
6 कुल व्यय (4+5)	21,467.4	2,421.5	11.3	19748.6	20,144.1	98.0
7 राजस्व घाटा (4-1)	3,217.3	1,783.8	55.4	3082.7	3,110.0	99.1
8 राजकोषीय घाटा {6-(1+2.1+2.2)}	5,465.3	2,056.2	37.6	5350.7	5,342.7	100.1
9 सकल प्राथमिक घाटा [8-4.1]	234.5	1,862.0	793.9	545.5	512.1	106.5

स्रोत : महालेखानियंत्रक, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार।

सं. 24: खज़ाना बिल - स्वामित्व का स्वरूप

(बिलियन ₹)

मद	2016-17	2016	2017					
		अप्रै. 29	मार्च 24	मार्च 31	अप्रै. 7	अप्रै. 14	अप्रै. 21	अप्रै. 28
	1	2	3	4	5	6	7	8
1 91-दिवसीय								
1.1 बैंक	323.7	471.1	272.9	323.7	354.6	372.8	360.9	354.9
1.2 प्राथमिक व्यापारी	243.5	345.9	202.0	243.5	195.8	185.1	172.3	167.0
1.3 राज्य सरकारें	146.2	452.1	247.5	146.2	171.2	296.2	381.2	331.2
1.4 अन्य	343.4	297.6	453.3	343.4	377.0	390.2	434.8	460.5
2 182-दिवसीय								
2.1 बैंक	216.2	243.6	267.0	216.2	278.6	281.9	313.1	303.2
2.2 प्राथमिक व्यापारी	316.5	347.4	271.2	316.5	251.0	194.1	204.1	181.6
2.3 राज्य सरकारें	193.6	55.7	193.6	193.6	220.9	220.9	220.9	220.9
2.4 अन्य	120.9	128.1	115.4	120.9	121.3	174.5	132.9	165.3
3 364-दिवसीय								
3.1 बैंक	512.3	426.4	637.3	512.3	627.4	599.9	631.8	551.8
3.2 प्राथमिक व्यापारी	551.8	650.6	478.7	551.8	459.2	414.4	450.0	481.0
3.3 राज्य सरकारें	26.3	19.6	26.9	26.3	26.3	25.2	25.2	25.2
3.4 अन्य	326.4	383.1	293.9	326.4	299.6	373.0	304.8	353.9
4 14-दिवसीय मध्यवर्ती								
4.1 बैंक	—	—	—	—	—	—	—	—
4.2 प्राथमिक व्यापारी	—	—	—	—	—	—	—	—
4.3 राज्य सरकारें	1,560.6	1,071.4	1,793.2	1,560.6	1,604.7	1,428.7	1,373.3	1,520.5
4.4 अन्य	5.1	7.8	7.1	5.1	6.5	8.5	12.7	13.2
कुल खज़ाना बिल								
(14 दिवसीय मध्यवर्ती खज़ाना बिल को छोड़कर)	3,320.8	3,821.4	3,459.8	3,320.8	3,383.0	3,528.1	3,632.1	3,596.5

14 दिवसीय मध्यवर्ती खज़ाना बिल बिक्री योग्य नहीं हैं, ये बिल 91 दिवसीय, 182 दिवसीय और 364 दिवसीय खज़ाना बिलों जैसे नहीं हैं। यह बिल स्वरूप के अनुसार मध्यवर्ती हैं क्योंकि राज्य सरकारों के दैनिक न्यूनतम नकदी शेष में कमी को पूरा करने के लिए परिसमाप्त किए जाते हैं।

सं. 25: खज़ाना बिलों की नीलामी

(राशि बिलियन ₹ में)

नीलामी की तारीख	अधिसूचित राशि	संख्या	प्राप्त बोलियां		स्वीकृत बोलियां			कुल निर्गम (6+7)	कट-ऑफ मूल्य	कट-ऑफ मूल्य पर निहित प्रतिफल (प्रतिशत)
			कुल अंकित मूल्य		संख्या	कुल अंकित मूल्य				
			प्रतियोगी	गैर-प्रतियोगी		प्रतियोगी	गैर-प्रतियोगी			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	
91-दिवसीय खज़ाना बिल										
2016-17										
मार्च 29	60	61	277.72	12.00	26	60.00	12.00	72.00	98.57	5.8189
2017-18										
अप्रै. 5	80	60	358.60	39.61	24	80.00	39.61	119.61	98.56	5.8602
अप्रै. 12	80	84	412.56	125.40	51	80.00	125.40	205.40	98.53	5.9841
अप्रै. 19	80	80	758.31	95.52	54	80.00	95.52	175.52	98.50	6.1081
अप्रै. 26	80	70	653.92	75.50	38	80.00	75.50	155.50	98.48	6.1908
182-दिवसीय खज़ाना बिल										
2016-17										
मार्च 22	40	63	163.86	15.47	20	40.00	15.47	55.47	97.07	6.0535
2017-18										
अप्रै. 5	60	58	161.01	27.26	34	60.00	27.26	87.26	97.01	6.1812
अप्रै. 19	60	82	283.05	0.02	44	60.00	0.02	60.02	96.95	6.3092
364-दिवसीय खज़ाना बिल										
2016-17										
मार्च 15	40	63	138.73	—	31	40.00	—	40.00	94.19	6.1853
मार्च 29	40	48	86.67	0.02	30	40.00	0.02	40.02	94.23	6.1401
2017-18										
अप्रै. 12	60	88	227.52	—	53	60.00	—	60.00	94.16	6.2192
अप्रै. 26	60	92	276.33	—	41	60.00	—	60.00	93.96	6.4459

वित्तीय बाजार

सं. 26: दैनिक मांग मुद्रा दरें

(वार्षिक प्रतिशत)

स्थिति के अनुसार	दरों का दायरा		भारित औसत दरें
	उधार लेना/उधार देना		उधार लेना/उधार देना
	1		2
अप्रैल	3, 2017	4.05-6.25	5.79
अप्रैल	5, 2017	5.00-6.10	5.80
अप्रैल	6, 2017	3.85-6.15	5.85
अप्रैल	7, 2017	3.80-6.20	5.92
अप्रैल	10, 2017	3.75-6.15	5.93
अप्रैल	11, 2017	3.75-6.15	5.95
अप्रैल	12, 2017	3.50-6.25	5.92
अप्रैल	13, 2017	3.50-6.20	5.94
अप्रैल	15, 2017	4.60-6.10	5.71
अप्रैल	17, 2017	3.50-6.25	5.97
अप्रैल	18, 2017	3.50-6.25	5.94
अप्रैल	19, 2017	3.50-6.25	5.97
अप्रैल	20, 2017	3.50-6.20	5.91
अप्रैल	21, 2017	3.50-6.20	5.93
अप्रैल	24, 2017	3.50-6.30	5.99
अप्रैल	25, 2017	3.50-6.30	6.02
अप्रैल	26, 2017	3.50-6.25	5.99
अप्रैल	27, 2017	3.50-6.25	5.98
अप्रैल	28, 2017	3.50-6.25	6.02
अप्रैल	29, 2017	4.60-6.25	6.10
मई	2, 2017	3.50-6.25	5.99
मई	3, 2017	3.50-6.25	5.99
मई	4, 2017	3.50-6.25	5.98
मई	5, 2017	3.50-6.25	5.98
मई	6, 2017	4.60-6.20	5.90
मई	8, 2017	3.50-6.40	6.08
मई	9, 2017	3.50-6.30	6.08
मई	11, 2017	3.50-6.25	6.01
मई	12, 2017	3.50-6.25	6.11
मई	15, 2017	3.50-6.40	6.05

टिप्पणी: नोटिस मुद्रा सहित

सं. 27: जमा प्रमाण-पत्र

मद	2016		2017		
	अप्रै. 29	मार्च 17	मार्च 31	अप्रै. 14	अप्रै. 28
	1	2	3	4	5
1 बकाया राशि (बिलियन ₹)	2,541.3	1,388.3	1,557.4	1,830.9	1,723.1
1.1 पखवाड़े के दौरान जारी (बिलियन ₹)	206.6	240.9	246.0	302.7	48.9
2 ब्याज दर (प्रतिशत)	7.10-7.80	6.16-6.68	6.21-6.70	6.00-6.72	6.10-6.72

सं. 28: वाणिज्यिक पत्र

मद	2016		2017		
	अप्रै. 30	मार्च 15	मार्च 31	अप्रै. 15	अप्रै. 30
	1	2	3	4	5
1 बकाया राशि (बिलियन ₹)	3,356.8	4,590.5	3,979.7	4,367.4	4,399.8
1.1 पखवाड़े के दौरान रिपोर्ट किए गए (बिलियन ₹)	564.6	1,500.2	1,094.1	644.8	655.2
2 ब्याज दर (प्रतिशत)	6.88-13.23	5.90-14.92	5.99-13.33	5.90-11.97	5.99-11.97

सं. 29: चुनिंदा वित्तीय बाजारों में औसत दैनिक टर्नओवर

(बिलियन ₹)

मद	2016-17	2016		2017					
		अप्रै. 29	मार्च 24	मार्च 31	अप्रै. 7	अप्रै. 14	अप्रै. 21	अप्रै. 28	
	1	2	3	4	5	6	7	8	
1 मांग मुद्रा	259.0	317.3	258.4	338.7	355.6	250.8	270.0	222.6	
2 नोटिस मुद्रा	46.8	110.4	5.7	21.0	18.7	110.3	6.2	64.8	
3 मीयादी मुद्रा	8.4	8.8	6.2	9.7	18.2	8.3	7.0	6.7	
4 सीबीएलओ	1,700.2	1,386.8	2,721.7	2,229.6	2,505.7	2,174.0	2,064.6	2,194.9	
5 बाजार रिपो	1,753.3	1,702.8	1,343.3	2,384.7	1,428.4	1,965.2	1,462.1	2,030.9	
6 कार्पोरेट बांड में रिपो	2.5	0.8	12.1	5.0	2.6	6.6	2.5	4.5	
7 फोरेक्स (यूएस मिलियन डॉलर)	55,345	68,409	58,787	88,386	64,369	56,900	54,793	64,279	
8 भारत सरकार की दिनांकित प्रतिभूतियां	1,249.1	1,034.0	734.6	783.5	756.5	726.5	698.1	714.3	
9 राज्य सरकारों की प्रतिभूतियां	50.7	25.5	96.9	73.0	58.1	44.6	42.1	47.8	
10 खज़ाना बिल									
10.1 91-दिवसीय	45.1	38.0	34.4	86.2	50.7	22.5	26.9	24.2	
10.2 182-दिवसीय	11.8	13.5	8.3	9.9	12.4	10.9	12.8	4.4	
10.3 364-दिवसीय	18.5	30.3	20.3	16.4	12.3	19.8	4.0	8.6	
10.4 नकदी प्रबंधन बिल	13.8	-	-	-	-	-	-	21.4	
11 कुल सरकारी प्रतिभूतियां (8+9+10)	1388.8	1,141.5	894.5	969.0	890.0	824.4	784.0	820.8	
11.1 भारतीय रिज़र्व बैंक	-	30.3	7.9	3.0	0.0	0.8	7.3	2.5	

सं. 30: गैर-सरकारी पब्लिक लिमिटेड कंपनियों के नए पूंजी निर्गम

(राशि बिलियन ₹ में)

प्रतिभूति और निर्गम का प्रकार	2016-17 *		2016-17 (अप्रै.-अप्रै.)		2017-18 (अप्रै.)*		अप्रै. 2016		अप्रै. 2017*	
	निर्गमों की संख्या	राशि	निर्गमों की संख्या	राशि	निर्गमों की संख्या	राशि	निर्गमों की संख्या	राशि	निर्गमों की संख्या	राशि
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1 इक्विटी शेयर	116	303.6	5	35.7	11	12.3	5	35.7	11	12.3
1ए प्रीमियम	113	291.3	4	33.2	11	11.8	4	33.2	11	11.8
1.1 पब्लिक	105	280.7	5	35.7	9	8.6	5	35.7	9	8.6
1.1.1 प्रीमियम	102	270.4	4	33.2	9	8.4	4	33.2	9	8.4
1.2 राइट्स	11	22.9	-	-	2	3.7	-	-	2	3.7
1.2.1 प्रीमियम	11	20.9	-	-	2	3.4	-	-	2	3.4
2 अधिमान शेयर	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
2.1 पब्लिक	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
2.2 राइट्स	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
3 डिबेंचर	16	295.6	2	6.6	1	19.7	2	6.6	1	19.7
3.1 परिवर्तनीय	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
3.1.1 पब्लिक	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
3.1.2 राइट्स	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
3.2 अपरिवर्तनीय	16	295.6	2	6.6	1	19.7	2	6.6	1	19.7
3.1.1 पब्लिक	16	295.6	2	6.6	1	19.7	2	6.6	1	19.7
3.1.2 राइट्स	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
4 बांड	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
4.1 पब्लिक	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
4.2 राइट्स	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
5 कुल (1+2+3+4)	132	599.2	7	42.4	12	32.0	7	42.4	12	32.0
5.1 पब्लिक	121	576.2	7	42.4	10	28.3	7	42.4	10	28.3
5.2 राइट्स	11	22.9	-	-	2	3.7	-	-	2	3.7

* आंकड़े अनंतिम हैं।

स्रोत: भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी)

बाह्य क्षेत्र

सं. 31: विदेशी व्यापार

मद	इकाई	2016-17	2016		2017			
			अप्रै.	दिसं.	जन.	फर.	मार्च	अप्रै.
		1	2	3	4	5	6	7
1 निर्यात	बिलियन ₹	18,541.0	1,388.6	1,632.2	1,517.2	1,713.3	1,919.9	1,589.1
	अमरीकी मिलियन डालर	276,547.0	20,891.2	24,037.5	22,285.6	25,543.5	29,144.5	24,635.1
1.1 तेल	बिलियन ₹	2,120.3	138.9	195.7	186.9	171.0	245.0	190.0
	अमरीकी मिलियन डालर	31,622.3	2,089.5	2,882.4	2,744.7	2,549.6	3,718.4	2,954.0
1.2 तेल से इतर	बिलियन ₹	16,420.7	1,249.7	1,436.4	1,330.4	1,542.3	1,675.0	1,399.2
	अमरीकी मिलियन डालर	244,924.7	18,801.7	21,155.1	19,540.9	22,993.9	25,426.1	21,681.1
2 आयात	बिलियन ₹	25,668.2	1,715.3	2,342.1	2,173.4	2,229.0	2,613.3	2,443.8
	अमरीकी मिलियन डालर	382,740.9	25,805.6	34,493.5	31,924.3	33,231.4	39,668.9	37,884.3
2.1 तेल	बिलियन ₹	5,825.6	379.9	519.9	555.8	516.7	639.9	474.7
	अमरीकी मिलियन डालर	86,865.7	5,716.1	7,656.2	8,164.5	7,703.3	9,714.0	7,359.3
2.2 तेल से इतर	बिलियन ₹	19,842.6	1,335.3	1,822.3	1,617.6	1,712.3	1,973.3	1,969.1
	अमरीकी मिलियन डालर	295,875.2	20,089.5	26,837.3	23,759.7	25,528.1	29,954.9	30,525.0
3 व्यापार शेष	बिलियन ₹	-7,127.2	-326.7	-710.0	-656.2	-515.7	-693.3	-854.7
	अमरीकी मिलियन डालर	-106,193.9	-4,914.4	-10,455.9	-9,638.7	-7,687.9	-10,524.4	-13,249.2
3.1 तेल	बिलियन ₹	-3,705.4	-241.1	-324.1	-369.0	-345.7	-395.0	-284.7
	अमरीकी मिलियन डालर	-55,243.4	-3,626.6	-4,773.8	-5,419.9	-5,153.7	-5,995.6	-4,405.2
3.2 तेल से इतर	बिलियन ₹	-3,421.9	-85.6	-385.8	-287.2	-170.0	-298.3	-569.9
	अमरीकी मिलियन डालर	-50,950.6	-1,287.9	-5,682.2	-4,218.8	-2,534.2	-4,528.8	-8,844.0

स्रोत: वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय तथा वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय।

सं. 32: विदेशी मुद्रा भंडार

मद	इकाई	2016	2017					
		मई 27	अप्रै. 21	अप्रै. 28	मई 5	मई 12	मई 19	मई 26
		1	2	3	4	5	6	7
1 कुल भंडार	बिलियन ₹	24,021	23,965	23,944	24,156	24,126	24,630	24,453
	अमरीकी मिलियन डालर	360,194	371,138	372,732	375,718	375,274	379,311	378,764
1.1 विदेशी मुद्रा आस्तियां	बिलियन ₹	22,425	22,432	22,411	22,602	22,573	23,072	22,897
	अमरीकी मिलियन डालर	336,227	347,486	349,056	351,530	351,101	355,097	354,542
1.2 स्वर्ण	बिलियन ₹	1,333	1,288	1,288	1,313	1,313	1,313	1,313
	अमरीकी मिलियन डालर	20,043	19,869	19,869	20,439	20,439	20,439	20,439
1.3 एसडीआर	बिलियन ₹	1,066	1,065	1,065	1,065	1,065	1,064	1,064
	अमरीकी मिलियन डालर	101	94	94	94	94	96	95
1.4 आईएमएफ में आरक्षित भाग की स्थिति	बिलियन ₹	1,498	1,452	1,460	1,460	1,454	1,469	1,472
	अमरीकी मिलियन डालर	163	151	151	147	147	150	149
	अमरीकी मिलियन डालर	2,425	2,331	2,347	2,289	2,280	2,305	2,310

सं. 33: अनिवासी भारतीयों की जमा राशियां

(मिलियन अमरीकी डालर)

योजना	बकाया				प्रवाह	
	2016-17	2016	2017		2016-17	2017-18
		अप्रै.	मार्च	अप्रै.	अप्रै.	अप्रै.
	1	2	3	4	5	6
1 एनआरआई जमा राशियां	116,867	127,079	116,867	117,217	377	-575
1.1 एफसीएनआर (बी)	21,002	45,468	21,002	21,054	152	52
1.2 एनआर (ई) आरए	83,213	71,548	83,213	83,654	279	-363
1.3 एनआरओ	12,652	10,063	12,652	12,509	-54	-264

सं. 34: विदेशी निवेश अंतर्वाह

(मिलियन अमरीकी डालर)

मद	2016-17	2016-17	2017-18	2016	2017	
		अप्रै.	अप्रै.	अप्रै.	मार्च	अप्रै.
	1	2	3	4	5	6
1.1 निवल विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (1.1.1-1.1.2)	34,981	1,230	3,100	1,230	596	3,100
1.1.1 भारत में प्रत्यक्ष निवेश (1.1.1.1-1.1.2)	41,956	2,794	3,581	2,794	3,084	3,581
1.1.1.1 सकल अंतर्वाह/सकल निवेश	59,961	4,745	4,648	4,745	4,151	4,648
1.1.1.1.1 ईक्विटी	44,705	3,456	3,323	3,456	2,560	3,323
1.1.1.1.1.1 सरकारी (एसआईए/एफआईपीबी)	5,900	453	36	453	82	36
1.1.1.1.1.2 भारतीय रिज़र्व बैंक	30,417	1,154	2,521	1,154	1,585	2,521
1.1.1.1.1.3 शेयरों की अधिप्राप्ति	7,161	1,755	671	1,755	782	671
1.1.1.1.1.4 अनिगमित निकायों की ईक्विटी पूंजी	1,227	95	95	95	112	95
1.1.1.1.2 पुनर्निवेशित आय	12,176	1,054	1,054	1,054	1,033	1,054
1.1.1.1.3 अन्य पूंजी	3,079	234	270	234	558	270
1.1.1.2 प्रत्यावर्तन / विनिवेश	18,005	1,951	1,067	1,951	1,067	1,067
1.1.1.2.1 ईक्विटी	17,318	1,928	939	1,928	939	939
1.1.1.2.2 अन्य पूंजी	687	23	128	23	128	128
1.1.2 भारत द्वारा विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (1.1.2.1+1.1.2.2+ 1.1.2.3-1.1.2.4)	6,974	1,564	480	1,564	2,488	480
1.1.2.1 ईक्विटी पूंजी	9,922	1,497	781	1,497	2,757	781
1.1.2.2 पुनर्निवेशित आय	3,190	278	278	278	278	278
1.1.2.3 अन्य पूंजी	4,444	597	658	597	689	658
1.1.2.4 प्रत्यावर्तन / विनिवेश	10,582	808	1,236	808	1,236	1,236
1.2 निवल संविभागीय निवेश (1.2.1+1.2.2+1.2.3-1.2.4)	6,913	3,429	1,639	3,429	8,021	1,639
1.2.1 जीडीआर/एडीआर	-	-	-	-	-	-
1.2.2 एफआईआई	7,735	3,141	2,653	3,141	9,034	2,653
1.2.3 अपतटीय निधियां और अन्य	-	-	-	-	-	-
1.2.4 भारत द्वारा संविभागीय निवेश	822	-288	1,014	-288	1,014	1,014
1 विदेशी निवेश अंतर्वाह	41,894	4,659	4,740	4,659	8,617	4,740

सं. 35: निवासियों के लिए उदारीकृत विप्रेषण योजना (एलआरएस) के अंतर्गत जावक विप्रेषण

(मिलियन अमरीकी डालर)

मद	2016-17	2016	2017		
		अप्रै.	फर.	मार्च	अप्रै.
	1	2	3	4	5
1 एलआरएस के अंतर्गत जावक विप्रेषण	8,170.7	632.2	570.3	872.3	761.3
1.1 जमाराशियां	283.8	18.6	21.2	66.3	49.0
1.2 अचल संपत्ति की खरीद	92.9	11.7	9.1	10.2	6.7
1.3 इक्विटी / डेट में निवेश	443.6	29.2	27.0	95.6	43.1
1.4 उपहार	749.5	70.5	57.6	87.1	105.3
1.5 दान	8.8	0.5	0.3	2.2	2.5
1.6 यात्रा	2,568.0	182.0	163.2	203.3	200.4
1.7 निकट संबंधियों का रखरखाव	2,169.5	202.3	168.6	267.9	244.8
1.8 चिकित्सा उपचार	17.3	1.5	1.1	2.2	2.2
1.9 विदेश में शिक्षा	1,536.4	68.3	114.5	115.1	90.3
1.10 अन्य	300.8	47.6	7.7	22.3	17.0

सं. 36: भारतीय रुपये का वास्तविक प्रभावी विनिमय दर सूचकांक (रीर) और सांकेतिक प्रभावी विनिमय दर सूचकांक (नीर)

मद	2015-16	2016-17	2016	2017	
			मई	अप्रैल	मई
	1	2	3	4	5
36-मुद्रा निर्यात और व्यापार आधारित भारांक (आधार: 2004-05=100)					
1 व्यापार आधारित भारांक					
1.1 नीर	74.76	74.66	73.37	78.82	78.30
1.2 रीर	112.07	114.50	112.11	120.03	119.24
2 निर्यात आधारित भारांक					
2.1 नीर	76.45	76.39	75.30	80.72	80.12
2.2 रीर	114.44	116.45	114.45	121.82	120.92
6-मुद्रा व्यापार आधारित भारांक					
1 आधार : 2004-05 (अप्रैल-मार्च) =100					
1.1 नीर	67.52	67.17	65.81	70.98	70.44
1.2 रीर	122.71	125.99	123.11	132.67	131.66
2 आधार : 2015-16 (अप्रैल-मार्च) =100					
2.1 नीर	100.00	99.47	97.46	105.11	104.31
2.2 रीर	100.00	102.67	100.33	108.11	107.29

सं. 37: बाह्य वाणिज्यिक उधार पंजीकरण

(राशि अमरीकी मिलियन डालर में)

मद	2016-17	2016	2017	
		अप्रै.	मार्च	अप्रै.
	1	2	3	4
1 स्वचालित मार्ग				
1.1 संख्या	729	45	86	55
1.2 राशि	16,247	303	2,588	1,660
2 अनुमोदन मार्ग				
2.1 संख्या	37	1	1	1
2.2 राशि	5,738	2	759	39
3 कुल (1+2)				
3.1 संख्या	766	46	87	56
3.2 राशि	21,985	305	3,347	1,699
4 भारत औसत परिपक्वता (वर्षों में)	5.30	5.60	5.90	6.20
5 ब्याज दर (प्रतिशत)				
5.1 6 महीने के लिबॉर पर भारत औसत मार्जिन या अस्थिर दर के ऋणों के लिए संदर्भ दर	1.62	2.27	1.92	2.53
5.2 सावधि दर के ऋणों के लिए ब्याज दर की सीमा	0.00-14.75	0.00-13.20	0.00-11.50	0.00-12.00

सं. 38: भारत का समग्र भुगतान संतुलन

(मिलियन अमरीकी डालर)

मद	अक्तू.-दिसं. 2015 (आं.सं)			अक्तू.-दिसं 2016 (प्रा.)		
	जमा	नामे	निवल	जमा	नामे	निवल
	1	2	3	4	5	6
समग्र भुगतान शेष (1+2+3)	237,940	233,883	4,056	268,138	269,380	-1,242
1 चालू खाता (1.1+1.2)	122,575	129,697	-7,121	130,151	138,069	-7,919
1.1 पण्य	64,937	98,913	-33,975	68,755	102,032	-33,277
1.2 अदृश्य मदें (1.2.1+1.2.2+1.2.3)	57,638	30,784	26,854	61,395	36,037	25,358
1.2.1 सेवाएं	37,904	19,891	18,013	42,148	24,508	17,639
1.2.1.1 यात्रा	5,761	3,357	2,404	6,187	3,710	2,476
1.2.1.2 परिवहन	3,310	3,450	-140	3,797	3,268	529
1.2.1.3 बीमा	449	334	115	522	413	109
1.2.1.4 जीएनआईई	147	123	25	176	135	40
1.2.1.5 विविध	28,237	12,627	15,610	31,467	16,981	14,486
1.2.1.5.1 सॉफ्टवेयर सेवाएं	19,195	639	18,556	18,967	945	18,021
1.2.1.5.2 कारोबार सेवाएं	6,667	7,646	-979	8,319	8,067	253
1.2.1.5.3 वित्तीय सेवाएं	958	887	72	1,210	1,624	-414
1.2.1.5.4 संचार सेवाएं	483	223	260	559	231	327
1.2.2 अंतरण	15,936	687	15,250	15,276	1,382	13,894
1.2.2.1 आधिकारिक	163	218	-55	110	212	-102
1.2.2.2 निजी	15,773	469	15,305	15,166	1,170	13,996
1.2.3 आय	3,798	10,206	-6,408	3,972	10,147	-6,176
1.2.3.1 निवेश आय	2,918	9,640	-6,722	2,965	9,516	-6,552
1.2.3.2 कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति	880	566	314	1,007	631	376
2 पूंजी खाता (2.1+2.2+2.3+2.4+2.5)	115,102	104,187	10,915	137,465	131,310	6,155
2.1 विदेशी निवेश (2.1.1+2.1.2)	63,614	52,358	11,256	66,972	68,498	-1,527
2.1.1 विदेशी प्रत्यक्ष निवेश	16,982	6,280	10,702	18,567	8,753	9,814
2.1.1.1 भारत में	16,315	2,399	13,916	18,086	4,871	13,216
2.1.1.1.1 इक्विटी	13,127	2,363	10,763	14,532	4,812	9,720
2.1.1.1.2 पुनर्निवेशित आय	2,631	0	2,631	3,046	0	3,046
2.1.1.1.3 अन्य पूंजी	558	36	522	508	59	449
2.1.1.2 विदेश में	667	3,881	-3,214	480	3,882	-3,401
2.1.1.2.1 इक्विटी	667	1,934	-1,267	480	2,241	-1,760
2.1.1.2.2 पुनर्निवेशित आय	0	834	-834	0	688	-688
2.1.1.2.3 अन्य पूंजी	0	1,113	-1,113	0	953	-953
2.1.2 संविभाग निवेश	46,632	46,078	554	48,405	59,746	-11,341
2.1.2.1 भारत में	46,521	45,957	563	48,250	59,564	-11,314
2.1.2.1.1 एफआईआई	46,521	45,957	563	48,250	59,564	-11,314
2.1.2.1.1.1 इक्विटी	36,520	37,148	-629	37,637	42,371	-4,733
2.1.2.1.1.2 ऋण	10,001	8,809	1,192	10,613	17,194	-6,581
2.1.2.1.2 एडीआर /जीडीआर	0	0	0	0	0	0
2.1.2.2 विदेश में	111	121	-9	154	181	-27
2.2 ऋण (2.2.1+2.2.2+2.2.3)	28,768	31,095	-2,328	31,179	29,495	1,685
2.2.1 बाह्य सहायता	1,513	1,175	338	1,601	1,058	543
2.2.1.1 भारत द्वारा	15	129	-113	14	57	-43
2.2.1.2 भारत को	1,498	1,047	451	1,587	1,001	586
2.2.2 वाणिज्यिक उधार	6,525	7,405	-880	6,121	7,943	-1,822
2.2.2.1 भारत द्वारा	432	200	232	963	280	683
2.2.2.2 भारत को	6,093	7,205	-1,112	5,158	7,663	-2,505
2.2.3 भारत को अल्पावधि	20,729	22,515	-1,786	23,457	20,493	2,964
2.2.3.1 आपूर्तिकर्ता का ऋण >180 दिन तथा खरीदार का ऋण	20,062	22,515	-2,453	22,700	20,493	2,207
2.2.3.2 आपूर्तिकर्ता का 180 दिन तक का ऋण	667	0	667	757	0	757
2.3 बैंकिंग पूंजी (2.3.1+2.3.2)	17,348	16,033	1,315	30,610	27,430	3,180
2.3.1 वाणिज्य बैंक	17,347	16,033	1,314	30,610	27,427	3,182
2.3.1.1 आस्तियां	3,731	3,941	-211	19,123	107	19,016
2.3.1.2 देयताएं	13,616	12,092	1,524	11,487	27,321	-15,834
2.3.1.2.1 अनिवासी जमाराशियां	11,829	10,279	1,550	7,450	25,980	-18,530
2.3.2 अन्य	2	0	2	0	2	-2
2.4 रुपया ऋण चुकौती	0	0	0	0	0	0
2.5 अन्य पूंजी	5,372	4,701	672	8,705	5,888	2,817
3 भूल-चूक	262	0	262	522	0	522
4 मौद्रिक गतिविधियां (4.1+4.2)	0	4,056	-4,056	1,242	0	1,242
4.1 आईएमएफ	0	0	0	0	0	0
4.2 विदेशी मुद्रा भंडार (वृद्धि -/ कमी +)	0	4,056	-4,056	1,242	0	1,242

सं. 39: भारत का समग्र भुगतान संतुलन

(बिलियन ₹)

मद	अक्टू.-दिसं. 2015 (आं.सं)			अक्टू.-दिसं 2016 (प्रा.)		
	जमा	नामे	निवल	जमा	नामे	निवल
	1	2	3	4	5	6
समग्र भुगतान शेष (1+2+3)	15,686	15,418	267	18,079	18,163	-84
1 चालू खाता (1.1+1.2)	8,081	8,550	-469	8,775	9,309	-534
1.1 पण्य	4,281	6,521	-2,240	4,636	6,879	-2,244
1.2 अदृश्य मदें (1.2.1+1.2.2+1.2.3)	3,800	2,029	1,770	4,140	2,430	1,710
1.2.1 सेवाएं	2,499	1,311	1,187	2,842	1,652	1,189
1.2.1.1 यात्रा	380	221	158	417	250	167
1.2.1.2 परिवहन	218	227	-9	256	220	36
1.2.1.3 बीमा	30	22	8	35	28	7
1.2.1.4 जीएनआईई	10	8	2	12	9	3
1.2.1.5 विविध	1,861	832	1,029	2,122	1,145	977
1.2.1.5.1 सॉफ्टवेयर सेवाएं	1,265	42	1,223	1,279	64	1,215
1.2.1.5.2 कारोबार सेवाएं	439	504	-65	561	544	17
1.2.1.5.3 वित्तीय सेवाएं	63	58	5	82	110	-28
1.2.1.5.4 संचार सेवाएं	32	15	17	38	16	22
1.2.2 अंतरण	1,051	45	1,005	1,030	93	937
1.2.2.1 आधिकारिक	11	14	-4	7	14	-7
1.2.2.2 निजी	1,040	31	1,009	1,023	79	944
1.2.3 आय	250	673	-422	268	684	-416
1.2.3.1 निवेश आय	192	636	-443	200	642	-442
1.2.3.2 कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति	58	37	21	68	43	25
2 पूंजी खाता (2.1+2.2+2.3+2.4+2.5)	7,588	6,868	720	9,269	8,854	415
2.1 विदेशी निवेश (2.1.1+2.1.2)	4,194	3,452	742	4,516	4,618	-103
2.1.1 विदेशी प्रत्यक्ष निवेश	1,120	414	706	1,252	590	662
2.1.1.1 भारत में	1,076	158	917	1,219	328	891
2.1.1.1.1 इक्विटी	865	156	710	980	324	655
2.1.1.1.2 पुनर्निवेशित आय	173	0	173	205	0	205
2.1.1.1.3 अन्य पूंजी	37	2	34	34	4	30
2.1.1.2 विदेश में	44	256	-212	32	262	-229
2.1.1.2.1 इक्विटी	44	127	-84	32	151	-119
2.1.1.2.2 पुनर्निवेशित आय	0	55	-55	0	46	-46
2.1.1.2.3 अन्य पूंजी	0	73	-73	0	64	-64
2.1.2 संविभाग निवेश	3,074	3,038	37	3,264	4,028	-765
2.1.2.1 भारत में	3,067	3,030	37	3,253	4,016	-763
2.1.2.1.1 एफआईआई	3,067	3,030	37	3,253	4,016	-763
2.1.2.1.1.1 इक्विटी	2,407	2,449	-41	2,538	2,857	-319
2.1.2.1.1.2 ऋण	659	581	79	716	1,159	-444
2.1.2.1.2 एडीआर /जीडीआर	0	0	0	0	0	0
2.1.2.2 विदेश में	7	8	-1	10	12	-2
2.2 ऋण (2.2.1+2.2.2+2.2.3)	1,896	2,050	-153	2,102	1,989	114
2.2.1 बाह्य सहायता	100	77	22	108	71	37
2.2.1.1 भारत द्वारा	1	8	-7	1	4	-3
2.2.1.2 भारत को	99	69	30	107	67	40
2.2.2 वाणिज्यिक उधार	430	488	-58	413	536	-123
2.2.2.1 भारत द्वारा	28	13	15	65	19	46
2.2.2.2 भारत को	402	475	-73	348	517	-169
2.2.3 भारत को अल्पावधि	1,367	1,484	-118	1,582	1,382	200
2.2.3.1 आपूर्तिकर्ता का ऋण >180 दिन तथा खरीदार का ऋण	1,323	1,484	-162	1,531	1,382	149
2.2.3.2 आपूर्तिकर्ता का 180 दिन तक का ऋण	44	0	44	51	0	51
2.3 बैंकिंग पूंजी (2.3.1+2.3.2)	1,144	1,057	87	2,064	1,849	215
2.3.1 वाणिज्य बैंक	1,144	1,057	87	2,064	1,849	215
2.3.1.1 आस्तियां	246	260	-14	1,289	7	1,282
2.3.1.2 देयताएं	898	797	100	774	1,842	-1,068
2.3.1.2.1 अनिवासी जमाराशियां	780	678	102	502	1,752	-1,249
2.3.2 अन्य	0	0	0	0	0	0
2.4 रुपया ऋण चुकौती	0	0	0	0	0	0
2.5 अन्य पूंजी	354	310	44	587	397	190
3 भूल-चूक	17	0	17	35	0	35
4 मौद्रिक गतिविधियां (4.1+4.2)	0	267	-267	84	0	84
4.1 आईएमएफ	0	0	0	0	0	0
4.2 विदेशी मुद्रा भंडार (वृद्धि -/ कमी +)	0	267	-267	84	0	84

सं. 40: बीपीएम 6 के अनुसार भारत में भुगतान संतुलन का मानक प्रस्तुतीकरण

(मिलियन अमरीकी डालर)

मद	अक्टू.-दिसं. 2015 (आ.सं)			अक्टू.-दिसं 2016 (प्रा.)		
	जमा	नामे	निवल	जमा	नामे	निवल
	1	2	3	4	5	6
1 चालू खाता (1.अ+1आ+1.इ)	122,564	129,675	-7,112	130,142	138,049	-7,907
1.अ माल और सेवाएं (1.अ.क.+ 1अ.ख.)	102,841	118,804	-15,963	110,903	126,540	-15,637
1.अ.क.माल (1.अ.क.1 से 1अ.क.3)	64,937	98,913	-33,975	68,755	102,032	-33,277
1.अ.क.1 बीओपी आधार पर सामान्य वाणिज्यिक वस्तुएं	64,162	89,886	-25,725	69,539	92,220	-22,681
1.अ.क.2 वाणिज्य के अंतर्गत माल का निवल निर्यात	776	0	776	-784	0	-784
1.अ.क.3 गैर-मौद्रिक स्वर्ण	0	9,027	-9,027	0	9,812	-9,812
1.अ.ख सेवाएं (1.अ.ख.1 से 1.अ.ख.13)	37,904	19,891	18,013	42,148	24,508	17,639
1.अ.ख.1 अन्य के स्वामित्व वाले भौतिक इनपुट पर विनिर्माण सेवाएं	24	10	14	22	6	16
1.अ.ख.2 अन्यत्र शामिल न की गई रखरखाव व मरम्मत सेवाएं	37	93	-56	47	72	-25
1.अ.ख.3 परिवहन	3,310	3,450	-140	3,797	3,268	529
1.अ.ख.4 यात्रा	5,761	3,357	2,404	6,187	3,710	2,476
1.अ.ख.5 निर्माण	345	180	165	591	224	367
1.अ.ख.6 बीमा और पेंशन सेवाएं	449	334	115	522	413	109
1.अ.ख.7 वित्तीय सेवाएं	958	887	72	1,210	1,624	-414
1.अ.ख.8 अन्यत्र शामिल न किए गए बौद्धिक संपत्ति के उपयोग के लिए प्रभार	130	1,245	-1,114	144	1,509	-1,366
1.अ.ख.9 दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाएं	19,728	949	18,779	19,614	1,247	18,367
1.अ.ख.10 अन्य कारोबारी सेवाएं	6,667	7,646	-979	8,319	8,067	253
1.अ.ख.11 वैयक्तिक, सांस्कृतिक और मनोरंजन संबंधी सेवाएं	261	161	100	328	439	-111
1.अ.ख.12 अन्यत्र शामिल न की गई सरकारी माल और सेवाएं	147	123	25	176	135	40
1.अ.ख.13 अन्य जो अन्यत्र शामिल नहीं हैं	86	1,457	-1,371	1,192	3,793	-2,601
1.आ प्राथमिक आय (1.आ.1 से 1.आ.3)	3,798	10,206	-6,408	3,972	10,147	-6,176
1.आ.1 कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति	880	566	314	1,007	631	376
1.आ.2 निवेश आय	2,318	9,535	-7,217	2,323	9,365	-7,042
1.आ.2.1 प्रत्यक्ष निवेश	1,352	4,062	-2,710	1,174	4,620	-3,445
1.आ.2.2 संविभाग निवेश	42	2,336	-2,294	20	1,656	-1,636
1.आ.2.3 अन्य निवेश	159	3,136	-2,978	265	3,090	-2,826
1.आ.2.4 रिज़र्व आस्तियां	766	1	766	865	0	865
1.आ.3 अन्य प्राथमिक आय	600	105	495	641	151	490
1.इ दिवतीयक आय (1.इ.1+1.इ.2)	15,925	665	15,259	15,268	1,362	13,906
1.इ.1 वित्तीय निगम, वित्तेतर निगम, परिवार और एनपीआईएसएच	15,773	469	15,305	15,166	1,170	13,996
1.इ.1.1 वैयक्तिक अंतरण (निवासी और / अनिवासी परिवारों के बीच चालू अंतरण)	15,282	412	14,869	14,579	959	13,620
1.इ.1.2 अन्य चालू अंतरण	492	57	435	587	211	376
1.इ.2 सामान्य सरकार	151	197	-46	101	192	-90
2 पूँजी खाता (2.1+2.2)	64	46	18	59	78	-19
2.1 अनूपादित वित्तेतर आस्तियों का सकल अधिग्रहण (नामे) / निस्तारण (जमा)	10	5	5	15	28	-12
2.2 पूँजी अंतरण	54	41	13	44	51	-7
3 वित्तीय खाता (3.1 से 3.5)	115,050	108,218	6,831	138,656	131,252	7,404
3.1 प्रत्यक्ष निवेश (3.1अ+3.1आ)	16,982	6,280	10,702	18,567	8,753	9,814
3.1अ भारत में प्रत्यक्ष निवेश	16,315	2,399	13,916	18,086	4,871	13,216
3.1अ.1 इक्विटी और निवेश निधि शेयर	15,757	2,363	13,394	17,578	4,812	12,766
3.1अ.1.1 अर्जनों के पुनर्निवेश से इतर इक्विटी	13,127	2,363	10,763	14,532	4,812	9,720
3.1अ.1.2 अर्जनों का पुनर्निवेश	2,631	0	2,631	3,046	0	3,046
3.1अ.2 ऋण लिखत	558	36	522	508	59	449
3.1अ.2.1 प्रत्यक्ष निवेश उद्यमों में प्रत्यक्ष निवेशक	558	36	522	508	59	449
3.1आ. भारत द्वारा प्रत्यक्ष निवेश	667	3,881	-3,214	480	3,882	-3,401
3.1आ.1 इक्विटी और निवेश निधि शेयर	667	2,768	-2,101	480	2,928	-2,448
3.1आ.1.1 अर्जनों के पुनर्निवेश को छोड़कर इक्विटी	667	1,934	-1,267	480	2,241	-1,760
3.1आ.1.2 अर्जनों का पुनर्निवेश	0	834	-834	0	688	-688
3.1आ.2 ऋण लिखत	0	1,113	-1,113	0	953	-953
3.1आ.2.1 प्रत्यक्ष निवेश उद्यमों में प्रत्यक्ष निवेशक	0	1,113	-1,113	0	953	-953
3.2 संविभाग निवेश	46,632	46,078	554	48,405	59,746	-11,341
3.2अ भारत में संविभाग निवेश	46,521	45,957	563	48,250	59,564	-11,314
3.2.1 इक्विटी और निवेश निधि शेयर	36,520	37,148	-629	37,637	42,371	-4,733
3.2.2 ऋण प्रतिभूतियां	10,001	8,809	1,192	10,613	17,194	-6,581
3.2आ. भारत द्वारा संविभाग निवेश	111	121	-9	154	181	-27
3.3 वित्तीय डेरिवेटिव (रिज़र्व निधियों को छोड़कर) और कर्मचारी स्टॉक ऑप्शन	3,066	2,788	278	5,931	2,811	3,120
3.4 अन्य निवेश	48,370	49,016	-646	64,512	59,943	4,569
3.4.1 अन्य इक्विटी (एडीआर/जीडीआर)	0	0	0	0	0	0
3.4.2 मुद्रा और जमाराशियां	11,831	10,279	1,552	7,450	25,982	-18,532
3.4.2.1 केंद्रीय बैंक (रूपी डेट मूवमेंट; एनआरजी)	2	0	2	0	2	-2
3.4.2.2 केंद्रीय बैंक को छोड़कर जमाराशियां लेने वाले निगम (अनिवासी भारतीय जमाराशियां)	11,829	10,279	1,550	7,450	25,980	-18,530
3.4.2.3 सामान्य सरकार	-	-	-	-	-	-
3.4.2.4 अन्य क्षेत्र	-	-	-	-	-	-
3.4.3 ऋण (बाह्य सहायता, ईसीबी और बैंकिंग पूँजी)	13,556	14,334	-778	30,882	10,449	20,433
3.4.3अ भारत को ऋण	13,108	14,005	-897	29,904	10,112	19,793
3.4.3आ भारत द्वारा ऋण	447	329	118	978	338	640
3.4.4 बीमा, पेंशन, और मानकीकृत गारंटी योजनाएं	311	441	-130	229	223	5
3.4.5 व्यापार ऋण और अग्रिम	20,729	22,515	-1,786	23,457	20,493	2,964
3.4.6 अन्य खाते प्राप्य/देय-अन्य	1,943	1,447	496	2,494	2,795	-301
3.4.7 विशेष आहरण अधिकार	0	0	0	0	0	0
3.5 आरक्षित आस्तियां	0	4,056	-4,056	1,242	0	1,242
3.5.1 मौद्रिक स्वर्ण	-	-	-	-	-	-
3.5.2 विशेष आहरण अधिकार एन.ए	-	-	-	-	-	-
3.5.3 आईएमएफ में रिज़र्व निधियों की स्थिति एन.ए	-	-	-	-	-	-
3.5.4 अन्य रिज़र्व आस्तियां (विदेशी मुद्रा आस्तियां)	0	4,056	-4,056	1,242	0	1,242
4. कुल आस्तियां / देयताएं	115,050	108,218	6,831	138,656	131,252	7,404
4.1 इक्विटी तथा निवेश निधि शेयर	56,431	45,629	10,802	62,010	53,326	8,684
4.2 ऋण लिखत	56,675	57,086	-411	72,910	75,130	-2,220
4.3 अन्य वित्तीय आस्तियां और देयताएं	1,943	5,504	-3,560	3,736	2,795	941
5. निवल भू-चक्र	262	-	262	522	-	522

सं. 41: बीपीएम 6 के अनुसार भारत में भुगतान संतुलन का मानक प्रस्तुतीकरण

(बिलियन ₹)

मद	अक्तू-दिसं. 2015 (आं.सं)			अक्तू-दिसं 2016 (प्रा.)		
	जमा	नामे	निवल	जमा	नामे	निवल
	1	2	3	4	5	6
1 चालू खाता (1.अ+1आ+1.इ)	8,080	8,549	-469	8,775	9,308	-533
1.अ माल और सेवाएं (1.अ.क.+ 1अ.ख.)	6,780	7,832	-1,052	7,478	8,532	-1,054
1.अ.क.माल (1.अ.क.1 से 1अ.क.3)	4,281	6,521	-2,240	4,636	6,879	-2,244
1.अ.क.1 बीओपी आधार पर सामान्य वाणिज्यिक वस्तुएं	4,230	5,926	-1,696	4,689	6,218	-1,529
1.अ.क.2 वाणिज्य के अंतर्गत माल का निवल निर्यात	51	0	51	-53	0	-53
1.अ.क.3 गैर-मौद्रिक स्वर्ण	0	595	-595	0	662	-662
1.अ.ख सेवाएं (1.अ.ख.1 से 1.अ.ख.13)	2,499	1,311	1,187	2,842	1,652	1,189
1.अ.ख.1 अन्य के स्वामित्व वाले भौतिक इनपुट पर विनिर्माण सेवाएं	2	1	1	1	0	1
1.अ.ख.2 अन्यत्र शामिल न की गई रखरखाव व मरम्मत सेवाएं	2	6	-4	3	5	-2
1.अ.ख.3 परिवहन	218	227	-9	256	220	36
1.अ.ख.4 यात्रा	380	221	158	417	250	167
1.अ.ख.5 निर्माण	23	12	11	40	15	25
1.अ.ख.6 बीमा और पेंशन सेवाएं	30	22	8	35	28	7
1.अ.ख.7 वित्तीय सेवाएं	63	58	5	82	110	-28
1.अ.ख.8 अन्यत्र शामिल न किए गए बौद्धिक संपत्ति के उपयोग के लिए प्रभार	9	82	-73	10	102	-92
1.अ.ख.9 दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाएं	1,301	63	1,238	1,322	84	1,238
1.अ.ख.10 अन्य कारोबारी सेवाएं	439	504	-65	561	544	17
1.अ.ख.11 वैयक्तिक, सांस्कृतिक और मनोरंजन संबंधी सेवाएं	17	11	7	22	30	-7
1.अ.ख.12 अन्यत्र शामिल न की गई सरकारी माल और सेवाएं	10	8	2	12	9	3
1.अ.ख.13 अन्य जो अन्यत्र शामिल नहीं हैं	6	96	-90	80	256	-175
1.आ प्राथमिक आय (1.आ.1 से 1.आ.3)	250	673	-422	268	684	-416
1.आ.1 कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति	58	37	21	68	43	25
1.आ.2 निवेश आय	153	629	-476	157	631	-475
1.आ.2.1 प्रत्यक्ष निवेश	89	268	-179	79	311	-232
1.आ.2.2 संविभाग निवेश	3	154	-151	1	112	-110
1.आ.2.3 अन्य निवेश	10	207	-196	18	208	-191
1.आ.2.4 रिजर्व आस्तियां	51	0	50	58	0	58
1.आ.3 अन्य प्राथमिक आय	40	7	33	43	10	33
1.इ दिवतीयक आय (1.इ.1+1.इ.2)	1,050	44	1,006	1,029	92	938
1.इ.1 वित्तीय निगम, वित्तेतर निगम, परिवार और एनपीआईएसएच	1,040	31	1,009	1,023	79	944
1.इ.1.1 वैयक्तिक अंतरण (निवासी और / अनिवासी परिवारों के बीच चालू अंतरण)	1,007	27	980	983	65	918
1.इ.1.2 अन्य चालू अंतरण	32	4	29	40	14	25
1.इ.2 सामान्य सरकार	10	13	-3	7	13	-6
2. पूँजी खाता (2.1+2.2)	4	3	1	4	5	-1
2.1 अनुत्पादित वित्तेतर आस्तियों का सकल अधिग्रहण (नामे) / निस्तारण (जमा)	1	0	0	1	2	-1
2.2 पूँजी अंतरण	4	3	1	3	3	0
3. वित्तीय खाता (3.1 से 3.5)	7,584	7,134	450	9,349	8,850	499
3.1 प्रत्यक्ष निवेश (3.1अ+3.1आ)	1,120	414	706	1,252	590	662
3.1अ भारत में प्रत्यक्ष निवेश	1,076	158	917	1,219	328	891
3.1अ.1 इक्विटी और निवेश निधि शेयर	1,039	156	883	1,185	324	861
3.1अ.1.1 अर्जनों के पुनर्निवेश से इतर इक्विटी	865	156	710	980	324	655
3.1अ.1.2 अर्जनों का पुनर्निवेश	173	0	173	205	0	205
3.1अ.2 ऋण लिखत	37	2	34	34	4	30
3.1अ.2.1 प्रत्यक्ष निवेश उद्यमों में प्रत्यक्ष निवेशक	37	2	34	34	4	30
3.1आ. भारत द्वारा प्रत्यक्ष निवेश	44	256	-212	32	262	-229
3.1आ.1 इक्विटी और निवेश निधि शेयर	44	182	-139	32	197	-165
3.1आ.1.1 अर्जनों के पुनर्निवेश को छोड़कर इक्विटी	44	127	-84	32	151	-119
3.1आ.1.2 अर्जनों का पुनर्निवेश	0	55	-55	0	46	-46
3.1आ.2 ऋण लिखत	0	73	-73	0	64	-64
3.1आ.2.1 प्रत्यक्ष निवेश उद्यमों में प्रत्यक्ष निवेशक	0	73	-73	0	64	-64
3.2 संविभाग निवेश	3,074	3,038	37	3,264	4,028	-765
3.2अ भारत में संविभाग निवेश	3,067	3,030	37	3,253	4,016	-763
3.2.1 इक्विटी और निवेश निधि शेयर	2,407	2,449	-41	2,538	2,857	-319
3.2.2 ऋण प्रतिभूतियां	659	581	79	716	1,159	-444
3.2आ. भारत द्वारा संविभाग निवेश	7	8	-1	10	12	-2
3.3 वित्तीय डेरिवेटिव (रिजर्व निधियों को छोड़कर) और कर्मचारी स्टॉक ऑप्शन	202	184	18	400	190	210
3.4 अन्य निवेश	3,189	3,231	-43	4,350	4,042	308
3.4.1 अन्य इक्विटी (एडीआर/जीडीआर)	0	0	0	0	0	0
3.4.2 मुद्रा और जमाराशियां	780	678	102	502	1,752	-1,250
3.4.2.1 केंद्रीय बैंक (रूपी डेट मुवमेंट; एनआरजी)	0	0	0	0	0	0
3.4.2.2 केंद्रीय बैंक को छोड़कर जमाराशियां लेने वाले निगम (अनिवासी भारतीय जमाराशियां)	780	678	102	502	1,752	-1,249
3.4.2.3 सामान्य सरकार	-	-	-	-	-	-
3.4.2.4 अन्य क्षेत्र	-	-	-	-	-	-
3.4.3 ऋण (बाह्य सहायता, ईसीबी और बैंकिंग पूँजी)	894	945	-51	2,082	705	1,378
3.4.3अ भारत को ऋण	864	923	-59	2,016	682	1,335
3.4.3आ भारत द्वारा ऋण	29	22	8	66	23	43
3.4.4 बीमा, पेंशन, और मानकीकृत गारंटी योजनाएं	20	29	-9	15	15	0
3.4.5 व्यापार ऋण और अग्रिम	1,367	1,484	-118	1,582	1,382	200
3.4.6 अन्य खाते प्राप्य/देय-अन्य	128	95	33	168	188	-20
3.4.7 विशेष आहरण अधिकार	0	0	0	0	0	0
3.5 आरक्षित आस्तियां	0	267	-267	84	0	84
3.5.1 मौद्रिक स्वर्ण	-	-	-	-	-	-
3.5.2 विशेष आहरण अधिकार एन.ए.	-	-	-	-	-	-
3.5.3 आईएमएफ में रिजर्व निधियों की स्थिति एन.ए.	-	-	-	-	-	-
3.5.4 अन्य रिजर्व आस्तियां (विदेशी मुद्रा आस्तियां)	0	267	-267	84	0	84
4. कुल आस्तियां / देयताएं	7,584	7,134	450	9,349	8,850	499
4.1 इक्विटी तथा निवेश निधि शेयर	3,720	3,008	712	4,181	3,595	585
4.2 ऋण लिखत	3,736	3,763	-27	4,916	5,066	-150
4.3 अन्य वित्तीय आस्तियां और देयताएं	128	363	-235	252	188	63
5. निवल भूल-चूक	17	-	17	35	-	35

सं. 42: अंतरराष्ट्रीय निवेश की स्थिति

(मिलियन अमरीकी डालर)

मद	वित्तीय वर्ष/समाप्त तिमाही की स्थिति							
	2015-16		2015		2016			
			दिसं.		सितं.		दिसं.	
	आस्तियां	देयताएं	आस्तियां	देयताएं	आस्तियां	देयताएं	आस्तियां	देयताएं
	1	2	3	4	5	6	7	8
1 विदेश/भारत में प्रत्यक्ष निवेश	141,626	293,854	139,038	282,609	140,733	311,691	144,134	318,502
1.1 इक्विटी पूंजी और पुनर्निवेशित अर्जन	96,961	280,267	95,122	269,456	94,176	297,517	96,623	304,514
1.2 अन्य पूंजी	44,665	13,587	43,916	13,153	46,557	14,174	47,511	13,988
2 संविभाग निवेश	2,461	224,783	1,710	225,292	2,256	232,086	2,283	221,183
2.1 इक्विटी	1,541	141,864	1,568	141,693	1,943	148,085	2,280	140,567
2.2 ऋण	919	82,919	143	83,599	313	84,001	4	80,616
3 अन्य निवेश	45,850	392,571	41,656	386,525	50,396	390,049	36,124	366,419
3.1 व्यापार ऋण	2,913	82,284	4,548	79,551	2,236	81,964	1,949	84,778
3.2 ऋण	6,713	170,472	3,683	170,749	6,258	166,897	4,245	160,295
3.3 मुद्रा और जमाराशियां	20,861	127,109	17,322	122,800	26,535	130,220	14,594	110,019
3.4 अन्य आस्तियां/देयताएं	15,363	12,706	16,103	13,425	15,368	10,968	15,335	11,327
4 रिज़र्व्स	360,177	–	350,381	–	371,990	–	358,898	–
5 कुल आस्तियां/देयताएं	550,114	911,208	532,786	894,426	565,376	933,826	541,439	906,104
6 आईआईपी (आस्तियां - देयताएं)		-361,094		-361,640		-368,450		-364,664

भुगतान और निपटान प्रणाली

सं. 43: भुगतान प्रणाली संकेतक

प्रणाली	मात्रा (मिलियन)				मूल्य (बिलियन ₹)			
	2016-17	2017			2016-17	2017		
		फर.	मार्च	अप्रै.		फर.	मार्च	अप्रै.
	1	2	3	4	5	6	7	8
1 आरटीजीएस	107.86	9.11	12.54	9.54	1,253,652.08	95,266.75	154,094.85	111,743.70
1.1 ग्राहक लेनदेन	103.66	8.80	12.14	9.23	849,950.51	66,382.31	111,825.01	73,603.70
1.2 अंतरबैंक लेनदेन	4.17	0.31	0.39	0.31	131,953.25	7,836.50	11,550.82	14,908.49
1.3 अंतरबैंक समाशोधन	0.018	0.002	0.002	0.002	271,748.31	21,047.93	30,719.02	23,231.51
2 सीसीआईएल परिचालित प्रणाली	3.65	0.25	0.29	0.25	1,056,173.36	75,377.92	94,415.57	80,878.53
2.1 सीबीएलओ	0.22	0.02	0.02	0.01	229,528.33	20,269.84	27,536.97	21,151.19
2.2 सरकारी प्रतिभूतियों का समाशोधन	1.51	0.08	0.09	0.08	404,389.08	27,361.26	29,315.32	24,111.22
2.2.1 एकमुश्त	1.34	0.07	0.07	0.07	168,741.46	8,366.97	8,522.45	7,482.65
2.2.2 रिपो	0.168	0.012	0.015	0.014	235,647.62	18,994.29	20,792.87	16,628.57
2.3 विदेशी समाशोधन	1.93	0.16	0.19	0.16	422,255.95	27,746.83	37,563.28	35,616.13
3 पेपर समाशोधन	1,206.69	107.94	127.98	99.97	80,958.15	6,406.73	8,654.94	7,351.49
3.1 चेक ट्रंकेशन प्रणाली	1,111.86	100.44	119.21	95.26	74,035.22	5,993.95	8,062.77	6,990.65
3.2 एमआईसीआर समाशोधन	-	-	-	-	-	-	-	-
3.2.1 आरबीआई के केन्द्र	-	-	-	-	-	-	-	-
3.2.2 अन्य केन्द्र	-	-	-	-	-	-	-	-
3.3 गैर-एमआईसीआर समाशोधन	94.83	7.50	8.78	4.71	6,922.93	412.78	592.17	360.84
4 खुदरा इलेक्ट्रॉनिक समाशोधन	4,196.88	367.54	446.28	431.10	132,190.35	12,023.05	17,769.89	13,700.63
4.1 ईसीएस नामे	8.76	0.19	0.23	0.19	39.14	1.31	1.55	1.21
4.2 ईसीएस जमा (एनईसीएस शामिल है)	10.10	0.68	0.92	0.49	144.08	8.04	9.69	9.68
4.3 ईएफटी/एनईएफटी	1,622.10	148.21	186.70	143.17	120,039.68	10,877.91	16,294.50	12,156.17
4.4 तुरंत भुगतान सेवाएं (आईएमपीएस)	506.73	59.75	67.41	65.08	4,111.06	482.21	564.68	562.06
4.5 राष्ट्रीय स्वचालित समाशोधन गृह (एनएसीएच)	2,057.27	158.71	191.01	222.17	7,916.17	653.59	899.47	971.50
5 कार्ड	12,055.87	1,039.67	1,089.38	1,035.38	30,214.00	2,575.77	2,952.64	2,877.17
5.1 क्रेडिट कार्ड	1,093.51	95.35	108.10	107.06	3,312.21	288.95	336.20	333.76
5.1.1 एटीएम का प्रयोग	6.37	0.42	0.49	0.48	28.39	1.91	2.29	2.33
5.1.2 पीओएस का प्रयोग	1,087.13	94.93	107.61	106.58	3,283.82	287.04	333.90	331.43
5.2 डेबिट कार्ड	10,962.36	944.32	981.28	928.32	26,901.79	2,286.82	2,616.45	2,543.41
5.2.1 एटीएम का प्रयोग	8,563.06	692.57	710.11	660.32	23,602.73	1,928.38	2,259.46	2,168.60
5.2.2 पीओएस का प्रयोग	2,399.30	251.75	271.17	268.00	3,299.07	358.43	356.99	374.82
6 प्रीपेड भुगतान लिखत (पीपीआई)	1,963.66	280.02	342.09	352.23	838.01	96.28	106.77	103.71
6.1 एम-वॉलेट	1,629.98	246.95	307.45	320.87	532.42	69.11	73.12	74.42
6.2 पीपीआई कार्ड	333.11	33.03	34.58	31.32	277.52	25.19	30.88	27.45
6.3 पेपर वाउचर	0.51	0.04	0.06	0.04	25.36	1.98	2.77	1.85
7 मोबाइल बैंकिंग	976.85	95.41	113.65	106.18	13,104.76	1,279.93	1,730.88	1,612.17
8 कार्ड बकाया	884.72	869.06	884.72	898.33	-	-	-	-
8.1 क्रेडिट कार्ड	29.84	29.08	29.84	31.32	-	-	-	-
8.2 डेबिट कार्ड	854.87	839.98	854.87	867.00	-	-	-	-
9 एटीएम की संख्या (वास्तव में)	222475	221302	222475	221959	-	-	-	-
10 पीओएस की संख्या (वास्तव में)	2529141	2224977	2529141	2614584	-	-	-	-
11 कुल जोड़ (1.1+1.2+2+3+4+5+6)	19,534.58	1,804.52	2,018.57	1,928.48	2,282,277.63	170,698.56	247,275.65	193,423.72

टिप्पणिया: पिछले 12 माह अवधि का डाटा अनंतिम है।

प्रासंगिक शृंखला

सं. 44: लघु बचत

(बिलियन ₹)

योजना		2015-16	2015	2016		
			नव.	सित.	अक्तू.	नव.
		1	2	3	4	5
1. लघु बचत	प्राप्तियां	3,224.88	299.51	341.09	309.41	498.25
	बकाया	6,805.58	6,533.80	6,915.02	6,936.94	7,191.30
1.1 कुल जमाराशियां	प्राप्तियां	2,820.87	262.92	308.43	284.77	471.74
	बकाया	4,287.13	4,122.42	4,387.16	4,399.98	4,640.64
1.1.1 डाक घर बचत बैंक जमाराशियां	प्राप्तियां	1,574.15	147.59	187.74	173.10	368.23
	बकाया	615.67	550.64	714.21	720.56	925.56
1.1.2 एमजीएनआरईजी	प्राप्तियां	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
	बकाया	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
1.1.3 राष्ट्रीय बचत योजना, 1987	प्राप्तियां	0.51	0.00	0.00	0.04	-0.03
	बकाया	34.97	35.11	33.63	33.53	33.37
1.1.4 राष्ट्रीय बचत योजना, 1992	प्राप्तियां	0.06	0.01	0.00	0.00	-0.01
	बकाया	1.21	1.87	-0.24	-0.26	-0.28
1.1.5 मासिक आय योजना	प्राप्तियां	315.26	30.00	31.65	28.20	20.65
	बकाया	1,938.08	1,959.13	1,842.63	1,831.03	1,823.48
1.1.6 वरिष्ठ नागरिक योजना	प्राप्तियां	103.21	12.19	7.99	7.66	5.44
	बकाया	228.76	187.85	254.47	257.83	262.14
1.1.7 डाक घर मीयादी जमाराशियां	प्राप्तियां	424.53	36.19	41.95	36.16	30.28
	बकाया	706.35	623.19	745.78	751.69	761.04
1.1.7.1 1 वर्ष की मीयादी जमाराशियां	बकाया	498.16	445.10	507.76	508.54	512.97
1.1.7.2 2 वर्ष की मीयादी जमाराशियां	बकाया	29.96	24.27	32.80	33.31	33.82
1.1.7.3 3 वर्ष की मीयादी जमाराशियां	बकाया	47.82	43.64	49.48	49.76	50.11
1.1.7.4 5 वर्ष की मीयादी जमाराशियां	बकाया	130.41	110.18	155.74	160.08	164.14
1.1.8 डाक घर आवर्ती जमाराशियां	बकाया	403.15	36.94	39.10	39.61	47.18
	प्राप्तियां	761.79	764.28	796.28	805.20	834.93
	बकाया	0.08	0.08	0.18	0.18	0.18
1.1.9 डाक घर सावधि मीयादी जमाराशियां	बकाया	0.05	0.00	0.00	0.00	0.00
1.1.10 अन्य जमाराशियां	बकाया	0.22	0.27	0.22	0.22	0.22
1.2 बचत प्रमाणपत्र	प्राप्तियां	326.10	28.71	23.28	20.87	17.79
	बकाया	1,942.42	1,877.07	1,944.25	1,951.67	1,957.79
1.2.1 राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र VIII निर्गम	प्राप्तियां	98.26	6.65	7.49	7.40	6.76
	बकाया	881.39	872.72	866.96	868.20	870.23
1.2.2 इंदिरा विकास पत्र	प्राप्तियां	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
	बकाया	8.91	8.90	8.91	8.88	8.89
1.2.3 किसान विकास पत्र	प्राप्तियां	14.66	2.10	-0.10	0.01	0.01
	बकाया	648.58	716.99	586.98	579.65	572.70
1.2.4 किसान विकास पत्र-2014	प्राप्तियां	213.18	19.95	15.89	13.46	11.02
	बकाया	291.18	169.09	368.81	382.30	393.31
1.2.5 राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र VI निर्गम	बकाया	0.04	0.01	0.00	0.00	0.00
1.2.6 राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र VII निर्गम	बकाया	-0.89	-0.86	-1.00	-1.00	-1.02
1.2.7 अन्य प्रमाणपत्र	बकाया	-0.57	-0.54	-0.61	-0.60	-0.60
1.3 लोक भविष्य निधि	प्राप्तियां	77.91	7.88	9.38	3.77	8.72
	बकाया	576.03	534.31	583.61	585.29	592.87

स्रोत: महालेखाकार, डाक और तार।

सं. 45: केंद्र और राज्य सरकारों की प्रतिभूतियों के स्वामित्व का स्वरूप

(प्रतिशत)

केंद्र सरकार की दिनांकित प्रतिभूतियां					
श्रेणी	2016				2017
	मार्च	जून	सितं	दिसं	मार्च
	1	2	3	4	5
(क) कुल (₹ बिलियन में)	45324.73	46422.34	47967.49	49246.98	49109.75
1. वाणिज्य बैंक	41.81	39.90	40.00	40.92	40.46
2. गैर-बैंक प्राथमिक डीलर्स	0.33	0.45	0.14	0.28	0.16
3. बीमाकृत कंपनियां	22.18	22.63	22.68	22.55	22.90
4. म्यूच्युअल फंड	2.09	2.09	2.13	1.96	1.49
5. सहकारी बैंक	2.75	2.68	2.47	2.63	2.70
6. वित्तीय संस्थाएं	0.72	0.71	0.84	0.86	0.81
7. कॉरपोरेट	1.28	1.31	1.09	1.05	1.05
8. विदेशी संस्थागत निवेशक	3.65	3.63	3.82	3.13	3.53
9. भविष्य निधियां	6.01	5.89	6.25	6.24	6.27
10. भारतीय रिज़र्व बैंक	13.47	14.88	14.80	14.61	14.65
11. अन्य	5.72	5.83	5.79	5.77	5.98
11.1 राज्य सरकार	1.84	1.84	1.84	1.83	1.92

राज्य सरकारों की प्रतिभूतियां					
श्रेणी	2016				2017
	मार्च	जून	सितं	दिसं	मार्च
	1	2	3	4	5
(ख) कुल (₹ बिलियन में)	16313.95	17277.70	18114.95	19343.91	20893.41
1. वाणिज्य बैंक	42.11	41.20	40.22	41.25	39.01
2. गैर-बैंक प्राथमिक डीलर्स	0.27	0.38	0.35	0.30	0.39
3. बीमाकृत कंपनियां	32.50	32.53	32.67	31.87	32.50
4. म्यूच्युअल फंड	1.05	1.36	1.62	1.36	2.42
5. सहकारी बैंक	3.92	4.01	4.21	4.47	4.75
6. वित्तीय संस्थाएं	0.25	0.25	0.27	0.29	0.30
7. कॉरपोरेट	0.13	0.13	0.14	0.13	0.17
8. विदेशी संस्थागत निवेशक	0.27	0.22	0.08	0.06	0.07
9. भविष्य निधियां	15.95	16.39	16.84	16.81	17.27
10. भारतीय रिज़र्व बैंक	0.04	0.02	0.01	0.03	0.06
11. अन्य	3.51	3.52	3.59	3.43	3.05
11.1 राज्य सरकार	-	-	-	-	-

खज़ाना बिल					
श्रेणी	2016				2017
	मार्च	जून	सितं	दिसं	मार्च
	1	2	3	4	5
(ग) कुल (₹ बिलियन में)	3644.02	4310.09	4202.40	4366.47	3320.80
1. वाणिज्य बैंक	71.79	54.41	52.58	50.47	57.85
2. गैर-बैंक प्राथमिक डीलर्स	1.93	1.85	1.38	1.80	1.25
3. बीमाकृत कंपनियां	1.50	1.83	1.91	2.02	4.58
4. म्यूच्युअल फंड	1.66	11.77	16.06	12.91	7.85
5. सहकारी बैंक	2.75	2.23	3.52	3.28	5.62
6. वित्तीय संस्थाएं	3.61	3.09	2.75	2.76	4.57
7. कॉरपोरेट	1.79	2.22	1.21	1.81	1.83
8. विदेशी संस्थागत निवेशक	-	-	-	-	-
9. भविष्य निधियां	0.25	0.03	0.45	0.43	0.35
10. भारतीय रिज़र्व बैंक	0.31	0.25	0.16	0.09	0.02
11. अन्य	14.42	22.30	19.96	24.44	16.09
11.1 राज्य सरकार	10.52	18.26	15.98	20.51	11.02

वर्तमान सांख्यिकी की व्याख्यात्मक टिप्पणियां

सारणी सं. 1

- 1.2 और 6: वार्षिक आंकड़े महीनों के औसत हैं।
3.5 और 3.7: वित्त वर्ष में अब तक वृद्धि के अनुपात से संबंधित है।
4.1 से 4.4, 4.8.4.12 और 5 : माह/वित्त वर्ष के अंतिम दिन से संबंधित है।
4.5, 4.6 और 4.7 : माह/वित्त वर्ष के अंतिम शुक्रवार को पांच प्रमुख बैंकों से संबंधित है।
4.9 से 4.11 : माह/वित्त वर्ष के अंतिम निलामी दिन से संबंधित है।

सारणी सं. 2

- 2.1.2 : चुकता पूंजी, आरक्षित निधि और दीर्घावधि परिचालनगत निधि शामिल है।
2.2.2 : नकदी, सावधि जमाराशियां और अल्पावधि प्रतिभूतियों/बांडों सहित जैसे - आईआईएफसी (यूके) द्वारा जारी।

सारणी सं. 4

<http://nsdp.rbi.org.in> के 'रिज़र्व टैम्पलेट' के अंतर्गत परिपक्वता वार बकाया फॉर्बर्ड संविदा की स्थिति दर्शायी गयी है।

सारणी सं. 5

अन्य को विशेष पुर्नवित्त सुविधा, अर्थात् एक्जिम बैंक को 31 मार्च 2013 से बंद है।

सारणी सं. 6

अनुसूचित बैंकों के लिए, मार्च की समाप्ति के आंकड़े सूचना देने के लिए नियत अंतिम शुक्रवार से संबंधित हैं।
2.2 : आईएमएफ खाता सं.1 की शेष राशि, आरबीआई कर्मचारी भविष्य निधि, पेंशन निधि, उपदान और अधिवर्षिता निधि शामिल नहीं हैं।

सारणी सं.7 और 11

सारणी 7 में 3.1 और सारणी 11 में 2.4: आईआईएफसी (यूके) द्वारा जारी विदेशी मुद्रा में निर्दिष्ट बांड शामिल हैं।

सारणी सं.8

एनएम2 और एनएम3 में एफसीएनआर (बी) जमाराशियां शामिल नहीं हैं।
2.4: चुकता पूंजी और आरक्षित राशि शामिल हैं।
2.5 : बैंकिंग प्रणाली की अन्य मांग और मीयादी देयताएं शामिल हैं।

सारणी सं.9

वित्तीय संस्थाओं में एक्जिम बैंक, सिडबी, नाबार्ड और एनएचबी शामिल हैं।
एल1 और एल2 मासिक आधार पर और एल3 तिमाही आधार पर संकलित किए जाते हैं।
जहां आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं वहां अंतिम उपलब्ध आंकड़े पुनःदिए गए हैं।

सारणी सं.13

कालम सं (1),(2) और (3) के सामने दर्शाए गए आंकड़े अंतिम (आरआरबी सहित) हैं और कालम सं. (4) और (5) में दर्शाए गए आंकड़े अनंतिम (आरआरबी को छोड़कर) हैं।

सारणी सं.15 और 16

डाटा अनंतिम है और चुनिंदा बैंकों से संबंधित है जिसमें सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंकों (आईएनजी वैश्य को छोड़कर जिसे अप्रैल 2015 को कोटक महिंद्रा के साथ विलय किया गया है) द्वारा कुल दिये गये कुल खाद्येतर ऋण के 90 प्रतिशत शामिल है। भारतीय स्टेट बैंक पहले के चार सहयोगी बैंकों का (स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर, स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद, स्टेट बैंक ऑफ मैसूर, स्टेट बैंक ऑफ पटियाला) विलय के बाद डाटा का समामेलन कार्य शुरू होने के कारण उनका डाटा छोड़ दिया है।

प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के अंतर्गत निर्यात ऋण केवल विदेशी बैंक से संबंधित है।

मद 2.1 के अंतर्गत माइक्रो और लघु में विनिर्माण क्षेत्र में माइक्रो और लघु उद्योग को ऋण शामिल है।

मद 5.2 के अंतर्गत माइक्रो और लघु उद्यमों में विनिर्माण तथा सेवा क्षेत्र में माइक्रो तथा लघु उद्यमों को ऋण शामिल है।

प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र पुरानी परिभाषा के अनुसार है और दि. 23 अप्रैल 2015 के एफआईडीडी परिपत्र एफआईडीडी.केका. प्लान.बीसी.54/04.09.01/2014-15 के अनुरूप नहीं है।

डाटा अनंतिम है और चुनिंदा 41 अनुसूचित वाणिज्य बैंकों से संबंधित है, सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंकों द्वारा कुल दिये गये कुल खाद्येतर ऋण के 90 प्रतिशत शामिल है।

सारणी सं.17

2.1.1: राज्य सहकारी बैंकों में सहकारी सोसाइटियों द्वारा अनुरक्षित आरक्षित निधि शामिल नहीं है।

2.1.2 : आरबीआई, एसबीआई, आईडीबीआई, नाबार्ड, अधिसूचित बैंकों और राज्य सरकारों से लिए गए ऋण शामिल नहीं है।

4. : आईडीबीआई और नाबार्ड से लिए गए ऋण शामिल हैं।

सारणी सं.24

प्राथमिक व्यापारियों में, प्राथमिक व्यापारी का कारोबार करने वाले बैंक शामिल हैं।

सारणी सं.30

प्राइवेट प्लेसमेंट और बिक्री के प्रस्ताव शामिल नहीं हैं।

1: बोनस शेयर शामिल नहीं हैं।

2: संचयी परिवर्तनीय अधिमान शेयर और इक्वी-अधिमान शेयर शामिल हैं।

सारणी सं.32

आईआईएफ सी (यूके) द्वारा जारी विदेशी मुद्रा में निर्दिष्ट बांडों में निवेश तथा सार्क स्वैप व्यवस्था के अंतर्गत प्राप्त विदेशी मुद्रा और भारत सरकार द्वारा रिज़र्व बैंक को अंतरित एसडीआर शामिल नहीं हैं। अमरीकी डॉलर में दिखाई गई विदेशी मुद्रा आस्तियों में रिज़र्व में रखी गैर-यूएस मुद्राओं (जैसे यूरो, स्टर्लिंग, येन और ऑस्ट्रेलिया डॉलर) के मूल्यवृद्धि/मूल्यहास को शामिल किया गया है। विदेशी मुद्रा धारिता को रूपी-अमरीकी डॉलर आरबीआई धारिता दरों में परिवर्तित किया गया है।

सारणी सं.34

1.1.1.1.2 और 1.1.1.1.4 : अनुमान

1.1.1.2 : नवीनतम माह के लिए अनुमान

‘अन्य पूंजी’ एफडीआई उद्यम की मूल और अनुषंगी संस्थाओं/शाखाओं के बीच के ऋण संबंधी लेनदेन से संबंधित है। हो सकता है कि सूचना देने में हुए समय-अंतराल के कारण ये आँकड़े भुगतान-संतुलन के आँकड़ों से मेल न खाएं।

सारणी सं.35

1.10 : जर्नलों के लिए अभिदान, विदेश में किए गए निवेशों का अनुरक्षण, छात्र ऋण चुकौती और क्रेडिट कार्ड भुगतान जैसी मदें शामिल हैं।

सारणी सं.36

सूचकांकों में वृद्धि रुपये की मूल्यवृद्धि या मूल्यहास का संकेतक । 6-मुद्राओं वाले सूचकांक के लिए, आधार वर्ष 2012-13 अस्थिर है जिसे प्रत्येक वर्ष अद्यतन किया जाता है। रीर के आंकड़े उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (संयुक्त) पर आधारित है। इससे संबंधित कार्यपद्धति का विवरण बुलेटिन के दिसंबर 2005 और अप्रैल 2014 अंक में दिया गया है।

सारणी सं.37

ईसीबी/विदेशी मुद्रा परिवर्तनीय बांडों के लिए आवेदनों पर आधारित जिन्हें उस अवधि के दौरान ऋण पंजीकरण संख्या दी गई है।

सारणी सं.38, 39, 40 और 41

इन सारणियों के संबंध में व्याख्यात्मक टिप्पणियां आरबीआई बुलेटिन 2012 के दिसंबर अंक में उपलब्ध हैं।

सारणी सं.43

1.3 : बहुपक्षीय निवल निपटान समूहों से संबंधित है।

3.1: मुंबई, नई दिल्ली और चेन्नै - तीन केन्द्रों से संबंधित है।

3.3 : 21 बैंकों द्वारा प्रबंधित समाशोधन गृहों से संबंधित है।

6: दिसंबर 2010 से उपलब्ध।

7: आईएमपीएस लेनदेन शामिल हैं।

9: अनुसूचित वाणिज्य बैंकों द्वारा खोले गए एटीएम और व्हाइट लेबल एटीएम शामिल है। अप्रैल 2014 से व्हाइट लेबल एटीएम शामिल किए गए हैं।

सारणी सं. 45

(-): नगण्य को दर्शाता है।

इस तिमाही में, संशोधित टेबल फार्मेट केंद्र सरकार की प्रतिभूतियों सहित राज्य सरकारों की स्वामित्ववाली प्रतिभूतियाँ और खज़ाना बिलों सहित शामिल है। इसके अतिरिक्त, पहली बार राज्य सरकारों की धारित प्रतिभूतियों को अलग श्रेणी में दर्शाया गया है।

राज्य सरकार की प्रतिभूतियों में उज्वल डिस्कॉम एश्योरेस योजना (यूडीएवाई) के अंतर्गत जारी विशेष बान्ड शामिल हैं।

वाणिज्यिक बैंकों के अंतर्गत बैंक के प्राथमिक डीलरों को शामिल किया गया है। तथापि, कुल बकाया प्रतिभूतियों में इसका हिस्सा बहुत कम है।

"अन्य" श्रेणी में राज्य सरकारों, पेंशन निधियां, न्यास, संस्थाएं, हिंदू अविभक्त परिवार / वैयक्तिक आदि. शामिल है।

विस्तृत टिप्पणियां भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी संबंधित प्रेस विज्ञप्तियों और बैंक के अन्य प्रकाशनों (जैसे भारतीय अर्थव्यवस्था पर सांख्यिकी की हैंडबुक) में उपलब्ध हैं।

भारतीय रिज़र्व बैंक के हाल के प्रकाशन

प्रकाशन का नाम	मूल्य	
	भारत में	विदेश में
1. भारतीय रिज़र्व बैंक बुलेटिन 2017	₹300 एक प्रति (काउंटर पर) ₹350 एक प्रति (डाक प्रभार सहित) ₹4200 (डाक प्रभार सहित एक वर्ष का अभिदान) ₹3150 (एक वर्ष का रियायती दर*) ₹3360 (एक वर्ष का अंशदान - डाक प्रभार सहित*) ₹2520 (एक वर्ष का रियायती दर*)	15 अमरीकी डॉलर एक प्रति (डाक प्रभार सहित) 180 अमरीकी डॉलर (एक वर्ष का अभिदान) (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)
2. भारतीय स्टेट 2015-16 पर सांख्यिकीय हैंड बुक	₹550 एक प्रति (सामान्य) ₹600 एक प्रति (डाक प्रभार सहित)	22 अमरीकी डॉलर एक प्रति (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)
3. भारतीय इकोनॉमी 2015-16 पर सांख्यिकीय हैंड बुक	₹500 एक प्रति (सामान्य) ₹550 एक प्रति (डाक प्रभार सहित) ₹375 एक प्रति (रियायती) ₹425 एक प्रति (रियायती डाक प्रभार सहित)	50 अमरीकी डॉलर एक प्रति (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)
4. मुद्रा एवं वित्त संबंधी रिपोर्ट 2009-12 राजकोषीय-मौद्रिक समन्वयन	₹ 515 (सामान्य) ₹ 555 (डाक प्रभार सहित)	अमरीकी डॉलर 16 एक प्रति (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)
5. मुद्रा एवं वित्त संबंधी रिपोर्ट 2003-08 खंड I से खंड V (विशेष अंक)	₹ 1100 (सामान्य) ₹ 1170 (डाक प्रभार सहित) ₹ 830 (रियायती) ₹ 900 (रियायती डाक प्रभार सहित)	अमरीकी डॉलर 55 एक प्रति (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)
6. राज्य वित्त : 2016-17 के बजटों का अध्ययन	₹ 500 एक प्रति (काउंटर पर) ₹ 550 एक प्रति (डाक प्रभार सहित)	अमरीकी डॉलर 23 एक प्रति (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)
7. राज्य सरकारों के वित्त 2010 पर सांख्यिकीय हैंडबुक	सीडी रोम ₹ 80 (सामान्य) ₹ 105 (डाक प्रभार सहित) ₹ 60 (रियायती) ₹ 85 (रियायती डाक प्रभार सहित)	अमरीकी डॉलर 16 एक सीडी (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित) अमरीकी डॉलर 4 एक सीडी (पंजीकृत हवाई डाक प्रभार सहित)
8. सीडी कंपेंडियम ऑफ आर्टिकल्स ऑन स्टेट फाइनेंस (1950-51 से 2010-11)	₹ 280 (काउंटर पर) ₹ 305 (डाक प्रभार सहित) ₹ 210 (रियायती) ₹ 235 (रियायती डाक प्रभार सहित)	अमरीकी डॉलर 8 (हवाई डाक बुकपोस्ट प्रभार सहित)
9. मिंट रोड माइलस्टोन्स : आरबीआई ऐट 75	₹ 1650 एक प्रति (काउंटर पर)	अमरीकी डॉलर 50 एक प्रति (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)
10. भारत का वित्तीय क्षेत्र - एक आकलन खंड I से खंड VI 2009	₹ 2000 एक प्रति (काउंटर पर) ₹ 2300 एक प्रति (डाक प्रभार सहित) ₹ 1500 एक प्रति (रियायती मूल्य) ₹ 1800 एक प्रति (रियायती डाक प्रभार सहित)	अमरीकी डॉलर 40 एक सेट और अमरीकी डॉलर 120 एक सेट (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)
11. दि पेपर ऐंड प्रॉमिस : ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ करेंसी ऐंड बैंकनोट्स इन इण्डिया 2009	₹ 200 एक प्रति (काउंटर पर)	अमरीकी डॉलर 30 एक प्रति (कुरियर हवाई डाक प्रभार सहित)
12. रिपोर्ट ऑफ दि कमिटी ऑन फुलर कैपिटल अकाउंट कन्वर्टिबिलिटी (तारापोर समिति की रिपोर्ट II)	₹ 140 एक प्रति (सामान्य) ₹ 170 (डाक द्वारा एक प्रति)	अमरीकी डॉलर 25 एक प्रति (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)
13. ए प्रोफाइल ऑफ बैंक्स 2012-13	₹ 80 एक प्रति (काउंटर पर) ₹ 110 एक प्रति (डाक प्रभार सहित)	अमरीकी डॉलर 7 एक प्रति (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)
14. चुनिंदा बैंकिंग संकेतक 1981 से 2002 (सीडी रोम पर)	₹ 250 एक सीडी (काउंटर पर) ₹ 300 एक सीडी (डाक प्रभार सहित)	अमरीकी डॉलर 75 (एक सीडी) (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)

प्रकाशन का नाम	मूल्य	
	भारत में	विदेश में
15. भारत के बैंकों से संबंधित सांख्यिकीय सारणी 2012-13	₹ 240 एक प्रति (काउंटर पर) ₹ 300 एक प्रति (डाक प्रभार सहित)	अमरीकी डॉलर 13 एक प्रति (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)
16. अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की जमाराशि एवं ऋण पर तिमाही सांख्यिकी 1981-2003 (सीडी-रोम पर)	₹ 185 एक प्रति (काउंटर पर) ₹ 240 एक प्रति (डाक प्रभार सहित)	अमरीकी डॉलर 20 एक प्रति अमरीकी डॉलर 55 एक प्रति (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)
17. भारत में अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की मूलभूत सांख्यिकी विवरणियां, खंड 41 मार्च 2012	₹ 270 एक प्रति (काउंटर पर) ₹ 310 एक प्रति (डाक प्रभार सहित)	अमरीकी डॉलर 10 एक प्रति (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)
18. भारत का निजी कारपोरेट कारोबार क्षेत्र - चुनिंदा वित्तीय सांख्यिकी 1950-51 से 1997-98	₹ 500 एक सीडी (काउंटर पर)	अमरीकी डॉलर 100 एक सीडी रोम (हवाई डाक कुरियर प्रभार सहित)
19. बैंकिंग शब्दावली (2012)	₹ 80 एक प्रति (काउंटर पर) ₹ 120 एक प्रति (डाक प्रभार सहित)	
20. अनुवाद के विविध आयाम (हिंदी)	₹165 एक प्रति (काउंटर पर) ₹205 एक प्रति (डाक प्रभार सहित)	
21. बैंक में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन: दशा और दिशा (हिंदी)	₹150 एक प्रति (काउंटर पर) ₹200 एक प्रति (डाक प्रभार सहित)	

टिप्पणिया:

1. उपर्युक्त प्रकाशनों में से कई प्रकाशन आरबीआई की वेबसाइट (www.rbi.org.in) पर उपलब्ध हैं।
2. टाइम सीरीज़ डेटा भारतीय अर्थव्यवस्था के डेटाबेस में उपलब्ध हैं (<http://dbie.rbi.org.in>)।
3. भारतीय रिज़र्व बैंक का इतिहास 1935-1997 (4 खंड), वित्तीय संकट के संदर्भ में केन्द्रीय बैंकिंग की चुनौतियां और भारत की क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था: वृद्धि और वित्त भारत के प्रमुख पुस्तक भंडारों में उपलब्ध हैं।
- * भारत में छात्रों, अध्यापकों/व्याख्याताओं, अकादमिक और शैक्षिक संस्थाओं, सार्वजनिक पुस्तकालयों और पुस्तक विक्रेताओं को 25 प्रतिशत रियायत दी जाएगी बशर्ते उन्हें संबंधित संस्था से पात्रता प्रमाण प्रस्तुत करना होगा।
- @ इलेक्ट्रॉनिक भुगतान को बढ़ावा देने हेतु, घरेलू ग्राहक जो एनईएफटी के माध्यम से भुगतान करना चाहते हैं, उन्हें 20 प्रतिशत की छूट देने का निर्णय लिया गया है।

सामान्य अनुरोध:

1. बिक्री हुई प्रतियां वापस नहीं ली जाएंगी।
2. प्रकाशन कन्साइनमेंट वीपीपी आधार पर नहीं भेजा जाएगा।
3. जहां कहीं रियायती मूल्य का उल्लेख नहीं है, वहां भारत में छात्रों, अध्यापकों/व्याख्याताओं, अकादमिक और शैक्षिक संस्थाओं, सार्वजनिक पुस्तकालयों और पुस्तक विक्रेताओं को 25 प्रतिशत की रियायत दी जाएगी, बशर्ते उन्हें संबंधित संस्था से पात्रता प्रमाण प्रस्तुत करना होगा। सामान्यतः प्रकाशन के पिछले अंक उपलब्ध नहीं हैं।
4. प्रकाशनों की (सोमवार से शुक्रवार) तक बिक्री तथा वितरण प्रभाग, कॉर्पोरेट सेवा विभाग, भारिबैं, अमर बिल्डिंग, तल मंजिल, सर पी.एम. रोड, फोर्ट, पोस्ट बॉक्स संख्या 1036, मुंबई- 400 001 पर उपलब्ध हैं। बिक्री अनुभाग का संपर्क नं. 022-2260 3000, विस्तार 4002, ई-मेल: spsdcs@rbi.org.in है।
5. अभिदान मुख्यतः एनईएफटी द्वारा किया जाना चाहिए और अग्रोषण पत्र, जिसके साथ एनईएफटी विवरण संलग्न हो, मुख्य महाप्रबंधक, कॉर्पोरेट सेवा विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक, दूसरी मंजिल, मुख्य भवन, मुम्बई- 400 001 को संबोधित होना चाहिए। एनईएफटी फार्म में निम्नलिखित जानकारी भरना अपेक्षित है:

लाभार्थी का नाम	कॉर्पोरेट सेवा विभाग, भारिबैं
बैंक का नाम	भारतीय रिज़र्व बैंक
शाखा तथा पता	फोर्ट, मुंबई
बैंक शाखा का आईएफएससी	RBIS0MBPA04
खाते का प्रकार	चालू खाता
खाता संख्या	41-8691632-86
प्रेषक से प्राप्तकर्ता की जानकारी	अभिदाता का नाम अभिदाता सं.....

6. प्रकाशनों को शीघ्रतापूर्वक भेजने का हर संभव प्रयास किया जाएगा। तथापि मांग अधिक होने पर पहले आओ पहले पाओ आधार पर प्रकाशनों की आपूर्ति की जाएगी। औपचारिकताएं पूरा करने और उसके बाद उपलब्ध प्रकाशनों को भेजने में न्यूनतम एक महीने का समय लगेगा। 'प्रकाशन प्राप्त न होने की शिकायत' 2 महीने के अंदर भेजी जाए।
7. कृपया अपना अंशदान संख्या, नाम, पता तथा ई मेल आईडी to spsdcs@rbi.org.in को प्रेषित करें ताकि हम सुचारु रूप से आपके साथ संपर्क कर सकें।

